॥ श्रीः ॥

भविष्यफलभास्करः—

श्रीमत्स्यदेशान्तर्गतजयपुरराज्यांतर्वर्तिश्रीमद्बाणगंगातटस्थ-
धौल्लाख्यग्रामलब्धजनिसंप्रतिनिजामहैदराबादराज्या-
न्तर्गतजालणानगरवास्तव्यपण्डितलक्ष्मी-
नारायणशर्म्मणा विरचितो
भाषाटीकया विभूषितश्च ।

स च

क्षेमराज–श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना
मुम्बय्यां
(खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लैन)
स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणयन्त्रालये
मुद्रयित्वा प्रकाशितः ।

संवत् १९६९, शके १८३४.

श्रीशिवः शरणम् ।



श्रीमज्जयपुरराज्यान्तर्गतबाणगंगातटस्थधौलाख्यग्रामलब्धजनिः
संप्रति निजामहैदराबादराज्यान्तर्वर्ति 'जालना' पुरवास्तव्य-
श्रीमद्गौडविप्रवंशोद्भव-

लक्ष्मीनारायणशर्मा.

भूमिका ।



कोटिशः धन्यवाद उस परब्रह्म परमेश्वरको हैं जिन्होंने अपनी अनुपम शक्तिसे वेदादि सत्यशास्त्रोंको प्रकट किया जिनको पढकर मनुष्य समस्त पदार्थोंको यथावत् जान सकते हैं तत्पश्चात् हमारे पूर्वज महर्षियोंको भी धन्यवाद हैं कि जिन्होंने वेदादि सत्यशास्त्रोंको मथकर ज्योतिष शास्त्रको प्रकट किया और उसके बडे २ लक्षावधि ग्रन्थ बनाये । जिनमें गणितविद्या अति विलक्षण और चमत्कारक है कि जिसके द्वारा आकाशकी वार्ता अर्थात् सूर्यादिग्रहोंकी चाल वक्री मार्गी तथा ग्रहणादिक जाने जाते हैं । उसी गणितके प्रभावसे आगामी ग्रहणोंका निश्चय करके विद्वान् लोग भारतनिवासी मनुष्योंको पहलेसे ही बता देते हैं । उसी शास्त्रके प्रभावसे लोकमें कीर्ति और प्रतिष्ठाको प्राप्त होते हैं । विशेष देखागया तो ज्योतिष शास्त्र ही मुख्य शास्त्र है, अन्य शास्त्र विनोदमात्र हैं । इसी शास्त्र द्वारा पण्डितजन भूत, भविष्य, वर्तमान वार्ता कहनेमें समर्थ होतेहैं ।

अतएव हमने भी उसी ज्योतिष शास्त्रके अनेकानेक ग्रंथ फलित विद्याके विचार और उनको अच्छीतरह समझकर यह एक नवीन ग्रंथ तैयार कियाहै । यह ग्रंथ ज्योतिषके अनेक विषयोंसे पूर्ण है, जैसे कि संवत्सरफल मास, दिन, संक्रांति, उत्पात, ग्रहोंकी गति, वक्री होना, उदय, अस्त, राशियोंमें गमन, नक्षत्रगति, नक्षत्रोंमें ग्रहोंका गमन, वारानुसार उदयास्तफल, तिथि-अनुसार वर्षज्ञान, मेघ प्रश्न, वर्षाके लक्षण इत्यादि बहुत ही वर्षा जाननेके अनेक उपयोगी विषय इसमें लिखे हैं ।

और सब प्रकारके धान्य, अन्न, धातु, कपास, सूत आदि सबकी तेजी मंदी होनेका फल इस ग्रंथमें विस्तारसे लिखाहै । बहुत क्या कहैं वर्षका शुभाशुभ फल जाननेके लिये कोई विषय इसमें नहीं छोडा है अर्थात् यथा-

स्थान सबही विषय क्रमसे लिख दिये हैं विशेष क्या यदि इसका अनुशीलन कियाजाय तो भविष्य वर्षके एकएक दिनका फल इससे कथन किया जायगा । इसकेद्वारा ब्राह्मण लोग फल कहके सिद्ध कहलावेंगे और व्यापारीगण सस्ती महंगी वस्तुओंका फल समझके लाभ उठावेंगे ।

इस ग्रंथके द्वारा सबही मनुष्य चाहे जहा देशकाल जानकर अपने घर बैठे रोजगार चला सकतेहैं । महाशय ! आप लोग जानतेही हैं कि परमेश्वरकी गति बडी विलक्षण है कि सदैव एकसी नही रहतीहै इसीसे इसका नाम जमाना है अर्थात् कोई भी समय स्थिर नहीं है । देखिये जो प्रथम था वह अब नहीं, और जो अब है वह आगेको नहीं रहेगा तब ही इसको ईश्वरकी विलक्षण चमत्कृति गति कहतेहैं । अब आप देखिये कि हमारे जन्मके समय जोवस्तु बिकतीथी जिसकी वार्ता प्रायः वृद्ध मनुष्य किया करते हैं उनकी वार्ताओंको अबकी नवीन सृष्टिके युवक जन सुनकर विस्मित होतेहैं प्रथम प्रायः सुकाल रहता था तब गृहस्थके गृहमें एकमनुष्यके सिवाय दूसरेको द्रव्योपार्जन करनेकी चिंता नहीं रहतीथी वह एकही स्वबाहुबलसे आनंदपूर्वक सारे कुटुंबका निर्वाह करताथा । परंतु वह बात अब नहीं, अब तो आबालवृद्ध सबको इस दुर्भर उदरदरीके भरनेकी चिन्ता दिनरात लगी रहतीहै और मारे तृष्णाके अधमाधम कलियुगावतारी जिनको काला अक्षर भैंसबराबर जो अपना नामभी शुद्ध नहीं लिखना जानवे शास्त्रका जानना तो दूर रहा ऐसे पाखण्डी धूर्तोंके पास फिरने लगजाते हैं । और उनसे पूछतेहैं कि महाराज ! हम गरीबोंपर भी कृपा कीजिये, तब कहा-कौन कृपा करें तब तो सेवकने कहा-महाराज ! तेजी मंदी बतादीजिये ताकि एकही बारमें दुःख दारिद्र्य पार होजाय ।

इतनी सुनते ही धूर्तराजने इस प्रकार नेत्र बंद करलिये कि मानो किसी योगीने समाधि लगाई हो । लोग यह नहीं जानते कि इनको कुछ मालूम होता तो आप खराब होते क्यों फिरते । परंतु इन बातोंको कौन सोचताहै हमारे यह भारतवासी भाई बहुत ही भोले हैं कि किसीने जरासा

आडंबर लगाया कि उसकी तर्फ दौडे और तन मनसे सेवा करने लगे, इस प्रकार द्रव्याशाके मारे व्यर्थही आयु व धनको गँवातेहैं। धूर्तराजने जो पलक लगाई थी कुछ २ नेत्रोंको खोलकर देखा तो क्या देखा कि वही बैठा है ज्योंही धूर्तने पलक लगाना चाहा त्योंही सेवकने कहा कि महाराज मैं बहुत देरसे बैठाहूं मेरे ऊपर भी दया कीजिये। तब धूर्तराज बोला—क्या दया करें तुम जानते ही हो "करे सेवा तो पावे मेवा" झटसे यह मंत्र पढ दिया। तब क्या करें आशाके दास हो येन केन उपायसे कुछ लाके भेट की, तब तो धूर्तने वरदान देदिया जाओ अमुक वस्तु तेजी, होगी खरीदलो मगर किसीसे कहना नहीं। यदि किसीवक्त प्रारब्धवश कदाचित् अंधचटकन्यायसे विधि मिलगई तब तो धूर्तराज सिद्धही बनगये और जो न मिली तो कहदिया तुम्हारे भाग्यकी बात। इस तरह यह धूर्तलोग ठगते रहतेहैं। अतएव हमने परमेश्वरकी प्रेरणासे ऋषिप्रणीत ग्रंथोंके आधारसे यह लघुकाय पुस्तक बनाकर तैयार कीहै सो सब ही लोग इसके अनुसार भावि-वर्षका शुभाशुभ व तेजी मंदी देखकर व्यापार करें ईश्वर अवश्य लाभ देगा। इसमें मनुष्यधर्मसे कहीं कुछ त्रुटि रहगई हो तो विद्वान् क्षमा करें क्योंकि सर्वज्ञ तो परमेश्वर है।

और यह पुस्तक सर्वाधिकार सहित हमने पुरस्कार पाकर सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास अध्यक्ष "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम प्रेस बम्बईको सादर समर्पण किया है, और कोई महाशय इसके छापने आदिका साहस न करें नहीं तो लाभके बदले हानि उठानी पडेगी।

निर्मत्सर सज्जनोंका कृपाभिलाषी—
जयपुरनिवासी पं॰ लक्ष्मीनारायणशर्म्मा।

॥ श्रीः ॥

अथ भविष्यफलभास्करकी विषयानुक्रमणिका ।

इति भविष्यफलभास्करकी विषयानुक्रमणिका ॥

॥ श्रीशिवः शरणम् ॥

भविष्यफलभास्करः ।

भाषाटीकासमेतः ।

मङ्गलम् ।

यस्याः कृपापांगवशान्मनोभूः पुष्पायुधोऽप्यंगविहीनरूपः ॥
जेजेति लोकानखिलान्हसंतीं तां विश्वबीजां त्रिपुरां नमामि १।

जिस भगवतीकी कृपासे देहविहीन और पुष्पही है आयुध जिसका ऐसा कामदेव सकल लोकोंको वारवार जीतता है उस संसारकी बीजभूत प्रसन्नमुख जगन्माता त्रिपुराको मैं नमस्कार करताहूं ॥ १ ॥

नत्वा श्रीपरमेश्वरस्य चरणांभोजद्वयं केशव-
ब्रह्मेंद्रादिसमस्तदेवमुकुटश्रीरत्नभाभास्वरम् ।
नानाग्रन्थमतं विलोक्य विदुषां तोषाय कुर्वे स्फुटं
ग्रन्थं सद्गुरुशंकरस्य कृपया भाव्यर्थसद्भास्करम् ॥ २ ॥

विष्णुब्रह्मादिक समस्त देवताओंके मुकुटरूप नीलमणिकीसी आभा जिनकी ऐसे परमेश्वरके चरणकमलोंको नमस्कार करके श्रुतिस्मृतिविहित सत्पथप्रतिष्ठापक–सच्छास्त्रविदूषकमतविनाशक–अद्वैतमार्गज्ञापक–कुटिलांतःकरणतापक–कुत्सितमत्तमृगचापक–अध्यात्मविद्याव्यापक–जगद्व्यापक–श्रीसद्गुरु १००८ महामहोपाध्याय–वंदितचरणारविंद–केरलीय–श्रीसदाशिव शंकरशास्त्री महाराजकी कृपासे ज्योतिषके अनेकानेक ग्रंथ और नाना–ग्रंथकारोंके मतोंको अच्छीतरह देखकर विद्वानोंके प्रसन्नतार्थ स्पष्ट अर्थ है जिसमें ऐसा 'भविष्य फल भास्कर' नामक ग्रंथको मैं "लक्ष्मीनारायण" करताहूं ॥ २ ॥

यद्यप्यत्र महीतले बहुविधा ग्रन्था विराजंत्यलं
पूर्वाचार्यकृता मनोहरतरा यत्नस्तथाप्येष मे ॥

व्यर्थो नैव भवेत्कपींद्रमथितेप्यब्धौ महाभूधरे
यत्नो नैव हि मन्दरस्य विफलो भूयात्कथंचिदध्रुवम् ॥३॥

यद्यपि इस पृथ्वीपर पूर्वाचार्योंके बनायेहुए बहुत प्रकारके मनोहर ग्रंथ विराजमान हैं तथापि हमारा यह प्रयत्न निष्फल नहीं होगा। जैसा हनुमान्‌का मंथन किया एवं देवताओंकरके मंदराचलद्वारा मंथन कियाहुआ समुद्र व्यर्थ नहीं हुआ वैसे-जिसतरह हनुमानने सीताजीरूप फल प्राप्त किया और देवताओंने अमृत प्राप्त किया उसी प्रकार इस ग्रंथद्वारा साधारण ज्योतिषी लोग भविष्य (होनहार) फलको जान सकेंगे ॥ ३ ॥

विद्वानेव हि जानाति विद्वज्जनपरिश्रमम् ॥
न हि वन्ध्या विजानाति गुर्वीम्प्रसववेदनाम् ॥ ४ ॥

विद्वान् मनुष्यके किये हुए परिश्रमको विद्वान् ही जानतेहैं क्योंकि वंध्या स्त्री गर्भिणीकी प्रसवपीडाको नहीं जानती ॥ ४ ॥

दुर्ज्जनाः खलु दृष्ट्वैनमसूयन्ते च नित्यशः ॥
सज्जना मोदमायान्तु परिश्रमविदो बुधाः ॥ ५ ॥

इस ग्रंथको देखकर निश्चय ही दुष्टजन तो प्रतिदिन दुःखी होंगे परंतु परिश्रमके जाननेवाले ऐसे सज्जन विद्वान् प्रसन्न हों ॥ ५ ॥

अथ शकप्रकरणम् ।

शकेन्द्रकालेऽर्कयुते कृते शून्यरसैर्हृते ॥
शेषाः संवत्सरा ज्ञेयाः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात् ॥ १ ॥

शालिवाहन शकमें जिस संवत्सरका नाम जानना होय उसकी यह रीति है कि, शककी संख्या लिखकर उसमें १२ मिलावे और साठ ६० का भाग देवे जो शेष रहै वही संवत्सरका नाम जानिये ॥ १ ॥

संवत्सरपरिज्ञान ।

स एव पंचाग्निकुभिर्युक्तः स्याद्विक्रमस्य हि ॥
रेवाया उत्तरे तीरे संवन्नाम्नातिविश्रुतः ॥ २ ॥

जो शालिवाहन शकमें एकसौ पैंतीस १३५ मिलावे तो विक्रमका संवत् होजाय जो नर्मदाके उत्तर तटमें प्रसिद्ध है ॥ २ ॥

संवत्कालं ग्रहयुतं कृत्वा शून्यरसैर्हरेत् ॥
शेषाः संवत्सरा ज्ञेयाः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात् ॥ ३ ॥

संवत्सरके अंकोंमें नव ९ युक्त करे और साठ ६० का भाग दे, जो शेष रहै सो प्रभवादि संवत्सर जानना । उदाहरण जैसे संवत् १९६७ में नव ९ मिलाये तो १९७६ हुए, अब साठका भाग दिया तो शेष ५६ रहे इस कारण इस संवत्का नाम दुन्दुभि जानना चाहिये ॥ ३ ॥

संवत्सरोंके नाम ।

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः ॥
अङ्गिराःश्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च ॥ ४ ॥
ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः ॥
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवोऽव्ययः ॥ ५ ॥
सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः ॥
नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ ॥ ६ ॥
हेमलम्बी विलम्बी च विकारी शार्वरी प्लवः ॥
शुभकृच्छोभनः क्रोधो विश्वावसुपराभवौ ॥ ७ ॥
प्लवङ्गः कीलकः सौम्यः साधारणविरोधकृत् ॥
परिधावी प्रमादी च आनन्दो राक्षसो नलः ॥ ८ ॥
पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्रदुर्मती ॥
दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः ॥ ९ ॥

प्रभवः १, विभवः २, शुक्लः ३, प्रमोदः ४, प्रजापतिः ५, अंगिराः ६, श्रीमुखः ७, भावः ८, युवा ९, धाता १०, ॥ ४ ॥ ईश्वरः ११, बहुधान्यः १२, प्रमाथी १३, विक्रमः १४, वृषः १५, चित्रभानुः १६, सुभानुः १७, तारणः १८, पार्थिवः १९, व्ययः २०, ॥ ५ ॥ सर्वजित् २१, सर्वधारी २२, विरोधी २३, विकृतः २४, खरः २५, नंदनः २६, विजयः २७, जयः २८, मन्मथः २९, दुर्मुखः ३०, ॥ ६ ॥ हेमलम्बी ३१, विलम्बी ३२,

विकारी ३३, शार्वरी ३४, प्लवः ३५, शुभकृत् ३६, शोभनः ३७ क्रोधी ३८, विश्वावसुः ३९, पराभवः ४०, ॥ ७ ॥ प्लवङ्गः ४१, कीलकः ४२, सौम्यः ४३, साधारणः ४४, विरोधकृत् ४५, परिधावी ४६, प्रमादी ४७, आनंदः ४८, राक्षसः ४९, नलः ५०, ॥ ८ ॥ पिंगलः ५१, कालयुक्तः ५२, सिद्धार्थी ५३, रौद्रः ५४, दुर्मतिः ५५, दुन्दुभी ५६, रुधिरोद्गारी ५७, रक्ताक्षः ५८, क्रोधनः ५९, क्षयः ६० ॥ ९ ॥

संवत्सरोंके स्वामी ।

आनन्दादेर्भवेद्ब्रह्मा भावादेर्विष्णुरेव च ॥
जयादेः शङ्करः प्रोक्तः सृष्टिपालननाशकाः ॥ १० ॥

आनंदादि वीस संवत्सरोंके स्वामी ब्रह्मा जो सृष्टिकर्ता हैं और भावादिक वीस संवत्सरोंके स्वामी विष्णु जो पालनकर्ता हैं, तीसरे जयादिक वीस संवत्सरोंके स्वामी रुद्र जो संहारकर्ता हैं ॥ १० ॥

प्रभवादि संवत्सरोंके फल ।

निरीतिः सकलो देशः शस्यनिष्पत्तिरुन्नता ॥
सुस्थिता भूभुजः सर्वे प्रभवे सुखिनो जनाः ॥ ११ ॥
दण्डनीतिपरा भूपा बहुशस्यार्घवृष्टयः ॥
विभवाब्दखिला लोकाः सुखिनो गतवैरिणः ॥ १२ ॥
शुक्लाब्दे निखिला लोकाःसुखिनःस्वजनैःसह ॥
राजानो युद्धनिरताः परस्परजयैषिणः ॥ १३ ॥
प्रमोदाब्दे प्रमोदन्ते राजानो निखिला जनाः ॥
वीतरोगा वीतभया ईतिशत्रुविनाशकाः ॥ १४ ॥
न चलन्त्यखिला लोकाः स्वस्वमार्गात्कथंचन ॥
अब्दे प्रजापतौ नूनं बहुशस्यार्घवृष्टयः ॥ १५ ॥
अन्नाद्यं भुज्यते शश्वज्जनैरतिथिभिः सह ॥
अङ्गिराब्देऽखिला लोका भूपाश्च कलहोत्सुकाः॥१६॥

सब देश ईति¹ रहित, खेतीकी उपज अच्छी, सब राजा प्रसन्न, प्राणी सुखी यह प्रभव संवत्का फल है ॥ ११ ॥ राजा दण्डनीतिमें तत्पर, बहुत खेती, बहुत वर्षा होवे। विभव संवत्सरमें सब लोग सुखी और निर्वैर हों॥१२॥ शुक्लसंवत्में सुजनोंसहित सब लोग प्रसन्न हों,राजा परस्पर जीतनेकी इच्छासे युद्ध करें ॥ १३ ॥ प्रमोदसंवत्में राजा और मनुष्य प्रसन्न हों, रोग और भयरहित हों ईति तथा शत्रुओंका नाश हो ॥ १४ ॥ प्रजापति वर्षमें अपनी मर्यादाको मनुष्य रेखामात्र भी न छोडे, खेती और वर्षा अच्छी हो ॥१५॥ अंगिरा वर्षमें मनुष्य निरंतर अतिथियोंके साथ अन्नादिभोग करें सब लोग और राजा कलहकारी होवें ॥ १६ ॥

श्रीमुखाब्देऽखिला धात्री बहुशस्यार्घसंयुता ॥
अध्वरे निरता विप्रा वीतरोगा विवैरिणः ॥ १७ ॥
भावाब्दे प्रचुरा रोगा मध्यशस्यार्घवृष्टयः ॥
राजानो युद्धनिरतास्तथापि सुखिनो जनाः ॥ १८ ॥
प्रभूतपयसो गावः सुखिनः सर्वजन्तवः ॥
सर्वकामक्रियासक्तो युवाब्दे युवतीजनः ॥ १९ ॥
धातृवर्षेऽखिलाः क्ष्मेशाः संग्रामासक्तमानसाः ॥
संपूर्णा धरणी भाति बहुशस्यार्घवृष्टिभिः ॥ २० ॥

श्रीमुख वर्षमें पृथ्वी धनधान्यसे पूर्ण हो ब्राह्मण यज्ञ करें रोग और बैर रहित हों ॥ १७ ॥ भाव वर्षमें बहुत रोग हो, वर्षा मध्यम हो तथा राजा युद्ध करें तथापि मनुष्य सुखी हों ॥ १८ ॥ गौ बहुत दूध देवें सब प्राणी प्रसन्न हों । युवा वर्षमें स्त्रीजन कामक्रियामें आसक्त हों ॥ १९ ॥ धाता वर्षमें सब राजा संग्राममें मन लगावें सब पृथ्वी वर्षाद्वारा धनधान्यसे पूर्ण होवे ॥ २० ॥

ईश्वराब्देऽखिलाञ्जन्तून्धात्री धात्रीव सर्वदा ॥
पोषयत्यखिलाँल्लोकान्नात्र कार्या विचारणा ॥ २१ ॥

---

१ अतिवर्षा, वर्षाका न होना, टिड्डी, मूसे, पक्षी आदिकोंकी अधिकता ईति है ।

बहुवृष्टिः प्रजायेत बहुधान्यस्य वत्सरे ॥
विविधैर्धान्यनिचयैः संपूर्णा चाखिला धरा ॥ २२ ॥
न मुंचति पयोवाहः कुत्रचित्प्रचुरं जलम् ॥
मध्यमा वृष्टिरर्थश्च नूनमब्दे प्रमाथिनि ॥ २३ ॥
विक्रमाब्दे धराधीशा विक्रमाक्रान्तमूर्तयः ॥
सर्वत्र सर्वदा मेघा मुंचति प्रचुरं जलम् ॥ २४ ॥
वृषभाब्देऽखिलाः क्ष्मेशा युद्ध्यन्ते वृषभा इव ॥
मत्ताः प्रसक्ता विप्रेंद्राःसततं यजतान्सुरान् ॥ २५ ॥
चित्रार्थवृष्टिशस्याद्यैर्विचित्रा निखिला धरा ॥
निराकुलाखिला लोकाश्चित्रभानोश्च वत्सरे ॥ २६ ॥

ईश्वर वर्षमें पृथ्वी सब प्राणियोंको माताकी समान पालन करे इसमें संदेह नहीं ॥ २१ ॥ बहुधान्य वर्षमें बहुत वर्षा हो, पृथ्वी अनेक प्रकारके अन्नसे पूर्ण हो ॥ २२ ॥ प्रमाथी वर्षमें कहीं भी वर्षा न हो अर्थात् मध्यम वर्षा होवे ॥ २३ ॥ विक्रम वर्षमें राजा युद्ध करें और वर्षा तथा सब धान्य अधिक होवें ॥ २४ ॥ वृषभ वर्षमें सब राजा मत्तवृषभोंके समान युद्ध करें और ब्राह्मण निरंतर देवताओंका पूजन करें ॥ २५ ॥ वर्षा विचित्र हो, सब पृथ्वी धनसे पूर्ण हो, चित्रभानु संवत्में सब लोक प्रसन्न हों ॥ २६ ॥

सुभानुवत्सरे भूमौ भूमिपानां च विग्रहः ॥
जायते घोररूपेण सर्वभूतभयंकरः ॥ २७ ॥
कथंचिन्निखिला लोकास्तरंति प्रतिपत्तनम् ॥
रोगशोकसमावेगान् क्रूरे तारणकाब्दके ॥ २८ ॥
पार्थिवाब्दे च राजानः सुखिनः स्युर्भृशं जनाः ॥
बहुभिः फलपुष्पाद्यैर्विविधैश्च पयोधरैः ॥ २९ ॥
व्ययाब्दे निखिला लोका बहुव्ययपरा भृशम् ॥
उद्विग्ना दुःखभारेण भूमिभीतिश्च सर्वदा ॥ ३० ॥

सुभानु वर्षमें राजाओंमें युद्ध हो जिससे प्राणी डरें ॥ २७ ॥ तारण संवत्में प्राणी कठिनतासे रोग शोक और संकटमें पार हों ॥ २८ ॥ पार्थिव संवत्में सब राजा प्रसन्नहों मनुष्य प्रसन्न रहें पृथ्वी धन धान्यसे पूर्ण तथा वर्षा बहुत हो ॥ २९ ॥ व्यय संवत्में सब मनुष्य बहुत खर्चकरें और पृथ्वीपर दुःख होवे ॥ ३० ॥

सर्वजिद्वत्सरे सर्वे जनास्त्रिदशसन्निभाः ॥
राजानो विलयं यांति वीरसंग्रामभूमिषु ॥ ३१ ॥
सर्वधार्यब्दके भूपाः प्रजापालनतत्पराः ॥
प्रशान्तवैराः सर्वत्र बहुशस्यार्घवृष्टयः ॥ ३२ ॥
शीतलादिविकारःस्याद्बालानां तस्करा जनाः ॥
अल्पक्षीरास्तथा गावो विरोधश्च विरोधिनि ॥ ३३ ॥
मुष्णंति तस्करा लोकं विकृतिः प्राकृतिस्तथा ॥
विकारा अल्पवृष्टिश्च विकृतेब्दे प्रजारुजः ॥ ३४ ॥
स्वल्पा वृष्टिः स्वल्पधान्यं खण्डवृष्टिर्नृपक्षयः ॥
छत्रभंगः प्रजापीडा खरेऽब्दे खरता जने ॥ ३५ ॥
सुभिक्षं सुखिनो लोका व्याधिशोकविवर्जिताः ॥
नंदनं च धनैर्धान्यैर्नन्दने वत्सरे भवेत् ॥ ३६ ॥
युद्ध्यन्ते भूभृतोऽन्योन्यं लोकानां च धनक्षयः ॥
दुर्भिक्षं न क्वचित्स्वस्थबहुसस्यार्घवृष्टयः ॥ ३७ ॥
जयमंगलघोषाद्यैर्धरणी भाति सर्वदा ॥
जयाब्दे धरणीनाथाः संग्रामे जयकांक्षिणः ॥ ३८ ॥
मन्मथाब्दे जनाः सर्वे तस्करा अतिलोलुपाः ॥
शालीक्षुयवगोधूमैर्नयनाभिनवा धरा ॥ ३९ ॥
दुर्मुखाब्दे मध्यवृष्टिरीतिचौराकुला धरा ॥

महावैरा महीनाथा वीरवारणवाजिभिः ॥ ४० ॥
हेमलम्बे त्वीतिभीतिर्मध्यशस्यार्घवृष्टयः ॥
भातिभूर्भूपतिक्षोभःखड्गविद्युल्लतादिभिः ॥ ४१ ॥
विलंबिवत्सरे भूपाः परस्परविरोधिनः ॥
प्रजापीडा त्वनर्थत्वं तथापि सुखिनो जनाः ॥४२ ॥
विकार्यब्देऽखिला लोकाः सरोगा वृष्टिपीडिताः ॥
पूर्वं शस्यफलं स्वल्पं बहुलं चापरं फलम् ॥ ४३ ॥
शार्वरीवत्सरे पूर्णा धरा शस्यार्घवृष्टिभिः ॥
जनाश्च सुखिनः सर्वे राजानः स्युर्विवैरिणः ॥४४ ॥
प्लवाब्दे निखिला धात्री वृष्टिभिः प्रवसंति भाः ॥
रोगाकुला त्वीतिभीतिः सम्पूर्णं वत्सरे फलम् ॥४५॥
शुभकृद्वत्सरे पृथ्वी राजते विविधोत्सवैः ॥
आतंकचौरभयदा राजानः समरोत्सुकाः ॥ ४६ ॥
शोभने वत्सरे धात्री प्रजानां रोगशोकदा ॥
तथापि सुखिनो लोका बहुशस्यार्घवृष्टयः ॥ ४७ ॥
क्रोधाब्दे त्वखिला लोका क्रोधलोभपरायणाः ॥
ईतिदोषेण सततं मध्यशस्यार्घवृष्टयः ॥ ४८ ॥
अब्दे विश्वावसौ शश्वद्घोररोगाकुला धरा ॥
सस्यार्घवृष्टयो मध्या भूपाला नीतिभूतयः ॥ ४९ ॥
पराभवाब्दे राज्ञा स्यात्समरः सह शत्रुभिः ॥
आमयक्षुद्रशस्यानि प्रभूतान्यल्पवृष्टयः ॥ ५० ॥

सर्वजित्संवत्सरमें मनुष्य देवताओंकी समान होवें और राजा लोग युद्ध-भूमिमें प्राणोंको त्यागें ॥ ३१ ॥ सर्वधारी वर्षमें राजा प्रजाको पालें और सब वैररहित हों, पृथ्वीपर वर्षा बहुत हो ॥ ३२ ॥ विरोधीसंवत्में शीतला-

दिका विकार हो, तस्करोंका बल हो और गाय थोडा दूध देवे, मनुष्योंमें विरोध होवे ॥ ३३ ॥ चोर बहुत चोरी करें, पीडा हो, धान्य कम हो, प्रजाको पीडा, मध्यम वर्षा यह विकृत् संवत्का फल है ॥ ३४ ॥ खर संवत्सरमें कम वर्षा, कम धान्य हो, खण्डवृष्टि, राजाका नाश, छत्रभंग, प्रजामें पीडा, मनुष्योंमें क्रूरता हो ॥ ३५ ॥ नन्दनवत्सरमें सुभिक्ष, लोक सुखी, व्याधि शोकसे रहित, धन धान्यकी अधिकतासे आनन्द हो ॥३६॥ विजय संवत्सरमें राजा परस्पर संग्राम करें, लोकोंका धनक्षय हो, दुर्भिक्ष पडे, कहीं स्वस्थता हो, वर्षा और धान्य प्राप्ति अच्छी हो ॥ ३७ ॥ जय संवत्सरमें जय, मंगल शब्दोंसे पृथ्वी शोभित हो, राजा संग्राममें जयकी इच्छा करें ॥ ३८ ॥ मन्मथ वर्षमें लोग चोर और दूसरे महालोभी हों, धान, ईख, यव, गेहूंसे पृथ्वी पूर्ण हो ॥ ३९ ॥ दुर्मुख वर्षमें मध्यम वर्षा हो, ईति और चोरोंकी अधिकतासे पृथ्वी व्याकुल हो और राजा, वीरगण तथा हाथी घोडोंमें विरोधि हो ॥ ४० ॥ हेमलम्ब संवत्में ईतिभय, मध्यम धान्य भाव, वर्षा हो, पृथ्वी शोभित और राजाओंको क्षोभ हो, बिजली व खड्ग अधिक चमकें ॥ ४१ ॥ विलम्बी संवत्में राजा परस्पर विरोध करें, प्रजामें रोग और अनर्थ हो, परंतु तोभी मनुष्य सुखी हों ॥ ४२ ॥ विकारी वर्षमें सब प्राणी रोग और वर्षासे पीडित हों, पहले खेती कम हो परन्तु पीछे अधिक हो ॥ ४३ ॥ शार्वरी वर्षमें पृथ्वी धान्य तथा वृष्टिसे पूर्ण हो, सब मनुष्य प्रसन्न हों और राजा लोग आपसमें वैररहित हों ॥ ४४ ॥ प्लव वर्षमें पृथ्वीपर बहुत वर्षा हो, रोग अधिक हो और ईतिभीति तथा रोग रहै यह वर्षभरका संपूर्ण फल है ॥ ४५ ॥ शुभकृत् वर्षमें पृथ्वी अनेक उत्सवोंसे शोभित हो, रोग, शंका तथा चौरोंसे भयकारिणी हो, राजा युद्धकी इच्छा करें ॥ ४६ ॥ शोभन वर्षमें पृथ्वी प्रजाको रोग, शोक देवे तथापि लोक सुखी रहैं और धान्य और वर्षा अधिक हो ॥ ४७ ॥ क्रोधी संवत्सरमें सब लोग क्रोध और लोभपरायण हों, ईति दोषसे वर्षा व धान्य मध्यम होवे ॥ ४८ ॥ विश्वावसु वर्षमें पृथ्वी घोर रोगसे व्याकुल हो, धान्यभाव तथा वर्षा मध्यम हो और राजा नीतिसे वर्ते ॥ ४९ ॥ पराभव वर्षमें राजाओंका शत्रुओंके साथ युद्ध हो, रोग तथा लघु अन्न अधिक हों और वर्षा कमती हो ॥ ५० ॥

प्लवंगाब्दे मध्यवृष्टी रोगचौराकुला धरा ॥
अन्योन्यसमरे भूपाः शत्रुभिर्हृतभूमयः ॥ ५१ ॥
कीलकाब्दे त्वीतिभीतिःप्रजाक्षोभनृपाहवौ ॥
तथापि वर्द्धते लोकः समधान्यार्घवृष्टिभिः ॥ ५२ ॥
सौम्याब्दे सुखिनो लोका बहुशस्यार्घवृष्टिभिः ॥
विवैरिणो धराधीशा विप्राश्चाध्वरतत्पराः ॥ ५३ ॥
साधारणाब्देवृष्ट्युत्थं भयं साधारणं स्मृतम् ॥
विवैरिणो धराधीशाः प्रजाः स्युः स्वच्छचेतसः॥५४॥
विरोधकृद्वत्सरे तु परस्परविरोधिनः ॥
सर्वे जना नृपाश्चैव मध्यशस्यार्घवृष्टयः ॥ ५५ ॥
भूपाहवो महारोगो मध्यशस्यार्घवृष्टयः ॥
दुःखितो जन्तवः सर्वे वत्सरे परिधाविनि ॥ ५६ ॥
प्रमाथिवत्सरे तत्र मध्यशस्यार्घवृष्टयः ॥
प्रजाः कथंचिज्जीवंति समात्सर्य्याः क्षितीश्वराः ॥५७॥
आनंदाब्देऽखिला लोकाः सर्वदानन्दचेतसः ॥
राजानः सुखिनः सर्वे बहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥ ५८ ॥
स्वस्वकार्यरताः सर्वे मध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥
राक्षसाब्देऽखिला लोका राक्षसा इव निष्क्रियाः॥५९॥
नलाब्दे मध्यसस्यार्घवृष्टिभिः प्रवरा धरा ॥
नृपसंक्षोभसंजाता भूरितस्करभीतयः ॥ ६० ॥
पिंगलाब्दे त्वीतिभीतिर्मध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥
राजानो विक्रमाक्रांता भुजते शत्रुमेदिनीम् ॥ ६१ ॥
वत्सरे कालयुक्ताख्ये सुखिनः सर्वजन्तवः ॥

संत्यथापि च सस्यानि प्रचुराणि तदा गदाः ॥ ६२॥
सिद्धार्थिवत्सरे भूयो ज्ञानवैराग्ययुक्प्रजाः ॥
सकला वसुधा भाति बहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥ ६३ ॥
रौद्रेब्दे नृपसंभूतक्षोभक्लेशसमन्विताः ॥
सततं त्वखिला लोका मध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥ ६४ ॥
दुर्मत्यब्देखिला लोका भूपा दुर्मतयः सदा ॥
तथापि सुखिनः सर्वे संग्रामाः संति चेदपि ॥ ६५ ॥
सर्वसस्ययुता धात्री पालिता धरणीधरैः ॥
पूर्वदेशविनाशः स्यात्तत्र दुंदुभिवत्सरे ॥ ६६ ॥
आहवे निहताः सर्वे भूपा रोगैस्तथा जनाः ॥
यथाकथंचिज्जीवंति रुधिरोद्गारिवत्सरे ॥ ६७ ॥
रक्ताक्षिवत्सरे सस्यवृद्धिर्वृष्टिरनुत्तमा ॥
प्रेक्षन्ते सर्वदान्योन्यं राजानो रक्तलोचनाः ॥ ६८ ॥
क्रोधाब्दे मध्यवृष्टिः स्यात्पूर्वदेशे च वृद्धयः ॥
सम्पूर्णमितरत्सर्वे भूपाः क्रोधपरायणाः ॥ ६९ ॥
कार्पासगंधतैलेक्षुमधुसस्यविनाशनम् ॥
क्षीयमाणाश्चापि नरा जीवंति क्षयवत्सरे ॥ ७० ॥

प्लवंग वर्षमें थोडी वर्षा और पृथ्वी रोग तथा चोरोंसे व्याकुल होय, राजा परस्पर युद्धमें प्रवृत्त हों और शत्रुओंसे उनकी भूमि हरिजाय ॥६१॥ कीलक वर्षमें ईतिभीति, प्रजामें क्षोभ और राजाओंमें संग्राम हो तिसपर भी सस्ते धान्य और सुवृष्टियोंसे संसारकी वृद्धि हो ॥ ६२ ॥ सौम्य वर्षमें सब लोक अधिक वर्षा व धान्यकी सस्ती होनेसे सुखी हों, राजा वैरहीन, ब्राह्मण यज्ञ करनेमें तत्पर हों ॥ ६३ ॥ साधारण वर्षमें वर्षाका कुछ भय हो, राजा वैरहीन और प्रजा आनंदमें रहैं ॥ ६४ ॥ विरोधी संवत्सरमें मनुष्य परस्पर विरोध करें तैसेही राजा भी परस्पर क्रोध करें और वर्षा तथा

धान्यभाव मध्यम हो ॥ ५५ ॥ परिधावी वर्षमें राजाओंमें युद्ध हो, महारोग, वर्षा एवं अन्नका भाव मध्यम हो और सब जीव दुःखी हों ॥ ५६ ॥ प्रमाथी वर्षमें मध्यम सस्यार्घ और वर्षा हो, प्रजा किसी तरह जीवित रहें और राजाओंमें ईर्षा होवे ॥ ५७ ॥ आनंद वर्षमें वर्षा अधिक तथा धान्य सस्ता होनेसे प्रजा सदा आनंदसे रहें, राजा भी सुखी हों ॥ ५८ ॥ सब अपने २ कार्योंमें रत होयँ व वर्षा धान्यभाव मध्यम हो, राक्षस वर्षमें सब लोक राक्षसोंकी समान क्रियारहित हों ॥ ५९ ॥ नल संवत्में धान्य भाव और वर्षाकी समतासे पृथ्वी श्रेष्ठ हो, राजाओंमें क्षोभ और चौरोंका भय हो ॥ ६० ॥ पिंगल वर्षमें ईतिभीति, हो, मध्यम वर्षा और धान्यभाव हो, राजालोग पराक्रम युक्त हों, शत्रुओंकी पृथ्वीको भोगें ॥ ६१ ॥ काल संवत्में सब प्राणी सुखी हों, खेती अच्छी हो परंतु रोग अधिक फैलें ॥ ६२ ॥ सिद्धार्थ वर्षमें प्रजा ज्ञान और वैराग्य युक्त हों तथा धान्यकी वृद्धि और वर्षासे सब पृथ्वी शोभित हो ॥ ६३ ॥ रौद्रवर्षमें राजाओंसे उत्पन्न क्षोभ और क्लेशसे सब प्राणियोंको क्लेश हो और वर्षा तथा धान्य कम हो ॥ ६४ ॥ दुर्मति वर्षमें सब लोग और राजा दुर्मति युक्त हों, संग्राम भी होवे तथापि सब सुखी हों ॥ ६५ ॥ दुंदुभि वर्षमें पृथ्वी सब धान्योंसे पूर्ण हो, सब राजा भली प्रकार पृथ्वी पालन करें और पूर्व देशका नाश हो ॥ ६६ ॥ रुधिरोद्गारी वर्षमें राजा युद्धमें, और लोग रोगमे मरें और बडे कष्टसे प्रजा प्राणधारण करें ॥ ६७ ॥ रक्ताक्षी संवत्में खेतीकी वृद्धि और वर्षा अच्छी न हो, राजा लोग लाल नेत्र करके एक दुसरेको देखें ॥ ६८ ॥ क्रोधी वर्षमें मध्यम वर्षा हो परन्तु पूर्व देशमें अधिक हो और सब राजालोग परस्पर क्रोध करें ॥ ६९ ॥ क्षयवर्षमें कपास, गंध, तेल, ईख, मधु तथा खेतीकी हानि हो और मनुष्य भी क्षय होकर किसी प्रकार प्राणधारण करें ॥ ७० ॥

इति षष्टिसंवत्सरफलम् ।

अथ संवत्सरात्सुभिक्षादिज्ञानम् ।

त्रिघ्ने संवत्सरैर्युक्ते शरैर्भक्तेऽथ सप्तभिः ॥
चतुर्द्वित्रिमिते शेषे सुभिक्षं विपुलं भवेत् ॥ ७१ ॥

त्रिपंचके सुभिक्षं च षड्भूसंख्ये च मध्यमम् ॥
शून्ये तु रौरवं ज्ञेयं फलं वर्षे बुधैः स्मृतम् ॥ ७२॥

विक्रमादित्यका जो संवत् होय उसको तीनसे गुणाकर पांच जोड देवे फिर सातका भाग देवे तब दो चार वा तीन शेष बचें तो अत्यन्त सुभिक्ष होवे ॥ ७१ ॥ तीन और पांच बचें तो सुभिक्ष हो और छः एक बचे तो मध्यम संवत् हो और शून्य बचे तो घोर दुर्भिक्ष हो ऐसा पंडितोंने कहाहै ॥ ७२ ॥

अथ द्वितीयप्रकारः ।

द्विघ्नः संवत्सरो रामैर्हीनो भक्तो नगैस्ततः ॥
शेषे बाणमिते युग्मे सुभिक्षं हायने भवेत् ॥ ७३ ॥
वेदचंद्रमिते ज्ञेयं दुर्भिक्षं खे तु रौरवम् ॥
रसानलमिते मध्यमेतदर्घे फलं बुधैः ॥ ७४॥

विक्रम संवत्को दुगुणा करके तीन घटावे फिर बाकी रहे अंकमें सातका भाग देवे जो शेष पांच वा दो बचें तो उस वर्षमें सुभिक्ष होय ॥ ७३ ॥ तथा चार एक बचे तो दुर्भिक्ष हो और शून्य बचे तो घोर दुर्भिक्ष होवे अथवा छः तीन बचें तो मध्यम अर्घ होय इसप्रकार भावका फल जाने॥७४॥

द्विपंचाशद्युते वर्षे दिवसानां शतत्रये ॥
सुभिक्षं केचिदप्याहुः परं देशेषु विग्रहः ॥ ७५ ॥
बाणेषु त्रिदिने कालो मध्यमोऽद्रिशरत्रिके ॥
वर्षे खषट्त्रिभिः श्रेष्ठं सुभिक्षं तत्र निश्चितम् ॥ ७६ ॥

संवत् जो ३५२ दिनका हो तो कोई मुनि उसे सुभिक्ष कहते हैं परंतु देशमें विग्रह हो ॥ ७५ ॥ और ३५५ दिनका वर्ष हो तो दुर्भिक्ष हो तथा ३५७ दिनका हो तो मध्यम और ३६० दिनका हो तो श्रेष्ठ सुभिक्ष करनेवाला है ॥ ७६ ॥

अथैकस्मिन्मासे सूर्यादिवारफलम् ।

यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम् ॥
दुर्भिक्षं छत्रभंगः स्यात्तदास्ते च महद्भयम् ॥ ७७ ॥

सोमस्य पंच वारास्तु यत्र मासे भवंति हि ॥
धनधान्यसमृद्धिः स्यात्सुखं भवति सर्वदा ॥ ७८ ॥
यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंच वासराः ॥
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥ ७९ ॥
बुधस्य पंच वाराश्चेज्जायन्ते च निरन्तरम् ॥
प्रजानां सुखमत्यंतं सुभिक्षं च प्रजायते ॥ ८० ॥
यत्र मासे पंच वारा जायन्ते च बृहस्पतेः ॥
विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धश्च जायते ॥ ८१ ॥
शुक्रस्य पंच वाराः स्युर्यत्र मासे निरंतरम् ॥
प्रजावृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्त्तते ॥ ८२ ॥
शनेश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कंपते फणी ॥
ईशानदेशभंगश्च वह्निदाहो महर्घता ॥ ८३ ॥

जिस मासमें पांच रविवार हों तो दुर्भिक्ष, छत्रभंग तथा महाभय हो॥७७॥ पांच चंद्रवार हों तो धनधान्यसे सुख होवे ॥ ७८ ॥ पांच मंगलवार हों तव रक्तसे पृथ्वी पूरित होय तथा छत्रभंग होय ॥ ७९ ॥ पांच बुधवार हों तो प्रजाको सुख और सुभिक्ष होय ॥ ८० ॥ पाच गुरुवार हों तो पश्चिम-देशमें विग्रह तथा खड्गयुद्ध होवे ॥ ८१ ॥ पांच शुक्रवार हों तव प्रजाकी वृद्धि और सुभिक्ष तथा सुख होवे ॥ ८२ ॥ पांच शनिवार हों तव पातालमें शेषनाग काँपे, ईशान देशका भंग, अन्न तेज और अग्निभय हो ॥ ८३ ॥

अथ मेषार्कलग्नफलम् ।

चैत्रस्य शुक्लपक्षे तु लोकानां हितकाम्यया ॥
मेषसंक्रातिवलायां लग्नं शोध्यं शुभाशुभम् ॥ ८४ ॥
यदा शुभग्रहैर्दृष्टं लग्नं स्याच्च तदा शुभम् ॥
धनधान्यादिसंपूर्णं सर्वं वर्षं शुभावहम् ॥ ८५ ॥
भावा द्वादश ते मासाः सौम्याः क्रूरा ग्रहाः पुनः ॥

तेषु मासेषु देवेशि फलं ज्ञेयं शुभाशुभम् ॥ ८६ ॥
मेषप्रवेशलग्ने वा यदि स्याद्वर्षजन्मनि ॥
सप्तमस्थो यदा पापो धान्यजातं विनाशयेत् ॥८७॥
धनेऽथाये च सौम्यः स्यात्केंद्रे वा मेषसंक्रमे ॥
स्वर्क्षे शुभसुहृद्दृष्टः सुभिक्षं व्यत्ययोऽन्यथा ॥८८ ॥

चैत्र शुदिमें लोकोंके हितके लिये मेष संक्रान्तिके समय लग्नका शुभाशुभ शोधन करे ॥ ८४ ॥ जो शुभग्रहकी लग्नपर दृष्टि हो वो शुभ हो धनधान्यादियुक्त संपूर्ण वर्ष शुभ हो ॥ ८५ ॥ मेषादि द्वादश भावोंमें जिनमें सौम्यग्रह होवें सब मास श्रेष्ठ होवें यदा क्रूर ग्रह हों तो उन महीनोंमें उनके अनुसार अशुभ फल जानना ॥ ८६ ॥ मेष संक्रांति प्रवेशमें और वर्ष प्रवेशके समयमें सप्तम स्थानमें पापग्रह हो तो धान्यका नाश करे ॥ ८७ ॥ मेषसंक्रांति प्रवेशमें धनस्थान, एकादशस्थान वा केंद्रस्थानमें वा स्वक्षेमें शुभग्रह तथा मित्रग्रहकी दृष्टियुक्त शुभग्रह हो तो सुभिक्ष हो अन्यथा दुर्भिक्ष हो ॥ ८८ ॥

वर्षलग्नविचारः ।

गणयेच्चैत्रमासस्य शुक्लपक्षस्य मूलतः ॥
प्रतिपल्लग्नवेलायां लग्नं शोध्यं शुभाशुभम् ॥ ८९ ॥
मेषलग्ने तु पूर्वस्यां दुर्भिक्षं राजविग्रहः ॥
दक्षिणस्यां सुभिक्षं स्याद्बहुधान्यरसा च भूः ॥ ९० ॥
धान्यानां विक्रये लाभः पूर्णमेवमहोदयः ॥
घृततैलादिवस्तूनां पण्यानां च महर्घता ॥ ९१ ॥
उत्तरस्यां सुभिक्षं स्याद्राज्ञामुद्वेगकारणम् ॥
मध्यदेशे महावृष्टिर्निष्पत्तिर्धान्यसन्ततेः ॥ ९२ ॥
वृषेपि पश्चिमे कालः पूर्वस्यां राजविग्रहः ॥
उदग्धान्यर्द्धिनिष्पत्तिर्दक्षिणस्यां सुकालकः ॥ ९३ ॥

मिथुने बहुलं युद्धं पूर्वस्यां धान्यनष्टता ॥
उदग्दक्षिणयोर्मेघा बहवो धान्यसंग्रहः ॥ ९४ ॥
पश्चिमायां स्वल्पमेघाश्छत्रभंगश्च विग्रहः ॥
मध्यदेशेऽर्द्धनिष्पत्तिश्चतुष्पदसरोगता ॥ ९५ ॥

चैत्रमासके शुक्लपक्षमें प्रतिपदाके मूलके लग्नसे वर्षका शुभाशुभ देखे ॥ ८९ ॥ यदि मेषलग्न हो तो पूर्वमें दुर्भिक्ष तथा राज्यविग्रह हो, दक्षिणमें सुभिक्ष, पृथिवीमें बहुत धान्य और रस हो ॥ ९० ॥ धान्यके वेचनेमें लाभ, पूर्ण मेघ वर्षे, घृत, तेल तथा व्यापारकी सबही वस्तु तेज होवें ॥ ९१ ॥ उत्तरमें सुभिक्ष, राजाओंमें उद्वेग, मध्यदेशमें महावर्षा, धान्यकी उत्पत्ति अच्छी हो ॥ ९२ ॥ वृषलग्नमें प्रारंभ हो तो पश्चिममें काल, पूर्वमें राज-विग्रह और उत्तरमें धान्यकी प्राप्ति तथा दक्षिणमें सुकाल हो ॥ ९३ ॥ मिथुन लग्नमें वर्ष प्रारंभ हो तो युद्ध बहुत होवे, पूर्वमें धान्य नष्ट हों तथा उत्तर और दक्षिणमें अधिक मेघ हों और धान्यका संग्रह हो ॥९४॥ पश्चिममें वर्षा कम होवे, छत्रभंग और विग्रह हो तथा मध्यमदेशमें अर्द्ध प्राप्ति और पशुओंमें रोग हो ॥ ९५ ॥

कर्के सुखं तु पूर्वस्यामुत्तरस्यां तु विग्रहः ॥
स्याच्चासनबलं यावद्दुर्भिक्षं पश्चिमे दिशि ॥ ९६ ॥
सिंहलग्ने दक्षिणस्यां दंष्ट्राभयमुदीर्यते ॥
धान्ये समर्घता मासषट्कं यावद्धनो महान् ॥ ९७ ॥
पश्चिमायां धातुवस्तु फलादीनां महर्घता ॥
उत्तरस्यां महावृष्टिः सुखं राज्ये प्रजासु च ॥ ९८ ॥
पूर्वस्यामर्द्धनिष्पत्तिः श्रेयोऽग्रे मासपंचकम् ॥
मध्यदेशे राजयुद्धं मासपंचकमुद्धतम् ॥ ९९ ॥
कन्यायां सुस्थितिः प्राच्यां घृते चैव महर्घता ॥
मंजिष्ठादिसमर्घत्वं यावन्मासत्रयं भवेत् ॥ १०० ॥
मारिर्दक्षिणदेशे स्यात्तथा वह्न्युपद्रवः ॥

लोकदुःखं पश्चिमायां विग्रहोऽन्नसमर्घता ॥ १०१ ॥
चतुष्पदसुखं प्राच्यामुदीच्यां राजविग्रहः ॥
मध्यदेशे प्रजाभंगः समर्घत्वं घृते पुनः ॥ १०२ ॥

कर्कलग्नमें प्रवेश हो तो पूर्वमें सुख, उत्तरमें विग्रह, आसनबल और पश्चिममें दुर्भिक्ष हो ॥ ९६ ॥ सिंहमें प्रवेश हो तो दक्षिणमें सर्पभय, छःमासतक धान्य सस्ता रहे और मेघाच्छादन हो ॥ ९७ ॥ पश्चिममें धातुवस्तु और फलादिक महँगे हों, उत्तरमें महावर्षा, राजा, प्रजामें सुख हो ॥ ९८ ॥ पूर्वमें अर्द्ध धान्य उत्पन्न हों आगे पांच मास श्रेष्ठ, मध्यदेशमें पांच मासतक राजाओंमें युद्ध हो ॥ ९९ ॥ कन्यालग्नमें प्रवेश हो तो पूर्वदेशवासी प्रसन्न हों, घृतभाव तेज, तीन मास मंजीठ आदि सस्ते हों ॥ १०० ॥ दक्षिणदेशमें महामारीका भय तथा वंग (वंगाला) देशमें उपद्रव होवे, लोकमें दुःख, पश्चिममें विग्रह हो और अन्न सस्ता रहे ॥ १०१ ॥ पूर्वमें पशुओंको सुख हो तथा उत्तरमें राजविग्रह होवे। और मध्यदेशमें प्रजाभंग होवे परन्तु घृत सस्ता रहे ॥ १०२ ॥

तुलालग्ने मध्यदेशे छत्रभंगश्च विग्रहः ॥
धान्यस्य विक्रयः प्राच्यां छत्रभंग उपद्रवः ॥ १०३ ॥
दुर्भिक्षं बहुलो वायुः स्वल्पमेघप्रवर्षणम् ॥
पश्चिमायां महायुद्धं दंष्ट्रभीतिर्महर्घता ॥ १०४ ॥
दक्षिणस्यां सुखं लोके दुर्भिक्षं चोत्तरापथे ॥
मासद्वयं पश्चिमायां किंचिदुत्पातसंभवः ॥ १०५ ॥
वृश्चिके पश्चिमे देशे दुर्भिक्षं नवमासिकम् ॥
उदीच्यामर्द्धनिष्पत्तिः महर्घा धातवस्तदा ॥ १०६ ॥
पूर्वस्या विग्रहो राज्ञां दुःखं मासत्रयं जने ॥
पश्चात्सुखं धान्यनाशो मध्यदेशे प्रजायते ॥ १०७ ॥
दक्षिणस्यां देशभंगो भाविवर्षे प्रजायते ॥

धातूनां विक्रयः कार्यः परतो मासपंचकात्॥१०८॥
धनुर्लग्ने तूत्तरस्यां पूर्वस्यां च सुखं नृणाम् ॥
दुर्भिक्षं प्रबला वृष्टिर्मध्यदेशे सरोगता ॥ १०९ ॥
पश्चिमायां घृतं धान्यं समर्घं मासपंचकम् ॥
दक्षिणस्यां सुखं लोके किंचित्पीडा चतुष्पदे॥११०॥

तुलालग्नमें वर्षप्रवेश हो तो मध्यदेशमे छत्रभंग तथा विग्रह होवे, पूर्वदेशमें धान्यका विक्रय, छत्रभंग तथा उपद्रव हो ॥ १०३ ॥ दुर्भिक्ष हो, तीक्ष्ण पवन चले, मेघ कम वर्षे, पश्चिममें महायुद्ध, सर्पभय, अन्नभाव तेज हो ॥ १०४ ॥ दक्षिणमें सुख, उत्तरमें दुर्भिक्ष, दो महीने पश्चिममें कुछ उत्पात हो ॥ १०५ ॥ वृश्चिकमें प्रवेश हो तो नौ मासतक पश्चिममें दुर्भिक्ष हो, उत्तरमें अर्द्ध धान्य उत्पन्न हो, धातुभाव तेज रहे ॥ १०६ ॥ पूर्वके राजाओंमें विग्रह, तीन महीनेतक मनुष्योंमें दुःख, फिर सुख, मध्यदेशमें धान्यका नाश हो ॥ १०७ ॥ आगेके वर्षमें दक्षिणमें देशभंग हो पांचमास पीछे, धातुओंको वेचना ॥ १०८ ॥ धनलग्नमें प्रवेश हो, तो उत्तर और पूर्वके मनुष्योंको सुख हो, अतिवर्षासे दुर्भिक्ष हो और मध्यदेशमें रोग हो ॥१०९॥ पश्चिममें घृत, धान्य पाचमास सस्ते बिकें, दक्षिण देश वासियोंको सुख, पशुओंमें किंचित् पीडा हो ॥ ११० ॥

मकरे च महोत्पात उत्तरस्यां नृपक्षयः ॥
वर्षमेकं सुनिष्पत्तिः पश्चिमायां महासुखम् ॥ १११ ॥
मध्यदेशेऽर्द्धनिष्पत्तिः किंचिद्धान्यमहर्घता ॥
अकाले मेघवृष्टिः स्याल्लाभो धान्यस्य विक्रयात्११२
कुंभे सुखानि पूर्वस्यामुदग्दुर्भिक्षसंभवः ॥
हाहाकारः पश्चिमायां भवेद्धान्यमहर्घता ॥ ११३ ॥
दक्षिणे विग्रहश्चैव मध्यदेशे महासुखम् ॥
मीनलग्ने दक्षिणस्यां सुखी लोकोऽन्नसंग्रहः ॥ ११४॥

मध्यदेशे धान्यनाशश्छत्रभंगः क्वचिद्भवेत् ॥
एवं द्वादशधा लग्नं ज्ञेयं वत्सरजन्मनि ॥ ११५ ॥

मकर लग्नमें वर्षप्रवेश हो तो उत्तरके राजाओंका नाश तथा महोत्पात हो, एक वर्ष अच्छी उत्पत्ति हो और पश्चिममें महासुख हो ॥ १११ ॥ मध्यदेशमें अर्ध उत्पत्ति, कुछ धान्यभाव तेज, विना समय मेघवृष्टि, धान्य बेचनेमें लाभ ॥ ११२ ॥ कुंभ लग्नमें प्रवेश हो तो पूर्वमें सुख हो और उत्तरमें दुर्भिक्ष, पश्चिममें हाहाकार तथा धान्यभाव तेज हो ॥ ११३ ॥ दक्षिणमें विग्रह, मध्यमदेशमें महासुख होवे । तथा मीनलग्नमें वर्षप्रवेश हो तो दक्षिण देशमें सुख रहे, अन्नका संग्रह करना उचित है ॥ ११४ ॥ और मध्यप्रदेशमें धान्यका नाश, कहीं छत्रभंग भी हो, इस प्रकार इन बारह लग्नोंसे वर्षके जन्मका शुभाशुभ फल जानना ॥ ११५ ॥

मिथुनार्कलग्नफलम् ।

सहस्ररश्मेर्मिथुने प्रवेशे शशाङ्कवाचस्पतिशुक्रसौम्याः ॥ मीने च कन्यां मिथुने स्थिताश्चेत्तदा सुवृष्टिःसकलान्नकर्त्री ॥११६॥
सहस्ररश्मेर्मिथुने प्रवेशे माहेयसूर्यात्मजसैंहिकेयाः ॥ मीने च कन्यां मिथुने स्थिताश्चेत्तदाल्पवृष्टिःप्रियमन्नमुर्व्याम् ॥११७॥

मिथुन राशिपर सूर्य प्रवेश करे उस समय मिथुन, कन्या वा मीन राशिपर चन्द्र, गुरु, शुक्र व बुध हों तो वर्षा तथा सब धान्य उत्पन्न होयँ ॥ ११६ ॥ यदि उस समय मीन, कन्या, मिथुन राशिपर मंगल, शनि, राहु हों तो अल्पवर्षा होवे और दुर्भिक्ष पडे ॥ ११७ ॥

सहस्ररश्मेर्मिथुने प्रवेशे ज्ञशुक्रयोर्मेषनृयुग्मसंस्थयोः ॥
चन्द्रेज्ययोश्चापगयोश्च पापैस्तुलालिसिंहोपगतैः सुवृष्टिः १८॥

तथा बुध, शुक्र तो मेष और मिथुन राशिपर होवें और चन्द्रमा, बृहस्पति धन राशिपर तथा पापग्रह सिंह, तुला, वृश्चिक राशिपर हों तो श्रेष्ठ वर्षा होवे ॥ ११८ ॥

सहस्ररश्मेर्मिथुनप्रवेशे मन्दारयोः कर्कवृषस्थयोश्चेत् ॥
द्विदेहभस्थे हनुजे नि[illegible]षात्तदाल्पवृष्टिः प्रियमन्नमुर्व्याम् ११९

एवं मंगल, शनि इन दोनोंमेंसे एक वृषपर, दूसरा कर्क राशिपर तथा राहु मिथुनपर हो तो अल्पवर्षा तथा धान्यतेज होवे ॥ ११९ ॥

शुभाशुभग्रहैर्मिश्रैःफलं मिश्रं प्रजायते ॥
सूर्ये क्रूरान्गुरुः पश्येत्तदा वृष्टिश्च मध्यमा ॥ १२० ॥

न्यूनाधिक वर्षा करनेवाले ग्रहोंका योग मिलाहुआ हो तो साधारण वा सूर्यसे क्रूरग्रह युक्त हो तथा उसे गुरु देखताहो तो मध्यम वर्षा होवे ॥१२०॥

अगस्त्यप्रकरणम् ।

शतकुम्भसदृशः स्फटिकाभस्तर्पयन्निव महीं किरणाग्रैः ॥
दृश्यते यदि तदाप्रचुरान्ना भूर्भवत्यभयरोगजनाढ्याः १२१

अगस्त्यका तारा चांदी जैसा श्वेत स्फटिक जैसा निर्मल और प्रकाशवान् किरणोंवाला हो तो पृथिवीपर अन्न बहुत होवे तथा लोकमें मनुष्योंको किसी प्रकारका रोग भय नहीं होवे ॥ १२१ ॥

रवौ वा पूर्वफाल्गुन्यां प्राप्ते चैवाष्टमेऽहनि ॥
अगस्त्यस्योदयो लोके न शुभाय क्वचिन्मते ॥१२२॥
कृत्तिकायां रवौ जाते सप्तमे वाष्टमेऽहनि ॥
ऋषेरस्तंगतिः श्रेष्ठा दिवसे यदि जायते ॥ १२३ ॥

सूर्यके पूर्वाफाल्गुनीमें प्राप्त होनेपर आठवें दिन अगस्त्यका उदय हो तो शुभ नहीं यह किसीका मत है ॥ १२२ ॥ सूर्यके कृत्तिका नक्षत्रपर प्राप्त होनेसे सातवें वा आठवे दिनमें अगस्त्यका अस्त होना श्रेष्ठ है ॥ १२३ ॥

रात्रावुदयनं श्रेष्ठं नेष्टश्चास्तंगमो मुनेः ॥
दिवसेऽस्तंगमः श्रेष्ठो नेष्टश्चाभ्युदयस्तदा ॥ १२४ ॥
यद्युदेति दिने प्रातः पीताब्धिर्मुनिपुंगवः ॥
दुर्भिक्षं रौरवं घोरं राष्ट्रभंगं तदा दिशेत् ॥ १२५ ॥

अगस्त्यका रात्रिमें उदय होना श्रेष्ठ है, अस्त होना शुभ नहीं, दिनमें अस्त होना श्रेष्ठ है, उदय होना अशुभ है ॥ १२४ ॥ जो अगस्त्यका उदय प्रातःकाल हो तो दुर्भिक्ष और राज्यभंग हो ॥ १२५ ॥

आदित्येशस्य नाशाय रसनाशाय मङ्गले ॥
शनौ च सर्वनाशाय शेषे वारे शुभप्रदः ॥ १२६ ॥
यद्यगस्त्यस्योदयने वर्षा हर्षाय जायते ॥
सर्वधान्यस्य निष्पत्तिर्न चेद्भिक्षाऽपि दुर्लभा ॥१२७॥

रविवारको उदय हो तो खेती नाश हो, मंगलवारको हो तो रस नाश हो, शनिवारको हो तो सब पदार्थ नाश होवें, किन्तु सौम्यवार हों तो शुभ है ॥ १२६ ॥ अगस्त्यके उदय होनेपर वर्षा हो तो प्रजामें आनंद तथा सब धान्य उत्पन्न होवें किंतु जो वर्षा न हो तो भिक्षाभी नहीं मिले ऐसा दुर्भिक्ष पडे ॥ १२७ ॥

ग्रहयोगप्रकरणम् ॥

प्रायो ग्रहाणामुदयास्तकाले समागमे मण्डलसंक्रमे च ॥
पक्षक्षये तीक्ष्णकरायनान्ते वृष्टिर्गतेऽर्के नियमेन चार्द्राम् ॥ १ ॥

किसीभी ग्रहके उदय व अस्त होनेके समयमें वा एकसे दूसरे मण्डलमें जानेसे, पूर्णमासी वा अमावास्याका क्षय होनेसे वा सूर्यके उत्तरायण दक्षिणायन आनेपर तथा नियमसे विशेष करके आर्द्रा नक्षत्रपर सूर्यके आनेसे प्रायः वर्षा होतीहै ॥ १ ॥

उदये च गुरौ वृष्टिरस्ते वृष्टिर्भृगोः सुते ॥
चलत्यङ्गारके वृष्टिस्त्रिधा वृष्टिः शनैश्चरे ॥ २ ॥

बृहस्पतिके उदय होनेपर, शुक्रके अस्त होनेपर, मंगलके राशि बदलनेपर शनिके उदय अस्त और राशिसे बदलनेपर वर्षा होवे ॥ २ ॥

अतिचारगताः क्रूराः स्वल्पवृष्टिविधायकाः ॥
सौम्या यदा वक्रगतास्तदा वृष्टिविधायिनः ॥ ३ ॥

क्रूरग्रह अतिचारी हों तब अल्प वर्षा होवे और सौम्यग्रह वक्र होवें तब बहुत वर्षा होवे ॥ ३ ॥

क्रूरा वक्रा यदा काले सौम्याः शीघ्रास्तु चागताः ॥
अनावृष्टिश्च दुर्भिक्षं नृपराष्ट्रभयंकराः ॥ ४ ॥

क्रूरग्रह वक्री हों और सौम्यग्रह अतिचारी हों तब अनावृष्टि, दुर्भिक्ष और राजा प्रजाको भय होवे ॥ ४ ॥

अतिचारगते जीवे शनौ वक्रत्वमागते ॥
न तत्पश्यामि तोयं वै यद्धरां धारयिष्यति ॥ ५ ॥

बृहस्पति अतिचारी हो और शनि वक्री हो तो पृथ्वीको धारण करनेवाला जल न दीखे अर्थात् वर्षा नहीं होवे ॥ ५ ॥

शुक्रशौरिद्वयोरस्त एकराशौ यदा भवेत् ॥
अन्नपीडा महादुःखं देशेदेशे च विग्रहः ॥ ६ ॥

शुक्र और शनि एकही राशिपर अस्त हों तो सबही देशोंमें अन्नकष्ट, विग्रह तथा महादुःख होवे ॥ ६ ॥

चंद्रक्षेत्रे शुक्रचंद्रबुधानामुदयो यदि ॥
षण्मासांश्चैव दुर्भिक्षमतिवृष्टिः प्रजायते ॥ ७ ॥

चन्द्र, बुध और शुक्र यह तीनो कर्क राशिमें उदय होवें तो अतिवृष्टिसे छः महीनेतक दुर्भिक्ष होवे ॥ ७ ॥

अग्रतः पृष्ठतो वापि ग्रहाः सूर्यावलम्बिनः ॥
यदा तदा प्रकुर्वंति महीमेकार्णवामिव ॥ ८ ॥
पुरोऽङ्गारे ह्यनावृष्टिः पुरः शुक्रः प्रवर्षणम् ॥
पुरो देवगुरौ वह्निः पुरः सौम्योऽथवानिलः ॥ ९ ॥
सूर्यस्य पुरतो गच्छेद्यदा शुक्रो बुधोपि वा ॥
वर्षाकाले न संदेहस्तदा वृष्टिर्निरन्तरा ॥ १० ॥

सूर्यके आगे अथवा पीछे कोई भी ग्रह आजावे तब बहुत वर्षा होवे ॥८॥ सूर्यसे आगे मंगल हो तो अनावृष्टि, शुक्र हो तो सुवृष्टि होवे, बृहस्पति हो तो अग्निका जोर और बुध हो तो वायुका जोर हो ॥ ९ ॥ यदि सूर्यके आगे बुध, शुक्र हों तो वर्षाकालमें निःसंदेह निरंतर वर्षा होवे ॥ १० ॥

आदित्यो गच्छति ह्यग्रे पृष्ठे भवति भूसुतः ॥
मध्ये सोमसुतो याति सुभिक्षं तत्र दृश्यते ॥ ११ ॥

बुधके आगे सूर्य होवे और पीछे मंगल हो तो सुभिक्ष होवे ॥ ११ ॥

सूर्याग्रे च यदा शुक्रस्तदा वृष्टिः सुशोभना ॥
वारिपूर्णां महीं कृत्वा पश्चात्संचरते गुरुः ॥ १२ ॥

सूर्यके आगे यदि शुक्र हो तो सुवृष्टि होवे और सूर्यके पीछे बृहस्पति होवे तो पृथिवीको जलसे पूर्ण करदेवे ॥ १२ ॥

ऐन्द्रनक्षत्रगावेतौ यदि सूर्यमहीसुतौ ॥
मासं महर्घतां यांति धान्यानि स्वस्थतां पुनः ॥ १३ ॥

सूर्य, मंगल ज्येष्ठा नक्षत्रपर होवें तब एकमास तक सब धान्य महँगे होजावें फिर सस्ते हों ॥ १३ ॥

बुधशुक्रमहीपुत्रा भौजंगर्क्षे समाश्रिताः ॥
नंदंति लोकाः सुखिनः सुभिक्षं जनयंति च ॥ १४ ॥

बुध, शुक्र, मंगल यह आश्लेषा नक्षत्रपर हों तो प्रजा सुखसे आनन्दित हों, सुभिक्ष हो ॥ १४ ॥

अनुराधां गतः सौरिर्ज्येष्ठायां च बृहस्पतिः ॥
पश्चिमस्यां तदा युद्धं प्रजानाशं प्रयांति च ॥ १५ ॥

अनुराधापर शनि हो और ज्येष्ठापर बृहस्पति हो तो पश्चिममें युद्ध हो और प्रजाका नाश हो ॥ १५ ॥

मूले मंदो बुधः स्वात्यां मघायां चंद्रमाः स्थितः ॥
संग्रहे सर्वधान्यानां लाभो भवति नान्यथा ॥ १६ ॥

मूलपर शनि हो, बुध स्वातीपर हो और चन्द्रमा मघापर हो तो सब धान्य संग्रह करने चाहियें, आगे निश्चय लाभ होगा ॥ १६ ॥

श्रवणर्क्षे यदा क्रूरो ग्रहः कश्चित्समाश्रितः ॥
अन्नं महर्घतां याति गोधूमश्च विशेषतः ॥ १७ ॥

श्रवणपर कोई भी क्रूरग्रह होवे तो अन्न महंगा होवे, विशेष करके गेहूं तेज हों १७

विश्वे भे च गतो मंदः सप्तमर्क्षे यदा रविः ॥
तदा जलविनाशः स्यात्प्रजानां कंदनं महत् ॥ १८ ॥

उत्तराषाढापर शनि होवे और शनिसे सातवें सूर्य होवे तब वर्षाका नाश होवे तथा प्रजाको पीडा हो ॥ १८ ॥

वासवर्क्षे यदा सौरिर्भूमिपुत्रेण संयुतः ॥
न वर्षन्ति जलं मेघाः सस्यहानिश्च जायते ॥ १९ ॥

धनिष्ठापर शनि और मंगल हों तो मेघ वर्षा नहीं करें जिससे खेतियां नष्ट होवें ॥ १९ ॥

वारुणे च यदा जीवश्चित्रायां धरणीसुतः ॥
नाशयंति च गोधूमान्सर्वसस्यमहर्घता ॥ २० ॥

शतभिषापर गुरु हों और चित्रापर मंगल हों तब गेहूंको नाश करें और सब धान्य महँगे होवें ॥ २० ॥

एकनक्षत्रगा ह्येते सौम्यशुक्रदिनाधिपाः ॥
सर्वधान्यमहर्घत्वं तदा भयविवर्धकाः ॥ २१ ॥

बुध, शुक्र आर सूर्य ये तीनों जो एक नक्षत्रपर हों तो सब धान्य महँगे होवें और प्रजामें भय होवे ॥ २१ ॥

यदा जीवयुतो मंदो जीवाद्वा सप्तमे स्थितः ॥
तदा प्रजा विनश्यंति भूयश्चान्नपरिक्षयः ॥ २२ ॥

शनि और गुरु एकही राशिपर हों अथवा गुरुसे सातवें शनि हो तो प्रजाका नाश तथा अन्न महंगा होवे ॥ २२ ॥

कर्कमीनमृगस्त्रीषु शनिभौमौ यदा स्थितौ ॥
तदा युद्धाकुला पृथ्वी धनधान्यविवर्जिता ॥ २३ ॥

कर्क, मीन, मकर, कन्या इन राशियोंपर जब शनि तथा मंगल स्थित हो तो पृथ्वी युद्धसे व्याकुल तथा धान्यसे रहित हो ॥ २३ ॥

मिथुने वा धनुर्मीने राशौ मन्दः समाश्रितः ॥
तदा भूपा विनश्यंति पृथ्वी शोणितपूरिता ॥ २४ ॥

मिथुन, धन, मीन इन राशियोंपर शनि होवे तब राजाओंका नाश होवे, पृथ्वी रुधिरसे पूरित होजावे ॥ २४ ॥

रौद्रनक्षत्रगावेतौ यदि सूर्यमहीसुतौ ॥
मासं महर्घतां यांति धान्यानि स्वस्थतां पुनः २५॥

सूर्य, मंगल यदि आर्द्रापर हों तो एक मासतक धान्य तेज रहें, फिर सस्ते होजावें ॥ २५ ॥

मंगलः सौरिशुक्रौ च धनिष्ठायां स्थिता यदि ॥
गर्जिताश्च न वर्षंति तोयबिन्दुं पयोधराः ॥ २६ ॥

मंगल, शनि, शुक्र यदि धनिष्ठापर होवें तब गर्जना करतेहुए भी मेघ बिंदुमात्र जल नहीं वर्षावें ॥ २६ ॥

छत्रस्य भंगः सलिलस्य नाशो लोकेषु पीडा पशुवित्तहानिः॥
स्याच्छ्रीविहीनो यदि चक्रवर्त्ती वक्रे च शौरौ पितृसंस्थितेच२७

मघानक्षत्रपर जो शनि स्थित हो फिर वक्री होवे तो छत्र भंग हो, जल, पशु तथा द्रव्यका विनाश हो और प्रजाओंमें पीडा व चक्रवर्त्ती राजा भी लक्ष्मी करके हीन होवे ॥ २७ ॥

कन्यायां मीनसिंहे वृषधनुषि यदा वक्रगौ भौममन्दौ
पृथ्वीशाः क्रूररूपा बहुरिपुदलिता विग्रहश्चैव पीडा ॥
दुर्भिक्षं सस्यनाशो ग्रहगतिभयदाः पित्तरोगाः प्रजानां
पीडयंते चात्रिगोत्रा नृपमहिषगजास्तन्निवृत्तिस्तुयावत्२८

कन्या, मीन, सिंह, वृषभ, धनु इन राशियोंपर स्थित मंगल, शनैश्चर वक्री हों तो राजाओंका दुष्टरूप हो, शत्रुओंसे बहुत पीडित हों तथा विग्रह होवे और दुर्भिक्ष, तृणका नाश होवे, प्रजामें भय तथा पित्तकी बाधा हो और अत्रिगोत्रवाले मनुष्य, राजा, महिष, गज ये पीडित हों, जब मार्गी होवें तब यह फल निवृत्त होवे ॥ २८ ॥

यदा धनुर्मीनवृषालिसंस्थिते धरासुते सूर्यसुते च वक्रिणि ॥
हयैश्च नागैश्च नरैश्च गोकुलैस्त्रिभागशेषां कुरुते वसुन्धराम्२९।

धन, मीन, वृष, वृश्चिक इन राशियोंपर स्थित मंगल और शनैश्चर वक्री होवें तो घोडा, हाथी और मनुष्य गायें ये सब जीव पृथ्वीपर तिहाये शेष रहें ॥ २९ ॥

यदारशौरी सुरराजमन्त्री यदैकराशौ समसप्तके वा ॥
अयोध्यलंकापुरमध्यदेशे क्षुधाभयं शस्त्रभयं करोति ३०

यदि मंगल, शनि, बृहस्पति ये ग्रह एक राशिपर हों अथवा परस्पर सातवें हों तो अयोध्या, लंका इनके मध्यके देशोंमें दुर्भिक्ष और शस्त्रका भय होवे॥ ३०॥

वक्रं गतो रविसुतोऽथ धरासुतो वा हस्ते तथैव पितृ-
दैवतरौद्रभेषु। क्षत्रस्य भंगपतनं भुवि सैनिकानां
सर्वत्र लोकमरणं खलु शस्त्रसंघैः ॥ ३१ ॥

शनि अथवा मंगल, हस्त, मघा तथा आर्द्रा इन नक्षत्रोंपर स्थित होके वक्री होवें तो नक्षत्रभंग हो और सेना कटकर पृथ्वीपर गिरे तथा निश्चय करके लोकमें मनुष्योंका मरण शस्त्रोंसे होवे ॥ ३१ ॥

उन्मार्गगमनं कृत्वा यदा शुक्रं त्यजेद्बुधः ॥
तदा वर्षति पर्जन्यो दिनानि पंच सप्त वा ॥ ३२ ॥

यदि बुध वक्री होकर शुक्रको छोडके उलटा चलाजावे तो पाच वा सात दिनतक वर्षा होवे ॥ ३२ ॥

उदयास्तक्रमे चेत्स्याज्जीवदृष्टो यदा ग्रहः ॥
पादोनं पूर्णदृष्ट्या वा तदा वर्षति नान्यथा ॥३३॥

अस्त वा उदय होतेहुए कोई भी ग्रहको गुरु पूर्ण वा पौन दृष्टिसे देखे तो अवश्य वर्षा होवे ॥ ३३ ॥

उदयं सोमजो याति ह्यस्तं याति भृगोः सुतः ॥
श्रावणे चैत्रमासे तु तत्र पात्रं च दुर्लभः ॥ ३४ ॥

चैत्र वा श्रावणमें बुध तो उदय होवे और शुक्र अस्त होवे तब अनावृष्टि होवे ॥ ३४ ॥

आषाढमासे यदि शुक्लपक्षे चंद्रस्य पुत्रोऽभ्युदयं करोति ॥
शुक्रस्तु चेच्छ्रावणमासि चास्तं धान्यं सुवर्णेन समं तदा च३५

आषाढ सुदिमें बुध उदय होवे और श्रावणमें शुक्र अस्त होवे तो धान्य सुवर्णसमान दुर्लभ होजावे ऐसा दुर्भिक्ष हो ॥ ३५ ॥

अग्रतो वा स्थिताः सौम्याः क्रूराणां तु परस्पराः ॥
ददन्ति सलिलं भूरि न तोयं स्याद्विपर्यये ॥ ३६ ॥

क्रूरग्रहोंके आगे शुभग्रह हों तो वर्षा अधिक हो किन्तु शुभग्रहोंके आगे क्रूरग्रह हों तो अनावृष्टि हो ॥ ३६ ॥

शनिसौम्यकुजाश्चैव शुक्रस्याग्रे सदा यदि ॥
तदातिवायुर्दुर्भिक्षं जलनाशकरास्तथा ॥ ३७ ॥

शुक्रके आगे मंगल, बुध, शनि हों तो वायुका जोर, वर्षाका नाश तथा दुर्भिक्ष होवे ॥ ३७ ॥

क्रूराणां सह सौम्यैश्च यदि स्यात्सप्तसप्तकम् ॥
अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीडा महत्यपि ॥ ३८ ॥

सौम्य और क्रूरग्रह परस्पर सातवें २ स्थानपर हों तो अनावृष्टि और लोगोंको बहुत कष्ट होवे ॥ ३८ ॥

प्रावृषि शीतकरो भृगुपुत्रात्सप्तमराशिगतः शुभदृष्टः ॥
सूर्यसुतान्नवपंचमगो वा सप्तमगश्च जलाऽऽगमनाय॥३९

वर्षाकालमें चंद्रमा शुक्रसे सातवीं राशिपर वा शनिसे पाँचवीं, सातवीं, नवमी राशिपर हो और उसे शुभग्रह देखें तो वर्षा होवे ॥ ३९ ॥

जलराशिस्थिते चन्द्रे जामित्रे नवमे तथा ॥
अर्कसूनुश्च भौमश्च अतिवृष्टिं प्रमुंचति ॥ ४० ॥

चंद्रमा जल राशिपर हो और उससे सप्तम वा नवम राशिपर मंगल वा शनि हो तो बहुत वर्षा होवे ॥ ४० ॥

शुक्रस्य यदि भौमेन यदि स्यात्सप्तसप्तकम् ॥
वृष्टिर्मासे तदा काले तथैव शनिजीवयोः ॥ ४१ ॥

शुक्र और मंगल तथा बृहस्पति और शनि परस्पर सप्तम राशिपर हों तो वर्षा होवे ॥ ४१ ॥

गुरौ सिते च यामित्रे सितादर्काद्गुरोरपि ॥
यामित्रस्था ग्रहाः सर्वे अनावृष्टिर्भवेत्तदा ॥ ४२ ॥

गुरु और शुक्र परस्पर सप्तम राशिपर हों अथवा शुक्र वा सूर्य वा गुरुसे सप्तम राशिपर सब ग्रह हों तो अनावृष्टि होवे ॥ ४२ ॥

समागमे पतति जलं ज्ञशुक्रयोर्ज्ञजीवयोर्गुरुसितयोश्च संगमे॥
यमारयोः पवनहुताशजं भयं ह्यदृष्टयोरसहितयोश्च सद्ग्रहैः॥४३

बुध शुक्रका, बुध बृहस्पतिका, गुरु शुक्रका समागम हो तो वर्षा होवे तथा मंगल शनि एकत्र हों और कोई भी शुभग्रह न देखता हो तथा साथ भी न हो तो वायु तथा अग्निका भय होवे ॥ ४३ ॥

मघायां भूमिपुत्रश्च चित्रायां भृगुनन्दनः ॥
रोहिण्यां तु गतः सौरिः सर्वशस्यविनाशकः॥४४ ॥

मघा नक्षत्रका मंगल हो, चित्राका शुक्र हो, रोहिणीका शनि हो तब सब धान्य नाश होवें ॥ ४४ ॥

राहोः शुक्रस्य संयोगो यदा मेषे भविष्यति ॥
दुर्भिक्षं जायते तत्र नात्र कार्यं विचारणम् ॥ ४५ ॥

राहु और शुक्र यदि मेष राशिपर स्थित हों तो निश्चय दुर्भिक्ष होवे इसमें विचार नहीं करना ॥ ४५ ॥

मेषे शनैश्चरो भानुर्भार्गवो भूमिजस्तथा ॥
दुर्भिक्षं च प्रजापीडा तदा पृथ्वी भयाकुला ॥४६ ॥

मेष राशिपर सूर्य, मंगल, शुक्र और शनि हों तो दुर्भिक्ष तथा युद्ध और प्रजामें पीडा भय आदि हो ॥ ४६ ॥

वृषे भानुः कुजः शौरिस्तदा युद्धं समादिशेत् ॥
न वर्षति जलं मेघा दुर्भिक्षं लोकपीडनम् ॥ ४७ ॥

वृष राशिपर सूर्य, मंगल और शनि हों तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, युद्ध -आदिसे लोकोंको पीडा होवे ॥ ४७ ॥

मिथुनर्क्षे सूर्यपुत्रो राहुर्वा यदि संस्थितः ॥
दुर्भिक्षं जायते तत्र पश्चिमायां नृपक्षयः ॥ ४८ ॥

मिथुनपर शनि, राहु स्थित हों तो दुर्भिक्ष पडे तथा पश्चिम देशके राजाओंका नाश होवे ॥ ४८ ॥

गुरुक्षेत्रे शनौ राहौ स्वल्पवृष्टिस्तृणक्षयः ॥
भौमे राज्ञां विरोधः स्याद् बुधे वृष्टिश्च भूयसी॥४९॥
तृणवृद्धिः पशूनां च सौख्यं धान्यं बहूनि च ५० ॥

धन वा मीन राशिपर शनि वा राहु हो तब अल्पवर्षा तथा तृणका नाश हो, मंगल हो तो राजाओंमें विरोध हो और बुध हो तब वर्षा, धान्य, तृण, पशु आदिकी वृद्धि तथा सुख हो ॥ ४९ ॥ ५० ॥

शन्यारतमसो युक्ता धनुर्मीनस्थिता यदि ॥
पृथ्वी त्रिभागशेषा च दुर्भिक्षं च तदा भवेत् ॥ ५१॥

धन वा मीन पर मंगल, शनि और राहु हों तो बडा दुर्भिक्ष पडे, जिससे मनुष्य, पशु, पक्षी आदि तिहाये शेष रहजावें ॥ ५१ ॥

चंद्रभार्गवधरासुता यदा मीनराशिमुपयान्ति वै तदा ॥
दुर्लभं भवति सर्वधान्यकं वारिदश्च न जलं प्रमुंचति ॥ ५२ ॥

मीनके चंद्र, मंगल और शुक्र हों तो अनावृष्टिसे सब धान्य दुर्लभ होजावें ॥ ५२ ॥

मिथुनेऽङ्गारको जीवस्तुलाराशौ शनैश्चरः ॥
धनराशौ यदा राहुर्मेघाश्च प्रबलाधिकाः ॥ ५३ ॥

मिथुनका मंगल तथा गुरु और तुलाका शनि तथा धनका राहु हो तो वर्षा बहुत होवे ॥ ५३ ॥

सिंहे शुक्रस्तुलां भौमः कर्के जीवो यदा भवेत् ॥
धूलिवर्षा महान्वायुर्भवेद्धान्यमहर्घता ॥ ५४ ॥

सिंहका शुक्र, तुलाका मंगल और कर्कका गुरु होवे तब बहुत वायु चले जिससे धूल उडे तथा धान्य महंगे होवें ॥ ५४ ॥

मीनराशिगते मंदे कर्कटस्थे बृहस्पतौ ॥
तुलाराशिगते भौमे तदा दुर्भिक्षमादिशेत् ॥ ५५ ॥

मीन राशिका शनि हो, कर्कका बृहस्पति हो तथा तुलाका मंगल हो तब दुर्भिक्ष होवे ॥ ५५ ॥

शुक्रोदये ग्रहो याति प्रवासं यदि कश्चन ॥
क्षेमं सुभिक्षमाख्याति महावर्षणकं तथा ॥ ५६ ॥

शुक्रके उदय होनेपर जब कोई ग्रह अस्त होवे तब क्षेम, सुभिक्ष तथा अतिवृष्टि आदि होवें ॥ ५६ ॥

एकराशिगतावेतौ धरापुत्राङ्गिरःसुतौ ॥
तदा मेघा न वर्षंति वर्षाकाले न संशयः ॥ ५७ ॥

मंगल और गुरु जो एकराशि पर हों तब वर्षाकालमें जबतक साथ रहें, वर्षा नहीं होवे ॥ ५७ ॥

शनैश्चरधरापुत्रावेकस्थौ वृष्टिकारकौ ॥
तदा च तावती वृष्टिर्यावती गृहपातिनी ॥ ५८ ॥
एकराशिगतश्चैव भौमः सौरिर्यदा भवेत् ॥
द्विमासं च भवेद्वृष्टिः पश्चाद्वृष्टिर्निवर्तते ॥ ५९ ॥

मंगल, शनि एकराशि पर होवें तब वर्षाकालमें दो मासतक तो घर गिरानेवाली वर्षा होवे किन्तु फिर नहीं होवे ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

राहुरङ्गारकश्चैकराशिऋक्षगतौ तथा ॥
महाभयं च शस्यानां न च वृष्टिः प्रजायते ॥ ६० ॥

मंगल, राहु एक राशि पर वा एक नक्षत्रपर हों तो अनावृष्टि और धान्यका नाश होवे ॥ ६० ॥

गुरुशुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत् ॥
अकाले वा भवेद्वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः ॥ ६१ ॥

बृहस्पति, शुक्र एक राशि पर हों तब अकालमें वर्षा तथा युद्ध होवे इसमें संदेह नहीं ॥ ६१ ॥

एकराशौ गता ह्येते सौम्यशुक्रदिनाधिपाः ॥
सर्वधान्यमहर्घत्वं मेघाः स्वल्पजलप्रदाः ॥ ६२ ॥

सूर्य, बुध और शुक्र एक राशिपर हों तो सब धान्य- तेज होवें और मेघ वर्षा कम करें ॥ ६२ ॥

आदित्यो भार्गवश्चैव तृतीयो गुरुरेव च ॥
एकराशौ च तिष्ठंति मेघाश्च प्रबलाधिकाः ॥ ६३ ॥

सूर्य, बृहस्पति और शुक्र एक राशिपर हों तो बहुत वर्षा होवे ॥ ६३ ॥

शुक्रमंदारजीवाश्च यदैकत्र समाश्रिताः ॥
मेघा जलं न मुञ्चन्ति दुर्भिक्षं जायते तदा ॥ ६४ ॥

मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनि एक राशिपर हों तब मेघ नहीं वर्षे इससे दुर्भिक्ष पडे ॥ ६४ ॥

रविज्ञगुरुमंदाश्च राहुयुक्ता यदाश्रिताः ॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं तस्मिन्काले न संशयः ॥ ६५ ॥

सूर्य, बुध, गुरु, शनि और राहु जो एक राशिपर हों तब सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य आदि होवें ॥ ६५ ॥

एकराशौ यदा यांति चत्वारः पंच खेचराः ॥
प्लावयंति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा ॥ ६६ ॥

एक राशिपर चार वा पांच ग्रह स्थित हों तब पृथिवीको जलसे अथवा रुधिरसे डुबोयदेवें ॥ ६६ ॥

पंच ग्रहा घ्नंति चतुष्पदांश्च षडे ग्रहा घ्नंति समस्तभूपान् ॥
सप्त ग्रहा घ्नंति समस्तदेशानष्टग्रहैः स्यात्खलु कूटयोगः ॥ ६७ ॥

पांच ग्रह एक राशिपर हों तो पशुओंका नाश होवे, छःग्रह हों तो सब राजाओंका नाश हो, सात ग्रह हों तो सब देशोंका नाश होय और आठ ग्रह हों तो कालकूट योग होताहै ॥ ६७ ॥

अथ मेषादिराशिस्थग्रहाणां फलम् ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि ग्रहचारसमुच्चयम् ॥
क्रूरेषु सौम्यखेटेषु राशिराशिफलं तदा ॥ १ ॥

इसके आगे अब मेषादि राशियोंपर आनेवाले ग्रहोंके फलके समूहको क्रूरतथा सौम्य ग्रहोंके फलको कहेंगे ॥ १ ॥

तत्रादौ सूर्यचारफलम् ।

यदा मेषे स्थितो भानुः फलं तूलतिलादिकम् ॥
इक्ष्वादितिलतैलादेस्तदा चैव महर्घता ॥ २ ॥

यदि मेषराशिपर सूर्य आवे तब फल और रुई, ईख, तिल व तेल इत्यादिक सब वस्तु महंगी होवें ॥ २ ॥

वृषराशिस्थितो भानुः सुभिक्षं सर्वसौख्यदम् ॥
गोरसाज्यं महर्घाणि शस्यं च प्रचुरं भवेत् ॥ ३ ॥

वृष राशिपर सूर्य आवे तब सर्वसुखदाई सुभिक्ष हो और दूध, दधि, घृत महँगे होवें तथा अन्न बहुत उत्पन्न होवे ॥ ३ ॥

मिथुने भास्करे याते कार्पासः कन्दमूलकम् ॥
तिलाश्च सर्वधान्यानि महर्घाणि स्युरेव हि ॥ ४ ॥

मिथुन राशिपर सूर्य आवे तब कपास, कंद, मूल तथा तिल और सब धान्य महँगे होवें ॥ ४ ॥

कर्कराशिस्थितो भानुः श्लेषायां तत्र वर्षति ॥
धान्यानि तत्र सर्वाणि क्वचित्क्वापि महर्घता ॥ ५ ॥

कर्कराशिपर सूर्य आवे तब आश्लेषा नक्षत्रके दिन वर्षा होवे तो सब धान्य हों, कहीं कहीं महंगी होवे ॥ ५ ॥

सिंहराशिगते भानौ इक्ष्वादिमिष्टशर्करा ॥
रक्तानि सर्वभाण्डानि तिलतैलमहर्घता ॥ ६ ॥

सिंह राशिपर सूर्य होवे तब ईख आदि मिष्ट पदार्थ, शकर तथा रक्त रंगके वर्तन, रक्तधातु, तिल, तैल यह सब महंगे होवें ॥ ६ ॥

कन्याराशिगते भानौ मंजिष्ठादिमहर्घता
नारिकेलं तिलं तैलं सर्वस्य च महर्घता ॥ ७ ॥

कन्याराशिपर सूर्य होवे तब नारियल, तिल, तैल, मंजिष्ठा आदि ये सब महंगे होवें ॥ ७ ॥

तुलाराशिं यदा भानुरेतदेवं महर्घता ॥
धान्यानां हेमद्रव्याणां कुंजराणां विनाशता ॥ ८ ॥

तुला राशिपर सूर्य होवे तब सुवर्ण तथा सब प्रकारके धान्य ये महँगे होवें और हाथियोंका नाश होवे ॥ ८ ॥

यदार्को वृश्चिके याति तदार्घं समतामियात् ॥
और्णिकं सर्वद्रव्यं च स्वल्पार्घेण प्रदीयते ॥ ९ ॥

वृश्चिक राशिपर सूर्य होवे तब ऊनवस्त्र समभाव रहैं, अन्य सब द्रव्य कुछ तेज होवें ॥ ९ ॥

धनराशिगतो भानुः सुभिक्षं तत्र जायते ॥
तिलतैलं महर्घं च कार्पासादि तथैव च ॥ १० ॥

धन राशिपर सूर्य होवे तब सुभिक्ष होवे और तिल, तेल तथा कपास आदि महँगे होवें ॥ १० ॥

मकरे च स्थितो भानुर्घृततैलमहर्घता ॥
सुभिक्षं सर्वधान्यानां लोकानां दुःखपीडनम् ॥ ११ ॥

मकर राशिपर सूर्य होवे तब घृत, तैल महँगे होवें तथा सब धान्य सस्ते होवें और लोगोंको दुःख पीडा होवे ॥ ११ ॥

कुम्भराशौ यदा भानुः समृद्धिस्तत्र जायते ॥
लवणं च तथा तैलं स्वल्पार्घं चैव दापयेत् ॥ १२ ॥

कुंभ राशिपर सूर्य होवें तब अन्न सस्ता होवे और लवण तथा तैल ये कुछ२ महँगे होवें ॥ १२ ॥

मीनराशिगते भानौ सर्वधान्यमहर्घता ॥
लवणं तिलतैलं च महर्घं समजायते ॥ १३ ॥

मीन राशिका सूर्य होवे तब सब धान्य तथा लवण, तिल, तैल ये सब महँगे होवें ॥ १३ ॥

सूर्यचंद्रमिश्रितफलम् ।

मेषे रविर्घटे चंद्रः षण्मासे धान्यलाभदः ॥
वृषेर्के वृश्चिके चंद्रस्तुर्ये मासेऽन्नलाभदः ॥ १४ ॥

युग्मेऽर्के धनुषश्चन्द्रस्तिलतैलान्नसंग्रहात् ॥
मासैश्चतुर्भिर्लाभाय सक्रूरैश्चेन्न विद्यते ॥ १५ ॥
कर्केऽर्के मकरे चंद्रो दुर्भिक्षं कुरुते जने ॥
घोरं यावच्चतुर्मासि दासीकृतधनेश्वरः ॥ १६ ॥
षण्मासाद्द्विगुणो लाभः सिंहार्के कुम्भचन्द्रतः ॥
मीने चंद्रश्च कन्यार्के छत्रभंगश्च विग्रहः ॥ १७ ॥
तुलार्के चन्द्रमा मेषे पंचमे मासि लाभदः ॥
वृश्चिकेऽर्के वृषे चंद्रे तिलतैलान्नसंग्रहः ॥ १८ ॥
प्रदत्ते द्विगुणं लाभं धान्यं मासत्रयांतरे ॥
मिथुनेन्दुर्धनुष्यर्के पंचमासान्नलाभदः ॥ १९ ॥
कार्पासघृतसूत्रादेः पंचमे मासि लाभदः ॥
मृगेऽर्के कर्कशीतांशुः पांशुलानां विनाशकः ॥२० ॥
सिंहेन्दुः कुम्भभानौ च तुर्ये मासेऽन्नलाभदः ॥
कन्याचन्द्रोपि मीनेऽर्के तादृशो धान्यसंग्रहात् ॥२१॥

मेषकी संक्रांतिके दिन जो तुलाका चंद्रमा होवे तब छे महीने धान्यकी अधिकता करे। वृषकी संक्रांतिको वृश्चिकका चंद्रमा हो तो चौथे महीने अन्नका लाभ हो ॥ १४ ॥ मिथुनकी संक्रांतिको धनका चंद्रमा हो तो तिल, तेल तथा अन्नसंग्रह करनेसे चौथे महीनेमें लाभ हो परंतु क्रूर ग्रह सहित हो तो न होवे ॥ १५ ॥ कर्कसंक्रांतिको मकरका चन्द्रमा हो तो दुर्भिक्ष करे, चार महीनेतक यही रहे जिससे धनीभी दासभाव स्वीकार करे ॥ १६ ॥ सिंहकी संक्रांतिको कुंभका चन्द्र हो तो छह मासमें व्यापारसे दुगुणा लाभ हो, कन्याकी संक्रांतिको मीनका चन्द्रमा हो तो छत्रभंग, विग्रह होवे ॥ १७ ॥ तुलासंक्रांतिको मेषका चन्द्र हो तो पांचवें महीनेमें व्यापारमें लाभ हो । वृश्चिककी संक्रांतिको वृषका चंद्र हो तो तिल, तेल तथा अन्नका संग्रह करना उचित है ॥ १८ ॥ दो मास उपरान्त धान्यमें अधिक लाभ हो । धनसंक्रांतिको मिथु

नका चन्द्र हो तो पांचवें महीनेमें अन्नमें लाभ हो ॥ १९ ॥ कपास, घृत, सूतमें पांचवें मास लाभ हो। मकरकी संक्रांतिमें कर्कका चंद्र हो तब वेश्याओंका नाश होवे ॥ २० ॥ कुंभकी संक्रांतिको सिंहका चंद्रमा हो तो चौथे महीनेमें अन्नसे लाभ हो । मीनकी संक्रांतिको कन्याका चंद्र हो तो धान्यका संग्रह करे ,चौथे महीनेमें बेचनेसे लाभ होगा ॥ २१ ॥

मेषादिसंक्रांतिवारफलम् ।

चैत्रे मेषरवौ तथा क्षितिसुते मंदे महर्घस्थिति-
गोधूमे चणके तथैव शशिना कार्या सतैलादिषु ॥
जीवः क्षत्रियजीवनाशनकरः शुक्रोऽथवा चंद्रजः
सर्वं वस्तु समर्घमेव कुरुते वैवाहसोत्साहताम् ॥ २२॥

चैत्रमें मेषकी संक्रांति मंगलवार वा शनिवारकी हो तो अन्न भाव तेज, गेहूं, चणा तेज हों, चन्द्रवारकी हो तो कपास तैल आदि तेज हों, गुरुवारकी हो तो क्षत्रियोंकी हानि, शुक्र और बुधवारकी हो तो सब वस्तु सस्ती हों और विवाहमंगलका उत्साह घर २ होवे ॥ २२ ॥

नंदायां मेषसंक्रांतिरल्पवृष्टिकरी मता ॥
भद्रायां राज्ययुद्धाय जयायां व्याधये नृणाम् ॥२३॥
रिक्तायां पशुघाताय पूर्णायां सुखवर्द्धिनी ॥
बहुधा धान्यनिष्पत्तिर्भवेन्मेघमहोदयः ॥ २४ ॥

मेषसंक्रांतिको नंदा तिथि हो तो वर्षा कम हो । भद्रा तिथिमें राजयुद्ध हो, जयामें व्याधि (रोग) हो ॥ २३ ॥ रिक्ता तिथिमें पशुघात हो, पूर्णा तिथिमें सुखवृद्धि और बहुत धान्यकी उत्पत्ति तथा उत्तम वर्षा होवे ॥२४॥

वैशाखे वृषसंक्रमे शनिकुजादित्या हि दुर्भिक्षदा
देशे क्लेशरुचिर्महर्घविषयः प्राप्या न गोधूमकाः ॥
कार्पासे फलवस्तुनीक्षुरसजे मांजिष्ठकेत्यादरः
सोमे धान्यमहर्घता कविगुरू तेषु प्रियाः स्यू रसाः२५

वैशाखमें वृषभकी संक्रांति यदि शनि, मंगल अथवा रविवारकी हो तो देशमें क्लेश, अन्नभाव तेज, गेहूं दुर्लभ हों, कपास, फल, गुड, शकर, मंजीठ ये सब तेज होवें, चंद्रवार हो तो धान्य महंगा, शुक्र, गुरुवारकी हो तो रस समान हों ॥ २५ ॥

ज्येष्ठे श्रीमिथुनार्कतः शनिकुजादित्येषु पापाशयो
रोगोऽग्निज्वलनाद्दिजं भयमपि प्रायो महर्घाः कणाः ॥
संतुष्टा वसुधा सुधाकरसुते वस्तु प्रियं सिन्धुजं
दुर्भिक्षं शशिजीवभार्गवबलात्सार्वत्रिकं सूत्रताम् ॥२६॥

ज्येष्ठमें मिथुनकी संक्रांति शनि, मंगल, रविवारकी हो तो पापकारी, रोग, अग्निभय, अन्नभाव तेज, बुधकी हो तो पृथ्वी संतुष्ट, सिंधुकी उत्पन्न भई वस्तु (मोती) का आदर हो और चंद्र, गुरु, शुक्रवारकी हो तो दुर्भिक्ष होवे ऐसा सर्वत्र कहना चाहिये ॥ २६ ॥

आषाढे कर्कसंक्रातिः क्रूरवारेऽत्यवर्षणम् ॥
क्षत्रियाणां क्षयोऽन्योन्यं गुरौ तु प्रवरोऽनिलः ॥२७॥
सोमे सौम्ये तथा शुक्रे जलस्नातं भुवस्तलम् ॥
धान्यं समर्घमायाति परदेशाज्जने सुखम् ॥ २८ ॥

आषाढमें कर्कसंक्रांति क्रूरवारी हो तो अनावृष्टि और क्षत्रियोंमें परस्पर नाश हो, गुरुवारकी हो तो तीक्ष्ण पवन चाले ॥ २७ ॥ बुध, चन्द्र तथा शुक्रवारकी हो तो अच्छी वर्षा हो, धान्य सस्ते हों और परदेशसे मनुष्योंको सुख हो ॥ २८ ॥

सिंहेऽर्के श्रावणे भौमे शनौ वार्वाहवृष्टये ॥
तुषधान्यविनाशाय वायुः पीडाकरो रवौ ॥ २९ ॥
समर्घमाज्यं देवेज्ये गुरुतैलमहर्घता ॥
सोमे शुक्रे बुधे छत्रभङ्गक्लोकरोगदः ॥ ३० ॥

श्रावणमें सिंहकी संक्रांति, मंगलवारी अथवा शनिवारकी हो तो वर्षासे धान्यका नाश होवे तथा रविवारकी हो तो वायुकी पीडा हो ॥ २९ ॥ गुरु-

वारकी हो तो घृत सस्ता, अगरु, तेल तेज हो, सोम, शुक्र, बुधवारकी हो तो छत्रभंग और रोग होवे ॥ ३० ॥

कन्यार्कतो भाद्रपदेऽल्पवृष्टिः शनैर्जने स्याद्बहुधान्यनाशः ॥
कुजाद्रुजायां बहुधेतयो वा वृष्टिस्तदाल्पातिमहर्घतान्ने॥ ३१॥
जीवेन्दुशुक्रज्ञपराक्रमेण क्रमेण सौख्यं न बहुश्रमेण ॥
असुद्रसासुद्रकभूपयुद्धं किंचिद्विनाशोपि च पश्चिमायाम् ३२॥

भाद्रपदमें कन्याकी संक्रांति रविवारी हो तो अल्पवर्षा करे, शनिवारी हो तो धान्यनाश, मंगलवारी हो तो रोग और ईति, अल्पवर्षा, धान्य तेज हो ॥ ३१ ॥ यदि गुरुवारी वा शुक्र, चन्द्र, बुधवारकी हो तो पराक्रमसे सुख, श्रम थोडा, सब जगह राजाओंमें युद्ध, पश्चिममें कुछ विनाश यह क्रमसे जानना ॥ ३२ ॥

आश्विने रवितुलाधिरोहणे भास्करो द्विजगवादिदुःखदः ॥
राज्यविग्रहकरः शनैश्चरः सर्पिषः खलु महर्घतां वदेत् ॥ ३३ ॥
बहुधा बहुधान्यसंभवाद्वसुधा पूर्णसुधा बुधाश्रयात् ॥
गुरुणातिसमर्घमन्नकं शशिना वा भृगुसूनुना तथा ॥ ३४ ॥

आश्विनमें तुलासंक्रांतिके दिन रविवार हो तो ब्राह्मण और गायोंको पीडा हो। शनिवार हो तो राजाओंमें विग्रह और घृतका भाव तेज हो ॥ ३३ ॥ बुधवार हो तो बहुत धान्यकी उत्पत्ति हो। गुरुवार हो तो अन्न सस्ता और सोम व शुक्रवार हो तो धान्य सस्ता हो ॥ ३४ ॥

स्यात्कार्त्तिके वृश्चिकसंक्रमाहे सूर्ये महर्घं भुवि शुक्लवस्तु ॥
म्लेच्छेषु रोगान्मरणाय मंदः कुजः परं धान्यरसग्रहाय ३५
लाभस्तु तस्य त्रिगुणस्त्रिमासान् बुधे च पूगादिफलं महर्घम्॥
गुरौ च शुक्रे तिलतैलसूत्रकार्पासवस्त्रादिमहर्घता स्यात् ३६

यदि कार्तिकमें वृश्चिककी संक्रांति रविवारी हो तो सुफेद वस्तु तेज होवे। शनिकी हो तो म्लेच्छ रोगसे मरैं। मंगलकी हो तो धान्य और रस ग्रहण करै तो ॥ ३५ ॥ तीन मासके बाद तिगुना लाभ हो। बुधके दिन हो ता

सुपारी आदि महंगी होवें । गुरु शुक्रकी हो तो तिल, तैल, सूत कपास, वस्त्र महंगे होवें ॥ ३६ ॥

सोमे सर्वजने सौख्यं संधिः सर्वत्र भूभुजाम् ॥
तद्वारग्रहवेधेल्पमध्योत्कृष्टफलोदयः ॥ ३७ ॥

वृश्चिककी संक्रांतिके दिन यदि सोमवार हो तो मनुष्योंमें सुख, सब राजाओंमें संधि होवे और उसी वारको ग्रह वेध हो तो अल्प, मध्य, उत्कृष्ट फल (जैसे ग्रहका वेध हो) होवे ॥ ३७ ॥

धनुषि तरणिभोगे मार्गशीर्षेर्कभौमौ
शनिरपि यदि वारश्चौडकर्णाटगौडाः ॥
सुरगिरिमलयान्ता मालवास्तेषु राज्ञां
रणमरणविशेषाद्विग्रहापन्नलोकाः ॥ ३८ ॥
कार्पाससूत्रादितिलाज्यतैल-
महर्घता लाभदशा सुवर्णात् ॥
शैत्यप्रवृद्धिर्भुवि सोमवारे
किंचिद्विनाशोप्यत एव धान्ये ॥ ३९ ॥
बुधे गुरौ वान्नसमर्घता स्या-
च्छुक्रे पुनर्म्लेच्छजनप्रमोदः ॥
पृथ्वीभयं विग्रहएव घोरं
चतुष्पदानामतिशायकष्टम् ॥ ४० ॥

मार्गशीर्षमें धनकी संक्राति रवि, शनि, मंगलवारकी हो तो उडीसा, कर्णाटक, गौड, देवगिरि, मलय, मालवा, आदि देशोमें युद्ध, राजाओंका मरण तथा विग्रह होवे ॥ ३८ ॥ यदि सोमवारको हो तो कपास, सूत, घृत, तेल, तिल महंगे होवें, सुवर्णसे लाभ हो, शीतकी वृद्धि तथा धान्यका नाश होवे ॥ ३९ ॥ बुधवार वा गुरुवारकी हो तो अन्न सस्ता हो, शुक्रवारकी हो तो म्लेच्छोंको सुख हो किन्तु पृथ्वीपर भय, घोर विग्रह होवे तथा पशुओंको अतिशय कष्ट होवे ॥ ४० ॥

पौषमासे यदा सूर्यो मृगे संक्रमते हि वै ॥
तस्मिन्दिने रवेर्वारस्तदा धान्यमहर्घता ॥ ४१ ॥
शनौ त्रिगुणता मूल्ये मंगले च चतुर्गुणम् ॥
समानं बुधशुक्राभ्यां मूल्यार्धं गुरुसोमयोः ॥ ४२ ॥

पौषमासमें मकरकी संक्रांति रविवारको हो तो धान्य दुगुणा मूल्यसे विके ॥ ४१ ॥ शनिवार हो तो तिगुणा मूल्यसे, मंगलवारको हो तो चौगुणा मूल्यसे विके, बुध तथा शुक्रवार हो तो समान भाव रहे, चंद्र वा गुरुवार हो तो आधे मूल्यसे विके ॥ ४२ ॥

देवे गुरौ वा दल एव शुक्रे माघेऽथ कुम्भे दिनकृत्प्रसंगे ॥
पृथ्वीभयं धान्यमहर्घता स्यात्तदा जनानामतिशायदुःखम् ४३
बुधे मुदा युद्धमुशन्ति श्रेष्ठा भौमे विरोधं स्वकुले त्रिमास्याम्॥
युगन्धरीमल्लमसूरधान्ये हिमाद्विनाशश्चणकेपि सोमे ॥४४ ॥

माघमें कुंभसंक्रांति गुरुवार वा शुक्रवारकी हो तो पृथ्वीमें भय, धान्य महंगा होय, जिससे मनुष्योंको अत्यंत दुःख होवे ॥ ४३ ॥ बुधवारकी हो तब प्रसन्नता और युद्ध हो, मंगलवारकी हो तब विरोध होवे और दो मास तक ज्वार, मल्ल, मसूर आदि धान्यका नाश तथा चंद्रवारकी हो तो हिमसे चणोंका विनाश हो ॥ ४४ ॥

मीनेऽर्के सति फाल्गुने शनिवशात्सामुद्रिकार्थक्षयो
भौमे हेम्नि सलाभता रणभटाः सूर्ये भटानिष्टता ॥
तैलाज्यादिरसा महर्घदिवसाश्चन्द्रे जनानां सुखं
शुक्रे चन्द्रसुते सुभिक्षमतुलं रोगप्रयोगो गुरौ ॥ ४५ ॥

फाल्गुनमें मीनसंक्रांति शनिवारकी हो तो समुद्रमें उत्पन्न होनेवाली वस्तुओंमें लाभ न हो । मंगलवारकी हो तो सुवर्णसे लाभ, रविवारकी हो तो योधाओंमें वीरता तथा तेल घृत रस महँगे होवें । चंद्रवारकी हो तो मनुष्योंको सुख हो शुक्रवार और बुधवारकी हो तो उत्तम सुभिक्ष हो । और गुरुवारकी हो तो मनुष्योंमें रोग हो ॥ ४५ ॥

संक्रांतिसमयफलम् ।

सूर्योदयेपि विशतिर्जगतो विपत्त्यै मध्यंदिने सकलधान्य-विनाशहेतुः ॥ संक्रांतिरस्तसमये धनधान्यवृद्ध्यै क्षेमं सुभिक्षमवनेः कुरुते निशीथे ॥ ४६ ॥

सूर्योदयके समय संक्रांति लागे तो जगत्‌को विपत्ति आवे, मध्यम दिनमें हो तो सब धान्यका नाश हो और अस्तसमयमें हो तो धनधान्यकी वृद्धि हो तथा अर्द्धरात्रिमें हो तो क्षेम, सुभिक्ष करे ॥ ४६ ॥

यद्दिने यार्कसंक्रांतिस्तद्राशौ तद्दिने शशी ॥
जन्मवेधादयं नेष्टः श्रेष्ठः स्वसुहृदो गृहे ॥ ४७ ॥
यस्मिन्वारेस्ति संक्रांतिस्तत्रैवामावसी तिथिः ॥
लोके खर्प्परयोगोऽयं जीवधान्यादिनाशकः ॥ ४८ ॥
शनिः स्यादाद्यसंक्रांतौ द्वितीयायां प्रभाकरः ॥
तृतीयायां कुजे योगः खर्पराख्योतिकष्टकृत् ॥ ४९ ॥

यदि सूर्य चंद्रमा संक्रांतिके दिन एकराशिपर हों तो जन्मवेधसे नेष्ट है, मित्रगृहमें हो तो श्रेष्ठ है ॥ ४७ ॥ जिस वारकी संक्रांति हो और उसी वारकी अमावस हो वा उसी दिन हो वो यह खर्प्पर योग जीवधान्यादिकोंका नाशक है ॥ ४८ ॥ संक्रांतिके दिन शनिवार हो दूसरी संक्रांतिको रविवार हो और तीसरी संक्रांतिको मंगलवार हो तो यह अतिकष्टकारक खर्प्पर योग है ॥ ४९ ॥

कार्तिके फाल्गुने मार्गे चैत्रे श्रावणभाद्रयोः ॥
संक्रमेष्वशुभः षट्सु यदि वर्षति वारिदः ॥ ५० ॥
पौषे माघे सवैशाखे ज्येष्ठाषाढाश्विनेषु च ॥
संक्रांतौ वर्षति घनः सर्वदैवसुशोभनः ॥ ५१ ॥

कार्तिक, फाल्गुन, मार्गशीर्ष, चैत्र, श्रावण, भाद्रपद इन छह महीनोंकी संक्रांतिके दिन वर्षा हो तो अशुभ है ॥ ५० ॥ पौष, माघ, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, अश्विन इन महीनोंकी संक्रांतिके दिन वर्षा हो तो शुभ है ॥ ५१ ॥

मृगादिराशिद्वयभानुभोगात् षडर्तवः स्युः शिशिरो वसन्तः ।
ग्रीष्मश्च वर्षाश्च शरच्च तद्वद्धेमंतनामा कथितश्च षष्ठः ॥ ५२ ॥

मकर कुंभकी संक्रांतिमें शिशिर, मीन मेषकीमें वसंत, वृष मिथुनकीमें ग्रीष्म, कर्क सिंहकीमें वर्षा, कन्या तुलकीमें शरद् और वृश्चिक धनकीमें हेमन्त ऋतु होती है ॥ ५२ ॥

शिशिरे ताम्रसंकाशः कपिलो वापि भास्करः ॥
वसन्ते कुङ्कुमप्रख्यो हरितो वापि शस्यते ॥ ५३ ॥
ग्रीष्मे कनकवैडूर्यः सर्वरूपो जलागमे ।
शस्तः शरदि पद्माभो हेमन्ते लोहितप्रभः ॥ ५४ ॥

सूर्यका रंग शिशिरऋतुमें ताम्र वा कपिल, वसन्तमें लाल वा हरा ॥ ५३ ॥ ग्रीष्ममें सुनहरी वा सुपेद, वर्षामें सर्व वर्ण (रंग) का, शरद्में पीला, और हेमन्तऋतुमें लाल रंग हो तो शुभ है ॥ ५४ ॥

वर्षाकाले वृष्टिं करोति सद्यः शिरीषपुष्पाभः ॥
शिखिपक्षनिभः सलिलं न करोति द्वादशाब्दानि॥५५

वर्षाकालमें सूर्यका वर्ण शिरीष (सिरस) के पुष्प जैसा हो तो शीघ्र वर्षा होवे किन्तु जो मोरके पंख जैसी कान्ति होवे तो बारहवर्षतकभी वर्षा नहीं होवे ॥ ५५ ॥

श्वेतः शिरीषपुष्पाभः पद्माभो रौप्यसन्निभः ॥
वैडूर्यघृतमण्डाभो हेमाभश्च दिवाकरः ॥ ५६ ॥
वर्णैरेभिः प्रशस्तः स्यान्महास्निग्धः प्रतापवान् ॥
भावनः सर्वशस्यानां क्षेमारोग्यसुभिक्षदः ॥ ५७ ॥

कोईभी समय सूर्यका वर्ण शिरीषके पुष्पसमान वा पद्मके वा चांदीके वा वैडूर्यके वा घृत वा मण्ड वा सुवर्णके समान ॥ ५६ ॥ इतने वर्णका हो तो बडा सचिक्कण बहुत तेजयुक्त कान्तिका हो तो सुभिक्ष सुवृष्टि क्षेम आरोग्य होवे ॥ ५७ ॥

नक्षत्रप्रवेशफलम् ।

सौम्यवारेऽर्कनक्षत्रे चारः शुभकरः स्मृतः ॥
अर्कारमन्दवारेषु नक्षत्रभ्रमणेऽशुभम् ॥ ५८ ॥

सूर्यनक्षत्रपर सौम्यवार (चंद्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र) को प्रवेश करे शुभ, तथा क्रूरवार (रवि, मंगल, शनि) को प्रवेश अशुभ है ॥ ५८ ॥

मत्स्ये कुलीरे मकरे जलं बहु कुम्भे वृषे चापजलार्द्धमात्रम् ॥
अलिं च तौलिं जलसंज्ञमाहुः सिंहादिशेषा अजला भवन्ति ५९

मीन, कर्क, मकर, पूर्ण जलराशि, कुंभ, वृषभ धनुष, ये अर्द्ध जलराशि, वृश्चिक, तुल नाममात्र जलराशि और मेष. मिथुन, सिंह, कन्या निर्जल राशि हैं ॥ ५९ ॥

(मेघनक्षत्रे)

अश्विनीमृगपुष्येषु पूषविष्णुमघासु च ॥
स्वात्यां प्रविशते भानुर्वर्षते नात्र संशयः ॥ ६० ॥

अश्विनी, मृग, पुष्य, रेवती, श्रवण, मघा, स्वाति ये जलनक्षत्र हैं, इन नक्षत्रोंमें सूर्य प्रवेश करे तो वर्षा उत्तम होवे इसमें संदेह नहीं ॥ ६० ॥

ऋक्षप्रवेशे यदि भास्करे च चन्द्रे त्रिकोणे यदि केंद्रगे वा ॥
जलालयस्थे भृगुजेक्षिते युते सम्पूर्णमेघा जलदा भवंति ॥६१॥

सूर्य, (आर्द्राआदि) नक्षत्रोंमें प्रवेशकरे उस समयके लग्नसे चंद्रमा यदि केन्द्र वा त्रिकोणमें स्थित जलराशिका हो और शुक्र उसको देखता हो वा उसके साथ हो तो सम्पूर्ण मेघ जलवर्षावे ॥ ६१ ॥

सूर्य तथा चन्द्रनक्षत्रसंज्ञा ।

अश्विन्यादित्रयं चैव आर्द्रादेः पंचकं तथा ॥
पूर्वाषाढादि चत्वारि चोत्तरा रेवतीद्वयम् ॥ ६२ ॥
उक्तानि शशिभान्यत्र प्रोच्यते सूर्यभान्यथ ॥
रोहिणी च मृगश्चैव पूर्वाफाल्गुनिका तथा ॥ ६३ ॥

अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा और रेवती ॥ ६२ ॥ यह चंद्रमाके नक्षत्र हैं । अब सूर्यके नक्षत्र कहते हैं रोहिणी, मृगशीर्ष, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा और पूर्वाभाद्रपद ये सूर्यके नक्षत्र हैं ॥ ६३ ॥

सूर्येसूर्ये भवेद्वायुश्चन्द्रेचंद्रे न वर्षति ॥
सूर्यचन्द्रसमायोगस्तदा वर्षति मेघराट् ॥ ६४ ॥

सूर्यका नक्षत्र तथा दिनका नक्षत्रभी सूर्यका हो तो वायु चले और चंद्रमाके दोनों नक्षत्र हों तो वर्षा नहीं होवे तथा चंद्र सूर्यके नक्षत्रोंका योग होवे तब बहुत वर्षा होवे ॥ ६४ ॥

सूर्यचन्द्रसमायोगे यदि स्याद्रात्रिसम्भवः ॥
तदा महावृष्टियोगः कीर्त्तितोयं पुरातनैः ॥ ६५ ॥

सूर्यचंद्रमाके नक्षत्रोंका योग रात्रिमें होवे तब महावर्षा होवे ऐसा पुरातन मुनियोंने कहाहै ॥ ६५ ॥

आर्द्रादिदशकं स्त्रीणां विशाखात्रिनपुंसकम् ॥
मूलाच्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणि क्रमाद् बुधः ॥ ६६ ॥
नरेनरे भवेत्तापो महातापो नपुंसके ॥
स्त्रियांस्त्रियां महावातो वृष्टिः स्त्रीनरसङ्गमे ॥ ६७ ॥

आर्द्रासे दश नक्षत्र स्त्री हैं, विशाखासे तीन नक्षत्र नपुंसक हैं और मूलसे लेके चौदह नक्षत्रोंकी पुरुषसंज्ञा है ॥ ६६ ॥ सूर्यका और दिनका दोनों नक्षत्र पुरुष हों तो गर्मी हो, दोनों नपुंसक हों तो अत्यंत गर्मी हो तथा स्त्री स्त्री हों तो बहुत वायु चले और एक पुरुष एक स्त्री हो तो बहुत उत्तम वर्षा होवे ॥ ६७ ॥

सूर्यभाद्दिनभं यावत्संख्यां तु गणयेत्सुधीः ॥
नवभिर्भागमाहृत्य शेषाङ्के वाहनं रवेः ॥ ६८ ॥
अश्वसृगालमण्डूकाश्छागकलापिमूषकाः ॥

महिषो रासभो हस्ती वृष्ट्यर्थे वाहनक्रमः ॥ ६९ ॥
महिषशिखिमण्डूकगजेषु बहुलं जलम् ॥
शेषेषु मध्यमं ज्ञेयं नास्ति छागे च जम्बुके ॥ ७० ॥

सूर्यके नक्षत्रसे उस दिनके नक्षत्र तक संख्या गिनके नवका भाग देवे । जो एक शेष रहे तो अश्व, दो रहें तो जम्बुक, तीन रहें तो, मेंडक, चार रहें तो बकरा, पाच शेष रहें तो मोर, छह रहें तो मूसा, सात रहें तो भैंसा, आठ रहें तो गधा और शून्य रहे तो हाथी, यह सूर्यके नक्षत्रका वाहन जाने ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ उक्त वाहन यदि हाथी, भैसा, मोर वा मेंडक हो तो बहुत वर्षा तथा अश्व, खर, मूसा हो तो मध्यम वर्षा और बकरा वा स्याल हो तो अनावृष्टि होवे ॥ ७० ॥

अथ चंद्रचारफलम् ।

स्निग्धः स्थूलः समशृङ्गो विशालस्तुङ्गश्चोदग्विचरन्नागवीथ्याम् ॥ दृष्टः सौम्यैरशुभैर्विप्रयुक्तो लोकानन्दं कुरुतेऽतीव चन्द्रः ॥ १ ॥

चंद्रमा स्निग्ध, स्थूल, दोनों शृंग समान, विशाल, उत्तरकी तर्फका ऊंचा शृंग तथा नागवीथीके (भरणी, कृत्तिका, स्वाति,) नक्षत्रोंपर हो और उसे कोई अशुभ ग्रह नहीं देखे किन्तु शुभ ग्रह देखते हों तो लोकमें अति आनंदको करे ॥ १ ॥

भस्मनिभः परुषोऽरुणमूर्तिः शीतधरः किरणैः परिहीनः ॥
श्यावतनुः स्फुटितः स्फुरणो वा क्षुद्भमरामयचौरभयाय ॥२॥

चंद्रमा भस्मसदृश व मैला, काला, लाल, किरणरहित, खण्डित वा कम्पमान बिम्बका हो तो रोग चौरभय आदि उपद्रव होवें ॥ २ ॥

मेषादिराशिस्थफलम् ।

चंद्रास्ते मेषराशिस्थे सर्वधान्यमहर्घता ॥
वृषे च त्रणिका पीडा मृत्युश्चौरभयं जने ॥ ३ ॥
मिथुनेष्वतिवृष्टिः स्याद्बीजवापेन पुष्टये ॥

कर्कटेऽप्यतिवृष्टिः स्यात्सिंहे धान्यमहर्घता ॥ ४ ॥
कन्यायां खण्डवृष्टिश्च सर्वधान्यसमर्घता ॥
तुलायामल्पवृष्टिः स्याद्देशभंगो भयं पथि ॥ ५ ॥
वृश्चिके मध्यमं वर्षं ग्रामनाशोऽप्युपद्रवात् ॥
सुभिक्षं धनुषा धान्यैर्मकरे धान्यपीडनम् ॥ ६ ॥
कुम्भेऽल्पवृष्टिर्धान्यानि महर्घाणि प्रजाभयम् ।
सुखसंपत्तयो मीने मासं यावदिदं फलम् ॥ ७ ॥

मेषराशिमें चंद्रमा स्थित हो तो सब धान्य महँगे होवें, वृषभमें हो तो चणा तेज हों, मनुष्योंमें मृत्यु और चोरोंका भय होवे ॥ ३ ॥ मिथुनमें हो तो वर्षा अधिक, बीज बोनेसे पुष्टि हो । कर्कमें भी अधिक वर्षा हो तथा सिंहमें धान्य महँगे हों ॥ ४ ॥ कन्यामें हो तो खण्डवृष्टि, सब धान्य सस्ते । तुलामें थोडी वर्षा, देशभंग और मार्गमें भय हो ॥ ५ ॥ वृश्चिकमें मध्यम वर्षा हो, ग्रामनाश और उपद्रव हो । धनमें धान्यसे अधिक सुभिक्ष हो । मकरमें धान्यकी पीडा हो ॥ ६ ॥ कुंभमें थोडी वर्षा, धान्य महँगा, प्रजामें भय हो, मीनमें सुख संपत्ति एकमास तक यह फल जानना ॥ ७ ॥

उदयफलम् ।

चंद्रोदये मेषराशौ ग्रीष्मे धान्यमहर्घता ॥
वृषे माषतिलागुरुतुषधान्यमहर्घता ॥ ८ ॥
कार्पाससूत्रधान्यादि महर्घं मिथुने स्मृतम् ॥
अनावृष्टिः कर्कराशौ सिंहे धान्यमहर्घता ॥ ९ ॥
चतुष्पदविनाशोपि राज्ञामन्योन्यविग्रहः ॥
द्विजादिपीडा कन्यायां तुलाक्रयणकं परम् ॥ १० ॥
वृश्चिके धान्यनिष्पत्तिर्धनुर्मकरयोः शुभम् ॥
कुम्भे चणकमाषादितिलानां नाश इष्यते ॥ ११ ॥
मीने सुभिक्षमारोग्यं फलं द्वादशराशिजम् ॥
एवं ज्ञेयं द्वितीयायां नियमेप्यन्नभावनात् ॥ १२ ॥

शुक्लपक्षकी द्वितीयाके दिन मेषराशिमें चंद्रोदय हो तो ग्रीष्ममें धान्य तेज हो। वृषभमें उदय हो तो उडद तिल, अगुरु, तुष, धान्य, महँगे हों ॥ ८ ॥ मिथुनमें कपास, सूत्र तथा धान्य तेज हों। कर्कराशिमें अनावृष्टि और सिंहमें हो तो धान्यभाव तेज हो ॥ ९ ॥ कन्यामें उदय हो तो पशुओंका नाश, राजाओंमें परस्पर युद्ध तथा विग्रह हो और ब्राह्मण आदिकोंको पीडा हो। तुलामें व्यापारकी वस्तुओंका आदर हो ॥ १० ॥ वृश्चिकमें धान्यकी उत्पत्ति हो। धन तथा मकरमें शुभ हो। कुंभमें उदय हो तो चणे, उडद, तिलोंका नाश हो ॥ ११ ॥ मीनमें उदय हो तो सुभिक्ष, आरोग्य हो यह द्वादश राशियोंका फल द्वितीयाके दिन विचारना चाहिये॥१२॥

शुक्लपक्षे द्वितीयायां भानोर्वामोदयः शशी ॥
तस्मिन्मासे समर्घं स्यान्महर्घं दक्षिणोदये ॥ १३ ॥
वैशाखे यदि वा ज्येष्ठे उत्तरस्यां विधूदये ॥
वहुधा धान्यनिष्पत्तिर्भवेन्मेघमहोदयः ॥ १४ ॥

शुक्लपक्षकी द्वितीयाको सूर्यसे उत्तरकी ओर चंद्रोदय हो तो धान्य सस्ता हो तथा दक्षिणकी तर्फ हो तो धान्य महँगा होवे ॥ १३ ॥ वैशाख वा ज्येष्ठमें सूर्यसे उत्तरकी तर्फ चंद्रोदय हो तो वहुत धान्य उत्पन्न होयँ और वर्षा भी उत्तम होय ॥ १४ ॥

सूर्येन्दुजांगारकसौरिभार्गवाः प्रदक्षिणं यांति यदा हिमद्युतेः।
तदा सुभिक्षं धनवृत्तिरुत्तमा विपर्यये धान्यधनक्षयादि १५॥

सूर्य, बुध, मंगल, शनि, शुक्र जो चंद्रमाके दहने चलें तो सुभिक्ष, उत्तम धनवृद्धि हो, विपरीत हो तो धान्य क्षय हो ॥ १५ ॥

वक्रोऽलिद्वितये सिंहे भूलाभः कन्यकाद्वये ॥
मीनत्रये दक्षिणोच्चश्चंद्रः शेषे समाकृतिः ॥ १६ ॥
विग्रहं हि समे चंद्रे दुर्भिक्षं दक्षिणोन्नते ॥
व्याधिं चौरभयं मूले सुभिक्षं चोत्तरोन्नते ॥ १७ ॥

वृश्चिक धन सिंहका चंद्रमा टेढा, कन्यामिथुनका त्रिशूलके समान, मीन, मेष, वृषभका दक्षिणकी ओर ऊंचा, शेष समान आकृतिका होता है ॥१६ ॥

समान चंद्रमामें विग्रह हो, दक्षिणकी ओर ऊंचेमें दुर्भिक्ष, त्रिशूलके आकारसे व्याधि, चौर भय हो और उत्तरकी ओर ऊंचेमें सुभिक्ष हो ॥ १७ ॥

सिंहे मेषद्वये रक्तः श्यामो मकरकुंभयोः ॥
तुलाकर्कालिषु श्वेतः पीतः शेषेषु शीतगुः ॥ १८ ॥
अरुणः शीतलकिरणः करोति रसहानिमुग्ररणमरणम् ।
पीतो रोगनियोगं करकादिभयं पुनः कालः ॥ १९ ॥

सिंह, मेष, वृषभमें लाल, मकर कुंभका श्याम, तुला कर्क वृश्चिकमें श्वेत, शेष राशिमें पीतरंग होता है ॥ १८ ॥ लाल चंद्र रसहानि, युद्ध और मरण करता है और पीत चंद्र रोग, करकादिभय तथा दुर्भिक्ष करता है ॥ १९ ॥

चित्राऽनुराधा ज्येष्ठा च कृत्तिका रोहिणी तथा ॥
मघा मृगशिरो मूलं तथाऽऽषाढविशाखयोः ॥ २० ॥
एतेषामुत्तरे मार्गे यदा चरति चंद्रमाः ॥
सुभिक्षं क्षेमवृद्धिश्च सुवृष्टिर्जायते तदा ॥ २१ ॥
एतेषां दक्षिणे मार्गे यदा चरति चंद्रमाः ॥
क्षयं गच्छंति भूनाथा दुर्भिक्षं च भयं पथि ॥ २२ ॥

चंद्रमा कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर, मघा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढासे ॥ २० ॥ उत्तरमें निकले तो सुभिक्ष, सुवृष्टि, क्षेम, कल्याण होवे ॥ २१ ॥ और दक्षिणमें निकले तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, युद्ध, चौर आदिसे राजा तथा प्रजाका नाश होवे ॥ २२ ॥

मिथुने चैव कन्यायां मीने याति तथा धने ॥
वर्षासु तत्र जानीयाद्वर्षते नात्र संशयः ॥ २३ ॥

यदि चातुर्मासमें चंद्रमा मिथुन, कन्या, धन और मीनका हो तो अवश्य वर्षा होवे ॥ २३ ॥

अथभौमचारफलम् ।

विपुलविमलमूर्तिः किंशुकाशोकवर्णः
स्फुटरुचिरमयूखस्तप्ततामप्रभाभः ॥

विचरति यदि मार्गे चोत्तरं मेदिनीजः ॥
शुभकृदवनिपानां हार्दिदश्च प्रजानाम् ॥ १ ॥

मंगलका विम्ब यदि बडा निर्मल, बहुत लाल, स्पष्ट किरणोंका तथा गलाये हुए ताम्र (तांबा) जैसी कान्तिवाला हो और उत्तर मार्गके नक्षत्रोंपर वा उनसे उत्तरमें निकले तो सुवृष्टि आदिसे प्रजाकी वृद्धि तथा राजाओंका कल्याण होवे ॥ १ ॥

अनृजुः परुषः श्यामो ज्वलितो धूमवाञ्शिखी ॥
विवर्णो वामगोऽध्वानक्रुद्धो ज्ञेयस्तदाऽशुभः ॥ २ ॥

मंगल विना वर्णका श्याम, रूक्ष, ज्वाला सदृश शिखावाला, क्रुद्ध और दक्षिणमार्गके नक्षत्रोंपर वा उनसे दक्षिणमें निकले तो अनावृष्टि आदिसे प्रजाको अशुभ हो ॥ २ ॥

मेषादिराशिस्थफलम् ।

भूमिपुत्रो यदा मेषे सुभिक्षं सर्वधान्यकम् ॥
प्रवालानि महर्घाणि क्रोधवांस्तु भवेन्नृपः ॥ ३ ॥

मेषराशिपर मंगल होवे तब सब धान्य सस्ते हों तथा मूंगा तेज होवे और राजाओंमें क्रोध उत्पन्न होवे ॥ ३ ॥

वृषराशौ यदा भौमः सर्वधान्यमहर्घता ॥
चन्दनं कुंकुमं वस्त्रं कार्पासादिमहर्घता ॥ ४ ॥

वृषराशिपर मंगल होवे तब सब धान्य महँगे होयँ और चंदन, केशर, वस्त्र और कपास आदिकी महँगी होवे ॥ ४ ॥

मिथुने च यदा भौमः मेघश्च प्रबलो भवेत् ॥
आरक्तं सर्वद्रव्याणि महर्घाणि भवंति ते ॥ ५ ॥

मिथुनराशिपर मंगल होवे तब मेघ प्रबल होय और सब लाल वस्तु तेज होवे ॥ ५ ॥

भूमिपुत्रो यदा कर्के सर्वधान्यमहर्घता ॥
महिषीक्षुमहर्घं च भवेन्नैवात्र संशयः ॥ ६ ॥

कर्कराशिका मंगल होवै तब सब धान्य महँगे होवें और भैंस, ऊख यह भी महंगे होवें इसमें संदेह नहीं ॥ ६ ॥

यदा सिंहगतो भौमः कांचनं रूक्मताम्रकम् ॥
आरक्तसर्वद्रव्याणि महर्घाणि भवंति हि ॥ ७ ॥

सिंहराशिपर मंगल होवे तब सोनों, चांदी, तांबो और लाल रंगकी सब वस्तु महंगी होवें ॥ ७ ॥

कन्याराशिगते भौमे चंदनं पट्टवस्त्रकम् ॥
आरक्ताद्यर्घवस्त्राणां प्रभवेत्तु महर्घता ॥ ८ ॥

कन्याराशिपर मंगल होवे तब चंदन, रेशमी वस्त्र, लाल वस्तु तथा लालरंगका द्रव्य यह सब महंगे होवें ॥ ८ ॥

भूमिपुत्रस्तुले जातः सर्वधान्यमहर्घता ॥
माषा मुद्गास्तथा सूत्रं कार्पासादि विशेषतः ॥ ९ ॥

तुलाराशिका मंगल हो तब सब धान्य महंगे होवें और उडद, मूंग, सूत, कपास आदि वस्तु विशेष महंगे होवें ॥ ९ ॥

यदा वृश्चिकराशिस्थो जायते च महीसुतः ॥
महर्घं सर्वद्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत् ॥ १० ॥

वृश्चिकराशिपर मंगल हो तब सब द्रव्य महंगे होंय और राजाओंमें क्रोध वा ईर्षा होवे ॥ १० ॥

धनराशिगते भौमे मूलद्रव्यतृणानि च ॥
काष्ठं च घृतकार्पासं महर्घं च चतुष्पदाम् ॥ ११ ॥

धनराशिका मंगल होवे तब मूल द्रव्य, तृण, काष्ठ, घृत, कपास और पशु यह सब महंगे होवें ॥ ११ ॥

मकरे च स्थिते भौमे घृततैलमहर्घता ॥
सुभिक्षं सर्वधान्यानां लोकानां दुःखपीडनम् ॥ १२ ॥

मकरका मंगल होवे तब घृत, तैल महंगे होवें और सब धान्य सस्ते हों और लोगोंको दुःख पीडाभी होवे ॥ १२ ॥

भूसुतः कुम्भराशिस्थः सर्वधान्यमहर्घता ॥
एवं प्रजायते ह्यर्घं लोकमध्ये तु निर्भयम् ॥ १३ ॥

कुंभराशिका मंगल होवे तव सब धान्य महंगे होंय इस प्रकार और भी वस्तु महंगी हों परंतु लोग निर्भय रहें ॥ १३ ॥

मीनराशिकुजश्चैव तृणं काष्ठं चतुष्पदम् ॥
महर्घं जायते सर्वं गृह्यते तत्र पण्डितैः ॥ १४ ॥

मीनराशिका मंगल होवे तव तृण, काष्ठ, पशु यह महंगे होवें इस वास्ते बुद्धिमान् मनुष्योंको खरीदने चाहियें ॥ १४ ॥

अथ नक्षत्रफलम् ।

शीतपीडाश्विनीभौमे तुषधान्यमहर्घता ॥
द्विजपीडा भरण्यादौ नाशः स्यादतिशीघ्रगे ॥ १५ ॥
सर्वदेशे ग्रामपीडा धान्यानां च महर्घता ॥
कृत्तिकायां देशभंगो पीडा तापस आश्रमे ॥ १६ ॥
वृक्षपीडा श्वापदानां रोगः स्याद्रोहिणीकुजे ॥
महर्घताऽपि कार्पासे वस्त्रे सूत्रे विशेषतः ॥ १७ ॥

कार्पासनाशः प्रबलं सुभिक्षं मृगे कुजे भूर्जलपूरितैव ॥ वृष्टिश्च
रौद्रे दितिजे तिलानां नाशो विनाशो महिषीकुलस्य ॥ १८
पुष्ये कुजे चौरभयं विरोधाच्छुभं न किंचिन्नृपतेर्बलत्वम् ॥
सार्पेल्पवृष्टिर्बहुधान्यनाशो दुर्भिक्षमेवोरगदंशभीतिः ॥ १९ ॥

अश्विनी नक्षत्रपर मंगल हो तो शीतकी पीडा,तुष-धान्य महंगे हों, भरणी पर हो तो ब्राह्मणोंको पीडा और अनिष्ट हो ॥ १५ ॥ सब देश और ग्राममें भी पीडा, धान्य महँगे हों । कृत्तिकामें देशभंग और तपस्वियोंको पीडा हो ॥ १६ ॥ रोहिणीमें मंगल हो तो वृक्ष और पशुओंको पीडा और कपास सूत्र व वस्त्र महंगे हों ॥१७॥ मृगशिरमें मंगल हो तो कपासका नाश, शेष सब सुभिक्ष हो, पृथ्वी जलसे पूर्ण हो, आर्द्रा, पुनर्वसुमें मंगल हो तो तिल

और भैंसोंका नाश हो ॥ १८ ॥ पुष्यमें हो तो चोरभय, विरोध हो, शुभ कुछभी न हो, राजा निर्बल हो । आश्लेषामें हो तो थोडी वर्षा, बहुत धान्य-नाश, अधिक दुर्भिक्ष और सर्पभय हो ॥ १९ ॥

पैत्र्येन वृष्टिस्तिलमाषमुद्गविनाशनं दुर्लभतान्नधान्ये ॥
स्याद्योनिजे भूमिज अल्पवृष्टिःप्रजासु पीडा गुरुतैलमूल्यम् ॥
तथोत्तरायां जलवृष्टिरोधाच्चतुष्पदे पीडनमश्वमूल्यम् ॥ हस्ते
कुजेऽल्पांबु च तुच्छधान्यं घृतं गुरौ वा लवणं महर्घम् ॥२१॥
चित्रा कुजेऽतीव रुजोतिपीडा शालीष्टगोधूममहर्घतापि ॥
स्वातावनावृष्टिरथ द्विदेवे कार्पासगोधूममहर्घभावः ॥ २२ ॥

मघामें मंगल हो तो वर्षाका अभाव, तिल, उडद, मूंग इनका नाश और धान्य दुर्लभ हो । पूर्वाफाल्गुनीमें थोडी वर्षा, प्रजामें पीडा, तेलका भाव तेज हो ॥ २० ॥ उत्तराफाल्गुनीमें हो तो वर्षा थोडी, पशुओंका नाश तथा घोडोंका मूल्य अधिक हो । हस्तमें मंगल हो तो वर्षा थोडी हो तथा धान्यभी थोडाही हो, घृत और लवण महंगे होवें ॥ २१ ॥ चित्रामें मंगल हो तो रोग, पीडा अधिक हो, चावल, गेहूंका भाव तेज हो, स्वातिमें अनावृष्टि होवे और विशाखामें गेहूं और कपास महंगे होवें ॥ २२ ॥

मैत्र्ये सुभिक्षं पशुपक्षिपीडा ज्येष्ठाकुजे स्वल्पजलं च रोगाः॥
मूले द्विजक्षत्रियवर्गपीडा महर्घता वा तुषधान्यराशेः ॥२३॥
पूषाकुजे भूरिजलाः पयोदा गावोऽल्पदुग्धा वसुधान्नपूर्णा ॥
महर्घता शालितिलाज्यमाषेष्वग्नौ[1] हि तत्पूर्ववदेव भावम्॥२४॥
श्रुतौ च रोगो बहुधान्ययोगो भूम्यां न पश्चाज्जलदागमश्च॥
स्याद्वासवे वासववत्समृद्धिर्धान्यैः समर्घं गुडशर्करादि॥२५॥
स्युर्वारुणे कीटकमूषकाद्यास्तथापि धान्यानि बहूनि भूम्याम्॥
पूभामहीजे तिलवस्त्ररूतकार्पासपूगादिमहर्घता वा ॥ २६ ॥

१ अग्निरिति शब्दो विश्वेदेवार्थवाचकः, विश्वेदेवा उत्तराषाढानक्षत्रस्य मुख्या देवता अतः अग्निरिति शब्देनोत्तराषाढानक्षत्रार्थो बोध्यः ।

दुर्भिक्षमेवोत्तरभाद्रिकायां वर्षा न मेघोन्नयनेपि किंचित् ।
सौख्यं सुभिक्षं क्षितिजे सपौष्णे नरेषु रोगा बहुधान्यलक्ष्मा॥

अनुराधामें मंगल हो तब सुभिक्ष हो किन्तु पशु पक्षियोंको पीडा हो। ज्येष्ठामें मंगल हो तो कम वर्षा और रोग हो। मूलमें हो तो ब्राह्मण क्षत्रियोंको पीडा हो अथवा तुष-धान्य महंगे हों ॥ २३ ॥ पूर्वाषाढाका मंगल हो तब बहुत वर्षा हो, गौ दूध कम देवें, किन्तु पृथ्वी अन्नसे पूर्ण होजावे, धान, तिल, घृत, उडद यह महंगे होवें। उत्तराषाढाका मंगल हो तब भी पूर्ववत् फल होवे ॥ २४ ॥ श्रवणमें मंगल हो तब रोग हो परंतु धान्य बहुत हो किन्तु पीछे मेघ वर्षा करें। धनिष्ठामें मंगल हो तो इंद्रवत् समृद्धि हो, गुड, शक्कर, धान्य यह सस्ते हों ॥ २५ ॥ शतभिषामें हो तो कीडे, मूसे आदि ज्यादा हों, परंतु पृथ्वीमें धान्य अधिक होवे। पूर्वाभाद्रपदमें मंगल हो तो तिल, वस्त्र, कपास, सुपारी इनका भाव तेज हो ॥२६॥ उत्तराभाद्रपदमें मंगल हो तो दुर्भिक्ष होवे, वर्षा तथा अन्नकी उत्पत्ति न होवे। रेवतीमें मंगल हो तो सुख और सुभिक्ष करे, मनुष्योंमें रोग हो किन्तु धान्यकी अधिकता हो ॥ २७ ॥

उदयफलम्।

मेषे भूमिसुतोदये च चपला माषास्तिलाः स्युः प्रियाः,
नाशः स्याच्च वृषे चतुष्पदकुले युग्मेऽन्नदुष्प्राप्यता ॥
वैश्यानां बहुपीडनं शशिगृहे वृष्ट्यातिधान्योदयः
सिंहे शालिमहर्घता द्विजरुजः कन्योदये भूभुवः ॥ २८ ॥
धान्यानि भूयांसि तुलोदये स्युः कन्याद्वये तेन सुभिक्षमेव।
चौराग्निभीतिर्नृपदुष्टनीतिर्निष्पत्तिरन्नस्य तु वृश्चिकस्य॥२९॥
धनुषि रसातलवृष्टिः शालिगुडादेर्महर्घता मकरे ॥
पश्चिमधान्यविनाशो वर्षाप्यतिशायनी देशे ॥ ३० ॥
कुंभेति ह्यागमात्पीडा यदि वा मूषकादिना ॥
मीने कुजोदये नैव वर्षादुर्भिक्षसाधनम् ॥ ३१ ॥

मेषमें मंगल उदय हो तो उडद, तिलका भाव तेज हो, वृषमें उदय हो तो पशुओंका नाश हो, मिथुनमें हो तो अन्न दुर्लभ होवे, कर्कमें हो तो वैश्योंको पीडा हो, सिंहमें हो तो धान्य तेज हो कन्यामें हो तो ब्राह्मण क्षत्रियोंको रोग हो ॥ २८ ॥ तुलामें मंगल उदय हो तो धान्य अधिक हो, चौर अग्निभय और अन्याय हो, वृश्चिकमें उदय हो तो अन्नकी उत्पत्ति होवे ॥ २९ ॥ धनराशिमें मंगलका उदय हो तो पातालमें वर्षा होवे और शालि, गुड आदि महंगे होवें । मकरमें उदय हो तो ग्रीष्मका धान्य नाश होवे किन्तु वर्षा अधिक हो ॥ ३० ॥ कुम्भमें मंगलका उदय हो तो मूसे तथा टीडी आदिकी पीडा हो । और मीनमें मंगलका उदय हो तो अनावृष्टिसे दुर्भिक्ष होवे ॥ ३१ ॥

अस्तफलम् ।

मंगलास्तगमान्मेषे पाषाणानां महर्घता ॥
तृणादेः खलु वस्तूनां सुभिक्षं स्वस्थता वृषे ॥ ३२ ॥
युग्मेतिवृष्टिः कर्कस्थे तस्मिन्भूधान्यशून्यता ॥
सिंहेऽश्वतरयोः पीडा चतुष्पदमहर्घता ॥ ३३ ॥
कन्याद्वये महर्घाःस्युर्गोधूमाश्चणका यदा ॥
अलौ सुभिक्षं नृपभीर्धनुर्महर्घशालिकृत् ॥ ३४ ॥
तुषधान्यागरुस्तद्वन्मकरे विपुलं जलम् ॥
चौरवह्निभयं देशे कुंभे राजसु विग्रहः ॥ ३५ ॥
मीने कुजास्तंगमनान्नवनागाकुलाः प्रजाः ॥
बहुप्रजाःसुभिक्षेण सोत्सवाः शुभलक्षणाः ॥ ३६ ॥

मेषराशिपर मंगल अस्त हो तो पत्थर मंहगे होंय । वृषमें अस्त हो तो तृण (घास) आदि वस्तुओंसे सुभिक्ष तथा नीरोगता हो ॥ ३२ ॥ मिथुनमें वर्षा हो । कर्कमें धानसे रहित पृथ्वी हो । सिंहमें अस्त हो तो खच्चरोंको पीडा तथा पशु तेज हों ॥ ३३ ॥ कन्या और तुलमें अस्त हो तो गेहूं, चणे हगे हों, वृश्चिकमें अस्त हो तो सुभिक्ष हो, राजा प्रसन्न रहें । धनमें मंगल अस्त हो तो चावल महंगे होवें ॥ ३४ ॥ तथा तुषधान्य, अगर भी तेज

हो, मकरमें बहुत जल वर्षे किन्तु देशोंमें चौर तथा अग्निका भय हो । कुंभमें अस्त हो तो राजाओं में विग्रह हो ॥ ३५ ॥ मीनराशिपर मंगल अस्त हो तो अन्न तेज और नागोंसे प्रजा व्याकुल और पीछे सुभिक्ष होकर प्रजामें आनंद हो ॥ ३६ ॥

आर्द्रायां च भरण्यां च रोहिण्यामुत्तरात्रये ॥
मघायां मङ्गलो यावत्तावद्देवो न वर्षति ॥ ३७ ॥
पूर्वात्रये तथाश्विन्यां हस्ते त्वाष्ट्रेऽथ वायुभे ॥
वारुणे मैत्ररेवत्योर्भौमस्तिष्ठन्हि वर्षति ॥ ३८ ॥

मंगल भरणी, रोहिणी, आर्द्रा, मघा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा तथा उत्तराभाद्रपदा आदिपर रहे तब तक वर्षा नहीं होवे ॥ ३७ ॥ और मंगल अश्विनी, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, पूर्वाषाढा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, रेवती, इन नक्षत्रोंपर रहे तबतक निश्चयही वर्षा होती है ॥ ३८ ॥

बुधचारफलम् ।

हेमकान्तिरथवा शुकवर्णः सस्यकेन मणिना सदृशो वा ॥
स्निग्धमूर्तिरलघुश्च हिताय व्यत्ययेन शुभकृच्छशिपुत्रः ॥

बुधका बिम्ब सुवर्ण वा तोते वा नीलमणि जैसा स्निग्ध, बडा हो तो हितकारक और जो विपरीत हो तो अहितकारक होवे ॥ १ ॥

मेषादिराशिस्थफलम् ।

यदा सौम्यः स्थितो मेषे महर्घं च चतुष्पदाम् ॥
सुवर्णं समतां याति नात्र कार्या विचारणा ॥ २ ॥

मेषराशिपर बुध होवे तब पशु महंगे होवें और सुवर्णका समान भाव रहे इसमें कुछभी विचार नहीं करना ॥ २ ॥

सोमपुत्रो वृषे स्थित्वा एवं कुर्याच्च लक्षणम् ॥
मेदिनीनवखण्डेषु कलहश्च महद्भयम् ॥ ३ ॥

वृषराशिपर बुध होवे तब सम्पूर्ण पृथ्वीपर कलह होवे और अत्यंत भयभी हो ॥ ३ ॥

बुधो मिथुनराशिस्थो महर्घं च चतुष्पदाम् ॥
तदा वायुर्विजानीयान्मेघश्च प्रचुरो भवेत् ॥ ४ ॥

मिथुनराशिपर बुध होवे तब पशु मंहगे होवें और पवनके जोरसें मेघ बहुत होवें ॥ ४ ॥

निशापतेश्च तनयः कर्कराशौ यदा भवेत् ॥
ततोतिदुःखं भवति सुभिक्षं स्वल्पकारकम् ॥ ५ ॥

कर्कराशिपर बुध होवे तब प्रजाको अत्यंत दुःख होवे किन्तु सुभिक्ष कम होवे ॥ ५ ॥

सिंहराशौ बुधः स्याच्चेत्सर्वधान्यमहर्घता ॥
सुवर्णं देवदारुश्च महर्घं प्रभवेत्तदा ॥ ६ ॥

सिंहराशिका बुध होवे तब सब धान्य समभाव रहें और सुवर्ण देवदारु यह महंगे होवें ॥ ६ ॥

कन्याराशिं गते ज्ञे हि कांचनं शुद्धशर्करा ॥
मासे षष्ठे ददेल्लाभं पुनः शस्तो भविष्यति ॥ ७ ॥

कन्याराशिपर बुध होवे तब छठे महीने तक सुवर्ण और शक्कर यह लाभ देवें फिर सस्ते होजावें ॥ ७ ॥

यदा च तुलराशिस्थो निशाकरसुतस्तयदा ॥
मेघश्च जायते तत्र मेदिनी कलहान्विता ॥ ८ ॥

तुलाराशिपर बुध होवे तब वर्षा होवे और पृथ्वीपर कलह तथा क्लेश, युद्ध आदि होवें ॥ ८ ॥

बुधो वृश्चिकाराशिस्थो घृततैलमहर्घता ॥
सुभिक्षं तत्र धान्यानां लोकानां च शुभं भवेत् ॥ ९ ॥

वृश्चिकराशिपर बुध होवे तब घृत तैल महंगे होवें और धान्यका सुभिक्ष होय, लोगोंमें सुख होय ॥ ९ ॥

धने मीने बुधो याति मारयति मृगान्गजान् ॥
राजा विरोधकृत्तत्र चान्यथा न भविष्यति ॥ १० ॥

धन वा मीन राशिपर बुध होवे तब मृग, हाथी इन्होंका नाश होवे और राजा-प्रजाका विरोध हो इसमें अन्यथा नहीं ॥ १० ॥

निशापतेश्च तनयः शनिक्षेत्रे यदा भवेत् ॥
समभावः सुखं दुःखं तथैव च शुभाशुभम् ॥ ११ ॥

मकर और कुंभराशिपर बुध होवे तब अन्नआदिका समभाव रहे और शुभ अशुभ दोनों प्रकारके फल होवें ॥ ११ ॥

अथ नक्षत्रफलम् ।

बुधेश्विन्यां तु पीडयन्ते गोधूमाश्च यवादयः ॥
इक्षुदुग्धरसादीनां समर्घं च घृतादिषु ॥ १२ ॥
बुधे भरण्यां मातंगपीडा चाण्डालनाशनम् ॥
तीव्ररोगाद्धान्यवस्तु महर्घं लोकवैरतः ॥ १३ ॥
कृत्तिकायां बुधे विप्रपीडा मेघाल्पता जने ॥
अन्नमल्पं ज्वरं बाधा क्वचिद्विग्रहकारणम् ॥ १४ ॥
रोहिण्यां च बुधे कार्पासतिलसूत्रमहर्घता ॥
मृगशीर्षे सुभिक्षं स्याद्वातवृष्टिर्महीयसी ॥ १५ ॥
गोधूमतिलमाषादिसमर्घं सुखिनो जनाः ॥
आर्द्रायां वृष्टिरतुला ग्रहपाताः प्रवाहतः ॥ १६ ॥

अश्विनीमें बुध हो तो गेहूं जवको पीडा हो, ईख, दूध, रस, घृतका भाव सस्ता हो ॥ १२ ॥ भरणीमें बुध हो तब हाथियोंको पीडा तथा चाण्डालका नाश, अतिरोगसे धान्यका भाव तेज हो ॥ १३ ॥ कृत्तिकामें बुध हो तब ब्राह्मणोंको पीडा, वर्षा कम, तथा मनुष्योंमे ज्वरबाधा, अन्नतेज, कहीं विग्रहभी हो ॥ १४ ॥ रोहिणीमें बुध हो तब तिल, सूत्र, कपास बहु महंगे हों, मृगशिरमें सुभिक्ष, वायुसे वर्षा अधिक हो ॥ १५ ॥ गेहूं, तिल, उडद सस्ते हों और मनुष्य सुखी हों । आर्द्रामें वर्षा बहुत, तारे टूटें तथा वायुका जोर हो ॥ १६ ॥

पुनर्वसौ बालपीडा कार्पासे सूत्रमन्दता ॥
जनेषु सर्वसंयोगः पुष्ये राज्ञां भयं जनः ॥ १७ ॥
आश्लेषायां महावृष्टिस्तुषधान्यसमुद्भवः ॥
मघाबुधेऽल्पवृष्टिश्च धान्यनाशः प्रजाभयम् ॥ १८ ॥
पूफायां नृपसंग्रामः क्षेत्रबाधान्नमन्दता ॥
उफायां तु माषमुद्गाद्यल्पनिष्पत्तिमादिशेत् ॥ १९ ॥
हस्ते बुधे सुभिक्षं स्याद्धान्यमारोग्यमम्बुदाः ॥
चित्रायां गणिकाशिल्पिद्विजपीडाल्पवर्षणम् ॥ २० ॥
स्वातौ बुधे मन्दवृष्टिर्विशाखायां सुभिक्षता ॥
व्याधिर्भयं च दुर्भिक्षं किंचित्कुत्रापि जायते ॥ २१ ॥

पुनर्वसुमें बुध हो तो बालपीडा, सूत, कपासका भाव मंदा, मनुष्योंमें मिलाप रहै । पुष्यमें हो तो मनुष्योंको राजभय होवे ॥ १७ ॥ आश्लेषामें हो तो महावर्षा तथा तुष धान्यकी उत्पत्ति हो, मघामें बुध हो तो वर्षा कम हो और धान्यका नाश तथा प्रजाको भय हो ॥ १८ ॥ पूर्वाफाल्गुनीमें हो तो राजाओंमें संग्राम, क्षेत्र बाधा, अन्न मंदा होवे । उत्तराफाल्गुनीमें हो तो उडद, मूंग इनकी उत्पत्ति कम होवे ॥ १९॥ हस्तमें बुध हो तो सुभिक्ष हो, धान्य उत्पत्ति उत्तम हो मनुष्योंमें आरोग्यता तथा वर्षा श्रेष्ठ होवे, चित्रामें गणिका (वेश्या), कारीगर, द्विजातिको पीडा और अल्प वर्षा होवे ॥ २० ॥ स्वातिमें बुध हो तो मंदवृष्टि हो, विशाखामें हो तो सुभिक्ष होवे और कहीं कुछ व्याधि, भय तथा दुर्भिक्षभी होवे ॥ २१ ॥

सुभिक्षमनुराधायां पक्षिपीडा प्रजासुखम् ॥
ज्येष्ठायामिक्षुशाल्याज्यमहर्घमश्वरोगिता ॥ २२ ॥
मूले पक्षिपशूनां च बालपीडा विजायते ॥
धान्यं मंदं च पूषायां व्याधिर्ग्रीष्मेऽपि वर्षणम् ॥ २३ ॥
उषायां सस्यनिष्पत्तिरष्टवर्षशिशुक्षयम् ॥

श्रुतौ गुडातसीधान्यचणकेषु हिमाद्भवंत् ॥ २४ ॥
वासवे तु गवां पीडा वारुणे शूद्ररोगता ॥
दुर्भिक्षमथ पूफायां क्षेममारोग्यता स्मृता ॥ २५ ॥
उफायां नृपतिक्लेश आरोग्यं पशुपक्षिणाम् ॥
रेवत्यां नन्दनं चंद्रो महर्घं कुंकुमाद्यपि ॥ २६ ॥

अनुराधामें बुध हो तो सुभिक्ष, पक्षियोंको पीडा और प्रजाको सुख हो। ज्येष्ठामें ईख, धान, घृत तेज और घोडोंमें रोग हो ॥ २२ ॥ मूलमें पक्षियोंके और पशुओंके बच्चोंको पीडा हो, किन्तु धान्य मंदा हो । पूर्वाषाढामें हो तो व्याधि और ग्रीष्म ऋतुमें वर्षा हो ॥ २३ ॥ उत्तराषाढामें हो तो धान्य उत्पन्न होय किन्तु आठवर्षके वालकोंका नाश होय। श्रवणमें हो तो गुड, अलसी, धान्य और चणेको हिम (शीत) से भय हो ॥ २४ ॥ धनिष्ठामें हो तो गायोंको पीडा हो । शतभिषामें हो तो शूद्रोंको रोग हो किन्तु दुर्भिक्ष हो। पूर्वाफाल्गुनीमें हो तो कल्याण तथा आरोग्यता रहे ॥ ॥ २५ ॥ उत्तराफाल्गुनीमें हो तो राजाओंको क्लेश,पशुपक्षियोंको आरोग्य हो। रेवतीमें बुध हो तो केशर महंगी होवे ॥ २६ ॥

उदयफलम् ॥

मेषे बुधस्योदयतो गवादिचतुष्पदानां महतीह पीडा ॥
तीडादिना धान्यमहर्घता च वृषेतिवृष्टिर्मिथुने न वर्षा ॥२७॥
कर्के सुखं सिंहपदे चतुष्पान्म्रियेच्च कन्याबहुधानसौख्यं ॥
भूकंपयुद्धादि तुलोदिते ज्ञे तथाऽष्टमे राजभयं सुभिक्षं ॥२८॥
धनुर्बुधस्याभ्युदयात्सुखानि मृगे मही धान्यरसादिपूर्णा ॥
कुम्भेतिवायुः पथिभिश्चमीने दुर्भिक्षपक्षो यदि वातिवृष्टिः॥२९॥

मेषमें बुधका उदय होवे तब गौ आदि पशुवोंको बहुत पीडा हो तथा टीडी आदिके भयसे धान्य तेज होवे, वृषभमें हो तो अधिक वर्षा हो, मिथुनमें हो तो अनावृष्टि हो ॥ २७ ॥ कर्कमें उदय हो तो सुख हो, सिंहमें उदय हो तो पशुओंकी मृत्यु होवे । कन्यामें हो तो धान्य बहुतही हो

जिससे सुख हो। तुलामें उदय हो तो भूकंप और युद्ध हो। वृश्चिकमें उदय हो तो राज्यसे भय हो किन्तु सुभिक्ष हो ॥ २८ ॥ धनमें उदय हो तो सुख हो। मकरमें उदय हो तो अन्न और रस आदिसे पूर्ण हो। कुंभमें उदय हो तो मार्गमें बहुत वायु चले। मीनमें उदय हो तो दुर्भिक्ष हो, जो वायु वर्षा उस दिन हो ॥ २९ ॥

अस्तफलम् ॥

मेषे बुधास्तं भुवने सुभिक्षं चतुष्पदां नाशकरं वृषास्तम् ॥
राज्ञां तु पीडा मिथुनेऽथ कर्केऽनावृष्टये मृत्युभयं च चौराः॥
तथैव सिंहेऽल्पजलं च कन्यां बुधोऽस्तगश्चौरभयातिवृष्टिः ॥
क्रय्यादिकानां च महर्घतायै तुलाप्यलिर्धातुमहर्घतायै ३१॥
राज्ञां भयं धन्विनि रोगचारो,मृगेऽल्पलाभो व्यवसायिलोके॥
कुम्भेतिवायुर्हिमदग्धवृक्षा मीनेऽन्नधाना नृपवर्गपीडा ॥३२॥

मेषमें बुध अस्त हो तो लोकमें सुभिक्ष हो, वृषमें हो तो पशुओंका नाश हो। मिथुनमें हो तो राजाओंको पीडा हो। कर्कमें हो तो अनावृष्टि, मृत्यु, चौर भय हो ॥ ३० ॥ सिंहमें बुध अस्त हो तो वर्षा कम होवे। कन्याराशिमें बुध अस्त होवे तब चौरभय हो किन्तु वर्षा अधिक हो और व्यापारकी वस्तु महंगी हों। तुला और वृश्चिकमेंभी धातु महंगी होय ॥ ३१ ॥ धनमें हो तो राजोंको भय रोगकी प्राप्ति हो। मकरमें हो तो व्यापारियोंको कम लाभ हो। कुंभमें हो तो तीव्र पवन चले और वृक्ष शीतसे नष्ट होवें। मीनमें अस्त हो तो अन्न और धान्य हो, किन्तु राजोंको पीडा हो॥ ३२ ॥

नोत्पातपरित्यक्तः कदाचिदपि चन्द्रजो व्रजत्युदयम् ॥
जलदहनपवनभयकृद्धान्यार्घक्षयविवृद्धये वा ॥ ३३ ॥

बुध उत्पात किये विना कदापि उदय नहीं होता, अतः उस समय वर्षा, अग्नि, वायु आदिका उपद्रव होवे और धान्य तेज वा मन्दा होवे। अर्थात् अस्तसमयके उत्पातोंसे उदयके समय उलटे होवें। जैसे वर्षासे अनावृष्टि और अनावृष्टिसे वर्षा तथा धान्य मंदासे तेज और तेजसे मंदा हो ॥ ३३ ॥

वैशाखपौषमाघेषु श्रावणाषाढयोरपि ॥
न दृश्यते बुधःप्रायो मासेष्वन्येषु दृश्यते ॥३४ ॥
यदाऽदृश्येषु दृष्टः स्याद्दृश्येषु न च दृश्यते ॥
गवां रोगमनावृष्टिं दुर्भिक्षं चापि निर्दिशेत् ॥ ३५ ॥

बुध वैशाख, आषाढ, श्रावण, पौष और माघमें बहुधा उदय नहीं होता किन्तु अन्य महीनोंमें होता है ॥ ३४ ॥ सो उदय होनेवाले महीनोंमें तो नहीं हो किन्तु नहीं होनेवाले महीनोंमें उदय हो तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष तथा गायोंमें रोग होवे ॥ ३५ ॥

गुरुचारफलम् ।

अकलुषांशुजटिलः पृथुमूर्तिः कुमुदकुन्दकुसुमस्फटिकाभः॥
ग्रहहतो न यदि सत्पथवर्त्ती हितकरोऽमरगुरुर्मनुजानाम् १॥

बृहस्पतिका विम्ब बडा, किरणें निर्मलवर्ण, कुमुद वा कुन्दके पुष्प जैसा श्वेत तथा स्फटिक मणि जैसा स्निग्ध हो । और युद्धमें ग्रहों द्वारा हारा न हो तथा ग्रह वा नक्षत्रोंसे उत्तरमें होके निकले तो मनुष्योंको हित करनेवाला है अन्यथा विपरीत फल हो ॥ १ ॥

उदगारोग्यसुभिक्षक्षेमकरो वाक्पतिश्चरन् भानाम् ॥
याम्ये तद्विपरीतो मध्येन तु मध्यफलदायी ॥ २ ॥

बृहस्पति नक्षत्रसे उत्तरमें निकले तो सुभिक्ष, क्षेम, दक्षिणमें निकले तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, अक्षेम और बीचमेंसे निकले तो वृष्टि साधारण होवे ॥२॥

प्रच्छादने तु रोहिण्याः प्रजापीडां विनिर्दिशेत् ॥
शकटारोहणे विद्याज्जगतः संभ्रमं बुधः ॥ ३ ॥

यदि गुरु रोहिणीके तारोंके बीचमेंसे निकले तो जगत्‌में ऐसा उपद्रव करे जिससे पण्डितभी भ्रममें पडजावें ॥ ३ ॥

मेषादिराशिचारफलम् ।

यदा सुरगुरुर्मेषे सुखं सर्वजनेषु च ॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं सुखिनी मेदिनी भवेत ॥ ४ ॥

बृहस्पति मेषराशिपर हो तब सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य आदिसे सब लोग सुखी होवें ॥ ४ ॥

जीवे वृषे सुभिक्षं स्याद्गोरसस्य महर्घता ॥
स्वल्पवृष्टिः प्रजापीडा सस्यानां बहुधा भवेत् ॥ ५ ॥

बृहस्पति वृषपर हो तब अल्प वर्षा, तृणका सुभिक्ष, रस महँगा और प्रजाको पीडा होवे ॥ ५ ॥

मिथुने च गुरुर्याति तत्राब्दे दारुणं भयम् ॥
नृपाणां विग्रहस्तत्र स्वल्पं तोयं भविष्यति ॥ ६ ॥

बृहस्पति मिथुनका हो तब स्वल्पवर्षा, उस वर्षमें दारुण भय होवे और राजाओंमें विग्रह होवे ॥ ६ ॥

बृहस्पतिर्यदा कर्के स्वल्पं मेघः प्रवर्षति ॥
राजभिर्विग्रहश्चैव दुर्भिक्षं तत्र जायते ॥ ७ ॥

बृहस्पति कर्कका हो तब वर्षा कम हो, राजाओंमें विग्रह हो और दुर्भिक्ष पडे ॥ ७ ॥

यदा सिंहे गुरुश्चैव सुभिक्षं तत्र जायते ॥
मेघाश्च प्रबलास्तत्र बहुसस्या च मेदिनी ॥ ८ ॥

बृहस्पति सिंहपर हो तब वर्षा और खेतियोंकी उत्पत्ति अधिक हो जिससे सुभिक्ष हो ॥ ८ ॥

कन्याराशिगते जीवे मेघवृष्टिस्तथोत्तमा ॥
सुभिक्षं सर्वधान्यनामारोग्यं लभते जनः ॥ ९ ॥

बृहस्पति कन्यापर हो तब वर्षा उत्तम होवे, सब धान्य सस्ते हों और मनुष्य नीरोग रहें ॥ ९ ॥

तुलाराशौ गते जीवे ज्वरव्याधिं विनिर्दिशेत् ॥
सर्वंसुभिक्षं ज्ञातव्यं क्वचित्क्वापि महर्घता ॥ १० ॥

बृहस्पति तुलापर हो तब किसी २ देशमें महँगाई हो, सर्वत्र सुभिक्ष रहे किन्तु ज्वर रोगकी पीडा हो ॥ १० ॥

वृश्चिके च गुरुर्यातो दुर्भिक्षं तत्र जायते ॥
स्वल्पवृष्टिर्भवेत्तत्र भूर्युता नरकिल्बिषैः ॥ ११ ॥

वृहस्पति वृश्चिकपर हो तव दुर्भिक्ष, अल्पवर्षा तथा अनेक प्रकारके पाप–उपद्रव होवें ॥ ११ ॥

धनराशिस्थिते जीवे गोधूमादिमहर्घता ॥
वर्षाकाले भवेत्तत्र समर्घं च तिलं गुडम् ॥ १२ ॥

वृहस्पति धनका हो तव वर्षाकालमें गेहूं महंगे हों और तिल तथा गुड यह सस्ते होवें ॥ १२ ॥

मकरे च गुरौ चैव दुर्भिक्षं घोरदारुणम् ॥
विग्रहं यांति राजानः त्रिमासान्ते शुभं भवेत् ॥ १३॥

वृहस्पति मकरका हो तव राजाओंमें विग्रह हो और घोर दुर्भिक्ष पडे परंतु तीन महीने पीछे सुभिक्ष होजावे ॥ १३ ॥

कुंभराशिगते जीवे मेघः स्वल्पाम्बु वर्षति ॥
कृपिनाशं च दुर्भिक्षं पूर्वदेशे समर्घता ॥ १४ ॥

वृहस्पति कुंभपर हो तव मेघ कम वर्षा करें तथा खेतियोंका नाश हो और पूर्व देशमें धान्य सस्ता रहे ॥ १४ ॥

यदा सुरगुरुर्मीने दुर्भिक्षं तत्र रौरवम् ॥
सागराः सर्वनद्योपि विनश्यंति चतुष्पदाः ॥ १५ ॥

वृहस्पति मीनपर हो तव वडा भयानक दुर्भिक्ष पडे जिससे पशुओंका नाश हो ॥ १५ ॥

अथ नक्षत्रभोगफलम् ।

कृत्तिकारोहिणीऋक्षे यदा तिष्ठेद्बृहस्पतिः ॥
मध्यमात्रं भवेद्वृष्टिः सस्यं भवति मध्यमम् ॥ १६ ॥
मृगशीर्षे तथार्द्रायां यदि तिष्ठेद्बृहस्पतिः ॥
सुभिक्षं लभते सौख्यं वृष्टिजातं सदा जनः ॥ १७ ॥

आदित्यपुष्याश्लेषासु गुरुभोगे प्रसंगिनी ॥
अनावृष्टिभयं घोरं दुर्भिक्षं सर्वमण्डले ॥ १८ ॥
मघायां पूर्वफाल्गुन्यां यदि तिष्ठेद्बृहस्पतिः ॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं देशयोगं बहूदकम् ॥ १९ ॥
उत्तराफाल्गुनीहस्ते गुरौ वर्षा सुखं जने ॥
चित्रायां च तथा स्वातौ विचित्रा धान्यसंपदः॥२०॥

बृहस्पति कृत्तिका और रोहिणीपर होवे तब उस समय वर्षा मध्यम और धान्यभी मध्यम होवे ॥ १६ ॥ मृगशिर और आर्द्रामें गुरु हो तब सुभिक्ष, सुख और वर्षा अच्छी हो ॥ १७ ॥ पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषामें गुरु हो तब अनावृष्टि तथा भय और सर्वत्र दुर्भिक्ष हो ॥ १८ ॥ मघा, पूर्वाफाल्गुनीमें गुरु हो तब सुभिक्ष, क्षेम तथा आरोग्यता और वर्षा उत्तम हो ॥ १९ ॥ उत्तराफाल्गुनी, हस्तमें गुरु हो तब उत्तम वर्षा, मनुष्योंमें सुख हो । चित्रा स्वातिमें गुरु हो तब श्रेष्ठ धान्यकी उत्पत्ति हो ॥ २० ॥

विशाखायां च राधायां सस्यं भवति मध्यमम् ॥
मध्यमैव भवेद्वर्षा वर्षा सापि च मध्यमा ॥ २१ ॥
गुरुर्ज्येष्ठामूलचारे मासद्वये न वर्षणम् ॥
परतः खण्डवृष्टिः स्यान्नृपाणां दारुणो रणः ॥ २२ ॥
जीवे पूर्वोत्तराषाढायुक्ते लोकसुखावहम् ॥
त्रिमासाज्जायते वर्षा मासमेकं न वर्षति ॥ २३ ॥
श्रवणे वा धनिष्ठायां वारुणे गुरुसंगमे ॥
सुभिक्षक्षेममारोग्यं बहुसस्या च मेदिनी ॥ २४ ॥
पूर्वोत्तराभाद्रयोश्च ह्यनावृष्टिर्भयादिकम् ॥
पौष्याश्विनीभरणीषु सुभिक्षं धान्यसंपदा ॥ २५ ॥

विशाखा, अनुराधापर गुरु हो तब मध्यम वर्षा हो, मध्यमही धान्य हो ॥ २१ ॥ ज्येष्ठा, मूलपर गुरु हो तब दो मास तक वर्षा नहीं होवे, पीछे

खण्डवृष्टि और राजाओंमे युद्ध होवे ॥ २२ ॥ पूर्वाषाढा, उत्तराषाढामें गुरु हो तब लोकम सुख, तीनमास वर्षा हो और एकमास वर्षा न हो ॥ २३ ॥ श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा नक्षत्रपर गुरु हो तब सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य और पृथ्वीपर धान्य बहुत हो ॥ २४ ॥ पूर्वा, उत्तरा भाद्रपदापर गुरु हो तब अनावृष्टि हो और रेवती, अश्विनी और भरणीपर गुरु हो तब सुभिक्ष तथा धान्य संपदा हो ॥ २५ ॥

अथ राशिपरत्वेन गुरूदयफलम्।

मेषे गुरोरुदयने त्वतिवृष्टिरेव दुर्भिक्षमुत्तममृतिर्वृषभे सुभिक्षम्॥पाषाणशालिमणिरत्नमहर्घभावः स्वावस्थया मिथुनके गणिकासु पीडा ॥ २६ ॥ स्यात्कर्कटे जनमृतिर्जलवृष्टिरल्पा सिंहे तथैव कथितं बहुधान्यलाभः॥ कन्यास्थितस्यहि गुरोरुदये शिशूनां पीडा तथैव गणिकासु च वृद्धलोके॥२७॥काश्मीरचंदनफलादिमहर्घता स्याल्लाभोमहान्व्यवहृतौ च तुलावलंबे ॥ दुर्भिक्षतालिनि धनुष्यपि चाल्पवर्षा लोके रुजो मकरके बहुधान्यवृद्धिः ॥ २८॥ कुंभे गुरोरुदयतः सकलेऽपि देशे वृष्टिर्घनेऽपि च घनेतिमहर्घमन्नम् ॥ मीनेऽल्पवृष्टिरवनीश्वरयुद्धयोगः पीडा जनस्य मकरान्नरकानुरूपा २९॥

मेषराशिपर गुरु उदय हो तब दुर्भिक्ष और उत्तम मनुष्यकी मृत्यु होय। वृषमें उदय होनेसे सुभिक्ष हो तथा पाषाण, शालि, मणि, रत्न यह मंहगे हों। तथा मिथुनमें उदय हो तब अपनी अवस्थासे गणिका वेश्याओंमें पीडा हो ॥ २६ ॥ कर्कराशिमें उदय हो तब मनुष्योंकी मृत्यु और अल्पवर्षा हो। सिंहमें उदय हो तब बहुत धान्यका लाभ हो और कन्यामें उदय हो तब बालक तथा वेश्या और वृद्धलोगोंको पीडा हो ॥ २७ ॥ तुलाराशिमें उदय होनेसे कश्मीरीचंदन, फलका भाव तेज हो, व्यवहारमें लाभ बहुत हो। वृश्चिकमें उदय हो तब दुर्भिक्ष हो धनराशिमें उदय हो तब अल्प वर्षा हो।

मकरमें लोगोंको पीडा तथा अधिक वर्षा, धान्य उत्पत्ति हो ॥ २८ ॥ कुंभमें गुरुका उदय होनेसे सब देशोंमें उत्तम वर्षा बहुतही हो और अन्न महंगा रहे। मीनराशिपर गुरु उदय हो तब राजाओंमें युद्धकर योग हो और मनुष्योंको नरकलोकके समान दुःख हो ॥ २९ ॥

अथ राशिपरत्वेन गुर्वस्तफलम् ।

यद्यस्तमेत्य जगतो गुरुरल्पवृष्टिर्दुर्भिक्षमेव कुरुते वृषभे गुरुः स्यात् ॥ तैलं घृतं च लवणं प्रभवेन्महर्घं मृत्युस्तथाल्पजलदो मिथुनेऽस्तमास्ते ॥ ३० ॥ कर्केऽस्ततो नृपभयं कुशलं सुभिक्षं सिंहे नृणां मरणलोकधनादिनाशः॥ कन्यास्ततःसकलधान्यसमर्घता स्यात्क्षेमं सुभिक्षमतुलं जनलोकनाशः ॥ ३१ ॥ पीडा द्विजेषु बहुधान्यसमर्घता च जाते तुलास्तमयने नयनेषु रोगः ॥ राज्ञां भयान्यलिनि तस्करलुण्ठनानि माषास्तिलाश्च बहवो धनुषास्तमास्ते ॥ ३२ ॥ कुंभे गुरौ ह्यस्तमयात्मजायाःपीडा परं गर्भवती च जाया ॥ मीने सुभिक्षं कुशलं समर्घं धान्यं घनस्याल्पतयापि पृष्ठे ॥ ३३ ॥

मेषराशिपर गुरु अस्त हो तो वर्षा कम हो। और वृषभपर अस्त हो तो दुर्भिक्ष पडे। मिथुन राशिपर हो तो घृत, तेल और लवण यह महंगे हों तथा मनुष्योंमें मृत्यु हो और वर्षा कम हो ॥ ३० ॥ कर्कराशिपर अस्त हो तो राजाओंसे भय और कुशल, सुभिक्ष हो। सिंहमें अस्त हो तो राजाओंमें युद्ध हो तथा लोगोंके धनका नाश हो। कन्यामें अस्त हो तो क्षेम, सुभिक्ष हो, धान्य सस्ता हो किन्तु मनुष्योंका नाश हो ॥ ३१ ॥ तुलामें अस्त हो तो ब्राह्मणोंको पीडा, धान्य भाव सस्ता हो, वृश्चिकमें अस्त हो तो नेत्रोंमें रोग, राजाओंको भय, चोरोंकी लूट हो। धनमें अस्त हो तो उडद, तिल अधिक हों ॥ ३२ ॥ कुंभमें अस्त हो तो प्रजा और गर्भवती स्त्रियोंको पीडा हो। मीनराशिपर गुरु अस्त होवे तब सुभिक्ष, कुशल और धान्यका भाव सस्ता तथा मेघ वर्षा करे ॥ ३३ ॥

अथ मासपरत्वेन गुरूदयफलम् ।

जीवोऽभ्युदेति यदि कार्तिकमासि वह्निर्लोके न वृष्टिरपि रोगनिपीडनं च ॥ मार्गेऽपि धान्यविगमं सुखमेव पौषे नीरोगता सकलधान्यसमुद्भवश्च ॥ ३४ ॥ माघे तथैव परतो भुवि खण्डवृष्टिश्चैत्रे विचित्रजलवृष्टिरतोऽपि राधे ॥ सर्वं सुखं जलनिरोधनमेव शुक्रेऽप्याषाढके नृपरणोऽन्नमहर्घता च ॥ ३५ ॥ आरोग्यं श्रावणे वर्षा बहुला सुखिनो जनाः ॥ भाद्रमासे धान्यनाश आश्विने सुखदः स्मृतः ॥ ३६ ॥

कार्तिक मासमें गुरु उदय हो तो अग्निभय, अनावृष्टि और मनुष्योंमें रोगपीडा हो । मार्गशीर्षमें उदय हो तो धान्य दूसरे देशोंमें चले जावें किन्तु सुख हो । पौषमें नीरोगता और सर्वधान्यकी उत्पत्ति हो ॥ ३४ ॥ माघ और फागणमें गुरु उदय हो तो खण्डवृष्टि हो । चैत्रमें उदय हो तो विचित्रवृष्टि हो । वैशाखमे सर्वसुख हो । ज्येष्ठमें उदय हो तो वर्षाका अवरोध हो । आषाढमें उदय हो तब राजाओंमें युद्ध और अन्नका भाव तेज हो ॥ ३५ ॥ श्रावणमें उदय हो तो आरोग्यता और बहुत वर्षा हो, मनुष्य सुखी रहें । भाद्रपदमें हो तो धान्यनाश हो और आसोजमें हो तो सुख हो ॥ ३६ ॥

अथ वक्रिफलम् ।

मेषराशिगतो जीवो यदा स्यान्मीनसंगतः ॥
तदाषाढश्रावणयोर्गोमहिष्यः खरोष्ट्रकाः ॥ ३७ ॥
एते महर्घतां यांति मासद्वयं न संशयः ॥
पश्चाद्भाद्रपदे मासे आश्विने हे महेश्वरि ॥ ३८ ॥
चन्दनं कुसुमं वापि ये चान्येपि सुगंधयः ॥
तैलपण्यानि सर्वाणि मासद्वयं महर्घता ॥ ३९ ॥

मेषराशिका गुरु वक्री होकर मीनका हो जावे तो आषाढ, श्रावण मासमें गो, भैंस, गधे, ऊंट ॥ ३७ ॥ यह निःसंदेह दो मासतक महंगे रहें फिर पीछे भाद्रव आश्विनमें हे महेश्वरि ॥ ३८ ॥ चंदन, फूल तथा जो सुगंधित द्रव्य हों वह तेल तथा बेचनेकी सब वस्तु दोमासतक तेज रहैं ॥ ३९ ॥

वृषराशिगतो जीवो वक्री स्यान्मासपंचकम् ॥
वृषाभादिचतुष्पादैस्तुलाभाण्डे महर्घता ॥ ४० ॥
संग्रहः सर्वधान्यानां मासाष्टके महर्घता ॥
श्रीः श्रावणे भाद्रपदे आश्विने कार्तिके तथा ॥ ४१ ॥
तत्परं सर्वधान्यानां चतुष्पदां विशेषतः ॥
विक्रयाद्द्विगुणो लाभो त्रिगुणस्तु चतुष्पदे ॥ ४२ ॥

वृषराशिपर जो गुरु वक्री पांचमासतक होजाय तो वृषभआदि पशु और मानद्रव्य अर्थात् धातुके पात्र महंगे हों ॥ ४० ॥ तब सब धान्यका संग्रह करना चाहिये, आठमासतक महंगे रहैं श्रावण, भाद्रपद, आसोज, कार्तिकके पीछे ॥ ४१ ॥ सब धान्य तथा पशुवोंमें विशेष बेचनेसे दुगुणा तिगुणा तथा चौगुना लाभ हो ॥ ४२ ॥

मिथुनस्थः सुरगुरुर्विकारं कुरुते यदा ॥
अष्टमासी भवेत्क्रूरा चतुष्पदमहर्घता ॥ ४३ ॥
मार्गशीर्षादयो मासाः सुभिक्षं वसनं भुवि ॥
लोकः सर्वो भवेत्स्वस्थो दुर्भिक्षं क्वचिदादिशेत् ॥ ४४ ॥

मिथुनराशिपर जो गुरु वक्री हो तो आठमहीनेतक पशु बिकें ॥ ४३ ॥ मार्गशीर आदि महीनोंमें सुभिक्ष, सब लोग आनंदमें रहैं किन्तु कहींपर दुर्भिक्ष हो ॥ ४४ ॥

कर्कराशिगतो जीवो यदा वक्री भवेत्तदा ॥
दुर्भिक्षं जायते घोरं राजानो युद्धतत्पराः ॥ ४५ ॥
राष्ट्रभंगं विजानीयाद्धैरोपद्रवसंकुलम् ॥
रसादिसर्वसंयोगो घृततैलादिखण्डकम् ॥ ४६ ॥

कार्पासादीनि वस्तूनि लाभं दद्युर्न संशयः ॥
मार्गादिमासाः सप्तैव सर्वधान्यमहर्घता ॥ ४७ ॥

कर्कराशिके गुरु वक्री हो तो घोर दुर्भिक्ष और राजा युद्ध करनेमें तत्पर हों ॥ ४५ ॥ देशभंग, महाउपद्रव हो, रस आदि सब वस्तु-घृत, तेल, शक्कर, ॥ ४६ ॥ और कपास आदि वस्तुओंसे निःसंदेह लाभ हो । मार्गशिर आदि सात महीनेतक धानका भाव तेज रहे ॥ ४७ ॥

सिंहराशिगतो जीवो विकारं कुरुते यदा ॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं सर्वलोकप्रसन्नता ॥ ४८ ॥
सर्वधान्यं च संगृह्य तुलभाण्डानि यानि च ॥
गतेषु नवमासेषु पश्चाद्विक्रयमादिशेत् ॥ ४९ ॥

सिंहराशिपर जो गुरु वक्री हो तो सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्यता और सर्वलोकमें प्रसन्नता हो ॥ ४८ ॥ सब धान्य, भाण्डा आदि संग्रह करनेसे नव महीने पीछे वेचनेसे लाभ हो ॥ ४९ ॥

कन्याराशिगतो जीवो विकारं कुरुते यदा ॥
सूक्ष्मश्च तु भवेल्लाभो पुण्यकर्मवशात्पुनः ॥ ५० ॥

कन्याराशिपर जो गुरु वक्री हो पुण्यकर्मसें ही सूक्ष्मलाभ हो ॥ ५० ॥

तुलाराशिगतो जीवो विकारं कुरुते यदा ॥
बहुभाण्डसुगंधीनि कार्पासलवणानि च ॥ ५१ ॥
समर्घाणि भवंत्येव मार्गशीर्षे व्यतिक्रमे ॥
दशमासात्यये लाभो द्विगुणस्तत्र संभवेत् ॥ ५२ ॥

तुलाराशिपर गुरु वक्री हो तो बहुत वर्तन, सुगंधीवस्तु, कपास, लवण ॥ ॥ ५१ ॥ यह महंगे होवें और मार्गशीर्ष मासके बाद दशमासमें दुगुणा लाभ हो ॥ ५२ ॥

वृश्चिके यदि संप्राप्य वक्रं याति बृहस्पतिः ॥
अन्नस्य संग्रहस्तत्र धान्यादेस्तु विशेषतः ॥ ५३ ॥

कार्पासस्य घृतादेर्वा मार्गशीर्षे च विक्रये ॥
द्विगुणो जायते लाभस्तदा संग्रहकारिणः ॥ ५४ ॥

वृश्चिकराशिपर गुरु वक्री हो तो अन्न और धान्यका संग्रह करना उचित है ॥ ५३ ॥ कपास और घृत मार्गशिरमें वेचनेसे दुगुणा लाभ हो ॥ ५४ ॥

धनराशिगतो जीवो करोति वक्रतां यदा ॥
अचिरेणैव कालेन सर्वधान्यसमर्घता ॥ ५५ ॥
गोधूमचणकादीनि धान्यानि क्रय्यकाणिच ॥
समर्घाण्यन्यवस्तूनि गुडश्च लवणादिकम् ॥ ५६ ॥
चैत्रादिसंग्रहस्तेषां मार्गशीर्षादिविक्रयः ॥
सर्वाणि लाभं ददते मासैकादशकात्यये ॥ ५७ ॥

धनराशिपर गुरु वक्री होवे तब थोडे ही दिनोंमें सब धान्य सस्ते हों ॥५५॥ गेहूं, चणा आदि सब धान्य वेचनेके और गुड लवण आदि सब सस्ते हों ॥ ५६ ॥ चैत्र वैशाखमें इनका संग्रह करके मार्गशीर्षमें बेचनेसे सब वस्तु लाभदायक हों ॥ ५७ ॥

मकरस्थो यदा जीवः करोति वक्रगामिता ॥
आरोग्यं कुरुते धान्यं समर्घं नात्र संशयः ॥ ५८ ॥

मकरराशिका गुरु वक्री होय तब सब धान्य सस्ता तथा आरोग्यता रहै इसमें संदेह नहीं ॥ ५८ ॥

कुम्भराशिगतो जीवः करोति यदि वक्रताम् ॥
आरोग्यं सर्वस्वस्थत्वं राज्ञां श्रीजयसंभवः ॥ ५९ ॥
सर्वधान्यस्य निष्पत्तिः सर्वधान्यस्य विक्रयः ॥
घृततैलतुलाभाण्डं मासाष्टके च संग्रहः ॥ ६० ॥
पश्चाद्विक्रयतो लाभः सुभिक्षं निर्भया जनाः ॥
पूजा गोद्विजदेवानां भवत्येव न संशयः ॥ ६१ ॥

कुंभराशिपर गुरु वक्री हो तो मनुष्योंमें आरोग्यता तथा राजाओंको जय और लक्ष्मीकी प्राप्ति हो ॥ ५९॥ सर्वधान्यकी उत्पत्ति, सर्व धान्यका विक्रय, घृत, तेल, तुला, भाण्ड यह आठमासमें संग्रह करने चाहिये ॥ ६० ॥ पीछे वेचनेसे लाभ हो, मनुष्य निर्भय रहें, सुभिक्ष हो और गो, ब्राह्मण तथा देवताओंकी पूजा हो इसमें संदेह नहीं ॥ ६१ ॥

मीनराशिगतो जीवो वक्रतामुपयाति चेत् ॥
धनक्षयस्तदालोके चौराद्राजापि रोपितः ॥ ६२ ॥
निराधारा प्रजापीडा ग्रहभूतादिदोपतः ॥
तुला भाण्डं गुरुः खण्डा अर्घं ददाति वांछितम् ॥६३॥
लवणं घृततैलादिसर्वधान्यमहर्घता ॥
कार्पासस्यार्घसंप्राप्तिर्लाभस्तेषां चतुर्गुणः ॥ ६४ ॥

मीनराशिपर गुरु वक्री होवे तब मनुष्योंका धननाश चौरोंसे हो वा राजाओंके प्रकोपसे हो ॥ ६२ ॥ निराधार प्रजाको ग्रह, भूत आदिक दोषोंसे पीडा हो तथा तुला, भाण्ड, शक्कर यह मनवांछित लाभ देवे ॥ ६३ ॥ लवण, घृत, तेल आदि सब धान्य महँगे हों और कपास इतनी महँगी हो कि चौगुना लाभ दे ॥ ६४ ॥

मृगादिपंचकं चित्राद्यमेवाष्टकं तथा ॥
नक्षत्रेषु शुभं जीवो शेषेषु शुभमादिशेत् ॥ ६५ ॥

मृगशिरको आदि लेकर पाच, चित्रादि आठ नक्षत्रोंमें वृहस्पति शुभ होताहै ६५

शुक्रचारफलम् ।

दधिकुमुदशशाङ्ककान्तिभृत्स्फुटविकसत्किरणो बृहत्तनुः ॥
सुगतिरविकृतो जयान्वितः कृतयुगरूपकरः सिताह्वयः ॥१॥

शुक्रका वर्ण दही, कुमुद पुष्प वा चंद्रमा जैसा श्वेत तथा निर्मल तथा स्पष्ट प्रकाशमान् किरणें और बडा विम्ब हो, ग्रह युद्धमें जीता हुआ हो, उत्पातसे रहित हो और नक्षत्रोंसे उत्तरमें निकले वा उत्तर मार्गके नक्षत्रोंपर हो तो जगत्में सत्ययुग बराबर अर्थात् दुःखदारिद्रसे रहित और सुवृष्टि, सुभिक्ष आदिसे प्रजाकी वृद्धि होवे ॥ १ ॥

मेषादिराशिफलम् ।

दैत्यगुरुर्यदा मेषे सर्वधान्यमहर्घता ॥
महिषीपशुपीडा च मेघवर्षा भविष्यति ॥ २ ॥

मेषराशिपर शुक्र होवे तब सब धान्य महंगे होवें तथा भैंस आदि पशुओंको पीडा हो और मेघवर्षा भी करैं ॥ २ ॥

भृगुपुत्रो वृषे स्थित्वा सुभिक्षं पृथिवीतले ॥
प्रजानां सुखमुत्पन्नं किंचिद्विग्रहकारणम् ॥ ३ ॥

वृषराशिपर शुक्र होवे तब पृथ्वीपर सुभिक्ष होवे तथा प्रजाको सुख होवे किन्तु किंचित् विग्रह भी होवे ॥ ३ ॥

मिथुने च यदा शुक्रो महर्घं तत्र जायते ॥
यवगोधूमचणकाः शालिश्चैव विशेषतः ॥ ४ ॥

मिथुनराशिपर शुक्र होवे तब यव, गेहूं, चणा और चांवल यह महंगे होवें विशेष करके ॥ ४ ॥

दैत्यगुरुर्यदा कर्के रसानां वै महर्घता ॥
सर्वधान्यसमर्घत्वं मेघाश्च प्रबला भुवि ॥ ५ ॥

कर्कराशिपर शुक्र होवे तब रस महंगे होवें तथा सब धान्य सस्ते होवें और पृथ्वीपर मेघ प्रबल होवें ॥ ५ ॥

दैत्यगुरुर्यदा सिंहे हेमरक्तं चतुष्पदः ॥
धान्यानि च महर्घाणि नाशं याति च वारिदः ॥ ६ ॥

सिंहराशिका शुक्र हो तब सुवर्ण, लालवस्तु और पशु तथा सब धान्य यह सब महंगे होवें और वर्षा नहीं होवे ॥ ६ ॥

कन्याराशिगते शुक्रे सर्वसस्यं विनश्यति ॥
तत्र धान्यमहर्घाणि शालिश्चैव विशेषतः ॥ ७ ॥

कन्याराशिपर शुक्र हो तब खेतियोंका नाश होवे तब धान्य महंगे हों और चांवल विशेष करके महंगे होवें ॥ ७ ॥

यदा दैत्यगुरुश्चैव तुलाराशिं प्रवर्त्तते ॥
मेदिन्यां क्षेममारोग्यं किंचित्किंचिद्विरोधकृत् ॥ ८॥

तुलाराशिपर शुक्र होवे तब पृथ्वीपर क्षेम, आरोग्यता रहे और कहीं २ विरोध होवे ॥ ८ ॥

वृश्चिके च गते शुक्रे सर्वधान्यसमर्घता ॥
लोकस्तु निर्भयस्तत्र सुखस्वस्थं प्रवर्तते ॥ ९ ॥

वृश्चिकराशिपर शुक्र हो तब सब धान्य सस्ते होवें और सब लोग निर्भय रहें, सुख तथा स्वस्थ चित्तसे रहें ॥ ९ ॥

यदा च धनराशिस्थो दैत्याचार्य्यः प्रवर्त्तते ॥
महर्घं च विजानीयात्सर्वसस्यं विनश्यति ॥ १० ॥

धनराशिका शुक्र हो तब सब धान्य महंगे होंय और सब खेतियोंका नाश होवे ॥ १० ॥

मकरे च यदा शुक्रः सर्वसस्यविनाशकृत् ॥
जायतेऽत्र महर्घाणि नात्र कार्या विचारणा ॥ ११ ॥

मकरराशिका शुक्र होवे तब सब खेतियोंका नाश होवे और सब धान्य महंगे होंय इसमें कुछ भी विचार नहीं करना ॥ ११ ॥

कुंभराशौ स्थिते शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं जलम् ॥
भवत्यत्र न संदेहो लोकाः सर्वे निरामयाः ॥ १२ ॥

कुंभराशिपर शुक्र होवे तब बहुत वर्षा तथा सुभिक्ष हो सब, मनुष्य नीरोग रहें इसमें संदेह नहीं ॥ १२ ॥

मीनराशिगते शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं भवेत् ॥
मेदिनी सुखसंयुक्ता भविष्यति न संशयः ॥ १३ ॥

मीनराशिका शुक्र हो तब अत्यंत सुभिक्ष होवे और पृथ्वी सुखसे संयुक्त हो जावे इसमें संदेह नहीं ॥ १३ ॥

अथ नक्षत्रोदयफलम् ।

शुक्रेश्विन्यां ब्राह्मणजातिविरोधो यवास्तिलामाषाः ॥
भरणीसंस्थे स्वल्पा तुषधान्यमहर्घता चापि ॥ १४ ॥

सर्षपमाषाल्पत्वमाग्नेये सर्वधान्यनिष्पत्तिः ॥
रोहिण्यामारोग्यं मृगे महर्घाणि धान्यानि ॥ १५ ॥

अश्विनीमें शुक्र उदय हो तो ब्राह्मण जातिमें विरोध होय तथा तिल, उडद, यव, कम पैदा होंय । भरणीमें हो तो तुष धान्य महँगे हों ॥ १४ ॥ सरसों उडद थोडे हों। कृत्तिका में सब धान्यकी उत्पत्ति हो । रोहिणीमें आरोग्यता रहे। मृगशिरमें हो तो धानभाव तेज होवे ॥ १५ ॥

रौद्रेल्पवृष्टिरन्नमधौ सुखं नश्यति विशेषात् ॥
पुष्ये दुर्भिक्षभयं चौराः सार्पे न वर्षा स्यात् ॥ १६ ॥
मघादित्रितयं कष्टं हस्ते मेघमहोदयः ॥
रोगावृष्टिस्तु चित्रायां स्वातौ क्षेमसुभिक्षता ॥ १७ ॥
तरुदेवविशाखायां तुषधान्यमहर्घता ॥
अल्पवृष्टिश्च मैत्रर्क्षे चतुष्पदप्रपीडनम् ॥ १८ ॥
द्वारानुसाराच्छेषेषु फलमार्यैर्निगद्यते ॥
चारानुसाराद्दुर्भिक्षं सुभिक्षं फलमादिशेत् ॥ १९ ॥

आर्द्रामें अलपवर्षा, अन्न, मधु (सहद) का नाश हो। पुष्यमें दुर्भिक्ष तथा चौरोंका भय हो । अश्लेषामें वर्षा नहीं हो ॥ १६ ॥ मघादि तीननक्षत्रोंमें कष्ट हो। हस्तमें मेघोंका उदय हो। चित्रामें रोग और अवर्षण हो। स्वातिमें क्षेम और सुभिक्षता हो ॥ १७ ॥ विशाखामें वृक्ष और देवता प्रसन्न, तुषधान्य तेज हों । अनुराधामें कमवर्षा और पशुवोंका नाश हो ॥ १८ ॥ शेष नक्षत्रोंका द्वारानुसारफल जानना इस प्रकार गतिके अनुसार सुभिक्ष दुर्भिक्षका फल जानना ॥ १९ ॥

अथ मासपरत्वेन शुक्रास्तफलम् ।

शुक्रस्यास्तंगमाज्ज्येष्ठे महावृष्टिः प्रजाक्षयः ॥
आषाढे जलशोषः स्याच्छ्रावणे रौरवं महत् ॥२०॥
धनधान्यादिसम्पत्तिर्भवेद्भाद्रपदास्ततः ॥
आश्विनेऽपि सुभिक्षाय कार्तिके वृष्टिहेतवे ॥ २१ ॥

कार्तिके तु यदा मासि कुरुतेऽस्तमयोदयौ ॥
तदाऽह्नां नवतिं पूर्णां देवो भुवि न वर्षति ॥ २२ ॥
मार्गशीर्षे भूपयुद्धं प्रजानां सुखसंभवः ॥
पौषमासे छत्रभंगः फाल्गुनेऽग्निभयं महत् ॥ २३ ॥
षण्मासानपि दुर्भिक्षं चैत्रे वनविनाशनम् ॥
कालं तथैव वैशाखे पीडा क्वचिच्चतुष्पदे ॥ २४ ॥

ज्येष्ठमासमें शुक्रका अस्त हो तो महावृष्टि और प्रजाका नाश हो। आषाढमें हो तो जलकी शुष्कता। श्रावणमें महाकष्ट हो ॥ २० ॥ भाद्रपदमें धनधान्यकी सम्पत्ति हो। आश्विनमें सुभिक्ष हो। कार्तिकमें बहुत वर्षा हो ॥ २१ ॥ कार्तिकमें अस्त होके पीछे कार्तिकमेंही उदय होजावे तो उस दिनसे नब्बेदिनतक अर्थात् तीनमहीने तक वर्षा नहीं होवे ॥ ॥ २२ ॥ मार्गशीर्षमें राजाओंका युद्ध तथा प्रजामें सुख हो। पौषमाघमें छत्रभंग हो। फागणमें अग्निका भय हो ॥ २३ ॥ चैत्रमें हो तो छःमहीनेतक दुर्भिक्ष व वनका नाश हो। वैशाखमें हो तो पशुओंका मरण हो ॥ २४ ॥

तिथिपरत्वेन फलम्।

पृथ्वीसुखं स्यात्प्रतिपच्चतुष्के चौरोदयः पंचमिकाचतुष्के॥
भूपालयुद्धं नवमीचतुष्के दुर्भिक्षवाताद्यसुखं तु शेषे॥२५॥
शुक्रपक्षे यदा शुक्रः समुदेत्यस्तमेति वा ॥
राजपुत्रसहस्राणां मही पिबति शोणितम् ॥ २६ ॥

प्रतिपदा आदि चार तिथियोंमें पृथ्वीमें सुख, पंचमी आदि चार तिथियोंमें चौरभय। नवमी आदि चारतिथियोंमें राजाओंमें युद्ध हो। शेषतिथियोंमें दुर्भिक्ष और वायु आदिका दुःख हो ॥ २५ ॥ जो शुक्रपक्षमें शुक्र उदय या अस्त हो तो पृथ्वी हजारहा राजपुत्रोंका रुधिर पीवे ॥ २६ ॥

अथ नक्षत्रमण्डलफलम्।

चतुर्थं चतुर्थं ततः पञ्चकं च त्रिकं पंचकं षट्कमायातिभानाम्॥
यदा भार्गवो मार्गवोढाथवक्रो निषिद्धः प्रसिद्धः परैः क्रूरखेटैः॥

प्रथमचतुष्के गोधनपीडा मेघमहोदयदोऽग्रचतुष्के ॥
पञ्चकयुग्मे धान्यविनाशी षट्त्रिकचारी सुखदः शुक्रः २८

प्रथम भरणीसे चार, द्वितीय आर्द्रासे चार, तृतीय मघासे पांच, चतुर्थ स्वातिसे तीन, पंचम ज्येष्ठासे पांच और षष्ठधनिष्ठासे छः नक्षत्रोंतक छः मण्डल हैं इनमें शुक्रके रहते वक्रमार्ग, उदय, अस्तआदिसे फल होवे ॥ २७ ॥ शुक्र प्रथम मण्डलमें हो तब गायोंको पीडा, द्वितीय मण्डलमें हो तब वहुत वर्षा तृतीय तथा पंचममण्डलमें हो तब धान्यका नाश हो और चतुर्थ तथा षष्ठ मण्डलमें हो तब सुखका देनेवाला है ॥ २८ ॥

उत्तरवीथिषु शुक्रः सुभिक्षशिवकृद्गतोऽस्तमुदयं वा ॥
मध्यासु मध्यफलदः कष्टफलो दक्षिणस्थासु ॥ २९ ॥

शुक्र उदय वा अस्त उत्तरवीथीमें हो तो सुवृष्टि, सुभिक्ष, कल्याणका करनेवाला है और मध्यवीथीमें मध्यमफल करे तथा दक्षिणवीथीमें हो तो अनावृष्टि आदि कष्टफलकाही देनेवाला है ॥ २९ ॥

अथ नक्षत्रद्वारफलम् ।

भरण्याद्यष्टके भानां मेघद्वारं कवेः स्मृतम् ॥
मेघवृष्टिः प्रजानन्दः समर्घं धान्यमेव च ॥ ३० ॥
मघादिपंचके शुक्रो धूलिद्वारेऽभ्युदीर्यते ॥
प्रजादुःखं जलनाशात्तदोपद्रवमादिशेत् ॥ ३१ ॥
स्वात्यादिसप्तके राजद्वारं शुक्रोदये भवेत् ॥
लोके भयं छत्रपतिक्षयं तत्र विनिर्दिशेत् ॥ ३२ ॥
श्रुत्यादिसप्तके शुक्रोदये लोकसुखं बहु ॥
कनकद्वारमादिष्टं सुभिक्षं तत्र निश्चितम् ॥ ३३ ॥

भरणी आदि आठनक्षत्र शुक्रके मेघद्वारके हैं इनमें उदय हो तो मेघवृष्टि, प्रजामें आनंद, धान्य सस्ता हो ॥ ३० ॥ मघा आदि पांच नक्षत्रोंमें शुक्रका धूलिद्वार कहा है इसमें जलनाश होनेसे प्रजाको दुःख और उपद्रव हो ॥ ॥ ३१ ॥ स्वाति आदि सात नक्षत्रोंमें शुक्रका राजद्वार कहा है इसमें उदय

हो तव लोकभय, छत्रपतिका नाश हो ॥ ३२ ॥ श्रवण आदि सात नक्षत्रोंमें शुक्रका सुवर्णद्वार कहा है इसमें उदय हो तव लोकमें सुख और निश्चय सुभिक्ष हो ॥ ३३ ॥

पूर्वे स्वातित्रये भानां पश्चिमे पितृपंचके॥
अनावृष्टिं विजानीयाद्विपरीते प्रवर्षणम् ॥ ३४ ॥

शुक्र स्वाति, विशाखा और अनुराधापर पूर्वमें दीखे तव वर्षा नहीं होवे किन्तु पश्चिममें दीखे तो अधिक होवे । और मघा, पूर्वा फाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी हस्त और चित्रापर पश्चिममें दीखे तो वर्षा नहीं होवे किन्तु पूर्वमें दीखे तो वर्षा अधिक होवे ॥ ३४ ॥

मासपरत्वेन शुक्रोदयफलम् ।

शुक्रोदयात्फाल्गुनमासवृद्धिरर्थस्य धान्यादिषु भैक्षवृत्तिः ॥
चैत्रे विभूतिर्भुवि माधवे च रणो महान् वृष्टिरतीव शुक्रे॥३५॥
आषाढमासे जलदुर्लभत्वं चतुष्पदार्त्तिर्नभसि प्रदिष्टा ॥
समृद्धिरन्नस्य तु भाद्रमासे तथाश्विने सम्पद एव सर्वाः॥३६॥
शुभं परं कार्तिकमार्गमासे पौषे महच्छत्रविभंग एव ॥
माघेपि तद्वत्सकलं फलं स्यान्न चेत्पराब्दे जलदस्य रोधः ३७

फाल्गुणमें शुक्रका उदय हो तो अर्थवृद्धि और धान्य तेज होनेसे भिक्षावृत्ति करें । चैत्रमें हो तो सम्पत्ति बढे । वैशाखमें हो तो युद्ध हो । ज्येष्ठमें उदय हो तो उत्तम और अधिक वर्षा हो ॥ ३५ ॥ आषाढमें हो तो अनावृष्टि हो, श्रावणमें हो तो पशुओंको दुःख । भादवमें हो तो अन्नकी समृद्धि । आसोजमें हो तो सव सम्पत्ति हो ॥ ३६ ॥ कार्तिक और मार्गशीर्षमें उदय हो तो शुभदायक है । पौषमें हो तो छत्रभंग हो और यही फल माघमें भी जानना किन्तु अगले वर्षमें जलका निरोधन हो ॥ ३७ ॥

प्रावृषि शुक्रः प्राच्यां दिशि स्थितोऽल्पं जलं सृजति नित्यम्॥
धान्यं च भूरि कुरुते तृणं च वहु जायते तत्र ॥ ३८ ॥

अपरां निषेव्यमाणः काष्ठां शुक्रो जलं सृजति भूरि ॥
धान्यं कुरुते चाल्पं तृणं न बहु जायते तत्र ॥ ३९ ॥

वर्षाकालमें शुक्र पूर्वमें दीखे तो वर्षा तो कम होय किन्तु धान्य तथा तृण (घास) अधिक होवे ॥ ३८ ॥ यदि पश्चिमदिशामें दीखे तो वर्षा बहुत होय किन्तु धान्य बहुत कम होवे और तृण (घास) भी बहुतही कम होवे ॥ ३९ ॥

अथ राशिपरत्वेन शुक्रोदयफलम् ।

मेषे शुक्रोदये धान्यं महर्घं रोगसंभवः ॥
वृषे धान्यं समर्घं स्यान्नृपास्तुष्टाः प्रजासुखम् ॥ ४० ॥
मिथुने लोकमरणं गोधूमा बहवो भुवि ॥
कर्केतिवृष्टिर्धान्यस्य विनाशं चौरजं भयम् ॥ ४१ ॥
सिंहेऽपि कर्कवद्वाच्यं कन्यायां नृपपीडनम् ॥
स्वल्पा वृष्टिस्तुलायोगे समर्घं धान्यमाहितम् ॥ ४२ ॥
वृश्चिके बहुला वृष्टिर्दुर्भिक्षं धान्यस्वल्पता ॥
धनुष्यवर्षणं धान्यं महर्घं मकरे तथा ॥ ४३ ॥
कुंभेतिविरलो मेघश्चतुष्पदविनाशनम् ॥
मीने सुभिक्षं लोकानां सुखं मेघमहोदयः ॥ ४४ ॥

मेषराशिमें शुक्रका उदय हो तब धान्य महंगा और रोग हो । वृषमें हो तो धान्य सस्ता, प्रजा सुखी और राजा प्रसन्न रहैं ॥ ४० ॥ मिथुनमें हो तो प्रजाका मरण किन्तु पृथ्वीपर गेहूँ अधिक उत्पन्न होवें । कर्कमें हो तो अतिवर्षासे धान्यका नाश और चौरोंका भय हो ॥ ४१ ॥ सिंहमें उदय हो तो कर्कराशिके समानही फल कहना । कन्यामें हो तो राजाओंको पीडा हो । तुलामें हो तो अल्पवृष्टि किन्तु धान्य सस्ता हो ॥ ४२ ॥ वृश्चिकमें हो तो बहुत वर्षा, धान्य कम हो, दुर्भिक्ष पडे । धनमें हो तो वर्षाका अभाव हो । मकरमें हो तो धानभाव तेज होवे ॥ ४३ ॥ कुंभराशिमें उदय हो तो मेघ कम वर्षा करें और पशुओंका नाश हो । मीनमें उदय हो तो लोकमें सुख, मेघोंका उदय तथा उत्तम सुभिक्ष होवे ॥ ४४ ॥

अथ राशिपरत्वेन शुक्रास्तफलम्।

शुक्रस्यास्तंगमान्मेपे सर्वधान्यमहर्घता ॥
वृपे चतुष्पदे पीडा धान्यनिष्पत्तिरल्पिका ॥ ४५ ॥
मिथुने वैश्यपीडा स्यादल्पवर्षा प्रजाभयम् ॥
कर्कटे वहुला वृष्टिर्जायते नात्र संशयः ॥ ४६ ॥
सिंहे पीडा भूपवर्गे तथाऽनावृष्टिजं भयम् ॥
कन्यायां वैद्यलोकस्य सूत्रधारस्य पीडनम् ॥ ४७ ॥
तुलायां सिंहवत्सर्वं दुर्भिक्षं वृश्चिके मतम् ॥
स्त्रीधान्यनाशो धनुपि मकरे धान्यसंपदः ॥ ४८ ॥
द्विजपीडा कुंभराशौ मीने मेघमहोदये ॥
रोगनाशः प्रजासौख्यं पृथिव्यां वहुमंगलम् ॥ ४९ ॥

मेपमें शुक्रका अस्त हो तो सब धान्य तेज हों, वृपमें अस्त हो तो पशुओंको पीडा किन्तु धान्यकी उत्पत्ति कम हो ॥ ४५ ॥ मिथुनमें हो तो वैश्योंको पीडा तथा अल्पवर्षा और प्रजाको भय हो। कर्कमें हो तो बहुत वर्षा हो इसमें संदेह नहीं है ॥ ४६ ॥ सिंहमें हो तो राजाओंको पीडा तथा अनावृष्टिका भय हो। कन्यामें हो तो वैद्य तथा सूत्रधारोंको पीडा हो ॥४७॥ तुलामें हो तो सिंहके समानही फल हो। वृश्चिकमें हो तो दुर्भिक्ष हो । धनमें हो तो स्त्री तथा धान्यका नाश हो। मकरमें हो तो धान्यसम्पत्ति अधिक हो ॥ ४८ ॥ कुंभमें अस्त हो तो ब्राह्मणोंको पीडा हो । मीनमें शुक्र अस्त हो तो मेघोंका उदय, रोगका नाश, प्रजाको सुख और पृथ्वीपर वहुत मंगल होय ॥ ४९ ॥

अथ देवगणादिवशेन शुक्रोदयफलम्।

भृगुसुतः कुरुतेऽभ्युदयं यदा सुरगणर्क्षगतः खलु सिंधुषु ॥
सकलगुर्जरकर्वटमण्डले भवति शस्यविनाशमहारुजे ॥५०॥
जालंधरेऽपि दुर्भिक्षं विग्रहो रणसंभवः ॥

मनुष्यगणभे शुक्रोदये सौराष्ट्रविग्रहः ॥ ५१ ॥
कलिंगदेशे स्त्रीराज्ये मध्यमं वर्षमुच्यते ॥
मरुस्थले च दुर्भिक्षं घृतधान्यमहर्घता ॥ ५२ ॥
स्वर्णरूप्यं महर्घं स्यात्पीडागोमहिषव्रजे ॥
कार्पासतूलसूत्रादेर्महर्घत्वं प्रजायते ॥ ५३ ॥
नक्षत्रे राक्षसगणे शुक्रस्याभ्युदये सति ॥
गुर्जरे मुद्गलभयं दुर्भिक्षं द्रव्यहीनता ॥ ५४ ॥
पंचवर्णं पट्टसूत्रं मूल्येनापि च दुर्लभम् ॥
श्रीफलं दुर्लभं मृत्युः श्रेष्ठः पुंसश्च कस्यचित् ॥ ५५ ॥
उत्पातादिषु देशेषु सिंधुदेशेतिविग्रहः ॥
दिनत्रयमवाणिज्यं विग्रहो मालवादिके ॥ ५६ ॥

शुक्र देवतागणके[1] नक्षत्रमें उदय हो तो सिंधु, गुर्जर, कर्वट, देशोंमें खेतीका नाश और महारोग हो॥५०॥जालंधरमें दुर्भिक्ष, विग्रह और लडाई हो और शुक्र यदि मनुष्यगणके[2] नक्षत्रमें उदय हो तो सौराष्ट्रदेशमें विग्रह हो ॥५१॥ कलिंगदेश और स्त्रीराज्यमें यह वर्ष मध्यम रहे मरु (मारवाड) देशमें दुर्भिक्ष हो घृत तथा धान्य महंगे हों ॥ ५२ ॥ सोनो, चांदी, महंगी हो और गाय भैंसोंमें पीडा हो, कपास, रूई, सूत्र महंगे हों ॥ ५३ ॥ राक्षसगणके[3] नक्षत्रमें शुक्र उदय हो तो गुर्जरदेशमें मुद्गलका भय दुर्भिक्ष और धननाश हो॥५४॥ पंचवर्ण रेशमी सूत्र मोल देनेपर भी न मिले और नारियलका अभाव हो किसी श्रेष्ठ पुरुषकी मृत्यु हो ॥ ५५ ॥ देशोंमें उत्पात सिंधु देशमें विग्रह तीन दिन व्यवहार बंद रहे और मालवदेशमें विग्रह हो ॥ ५६ ॥

अथ देवगणादिवशेन शुक्रास्तफलम्।

सुरगणे भृगुजास्तगतिर्यदा द्रविडगुर्जरमालवमण्डले ॥
भवति देशभयं नृपविग्रहः प्रथमतोऽपि च धान्यमहर्घता ५७

---

१ देवतागणनक्षत्र—अश्विनी, मृगशीर, रेवती, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण और स्वाति। २ मनुष्यगण—तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी और भरणी। ३ राक्षसगण—कृत्तिका, मघा, अश्लेषा, विशाखा, शतभिषा, चित्रा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, मूल.

पश्चात्समर्घता किंचिन्मासमेकं प्रवर्तते ॥
खुरासाने महोत्पातो द्रव्यनाशोऽतिदण्डता ॥ ५८ ॥
प्रबला जलवृष्टिश्च मासषट्कात्परं भवेत् ॥
हेमरूप्यमहर्घत्वं निद्रालुः सकलो जनः ॥ ५९ ॥
मरुस्थलेषु दुर्भिक्षं दिल्ल्यां राजविवर्तनम् ॥
गोपालगिरिदेशे स्यान्मारको नरकोपमः ॥ ६० ॥
रोगबाहुल्यमथवा परचक्रपराभवः ॥
व्यापारे बहुला लक्ष्मीः सुभिक्षमुत्तरापथे ॥ ६१ ॥

देवतागणके नक्षत्रमें शुक्रका अस्त हो तो दिवस गुर्जर मालव आदि देशोमे भय राजावोंमें युद्ध हो, और पहले धान्य महंगा हो ॥ ५७ ॥ पीछे एक महीनेतक सस्ता विके खुरासानमें उत्पात, धनका नाश, और दण्डकी प्राप्ति हो ॥ ५८ ॥ इसके उपरात छः महीनेतक बहुत वर्षा हो सोनो चांदी महंगे हों और मनुष्योंमें आलस्य बहुत हो ॥ ५९ ॥ मारवाडदेशमें दुर्भिक्ष तथा दिल्लीके राज्यमें परिवर्तन और गोपालपर्वतके देशोंमें मरी पडे ॥६०॥ बहुत रोग हों अथवा शत्रुका पराभव हो व्यापारमें बहुत लक्ष्मी और सुभिक्ष आदि यह फल उत्तरदिशामें होंय ॥ ६१ ॥

मनुष्यगणशुक्रास्ते वह्निभीरोमपत्तने ॥
देशत्रासः कोंकणे च लाटे सिंधोश्च शून्यता ॥ ६२ ॥
दुर्भिक्षमुत्तरे देशे विग्रहो द्रविडाश्रये ॥
गुर्जरे च सुभिक्षं स्याद्वनस्पतिफलोदयः ॥ ६३ ॥
मासमेकं महर्घं स्यात्ततोधान्यसमर्घता ॥
घृतं तैलान्ननिष्पत्तिः पट्टसूत्राणि सर्वतः ॥ ६४ ॥
राजानः सुखिनः सर्वाः प्रजा रोगविवर्जिताः ॥
सर्वत्र वसतिर्देशे दुर्गे स्वानन्दनन्दिताः ॥ ६५ ॥

मनुष्यगणके नक्षत्रपर शुक्रका अस्त हो तब रोमदेशमें अग्निका भय हो, देशमें त्रास, कौंकण तथा लाट और सिंधुदेशमें शून्यता हो ॥ ६२ ॥ उत्तरदेशमें दुर्भिक्ष, द्रविडदेशमें विग्रह, गुर्जरदेशमें सुभिक्ष हो तथा वनस्पतियोंमें फल आवे ॥ ६३ ॥ एक महीनातक अन्न महँगा विके फिर धान्य सस्ता विके, घृत, तेल, अन्न, रेशम यह सस्ते हों ॥ ६४ ॥ सब राजा सुखी, प्रजा रोगरहित हों, देश और दुगा (किलों) में आनन्द होवे ॥ ६५ ॥

शुक्रास्ते राक्षसगणे हिंदुदेशेषु विग्रहः ॥
खर्प्परे राजयुद्धानि मिश्रदेशेऽन्नविग्रहः ॥ ६६ ॥
मरुस्थले सिंधुदेशे दुर्भिक्षं मध्यमं भवेत् ॥
यानपात्रविनाशोऽब्धौ फिरंगाणां च विग्रहः ॥ ६७ ॥
विराटढुंढपांचलसौराष्ट्रेषु च रौरवम् ॥
तथा राज्यपरावर्तो मालवेषु जनक्षयः ॥ ६८ ॥
जीर्णदुर्गे भयं भंगः पत्तनेऽन्नमहर्घता ॥
नव्यमुद्राप्रकाशः स्याद्दक्षिणे सुखसंपदः ॥ ६९ ॥

राक्षसगण नक्षत्रमें शुक्रका अस्त हो तो हिंदूदेशोंमें विग्रह हो, खर्प्पर राज्यमें युद्ध तथा मिश्रदेशमें अन्नका विग्रह हो ॥ ६६ ॥ मारवाडदेशमें और सिंधुदेशमें सामान्य दुर्भिक्ष हो, समुद्रमें जहाजोंका नाश हो तथा फिरंगियोंमें विग्रह हो ॥ ६७ ॥ विराट, ढुंढु, पांचाल सौराष्ट्रदेशोंमें कष्ट हो, राज्यका बदल और मालवदेशमें मनुष्योंका नाश हो ॥ ६८ ॥ पुराने दुर्ग (किलों) के टूटनेका डर और पट्टनमें अन्नकी महँगी हो, नया सिक्का चले तथा दक्षिण देशमें सुख, संपदा हो ॥ ६९ ॥

वृषे तुलाधरे कर्के वक्रं गच्छति भार्गवः ॥
पुनर्मार्गी च भवति तदा प्रमुदिताः प्रजाः ॥ ७० ॥

शुक्र वृष, कर्क वा तुलापर वक्री होकर मार्गी होजावे तब सुभिक्ष, सुवृष्टि आदिसे प्रजा प्रसन्न रहें ॥ ७० ॥

अथ शनिचारफलम्।

वैडूर्यकान्तिविमलः शुभकृत्प्रजानां
बाणातसीकुसुमवर्णनिभश्च शस्तः ॥
यं चापि वर्णमुपगच्छति तत्सवर्णान्
सूर्यात्मजः क्षपयतीति मुनिप्रवादः ॥ १ ॥

शनि वैडूर्य मणिकीसी कान्ति जैसी निर्मल किरणोंवाला तथा बाणपुष्प जैसा वा अलसीके पुष्प जैसा अतिनीला हो तो प्रजा आनंदित रहै किन्तु रूक्ष, लाल, पीला वा काला हो तो दुर्भिक्ष हो ॥ १ ॥

प्रदक्षिणं तु ऋक्षस्य यस्य याति शनैश्चरः ॥
स च राजा विवर्द्धेत सुभिक्षं क्षेममेव च ॥ २ ॥
अपसव्यं च नक्षत्रं यस्य याति शनैश्चरः ॥
स च राजा विपद्येत दुर्भिक्षं क्षयमेव च ॥ ३॥

शनि नक्षत्रोंसे उत्तरमे निकल तो सुभिक्ष, क्षेम आदिसे राजा, प्रजाकी वृद्धि हो ॥ २ ॥ यदि दक्षिणमेंसे निकले तो दुर्भिक्षमें राजा, प्रजाकी हानि होवे ॥ ३ ॥

अथ मेषादिराशिस्थफलम् ॥

यदा सौरिर्भवेन्मेषे कांचनं रूप्यताम्रकम् ॥
मौक्तिकं पद्मरागं च महर्घं तु भवेत्तदा ॥ ४ ॥

मेषराशिपर शनि होवे तब सोना, चांदी, तामा महंगे होवें और मोती पुखराज ये रत्नभी महंगे होतेहैं ॥ ४ ॥

वृषे सौरिर्यदा याति विनश्यन्ति चतुष्पदाः ॥
सप्तधान्यमहर्घं च नृपाणां विग्रहो भवेत् ॥ ५ ॥

वृषराशिपर शनि होवे तब पशुओंका नाश होवे तथा सातों धान्य महंगे होवें और राजाओंका आपसमें युद्ध होवे ॥ ५ ॥

मिथुने च यदा सौरिर्दुर्भिक्षं तत्र रौरवम् ॥
पश्चिमे दारुणं युद्धं नृपाणां च महद्भयम् ॥ ६ ॥

मिथुनराशिपर शनि होवे तब अत्यन्त भयानक दुर्भिक्ष होवे पश्चिममें राजाओंका भयंकर दुःखदायी युद्ध होवे ॥ ६ ॥

यदा कर्कस्थितः सौरिर्मध्यदेशे भवेच्छुभम् ॥
नागपुरं विनश्येत अन्यैर्दुर्भिक्षमुच्यते ॥ ७ ॥

कर्कराशिपर शनि होवे तब मध्यदेशमें शुभ होवे तथा नागपुरका नाश होवे और अन्य जगह दुर्भिक्ष हो ॥ ७ ॥

सिंहराशिं गतः सौरिः समभावो भविष्यति ॥
गुडतैलं महर्घं च मालवो हि विनश्यति ॥ ८ ॥

सिंहराशिपर शनि होवे तब अन्नका समान भाव रहे तथा गुड, तैल महंगे हों और मालवदेशका नाश होवे ॥ ८ ॥

यदा भास्करतनयः कन्याराशिं प्रविश्यति ।
जलशोषं भवेद्वायुर्मध्यदेशे नृपक्षयम् ॥ ९ ॥

कन्याराशिका शनि होवे तब जलका शोष हो तथा वायु चले और मध्यदेशमें राजाओंका क्षय हो ॥ ९ ॥

सूर्यपुत्रे तुले जाते ह्यग्न्युपद्रवमादिशेत् ।
सप्तधान्यमहर्घाणि मेदिनी नष्टकारिका ॥ १० ॥

तुलाका शनि होवे तब संसारमें अग्निका उपद्रव होय, सातों धान्य महंगे हों और पृथ्वी सबको नष्ट करनेवाली हो ॥ १० ॥

यदा वृश्चिकगः सौरिर्मेदिनी दुःखसंयुता ॥
वर्षमात्रमथो चोर्ध्वमिन्द्रप्रस्थो विनश्यति ॥ ११ ॥

वृश्चिकराशिका शनि होवे तब पृथ्वी दुःखसे युक्त रहे और एकवर्ष पीछे दिल्लीका नाश हो ॥ ११ ॥

धनूराशौ स्थितः सौरिर्गर्जितोऽपि न वर्षति ॥
तोयहीना धरा तत्र दुर्भिक्षं च विनिर्दिशेत् ॥ १२ ॥

धनराशिका शनि होवे तब गर्जता हुआभी मेघ नहीं वर्षे और पृथ्वी जलसे हीन होजावे ऐसा दुर्भिक्ष होवे ॥ १२ ॥

मकरे च यदा सौरिर्दुर्भिक्षं तत्र दारुणम् ॥
कामार्ताश्च विनश्यन्ति ह्यन्यदेशे शुभं भवेत् ॥ १३ ॥

मकरका शनि होवे तव दारुण दुर्भिक्ष पडे और कामीपुरुषोंका नाश होवे तथा अन्यदेशोंमें शुभ फल होवे ॥ १३ ॥

कुंभराशिगतः सौरिर्वर्षमात्रं तदर्द्धकम् ॥
कालिन्द्या उपकंठे च तत्र धान्यमहर्घता ॥ १४ ॥

कुंभराशिका शनि होवे तव एकवर्ष अथवा छःमासतक यमुनानदीके किनारेपर सव धान्य महंगे होवें ॥ १४ ॥

अर्कपुत्रो यदा मीने दुर्भिक्षं तत्र रौरवम् ॥
सागराः सर्वनद्यश्च विनश्यन्ति चतुष्पदाः ॥ १५ ॥

मीनका शनि होवे तव दारुण दुर्भिक्ष पडे और समुद्र तथा सव नदी सूख जावें और पशुवोंका नाश हो ॥ १५ ॥

अथ नक्षत्रभोगफलम् ॥

अश्विन्यां च गतः सौरिस्तिलतैलं च पित्तलम् ॥
महर्घं मासमेकं च पुनः शस्तोपि जायते ॥ १६ ॥
भरण्यां चैव ऋक्षे तु रविपुत्रो हि संस्थितः ॥
भ्रातृणां प्राग्भवेद्युद्धं राज्ञो चैव महद्भयम् ॥ १७ ॥
कृत्तिकायां गतः सौरिरशेषाणि धनानि च ॥
सुभिक्षं प्रभवेत्तत्र काष्ठे लाभश्चतुर्गुणः ॥ १८ ॥
रोहिण्यां मृगशीर्षे च सूर्यपुत्रो यदा भवेत् ॥
कुञ्जराः प्रलयं यान्ति सर्ववस्त्रमहर्घता ॥ १९ ॥
आर्द्रायां च यदा सौरिः सर्वधान्यस्य संग्रहः ॥
द्वितीये तृतीये मासे द्विगुणं लाभमादिशेत् ॥ २० ॥
पुष्ये पुनर्वसौ चैव यदि सौरिः प्रजायते ॥
सस्ये सुखं च दुःखं च तेन कालः प्रवर्त्तते ॥ २१ ॥

अश्विनी नक्षत्रपर शनि आवे तब तिल, तैल और पीतल यह एक महीने-तक महँगे रहैं फिर सस्ते होजावें ॥ १६ ॥ भरणीपर आवे तब पूर्व दिशामें परस्पर भाइयोंमें युद्ध होवे और राजाओंको अत्यन्त भय होवे ॥ १७ ॥ कृत्तिकापर आवे तब सोना, चांदी आदि सब धातु महँगे होवें और अन्न सस्ता होवे तथा काष्ठके खरीदनेमें चौगुणा लाभ होवे ॥ १८ ॥ रोहिणी तथा मृगशीर्षपर आवे तब हाथियोंका नाश होवे और सब तरहके वस्त्र महँगे होवें ॥ १९ ॥ आर्द्रानक्षत्रपर शनि आवे तब सब धान्योंका संग्रह करना चाहिये, फिर दूसरे व तीसरे महीनेमें दूगुणा लाभ होवे ॥ २० ॥ पुनर्वसु और पुष्य नक्षत्रपर शनि आवे तब खेतियोंमें अन्नकी वृद्धि होवे किन्तु पीछेसे अन्नका नाश होनेसे काल (दुर्भिक्ष) का दुःख होवे ॥ २१ ॥

आश्लेषायां यदा सौरिस्तदा वृष्टिर्न जायते ॥
धनुषः सारखड्गस्य नूनं चैव महर्घता ॥ २२ ॥
मघायां च यदा सौरिः समयं दीयते तदा ॥
कुञ्जरं हयवाणिज्यं लाभं चैव विनिर्दिशेत् ॥ २३ ॥
पूर्वायां च यदा सौरिस्तदा चणकमुद्गकाः ॥
माषयवाढ्यधान्यानामुत्पत्तिः स्याद्धरातले ॥ २४ ॥
उत्तरायां यदा सौरिः पशून्वै नाशयेत्खलु ॥
उपधान्यमहर्घाणि षण्मासानि निरन्तरम् ॥ २५ ॥
तथा हस्तगतः सौरिः प्रजानां संक्षयो भवेत् ॥
धेनुविप्रादिनाशः स्यादल्पवृष्टिर्भवेत्तदा ॥ २६ ॥
यदा चित्रागतः सौरिश्छत्रभंगो भवेत्तदा ॥
बहुक्षीरघृता गावो बहुवृष्टिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ २७ ॥

आश्लेषा नक्षत्रपर शनि आवे तब वर्षा नहीं होवे और धनुष उत्तम खड्गमें महँगे होवें ॥ २२ ॥ मघापर शनि आवे तब संसारमें भय हो और हाथी घोडे इनके व्यापार करनेमें चौगुणा लाभ होवे ॥ २३ ॥ पूर्वा-फाल्गुनी पर शनि हो तब चणा, मूंग, उडद, यव आदि इन आठ प्रकारके

धान्योंकी उत्पत्ति होवे ॥ २४ ॥ उत्तराफाल्गुनीपर शनि आवे तब निश्चयही पशुओंका नाश होय और छः महीने तक उपधान्य महंगे रहें ॥ २५ ॥ हस्तनक्षत्रपर शनि होवे तब प्रजाओंका नाश होय तथा गाय और ब्राह्मणोंका नाश हो, वर्षा कम होवे ॥ २६ ॥ चित्रानक्षत्रपर शनि आवे तब छत्रभंग हो और बहुत दूध देनेवाली गायें होवें तथा वर्षाभी अत्यन्तही हो ॥ २७ ॥

स्वात्यां चैव यदा सौरिः सुभिक्षं स्याद्धरातले ॥
भवत्यत्र न संदेहो मृत्युः प्रियजनस्य च ॥ २८ ॥
विशाखायां यदा सौरिः शालिगोधूमनाशनः ॥
पूर्वे वर्षति पर्जन्यो पश्चान्नैव घनागमः ॥ २९ ॥
अनुराधां गतः सौरिर्ज्येष्ठायां परिवर्त्तते ॥
पश्चिमे दारुणो घोरः संहारस्तत्र जायते ॥ ३० ॥
यदि मूलगतः सोरिर्बहुपीडा च जायते ॥
पशूनां च नराणां च वृष्टेर्मध्यमता तदा ॥ ३१ ॥
यदा मार्तण्डतनयः पूर्वाषाढेऽपि जायते ॥
लोकानां चैव सर्वेषां काष्ठे लाभश्चतुर्गुणः ॥ ३२ ॥
उत्तराषाढके सौरिः सप्तमासे हि भास्करः ॥
पानीयस्य लयं कुर्याद्वारिहीना च मही भवेत् ॥ ३३ ॥

स्वाति नक्षत्रपर शनि होवे तब पृथ्वीपर सुभिक्ष होवे और मनुष्योंके प्रिय पुरुषकी मृत्यु होवे ॥ २८ ॥ विशाखापर शनि हो तब चावल, गेहूंका नाश हो और पहले मेघ वर्षा करके फिर नहीं करें ॥ २९ ॥ अनुराधा और ज्येष्ठा इन नक्षत्रोंपर शनि होवे तब पश्चिम दिशामें महाभयंकर संग्राम होवे ॥३०॥ मूलनक्षत्रपर शनि होवे तब पशुओंको और मनुष्योंको बहुत पीडा होवे तथा वर्षाभी मध्यमही हो ॥ ३१ ॥ पूर्वाषाढा नक्षत्रपर शनि हो तब सब लोगोंको काष्ठ (लकडी) के व्यापारमें चौगुणा लाभ होवे ॥ ३२ ॥ उत्तराषाढा नक्षत्रपर शनि होवे तब सात महीनोंतक सूर्य जलका नाश करे और पृथ्वी जलसे हीन हो जावे ॥ ३३ ॥

श्रवणे च यदा सौरिः सस्यं स्याच्च तदा समम् ॥
रोगं चतुष्पदानां च देवो वर्षति मध्यमः ॥ ३४ ॥
धनिष्ठायां गतः सौरिः पार्थिवैः पीड्यते मही ॥
गवां च ब्राह्मणानां च पीडनं स्यात्सुलोचने ॥ ३५ ॥
शतभिषायां गतः सौरिर्भवेत्कष्टं चतुष्पदाम् ॥
अल्पोदकास्तदा मेघाः स्वल्पसस्यं भवेत्तदा ॥३६॥
पूर्वाभाद्रपदस्थोऽपि यदा स्याद्भानुनन्दनः ॥
तदा सस्यमहर्घं स्यादल्पवृष्टिः प्रजायते ॥ ३७ ॥
उत्तराभाद्रपदे देवि यदा चैव शनैश्चरः ॥
राजपीडाल्पवृष्टिश्च स्वल्पसस्यं प्रजायते ॥ ३८ ॥
रेवत्यां च गतः सौरिस्तदा देवो न वर्षति ॥
हाहाकारं महारौद्रं पृथिव्यां जायते शिवे ॥ ३९ ॥
सुभिक्षं मध्यदेशे च पीडा जनपदस्य च ॥
परस्परं नरेन्द्राणां युद्धं भवति दारुणम् ॥ ४० ॥

श्रवणपर शनि आवे तब सब धान्य सम भाव रहैं तथा पशुओंको पीडा होवे और मेघ मध्यम वर्षा करें ॥ ३४ ॥ धनिष्ठापर हो तब राजा पृथ्वीको पीडित करें तथा हे सुलोचने ! जो ब्राह्मणोंको भी पीडा हो ॥ ३५ ॥ शतभिषापर शनि हो तब पशुओंको पीडा होवे तथा मेघ कम वर्षा करें और धान्य कम उत्पन्न होवे ॥ ३६ ॥ पूर्वाभाद्रपदपर शनि होवे तब धान्य महँगे होवें और वर्षाभी कम होवे ॥३७॥ उत्तराभाद्रपदपर शनि होवे तब राजपीडा तथा वर्षा कम और धान्यभी कम होवे ॥ ३८ ॥ रेवतीपर शनि हो तब मेघ नहीं वर्षें, पृथ्वीपर हाहाकार अत्यंत भयंकर होवे ॥ ३९ ॥ मध्यदेशमें सुभिक्ष मनुष्योंको पीडा और राजाओंमें परस्पर भयंकर युद्ध होवे ॥ ४० ॥

अथ शन्युदयफलम् ।

मेषे शनेरुदयने जलवृष्टिरुच्चैः सौख्यं जने वृषभगे

तृणकाष्ठकष्टम् ॥ अश्वेषु रोगकरणं च महर्घमिक्षुजन्यं गुडादि मिथुनेतिसुभिक्षमेव ॥ ४१ ॥ वृष्टिर्न कर्कगृहगे सरसां च शोषः सर्वत्र मारिभयमेव जनेषु पीडा॥ पीडागमः क्वचन सिंहगते शिशूनां नाशः प्रकाशनमधार्मिकशासनस्य ॥ ४२ ॥ कन्याशनेरुदयतः किल धान्यनाशः पृथ्वीससंधिरतुलस्तुलया न वर्षा ॥गोधूमवर्जितमही तदसौ फलं स्यादस्वस्थता धनुषि मानुषजातिरोगः ॥ ४३ ॥ स्त्रीणां शिशोश्च विपदोऽखिलधान्यनाशः सौरे मृगेभ्युदयने नृपयुद्धवुद्धिः ॥ नाशश्चतुष्पदकुले फलशेषमीने दीने जने ननु शनेरुदयान्ननाशः ॥ ४४ ॥

मेषमें शनि उदय हो तो जलवृष्टि, मनुष्योंमें सुख होय, वृषराशिमें उदय हो तो तृण, काष्ठका कष्ट तथा घोडोंमें रोग, इक्षुजन्य पदार्थ महँगे होयँ। मिथुनमें उदय हो तो सुभिक्ष होय ॥ ४१ ॥ कर्कराशिपर उदय होनेसे वर्षाका अभाव, रसोंमें शुष्कता, सब जगह महामारीका भय और मनुष्योंमें पीडा होय। सिंहराशिपर उदय होनेसे बालकोंको पीडा और राजाका अधर्मसे शासन प्रकट होय ॥ ४२ ॥ कन्याराशिपर शनि उदय होनेसे धान्यनाश, पृथ्वीमें संधि होय। तुलाराशिपर उदय होनेसे वर्षाका नाश पृथ्वी गेहूंसे रहित हो। यही फल वृश्चिकराशिका है। धनराशिपर शनि उदय होनेसे मनुष्योंमें अस्वस्थता तथा रोग होवे ॥ ४३ ॥ और स्त्रियोंको तथा बालकोंको विपद प्राप्त होय, धान्यका नाश हो। मकरराशिपर उदय होनेसे राजाओंमें युद्ध होवे, पशुओंका नाश होयं। कुंभ, मीनराशिपर शनि उदय होनेसे मनुष्य दीन होंय और धान्यका नाश होय ॥ ४४ ॥

अथ शन्यस्तफलम्।

मेषेऽस्तंगमने शनेर्भुवि जने धान्यं महर्घं वृषे सर्वत्रापि गवादिपीडनमहो पण्यांगना मैथुने ॥ दुःखार्तो

पथि कर्कटे रिपुभयं कार्पासधान्यादिषु दौर्लभ्यं जल-देष्ववर्षणविधिः सिंहे प्रभूतव्यथा ॥ ४५ ॥ धातूनां च महर्घताऽन्नविषमः कन्या स्थिता व्यग्रतो लोकेऽन्येपि तुलाबलेन सततं निष्पत्तिरानंदतः ॥ स्वल्पं धान्यमलौ जले नृपभयं पीडाऽपि शलभादिजा चापे लोकसुखं मृगेऽपि पवनेऽनावृष्टिनारीमृतिः॥४६॥ कुंभे शीतभयं चतुष्पदपरिग्लानिश्च हानिर्गवां मीने हीनतया घनस्य न जलं क्वापीह वापीस्थले॥ संतापी नृपतिः स्वधर्मविमुखः पापी जनः पीडया मंदत्वं समुपैति भूपकलहो मंदेऽस्तमभ्याश्रिते ॥ ४७ ॥

मेष राशिपर शनि अस्त होवे तब धान्य महँगे होय । वृषभपर अस्त होनेसे सर्वत्र गो आदि पशुओंमें पीडा और वेश्याओंको अपस्मार (गर्मी) की पीडा होय । मिथुनपर शनि अस्त होनेसे मनुष्य मार्गमें दुःखी होवें । और कर्कराशिपर अस्त होनेसे शत्रुका भय तथा कपास धान्य आदिक महँगे होयँ और मेघ वर्षा नहीं करें । सिंहराशिपर अस्त होनेसे मनुष्योंमें अधिक व्यथा हो ॥ ४५ ॥ कन्याराशिपर अस्त होनेसे धातु तथा अन्नका भाव तेज हो । तुलापर अस्त हो तो लोकमें आनंद हो किन्तु धान्य कम उत्पन्न हो । वृश्चिकपर अस्त होनेसे राजाओंके द्वारा मनुष्योंको भय हो और टीडीका भी भय हो, धनपर अस्त होनेसे लोकमें सुख । मकरपर अस्त होनेसे प्रचण्ड पवन चले, वर्षाका अभाव हो तथा स्त्रियोंकी मृत्यु अधिक होवे ॥ ४६ ॥ कुंभराशिपर शनि अस्त होनेसे शीतका भय पशुओंको पीडा, ग्लानि, गायोंकी हानि होवे । मीनराशिपर शनि अस्त होनेसे कम वर्षा हो, कहींकहीं बावडि-योंमें जल दीखे, राजा अपने धर्मसे विमुख दुःखदेनेवाले हों और पापी मनु-ष्योंको पीडा तथा मंदता हो राजाओंमें युद्ध हो ॥ ४७ ॥

प्राग्द्वारेषु चरन्रविपुत्रो नक्षत्रेषु करोति च वक्रम् ॥
दुर्भिक्षं कुरुते भयमुग्रं मित्राणां च विरोधमवृष्टिम् ॥४८॥

शनि कृत्तिका, रोहिणी, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषापर वक्री हो तो अनावृष्टि बडा भयानक दुर्भिक्ष, भय तथा मित्रोंमें वैर होवे ४८॥

कन्या मीने यदा सौरी राशिवक्रं प्रजायते ॥
नृपयुद्धं भयं लोके दुर्भिक्षं तत्र जायते ॥ ४९ ॥

शनि कन्या वा मीन राशिपर वक्री हो तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष और राजाओंमे युद्ध होवे ॥ ४९ ॥

तुलावृश्चिकचापेषु यदा याति शनैश्चरः ॥
त्रिभागशेषा पृथ्वी मांसशोणितकर्दमैः ॥ ५० ॥

शनि तुल वृश्चिक और धन राशिपर आवे तव युद्ध, महामारी आदिसे तीसरा हिस्सा मनुष्य पृथ्वीपर रह जावें ॥ ५० ॥

कन्यायां मिथुने मीने वृषे धनुषि वा स्थितः ॥
शनिः करोति दुर्भिक्षं राजयुद्धं परस्परम् ॥ ५१ ॥

शनि कन्या, मिथुन, मीन, वृषभ वा धन राशिपर स्थित हो तव दुर्भिक्ष और परस्पर राजाओंमें युद्ध होवे ॥ ५१ ॥

अथ राहुफलम् ।

राहुश्च क्रूरसंगेषु यदा मेषे भविष्यति ॥
दुर्भिक्षं जायते तत्र नात्र कार्या विचारणा ॥ १ ॥

मेषराशिपर जब राहु आवे और क्रूरग्रहोंके साथ हो तव दुर्भिक्ष होवे इसमें कुछ विचार नही करना ॥ १ ॥

वृषे राहुर्यदा याति दुःखं सर्वजनेषु च ॥
दुर्लभानि च धान्यानि नान्यथा ऋषिभाषितम् ॥२॥

वृषराशिपर जब राहु आवे तव सब मनुष्योंमें दुःख रहे और धान्य दुर्लभ होवें इसमें ऋषियोंके वचन कभी असत्य नहीं होते ॥ २ ॥

राहुर्मिथुनाराशिं चेदेवं लक्षणमादिशेत् ॥
घृतं च सर्वधान्यानि समर्घं यान्ति वै तदा ॥ ३ ॥

मिथुनराशिका राहु होवे तव घृत और सब तरहका अन्न यह सस्ते हो जावें ॥ ३ ॥

यदा कर्कस्थितो राहुस्तस्कराणां भयं भवेत् ॥
समर्घं सर्वलोहं च महर्घं षष्ठमासिकृत् ॥ ४ ॥

कर्कराशिपर राहु आवे तब चौरोंका भय होवे और सब प्रकारके लोहे सस्ते हो जावें फिर छठे महीनेमें महंगे होवें ॥ ४ ॥

यदा सिंहगतो राहुः शृङ्गवेरकटुत्रयम् ॥
षष्ठे मासि व्यतीते च लाभश्चैव चतुर्गुणः ॥ ५ ॥

सिंहका राहु होवे तब अदरख और सूंठ, मीरच, पीपल, इनके खरीदनेम छः महीने पीछे चौगुणा लाभ होवे ॥ ५ ॥

यदा कन्यां स्थितो राहुर्धात्रीफलं च पिप्पली ॥
मासमेकं द्वयं चैव महर्घं त्रिगुणं भवेत् ॥ ६ ॥

कन्याराशिपर राहु होवे तब आँवले और पिप्पल ये एक महीने तथा दो महीनोंतक तिगुना लाभ होवे ॥ ६ ॥

यदा राहुस्तुले याति क्रूरः क्रूरसमन्वितः ॥
मेदिन्यां सस्यनाशः स्याद्दुर्भिक्षं तत्र दारुणम् ॥ ७ ॥

तुला राशिपर राहु आवे और क्रूर ग्रहोंके साथ होवे तो पृथ्वीपर खेतियोंका नाश होवे और भयंकर दुर्भिक्ष होवे ॥ ७ ॥

यदावृश्चिकराशिस्थः सैंहिकेयोऽपि जायते ॥
मनोदिष्टफलं चापि षष्ठे मासे च रौरवम् ॥ ८ ॥

वृश्चिकराशिपर राहु होवे तब मनुष्योंके मनोरथ सिद्ध होवें किन्तु छठे महीनेमें पृथ्वीपर हाहाकार होवे ॥ ८ ॥

धनराशिस्थितो राहुः पंचमासाधिकं भवेत् ॥
महर्घं च ध्रुवं याति कुञ्जराणां हयानि च ॥ ९ ॥

धनराशिका राहु होवे तब पांच महीनोंमें हस्ती, घोडा, निश्चय महंगे होवें ॥ ९ ॥

मकरे च यदा राहुः कांस्यसूत्रस्य संग्रहः ॥
मासे तृतीयेऽतीते तु लाभश्चैव चतुर्गुणः ॥ १० ॥

मकरका राहु होवे तब कासी, सूत्र, इनका संग्रह करना चाहिये तीन महीने उपरात चौगुना लाभ होवे ॥ १० ॥

यदा राहुः स्थितः कुम्भे क्रूरग्रहसमन्वितः ॥
गृहीते सूत्रगोधूमे मासे षष्ठे चतुर्गुणम् ॥ ११ ॥

कुंभका राहु क्रूरग्रहके संग होवे तब सूत और गेहूं इनके खरीदनेसे छठे महीनेमें चौगुणा लाभ होवे ॥ ११ ॥

मीनराशिगते राहौ सर्वधान्यस्य संग्रहः ॥
वर्षमात्रं च दुर्भिक्षं पश्चात्सुभिक्षमेव च ॥ १२ ॥

मीनराशिका राहु होवे तब सब अन्नका संग्रह करना चाहिये क्योंकि एकवर्षतक दुर्भिक्ष होता है, पीछे सुभिक्ष होवे ॥ १२ ॥

अथ केतुफलम् ।

रवावस्ताचलप्राप्तौ पश्चिमायां निरीक्षते ॥
यदा वह्निशिखाकारस्तदा केतूदयं वदेत् ॥ १ ॥

सूर्यके अस्त होनेपर जो अग्निशिखाकी समान दीखे उसको केतु उदय भया ऐसा कहते हैं ॥ १ ॥

एषां कदा फलमिति ज्ञेयमृक्षं विलोकयेत् ॥
महोत्पातहते ऋक्षे देशेऽनावृष्टिसंभवः ॥ २ ॥
उल्कापातो दिशां दाहो भूकंपो ब्रह्मवर्चसम् ॥
दृष्ट्वा ऋक्षं भवेद्यत्तत्तदृक्षं पीडितं भवेत् ॥ ३ ॥

इनका फल देखनेके लिये नक्षत्र देखे, नक्षत्रके हत होनेमे महोत्पात और अनावृष्टिकी प्राप्ति होती है ॥ २ ॥ उल्कापात, दिग्दाह, भूकंपको देखकर विद्वान् विचारै, जो नक्षत्र उसदिन हो वही पीडित होता है ॥ ३ ॥

श्रावणे भाद्रमासे च केतवो वारुणा दश ॥
जलवृष्टिकरा लोके तदा धान्यसमर्घता ॥ ४ ॥

श्रावण और भाद्रपद मासमें दश केतु वारुण नामवाले होते हैं, यह लोकमें जलकी वर्षा करते हैं तब धान्य सस्ता होता है ॥ ४ ॥

आश्विने कार्तिके तैस्फाः सूर्यपुत्राश्चतुर्दश ॥
कुर्युश्चतुष्पदे मृत्युं दुर्भिक्षं चैव नाशनम् ॥ ५ ॥

आश्विन और कार्तिकमें तैस्फनामवाले चौदह सूर्यके पुत्र हैं, यह पशुओंकी मृत्यु और दुर्भिक्ष तथा नाश करते हैं ॥ ५ ॥

वह्निपुत्राश्चतुस्त्रिंशत्केतवो मार्गपौषयोः ॥
अग्निदाहं चौरभयमनावृष्टिं दिशंत्यमी ॥ ६ ॥

मार्गशीर्ष और पौषमें चौंतीस अग्निके पुत्र केतु हैं, यह उदय होवें तब अग्निदाह, चौरभय और अनावृष्टि करते हैं ॥ ६ ॥

केतवो यमपुत्राः स्युर्माघफाल्गुनयोर्नव ॥
धान्यं महर्घं दुर्भिक्षं कुर्युर्भूपमहारणम् ॥ ७ ॥

माघ और फाल्गुनमें नव केतु यमराजके पुत्र उदय होते हैं, यह धान्यकी तेजी, दुर्भिक्ष और राजाओंमें विग्रह कराते हैं ॥ ७ ॥

केतवोऽष्टादशसुता धनदस्य वसंतके ॥
लोके सुखं मंगलानि सुभिक्षं कुर्युरुद्गताः ॥ ८ ॥

अठारह केतु कुबेरके पुत्र हैं सो चैत्रवैशाखमें उदय होते हैं, यह लोकमें सुख, मंगल और सुभिक्ष करते हैं ॥ ८ ॥

ज्येष्ठाषाढोदिता वायोः पुत्रा विंशति केतवः ॥
ते वातजलवर्षायै तरुप्रासादभंगदाः ॥ ९ ॥

ज्येष्ठ और आषाढमें वायुके पुत्र वीस केतु उदय होते हैं, यह उदय होनेसे वायु सहित जल वर्षा करते हैं तथा प्रचण्ड पवनसे वृक्ष और महल टूटते हैं ॥ ९ ॥

एवं पंचोत्तरशते क्वचिदष्टोत्तरं शतम् ॥
केचिदेकोत्तरशतं केतूनां स्थानकत्रयात् ॥ १० ॥

इसप्रकार कोई एकसो पांच और कोई एकसो आठ, कोई एकसो एक केतुओंकी संख्या कहते हैं ॥ १० ॥

अथ उदयफलम् ।

अश्विन्यामुदितः केतुर्हन्यादश्मकपालकम् ॥
भरण्यां च किरातेशं कृत्तिकायां कलिङ्गपम् ॥ ११ ॥
रोहिण्यां सूरशेनेशं मृगे चोशीनराधिपम् ॥
आर्द्रायां जालणाधीशमश्मकेशं पुनर्वसौ ॥ १२ ॥
पुष्ये च मगधाधीशं सार्पे केरलपयाधिपम् ॥
मघायामंगनाथं च पूषायां पांड्यनायकम् ॥ १३ ॥

अश्विनीमें केतुका उदय हो तो अश्मदेशके राजाका नाश हो, भरणीमें किरातदेशका, कृत्तिकामे कलिंगदेशका पति नष्ट हो ॥ ११ ॥ रोहिणीमें सूरशेनदेशका पति । मृगशिरमें उसीनरदेशका स्वामी, आर्द्रामें जालणाका स्वामी पुनर्वसुमें अश्मकदेशका स्वामी नष्ट हो ॥ १२ ॥ पुष्यमें मगधदेशका पति, आश्लेषामें केरलदेशका पति, मघामें अंगदेशका पति, पूर्वाफाल्गुनीमें पाण्ड्यदेशका स्वामी नष्ट हो ॥ १३ ॥

उज्जयिन्या नृपं हन्यादुत्तराफाल्गुनीगतः ॥
दंडकाधिपतिं हस्ते चित्रायां कुरुभूपतिम् ॥ १४ ॥
स्वात्यां काश्मीरकम्बोजभूपानां हि विनाशकः ॥
इक्ष्वाकुकौसलेशानां विशाखायां च घातकः ॥ १५ ॥
मैत्रे पौण्ड्रमहीनाथं सार्वभौमं तथैंद्रभे ॥
आन्ध्रमद्रकनाथं च मूलस्थो हन्ति निश्चितम् ॥ १६ ॥

उत्तराफाल्गुनीमें उज्जैनदेशके स्वामीका, हस्तमें दंडकदेशके राजाका, चित्रामें कुरुदेशके राजाका नाश हो ॥ १४ ॥ स्वातिमें उदय हो तो काश्मीर, कम्बोजदेशके राजाओंका, विशाखामें हो । इक्ष्वाकुके कुलवालोंका नाश हो ॥ १५ ॥ अनुराधामें पौंड्रदेशके स्वामीका, ज्येष्ठामें हो तो सार्वभौम राजाधिराजकी मृत्यु हो । मूलमें आंध्र और मद्रदेशके अधिपतिका नाश होवे ॥ १६ ॥

पूर्वाषाढा काशिराजमुत्तरा हन्ति कैकतम् ॥
बौधे च शिविवेदीशं श्रवणे कैकयेश्वरम् ॥ १७ ॥
वासवे पंचजन्येशं वारुणे सिंहलेश्वरम् ॥
पूर्वजायामङ्गनाथं नैमिषेशे मुखागतौ ॥ १८ ॥
रेवत्यामुदितः केतुः किराताधिपघातकः ॥
धूम्राकारसपुच्छश्च केतुर्विश्वस्य पीडकः ॥ १९ ॥

पूर्वाषाढामें काशीके राजाका, उत्तराषाढामें केतकदेशके स्वामीका, अभिजितमें शिविवेदीशका, श्रवणमें केकयदेशके स्वामीका, नाश हो ॥ १७ ॥ धनिष्ठामें पांचालदेशके राजाका, शतभिषामें सिंहलदेशके राजाका, पूर्वाभाद्रपदामें अंगदेशके राजाका, उत्तराभाद्रपदामें नैमिषदेशके राजाका नाश हो ॥ १८ ॥ रेवतीमें उदय होकर केतु किरातदेशके राजाका नाश करे और जो केतु धूम्राकार तथा बडी पूंछका हो वह विश्वको पीडा देनेवाला कहा है ॥ १९ ॥

अथ सप्तनाडीचक्रम् ।

प्रावृट्काले समायाते रौद्रादिदशगे रवौ ॥
नाडीवेधसमायोगे जलयोगं वदाम्यहम् ॥ १ ॥

वर्षाकाल (सूर्य आर्द्रा आदि दश नक्षत्रोंपर आवे तबतक) के समयमें इस नाडीचक्रमें ग्रहोंके वेध (एकनाडीपर आने) से वर्षाको जाने ॥ १ ॥

कृत्तिकादिलिखेद्भानि साभिजिति क्रमेण च ॥
सप्त नाडीव्यधास्तत्र कर्तव्या पन्नगाकृतिः ॥ २ ॥
सराचतुष्कवेधेन नाड्यैकैका प्रजायते ॥
तेषां नामान्यहं वक्ष्ये तथा चैव फलानि च ॥ ३ ॥

अभिजित्सहित कृत्तिकादि अठावीस नक्षत्रोंको चारफेरोंमें सर्पाकार सात नाडियें बनावे ॥ २ ॥ उन चार कोठोंमें एक एक नाडी होती है, अब उनके नाम तथा फल मैं कहताहूं ॥ ३ ॥

मध्यमार्गस्थिता सौम्या नाडी तस्याग्रपृष्ठतः ॥
सौम्ययाम्यगता शेषा नाडिकानां त्रिकं त्रिकम् ॥४॥

इन सप्तनाडियोंके विषे नीर, जल और अमृत ये तीन सजल नाडिये तो उत्तरमें रहती हैं। प्रचण्ड, पवन और दहन ये तीन नाडियें निर्जल हैं, यह दक्षिणमें और सौम्यनाडी इन दोनोंके बीचमें रहतीहैं ॥ ४ ॥

॥ सप्तनाडीचक्रम् ॥

दिशा	दक्षिणमे निर्जल नाडियें			मध्य	उत्तरमे सजल नाडियें		
नाम	प्रचण्ड	पवन	दहन	सौम्य	नीर	जल	अमृत
स्वामी	शनि	सूर्य	मंगल	गुरु	शुक्र	बुध	चन्द्र
नक्षत्राणि	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
	विशाखा	स्वाति	चित्रा	हस्त	उ. फा	पू. फा	मघा
	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा	उ. षा	अभिजित्	श्रवण
	भरणी	अश्विनी	रेवती	उ. भा	पू. भा	शतभिषा	धनिष्ठा

एकनाडीगताद्वाधा ग्रहाः क्रूराः शुभा यदि ॥
ततो नाडीफलं वाच्यं शुभं वा यदि वाऽशुभम् ॥ ५॥

सौम्य और क्रूरग्रह जिस नाडीमें (किसी एक नाडीके चारों नक्षत्रोंपर कहींभी) एकत्र हों तो उसका फल उसी नाडीके नामानुसार कहना ॥ ५ ॥

ग्रहाः कुर्युर्महावातं गताश्चण्डाख्यनाडिकाः ॥
वायुनाडीगता वायुर्दहन्यामतिदाहकाः ॥ ६ ॥
सौम्यनाडीगता मध्या नीरस्था मेघवाहकाः ॥
जलायां वृष्टिदश्चंद्रो नाडिकाश्चातिवृष्टिदाः ॥ ७ ॥

ग्रह प्रचण्डनाडीमें हों तो प्रबल वायु चले । वातनाडीमें हों तो पवन, अग्निनाडीमें हों तो बहुत गर्मी ॥ ६ ॥ सौम्यनाडीमें हों तो साधारण, नीर नाडीमें हों तो बादल होंय, जलनाडीमें हों तो वर्षा और अमृतनाडीमें हों तो बहुत वर्षा होवे ॥ ७ ॥

एकोऽप्येतत्फलं दत्ते स्वनाडीसंस्थितो ग्रहः ॥
भूसुतः सर्वनाडीस्थो दत्ते नाड्युद्भवं फलम् ॥ ८ ॥

अपनी नाडीमें स्थित ग्रह अकेलाही हो तो भी उसका फल उस नाडीके नामानुसार होवे और मंगल चाहे जिस नाडीमें हो तो भी उसका फल उस नाडीके नामानुसार होवे ॥ ८ ॥

क्रूराः क्रूरेण सम्भिन्नाः सौम्याः सौम्येन संयुताः ॥
दुर्दिनं तत्र विज्ञेयं मिश्रैर्वृष्टिमिहादिशेत् ॥ ९ ॥

किसी नाडीमें क्रूर ग्रहही हों वा सौम्यग्रह हों तो वहां दुर्दिनही जानना और यादि सौम्य, क्रूरग्रह शामिल हों तो वर्षा हो ॥ ९ ॥

यत्र नाडीस्थितश्चन्द्रस्तत्रस्थाः खेचरा यदि ॥
क्रूरसौम्यविमिश्राश्च तद्दिने वृष्टिरुत्तमा ॥ १० ॥
एकऋक्षसमायोगो जायते यदि खेचरैः ॥
तत्र काले महावृष्टिर्यावत्तस्यांशके शशी ॥ ११ ॥

जिस नाडीके चारों नक्षत्रोंमेंसे किसी एक नक्षत्रपर चन्द्रमा स्थित हो उसी नक्षत्रपर क्रूर तथा सौम्यग्रह हों उसी दिन वर्षा होवे ॥ १० ॥ एक नक्षत्रपर क्रूर तथा सौम्यग्रह स्थित हों उस समय चन्द्रमाके अंश उन ग्रहोंके अंशोंके तुल्य हों उस समय बहुतही वर्षा होवे ॥ ११ ॥

केवलैः सौम्यपापैर्वा ग्रहविद्धो यदा शशी ॥
तदातितुच्छं पानीयं दुर्दिनन्तु भवेद्ध्रुवम् ॥ १२ ॥

जिस नाडीमें सौम्य वा क्रूरग्रह हों और उसी नाडीमें चन्द्रमा आवे तो बहुतही कम वर्षा होवे ॥ १२ ॥

यस्य ग्रहस्य नाडीस्थः चंद्रमास्तद्ग्रहेण चेत् ॥
दृष्टो युक्तो करोत्यम्भो यदि क्षीणो न जायते ॥ १३॥

पूर्णकला चंद्रमा जिस नाडीमें हो और उसी नाडीका स्वामी चंद्रमाके साथ बैठा हो वा देखता हो तो वर्षा होवे ॥ १३ ॥

पीयूषनाडीगश्चंद्रस्तत्र खेटा :शुभाशुभाः ॥
द्विचतुः पंच पानीयं दिने चैकत्रिसप्तके ॥ १४ ॥
एवं जलाख्यनाडीस्थे चंद्रे मिश्रग्रहान्विते ॥
दिनार्द्धं दिवसं पंच दिनानि जायते जलम् ॥ १५ ॥
नीरनाडीगते चंद्रे तत्रस्थाः खेचरा यदि ॥
यामं दिनार्द्धकं त्रीणि दिनानि जायते जलम् ॥ १६ ॥

चंद्रमा सौम्य तथा क्रूरग्रहोंके साथ यदि अमृतनाडीमें हो तो एक, तीन वा सातवें दिनमें दो, चार वा पांचवार जल गिरे॥१४॥ इसी प्रकार जलनाडीमें चंद्रमा सौम्य वा क्रूरग्रहोंके साथ हो तो दो प्रहर वा एकदिनमें, पांचदिनतक वर्षा होवे ॥ १५ ॥ तथा नीरनाडीमें चन्द्रमा होवे और वहां क्रूर,सौम्यग्रहभी स्थित हों तब एक प्रहर वा डेढ दिन अथवा तीन दिनतक वर्षा होवे ॥ १६ ॥

अमृतादित्रये यत्र भवन्ति सर्वखेचराः ॥
तत्र वृष्टिः क्रमाज्ज्ञेया धृत्यर्करसवासराः ॥ १७ ॥
सौम्यनाडीगताः सर्वे वृष्टिदास्ते दिनत्रयम् ॥
शेषनाड्यां महावातदुष्टवृष्टिप्रदा ग्रहाः ॥ १८ ॥

सवही ग्रह अमृत आदि नाडीमें होयँ तब क्रमसे अर्थात् अमृतनाडीमें हों तो अठारह दिन, जलनाडीमें हों तो बारह दिनतक और नीरनाडीमें हो तो छःदिनतक वर्षा होवे ॥ १७ ॥ यदि सौम्यनाडीमें हों तो तीनदिनतक वर्षा होवे । और जो दहन, पवन और प्रचण्डनाडीमें हों तो बहुत पवन चले तथा दुष्ट वर्षा होवे ॥ १८ ॥

निर्जला जलदा नाडी भवेद्योगे शुभाधिके ॥
क्रूराधिके समायोगे जलदोऽप्यम्बुदाहकः ॥ १९ ॥

ग्रह निर्जलनाडियोंमेंभी यदि क्रूरकी अपेक्षा सौम्यग्रह अधिक हों तो वर्षा होवे और सजलनाडियोंमेंभी यदि सौम्यकी अपेक्षा क्रूर अधिक हों तो वर्षा नहीं होवे ॥ १९ ॥

याम्यनाडीस्थिताः क्रूराः अनावृष्टिप्रसूचकाः ॥
शुभयुक्ताजलांजस्थास्तेऽतिवृष्टिप्रदा ग्रहाः ॥ २० ॥

क्रूरग्रह यदि दक्षिणकी तीननाडियोंमें हों तो अनावृष्टिकारक हैं और उत्तरकी तीननाडियोंमें सौम्यग्रह हों तो अतिवर्षा करनेवाले हैं ॥ २० ॥

ऊर्ध्वनाडीगते शुक्रे चंद्रेऽधोनाडिकास्थिते ॥
महावायुरधोनाड्यां द्वयोर्योगे महज्जलम् ॥ २१ ॥

ऊपरकी (प्रचण्ड, पवन, दहन) नाडियोंमें शुक्र हो और नीचेकी (नीर, जल, अमृत) नाडियोंमें चंद्रमा हो तब वायु बडे जोरसे चले किन्तु दोनों ग्रह नीचेकी नाडियोंमें हों तब महावर्षा होवे ॥ २१ ॥

जलयोगे समायाते तदा चंद्रसितौ ग्रहौ ॥
क्रूरैर्दृष्टौ युतौ वापि तदा मेघोऽल्पवृष्टिदः ॥ २२ ॥

एकही नाडीमें चंद्रमा, शुक्र होवें तब वर्षा होवे किन्तु क्रूरग्रह उनको देखें वा उनके साथ हों तो मेघ कम वर्षा करे ॥ २२ ॥

यदा शुक्रस्य सोमस्य भास्करो नाडिगोचरे ॥
एकत्र विचरिष्यंति तदा चैकार्णवा मही ॥ २३ ॥

एकही नाडीमें सूर्य चंद्रमा और शुक्र हों तब बहुत वर्षा होवे ॥ २३ ॥

एकनाडीसमारूढौ चंद्रमाधरणीसुतौ ॥
यदि तत्र भवेज्जीवस्तदैकार्णविता मही ॥ २४ ॥

एकही नाडीमें चन्द्रमा, मंगल और बृहस्पति यह तीनों ग्रह होवें तब उस समय बहुत अधिक वर्षा होवे ॥ २४ ॥

यदा शुक्रेन्दुजीवानामेकनाड्यां समागमः ॥
तदा भवेन्महावृष्ट्या सर्वत्रैकार्णवा मही ॥ २५ ॥

एकही नाडीमे यदि चंद्रमा, शुक्र और बृहस्पति होवे तव उस समय बहुतही अधिक वर्षा होवें ॥ २५ ॥

बुधशुक्रौ यदैकत्र गुरुणा च समन्वितौ ॥
चंद्रयोगे तदाकाले जायते वृष्टिरुत्तमा ॥ २६ ॥

एक नाडीमें बुध, शुक्र, बृहस्पति और चन्द्रमा यह चार ग्रह होवें तब उत्तम वर्षा होवे ॥ २६ ॥

शनैश्चरार्कचन्द्राणां यद्वा योगो ज्ञशुक्रयोः ॥
एकनाड्यां तदा दीप्तस्तडित्पातश्च दुर्दिनम् ॥ २७ ॥

एकनाडीमें सूर्य शनि और चंद्रमा हो, अथवा बुध और शुक्र होवें तब उस समय बिजली गिरे वा दुर्दिन होवे ॥ २७ ॥

शनैश्चरार्कचंद्राणां नाडीभेदो यदा भवेत् ॥
शीतकाले भवेच्छीतमुष्णे तेजःसमन्वितम् ॥
वर्षाकाले जलं दद्युः कथितं पूर्वसूरिभिः ॥ २८ ॥

एकही नाडीमें सूर्य, चन्द्रमा और शनि शीतकालमें हों तो शीत पडे, उष्णकालमें हों तो धूप और वर्षाकालमें हों तब वर्षा हो ऐसा पूर्वविद्वानोंने कहा है ॥ २८ ॥

शुभनक्षत्रमारूढैः शुभस्थानगतैर्ग्रहैः ॥
चंद्रः संश्रयते वृष्टिं नाडीचक्रे व्यवस्थितम् ॥ २९ ॥

शुभनक्षत्रोंपर अथवा शुभ राशियोंपर ग्रह होवें उस समय इस नाडीचक्रमें भी चन्द्रमा वर्षाका योग करता है ॥ २९ ॥

उदयास्तमने मार्गे वक्रयुक्ते च संक्रमे ॥
जलनाडीगताः खेटा महावृष्टिप्रदायकाः ॥ ३० ॥

कोईभी ग्रह अस्त, उदय, वक्री, मार्गी होनेपर वा एक राशिसे दूसरी राशि पर जानेके समय जलनाडीमें हो तो वर्षा बहुत करें ॥ ३० ॥

ग्रामभं सौम्यनाडीस्थं तत्र चंद्रसितौ स्थितौ ॥
क्रूरयोगे महावृष्टिरल्पा क्रूरस्य दर्शने ॥ ३१ ॥

जिस ग्रामका नक्षत्र सौम्यनाडीमें हो और उसपर चन्द्रमा तथा शुक्र बैठे हों तब उनके साथ कोई क्रूरग्रहभी हों तबभी उस ग्राममें बहुत वर्षा होवे किन्तु क्रूरग्रह देखें तो कम वर्षा होवे ॥ २१ ॥

ग्रहणप्रकरणम् ।

राशिग्रहणफलम् ।

उपरागो यदा मेषे पीड्यंते ये तदा जनाः ॥
काम्बोजांध्रकिरातांश्च पांचालांश्च तिलङ्गकाः ॥१॥
वृषे च ग्रहणे गोपाः पशवः पथिका जनाः ॥
महान्तो मनुजा ये च तेषां पीडा गरीयसी ॥ २ ॥
सूर्याचंद्रमसोर्ग्रासो मिथुने च वरांगनाः ॥
पीड्यंते बाह्लिका लोका यमुनातटवासिनः ॥ ३ ॥
कर्कटे ग्रहणे पीडा गर्दभानां च जायते ॥
आभीरबर्बराणां च पीडा च महती मता ॥ ४ ॥
सिंहे च ग्रहणे पीडा सर्वेषां वनवासिनाम् ।
नृपाणां नृपतुल्यानां मनुजानां धनक्षयः ॥ ५ ॥
कन्यायां ग्रहणे पीडा त्रिपुटाशालिजातिषु ॥
कवीनां लेखकानां च गायकानां धनक्षयः ॥ ६ ॥

मेष राशिपर ग्रहण हो, तो मनुष्योंको पीडा हो तथा कंबोज, अंध्र, किरात, पांचाल, तैलंग आदि देशोंमें पीडा होवे ॥ १ ॥ वृषभ राशिपर ग्रहण होनेसे ग्वाला, पशु, पथिक (रस्ते चलनेवाले) और बडे लोगोंको पीडा होवे ॥ २ ॥ मिथुन राशिपर सूर्य और चंद्रमाके ग्रहण होवें तो वेश्या तथा बाह्लीक देश निवासी और यमुनातट निवासियोंको पीडा हो ॥ ३ ॥ कर्क राशिपर ग्रहण होवे तब गधोंको तथा आभीर (अहीर) और बर्बरोंको महापीडा होवे ॥ ४ ॥ सिंह राशिपर ग्रहण होवे तब सब वनवासी दुःखी होवें और राजा तथा सामर्थ्यवान् मनुष्योंका धनक्षय होवे ॥ ५ ॥ कन्या

राशिपर ग्रहण होवे तो त्रिपुट और शालिजाति, कवि, लेखक और गाने-वालोंको पीडा होवे ॥ ६ ॥

तुलायामुपरागे च दशार्णवककाहवः ॥
मरुतश्चापरांत्याश्च पीडचंते यतिसाधवः ॥ ७ ॥
वृश्चिके ग्रहणे दुःखं सर्वजातौ प्रजायते ॥
यदुवरस्य मंद्रस्य चौलयौधेयकस्य च ॥ ८ ॥
यदोपरागश्चापे स्यात्तदावंत्याश्च वाजिनः ॥
विदेहमल्लपांचालाः पीडचंते भिषजो विशः ॥ ९ ॥
मकरे ग्रहणे पीडा नीचानां मंत्रवादिनाम् ॥
स्थविराणां नटानां च चित्रकूटस्य संक्षयः ॥ १० ॥
कुंभोपरागे पीडचंते गिरिजाः पश्चिमा जनाः ॥
तस्करा द्विरदाभीराः प्रजानां दुःखदायकाः ॥ ११ ॥
मीनोपरागे पीडचंते जलद्रव्याणि सागराः ॥
शलोपजीविनो लोका भविद्यायां च पण्डिताः ॥१२॥

तुलाराशिपर ग्रहण होवे तव दशार्ण, वल, काहव, मरु और अपरान्त देशवासी तथा साधु संन्यासियोंको पीडा होवे॥७॥वृश्चिकराशिपर ग्रहण होवे, तव सव जातिके लोगोंको पीडा होवे, यदुवर, मन्द्र, चौल, यौधेय जाति दुःखी होवें॥ ८॥ धनराशिपर ग्रहण होवे तव अवंति (उज्जैन) देशके घोडे, विदेह, मल्ल, पाचाल देशवासी वैद्य और वैश्य पीडा पावें ॥ ९ ॥ मकरराशिपरग्रहण होवे तव नीच और मंत्रवादियोंको पीडा होवे तथा वृद्ध और नट दुःखी हों और चित्रकूटका नाश होवे ॥ १० ॥ कुंभराशिपर ग्रहण होवे तव पश्चिमदेशके पर्वतवासी पीडित होवें और तस्कर तथा हाथी, आभीर प्रजाको दुःख देवें ॥ ११ ॥ मीनराशिपर ग्रहण होवे तव जलद्रव्यमें पीडा, जलजीविका करनेवाले मल्लाह आदिकोंको पीडा और नक्षत्रविद्या जाननेवाले ज्योतिषियोंको पीडा होवे ॥ १२ ॥

अथ नक्षत्रग्रहणफलम् ।

अश्विन्यां पीडितायां स्यान्मुद्गादीनां महर्घता ॥
भरण्यां श्वेतवस्त्रेभ्यो लाभं मासत्रये भवेत् ॥ १३ ॥
कृत्तिकायां हेमरूप्यप्रवालमणिमौक्तिकम् ॥
संगृहीतं लाभदायि मासे च नवमे स्मृतम् ॥ १४ ॥
रोहिण्यां सूत्रकार्पाससंग्रहो लाभदायकः ॥
दशमासान्तरे प्रोक्तः सोमवेधो न चेदिह ॥ १५ ॥
मृगशीर्षेपि मंजिष्ठा लाक्षाक्षारः कुसुंभकम् ॥
महर्घं दशमासान्ते लाभदं च यथोचितम् ॥ १६ ॥
घृतं महर्घमार्द्रायां लाभदं मासपंचके ॥
तैलाल्लाभः पुनर्वस्वोर्मासपंचकतः परम् ॥ १७ ॥
पुष्ये मासैस्त्रिभिर्लाभो भवेद्गोधूमसंग्रहे ॥
आश्लेषायां तु मुद्गेभ्यः प्राप्तिः स्यान्मासपंचके ॥१८॥
मघाचतुष्टये चोला चणकः खलु तुष्टये ॥
चित्रायां च सुगंधर्याः लाभो मासद्वयात्यये ॥ १९ ॥
त्रिपंचनवभिर्मासैः स्वातौ लाभस्तथातथा ॥
विशाखायां कुलित्थेभ्यः षण्मासे लाभसंभवः॥२० ॥

अश्विनी नक्षत्रमें ग्रहण होवे तब मूंग आदि महंगे होवें । भरणीमें हो तो श्वेतवस्त्रोंसे तीनमासमें लाभ हो ॥ १३ ॥ कृत्तिकामें हो तो सुवर्ण, चांदी, प्रवाल, मणि, मौक्तिक ग्रहण होनेसे नवें मासमें लाभदायक हों ॥ १४ ॥ रोहिणीमें सूत, कपासका संग्रह करनेसे दशमासमें लाभ हो परन्तु चन्द्रग्रहणमें यह फल न होवे ॥१५॥ मृगशीर्षमें ग्रहण हो तो मंजीठ, लाख, क्षार, कसूंभा इनका संग्रह करनेसे दशवें महीनेमें लाभ हो ॥ १६ ॥ आर्द्रामें ग्रहण हो तो घृत महँगा होवे, पांचवें मासमें लाभ देवे । पुनर्वसुमें तेल संग्रह करनेसे पांचवें मासमें लाभहो ॥ १७ ॥ पुष्यमें ग्रहण हो तो गेहूंके खरीदनेसे तीनमासमें

लाभ हो। आश्लेषामें ग्रहण होवे तब मूंग खरीदनेसे पांचमासमें लाभ हो॥१८॥ मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त इन नक्षत्रों में ग्रहण हो तो चौंला, चणा आदिसे निश्चय लाभ होवे। चित्रामें ज्वारीसे दोमासमें लाभ हो ॥ १९ ॥ स्वाती नक्षत्रमें ग्रहण हो तो तीसरे, पाचवें, नवें मासमें अन्नसे लाभ होवे। विशाखामें ग्रहण हो तो छठे मासमें कुलथीसे लाभ हो ॥ २० ॥

राधायां कोद्रवाल्लाभो मासैर्नवभिराप्यते ॥
ज्येष्ठायां गुडखण्डादेः पंचमासे धनोदयः ॥ २१ ॥
तंडुलेभ्यस्तथा मूले पूषायां श्वेतवस्त्रतः ॥
उपायां श्रीफलात्पूर्वासद्वस्त्रैर्मासपंचकम् ॥ २२ ॥
श्रवणे तुवरीलाभो धनिष्ठायां तु मापतः ॥
चणकेभ्योतिवारुण्यां तेभ्यः पूभानिपीडने ॥ २३ ॥
लाभस्त्रिमासि निर्दिष्टमुभायां लवणादितः ॥
मासषट्काल्लाभ एव रेवत्यां मुद्गमापतः ॥ २४ ॥

अनुराधामें ग्रहण हो तो तीन मासमें कोदोंमे लाभ होवे, ज्येष्ठामें ग्रहण होवे तब गुड, खाण्डसे पांचवें मासमें लाभ हो ॥ २१ ॥ मूलमें ग्रहण होवे तब चावलोंसे, पूर्वापाढामें होवे तब श्वेत वस्त्रोंसे, उत्तरापाढामें होवे तब नारेल, सुपारीसे पाचवें मासमें लाभ हो ॥ २२ ॥ श्रवणमें ग्रहण हो तब सतावरीसे लाभ हो, धनिष्ठामें ग्रहण हो तब उडदोंसे लाभ हो। शतभिषामें ग्रहण हो तब चणोंसे लाभ हो और पूर्वाभाद्रपदमें हो तो पीडा होवे॥२३॥ उत्तराभाद्रपदमें ग्रहण हो तब लवणसे तीन मासमें लाभ हो। रेवतीमें ग्रहण होवे तब मूंग, उडदसे छठे मासमें लाभ हो॥ २४ ॥

मासपरत्वेन ग्रहणफलम् ।

यांचंद्रमसोर्ग्रहः शुभकरो मार्गे तथा कार्तिके
पौषे धान्यमहर्घता जनभयं वर्प पुरो मध्यमम् ॥
माघे वांछितवृष्टिरन्नविगमः स्यात्फाल्गुने दुःखकृ-
चैत्रे चित्ररुगादिलेखकमहापीडा समा मध्यमा॥ २५ ॥

वैशाखे तिलतैलमुद्गकुलते कार्पासकं नाशये-
ज्ज्येष्ठे वर्षणधान्यनाशनकरं स्यादागामिवर्षं शुभम् ॥
आषाढे क्वचिदेव वर्षति घनो रोगोऽन्नलाभः क्वचि-
द्वृक्षे मूलफलानि हंति सहसा वर्षं शुभं सम्भवेत् ॥ २६ ॥
गर्भाः श्रावणकेऽश्वगर्दभभवास्तूर्णं च तत्फल्गुनं
स्त्रीगर्भान्विनिहंति भाद्रपदके सौख्यं सुभिक्षं जने ॥
कुर्यादाश्विनकेऽथ सूर्यशशिनोरेकत्रमासे ग्रह-
द्वंद्वश्चेन्नरनायका बहुबला युद्धयंतिकोपोत्कटाः ॥ २७ ॥
कदाचिदधिके मासे ग्रहणं चंद्रसूर्ययोः ॥
सर्वराष्ट्रभयं भंगः क्षयं यांति महीभुजः ॥ २८ ॥

सूर्यचंद्रमाका ग्रहण कार्तिक और मार्गशीर्षमें हो तो शुभकर्ता है । पौषमें हो तो धान्यकी तेजी, मनुष्योंमें भय और आगेका वर्ष मध्यम हो । माघमें हो तो मनके अनुसार वर्षा और अन्नकी प्राप्ति करे । फाल्गुणमें हो तो दुःख करे । चैत्रमें हो तो चित्रकार और लेखकोंको महापीडा होवे ॥ २९ ॥ वैशाखमें ग्रहण होवे तब तिल, तैल, मूंग, कपास आदिका नाश होवे । ज्येष्ठमें हो तो अनावृष्टि, धान्यका नाश और आगेका वर्ष शुभ हो । आषाढमें हो तो कहीं वर्षा, कहीं रोग तथा अन्नका लाभ हो । वृक्षोंके मूल, फल टूट पडें, शेष वर्ष शुभ हो ॥ २६ ॥ श्रावणमें ग्रहण हो तो घोडे और गधोंके गर्भपात होवें तथा स्त्रियोंके गर्भ पतित होवें । भाद्रपदमें ग्रहण हो तो मनुष्योंमें सुख हो । आसोजमें ग्रहण हो तो सुभिक्ष हो । और एक ही मासमें सूर्यचंद्रमाका ग्रहण होनेसे राजा लोग परस्पर महाक्रोध करके युद्ध करें ॥ २७ ॥ कदाचित् अधिक मासमें चंद्र तथा सूर्यका ग्रहण होवे तब देशका नाश तथा भय और राजाओंका नाश होवे ॥ २८ ॥

वारपरत्वेन ग्रहणफलम् ।

रविवारे ग्रहे वर्षं मध्यमं धान्यसंग्रहः ॥
राजयुद्धं च दुर्भिक्षं घृतायस्तैलविक्रयाः ॥ २९ ॥

सोमोर्द्धग्रहणे राजग्रहोऽन्नस्य महर्घता ॥
लाभस्तैलघृतादिभ्यो भौमे वह्निभयं भवेत् ॥ ३० ॥
भौमवारे ग्रहे भानोरन्योन्यं नृपतिक्षयः ॥
इंदोर्ग्रहे च कार्पासशणसूत्रमहर्घता ॥ ३१ ॥
बुधे पूगरक्तवस्त्रसंग्रहो लाभदायकः ॥
गुरौ पीरक्तवस्तु तैलगंधादि लाभदम् ॥ ३२ ॥
शुक्रे सुभिक्षं मांगल्यं सर्वलोकशुभंकरम् ॥
शनौ युगंधरीलाभः श्यामवस्तुमहर्घता ॥ ३३ ॥
पीतरक्तवस्त्रताम्रवृपभादिकसंग्रहे ॥
मासद्वये तस्य लाभ इत्युक्तं ज्ञानिभिः पुरा ॥ ३४ ॥

रविवारके दिन ग्रहण हो तो वर्ष मध्यम रहे, धान्यका संग्रह करना चाहिये, राजयुद्ध, दुर्भिक्ष और घृत, लोहा, तेल, तेज होवें ॥२९॥ चंद्रवारके दिन हो तो अन्न, घृत, तेल तज होंगे, संग्रह करनेसें लाभ होय । मंगलवारके दिन हो तो अग्निभय हो ॥ ३० ॥ मंगलके दिन सूर्य ग्रहण हो तो राजाओमें युद्ध होवे । चंद्रमाका ग्रहण हो तो सूत्र, कपास, शण तेज होवें ॥ ३१ ॥ बुधवारके दिन हो तो सुपारी, लाल कपडा इनका संग्रह करनेसे लाभ होवे । गुरुवारके दिन हो तो पीत वस्तु, रक्त वस्त्र, तेल, गंधादिक संग्रह करनेसे लाभ होवे ॥ ३२ ॥ शुक्रके दिन हो तो सुभिक्ष तथा शुभ हो । शनिवारको होवे तब ज्वारका लाभ तथा श्याम वस्तु तेज होवें ॥ ३३ ॥ पीत, रक्त वस्त्र, तावा, वृपभ इनका संग्रह करनेसे दो मासमें लाभ होवे ऐसा ज्ञानियोंने कहा है ॥ ३४ ॥

ग्रहणाद्ये च सर्वस्मिन्नुत्पाते प्रबलो यदा ॥
पश्चात्संज्ञा ततो घोरारिष्टभंगं तदाकरोत् ॥ ३५ ॥
एवमुत्पातरहित अस्मिन्नुदकयोनिकाः ॥
जीवाः पुद्गलका दृश्यास्तद्देशे वृष्टिरुत्तमा ॥ ३६ ॥

एतेन गर्भाः सर्वेऽपि सूचिता वातवर्जिताः ॥
स्थानांगसूत्रकारेण तेषां नीरात्समुद्भवात् ॥ ३७ ॥
रवेर्ग्रहाच्च पक्षान्ते यदि चंद्रग्रहो भवेत् ॥
तदा दर्शनिनां पूजा धर्मवृद्धिर्महोदयः ॥ ३८ ॥
क्रूरसंयुक्तसूर्येन्द्वोर्ग्रहणे नृपतिक्षयः ॥
राष्ट्रभंग इति प्राहुर्भप्रज्ञा वै मुनीश्वराः ॥ ३९ ॥
आषाढयोर्द्वयोर्मध्ये यदा पर्वत्रयं भवेत् ॥
क्षितौ भवेन्महायुद्धं नृपमृत्युं समादिशेत् ॥ ४० ॥
यत्र राशौ भवेत्पर्वस्तस्य वाच्यं क्रयाणकम् ॥
अत्यर्घं लभते मूल्यं पीड्यमानं च राहुणा ॥ ४१ ॥

ग्रहणके प्रारंभमें जो संपूर्ण उत्पात यदि प्रबल हों और पीछे मेघ वर्षे तो अरिष्टभंग होवे ॥ ३५ ॥ और जो कोईभी उत्पात न हो तो जलके जीव बहुत होवें और अच्छी वर्षा हो ॥ ३६ ॥ इतने विकार न हों तो जलके जीवोंकी गर्भवृद्धि हो ऐसा सूत्रकारोंने स्थानका निर्णय करा है ॥ ३७ ॥ सूर्यग्रहणके पंदरह दिनके पश्चात् यदि चंद्रग्रहण हो तो शास्त्रकारोंकी पूजा, धर्मवृद्धि, बडे पुरुषोंका उदय हो ॥ ३८॥ क्रूरग्रहसंयुक्त सूर्य चंद्रमाका ग्रहण हो तो राजाओंका क्षय करता है और वह राज्यभी भंग हो ऐसा मुनिजन कहते हैं ॥ ३९ ॥ आषाढआदि दो महीनोंमें यदि तीन पर्व हो जावें तो पृथ्वीपर महायुद्ध हो, राजाओंकी मृत्यु हो ॥ ४० ॥ जिस राशिमें ग्रहण हो उस राशिकी वेचनेकी वस्तु बहुत तेज होवें ॥ ४१ ॥

ग्रस्तोदितौ च ग्रस्तास्तौ धान्यभूपालनाशकौ ॥
सर्वग्रस्तौ चंद्रसूर्यौ दुर्भिक्षमरणप्रदौ ॥ ४२ ॥

सूर्य चन्द्रमाका ग्रहण यदि ग्रस्तोदित वा ग्रस्तास्त होवें तो धान्य और राजाओंका नाश करनेवाले हैं । और सर्वग्रस्त होवें तो दुर्भिक्ष और मृत्युकारक हैं ॥ ४२ ॥

(अन्तरिक्षके निमित्त)

वाय्वभ्रसन्ध्यादिग्दाहपरिवेशतमांसि च ॥
खपुरं चेंद्रचापं च तद्विन्द्यादन्तरिक्षजम् ॥ १ ॥

वायु, बादल, सन्ध्या दिग्दाह, (दिशाओंका फूलना,) परिवेश (चन्द्रसूर्यके कुण्डल), अन्धकार, गन्धर्वनगर और इन्द्रधनुष यह अन्तरिक्षके निमित्त हैं ॥ १ ॥

ज्ञेयो वातश्च योगेन देशे वर्षशुभाशुभम् ॥
तेनायबलवान्सर्वं जलयोगेभ्य इष्यते ॥ २ ॥
वातस्तु त्रिविधः प्रोक्तः पावकः स्थापको परः ॥
तृतीयो ज्ञापको वृष्टेः स्थानाङ्गे मध्यसंग्रहात् ॥ ३ ॥

वर्षके शुभाशुभ हाल जाननेके लिये अपने २ देशोंमें योग करके वायुको जानना, यदि वायु अनुकूल हो तो सुवृष्टि हो, प्रतिकूल हो तो अनावृष्टि होवे ॥२ ॥ वायु तीन प्रकारका है, पावक, स्थापक, और ज्ञापक ऐसा शास्त्रकारोंने निश्चय करा है ॥ ३ ॥

आद्यस्तूत्पादकोऽभ्रादेः परो न विसरारुकृत् ॥
तृतीयो भाविनीं वृष्टिं पूर्वमेव निवेदयेत् ॥ ४ ॥

पहला पावक वायु, बादलोंको उत्पन्न करता है, दूसरा स्थापक वायु बादलोंको जहा तहा लेजाता है, तृतीय ज्ञापक वायु आगे होनेवाली वर्षाको बताता है ॥ ४ ॥

पूर्वस्यामथवोदीच्यां पवनः शीघ्रवृष्टये ॥
दक्षिणस्यां वृष्टिनाशं पश्चिमायां विलम्बकः ॥ ५ ॥
आग्नेयो विग्रहं वह्नेर्भयं वृष्टिविघातनम् ॥
नैर्ऋतः पवनो यावत्तावत्कुर्यान्महातपम् ॥ ६ ॥
वायव्यवायुः कुरुते वृष्टिं पवनसंयुताम् ॥
ततः पीडा मत्कुणाद्या ईतयो जीववर्पणम् ॥ ७ ॥

ऐशानः पवनो विश्वहिताय जलवृष्टये ॥
आनन्दं नन्दयेल्लोके वायुचक्रमिदं मतम् ॥ ८ ॥

पूर्व वा उत्तरका वायु हो तो तत्काल वर्षा करे, दक्षिणका हो तो वर्षाका नाश तथा पश्चिमका हो तो विलंबसे वर्षा होवे ॥ ५ ॥ अग्निकोणका वायु हो तो अग्निभय और वर्षाका नाश करे, नैर्ऋतका हो तो गर्मीका बहुत जोर करे ॥ ६ ॥ वायव्यका वायु हो तो पवन सहित वर्षा करे, परन्तु टीडी, खटमल आदि जीवोंकी वृद्धि करे ॥ ७ ॥ ईशानकोणका वायु हो तो जगत्में कल्याण तथा आनन्द करनेयोग्य वर्षा उत्तम करे ॥ ८ ॥

आग्नेय्यां न कदापीष्टमीशानः सर्वदा शुभः ॥
नैर्ऋतो विग्रहं रोगं दुर्भिक्षं कुरुते भयम् ॥ ९ ॥

अग्निकोणका वायु कभीभी श्रेष्ठ नहीं है, ईशानकोणका सदा श्रेष्ठ है तथा नैर्ऋतका विग्रह, रोग, दुर्भिक्ष और भयकारी है ॥ ९ ॥

महतोऽपि समुद्भूतः सतडित्साभिगर्जितः ॥
मेघानां हनने वायुर्नैर्ऋतो दक्षिणाग्निजः ॥ १० ॥

नैर्ऋतकोण, दक्षिण और अग्निकोणका वायु यदि दो घडी तकभी चलता रहे तो बिजली तथा गर्जना करते हुये महान् मेघोंको भी छिन्नभिन्न करदे, अर्थात् वर्षाको बिल्कुल रोक देवे ॥ १० ॥

पूर्ववातो भवेत्पूर्वः पश्चाद्भवति दक्षिणः ॥
त्रीणि दिनानि हित्वा च पश्चाद्वर्षति नित्यशः॥११॥

पूर्वका वायु चलता हुआ बंद होकर दक्षिणका चलने लगे तो तीन दिनके बाद वर्षा प्रारंभ हो जावे ॥ ११ ॥

औत्तरो वहते वायुः पश्चाद्भवति पूर्वतः ॥
पंच दिनानि हित्वा च पश्चाद्वर्षति सर्वतः ॥ १२ ॥

उत्तरदिशाके पवन चलते हुए पूर्वका चलने लग जावे तो पांच दिनकें बाद वर्षा होवे ॥ १२ ॥

पश्चिमो वहते वायुः पश्चाद्भवति नैर्ऋतः ॥
वातवृष्टिं च मुंचंति जलं स्तोकं विनिर्दिशेत् ॥१३॥

पश्चिमेन यदा कोणे मेघा दृश्यन्ति चंचलाः ॥
वृष्टिर्विरजका ज्ञेया अल्पोदकाः समादिशेत् ॥ २७ ॥

नैर्ऋत कोणके मेघ यदि चंचल दीखे तो अल्पवर्षा होवे ॥ २७ ॥

पश्चिमाच्च यदा मेघा आगच्छंति समाकुलाः ॥
वातवृष्टिर्भवेन्नित्यं पश्चात्पानीयमादिशेत् ॥ २८ ॥

पश्चिमसे बहुतसे मेघ यदि आकुलतासे आवें तो पहले वायु चले फिर वर्षा होवे ॥ २८ ॥

(संध्याप्रकरण)

अहोरात्रस्य या संधिः सैव संध्या प्रकीर्तिता ॥
द्विनाडिका भवेत्साऽधुर्यावदाज्योतिदर्शनम् ॥ २९ ॥

दिनरात्रिका मेल होता है उस दो घडीके समयको संध्या कहते हैं अर्थात् तारोंका तेज मन्द पडनेसे आवे सूर्यके उदयतक प्रातःसंध्या और आधे सूर्यके अस्त होनेसे तारोंके प्रकाश होनेतक सायं संध्या जाननी चाहिये २९

द्योतयन्ति दिशाः सर्वा यदा संध्या प्रदृश्यते ॥
महामेघस्तदा विद्याद्भद्रबाहुवचो यथा ॥ ३० ॥

संध्याके समय यदि सब दिशायें प्रकाशमान होजाव तब शीघ्रही वर्षा होवे ऐसा भद्रबाहुका वचन है ॥ ३० ॥

नभोऽमलं शुभदिशः पद्मारुणसमप्रभाः ॥
मारुतो वाति सुरभिः सुखदो मृदुशीतलः ॥ ३१ ॥
एषा संध्या शुभा ज्ञेया विपरीताऽशुभा स्मृता ॥
रूक्षा च सविकारार्का क्रव्यादस्वरनादिता ॥ ३२ ॥

संध्याके समय आकाश निर्मल हो, दिशायें कमलके सदृश लाल हों और वायु सुगंधित, सुखस्पर्श, मंद तथा शीतल हो ॥ ३१ ॥ ऐसे लक्षण हों वह संध्या शुभ जाननी किन्तु इससे विपरीत हो अथवा रूक्ष हो तथा विकारवान् सूर्य हो और पशु पक्षियोंके भयानक शब्दोंसे युक्त हो तो अशुभ जाने ॥ ३२ ॥

शिशिरादिषु वर्णाः शोणपीतसितचित्रपद्मरुधिरनिभाः ॥
प्रकृतिभावसंध्या स्वर्तौ शस्ता विकृतिरन्या ॥ ३३ ॥

संध्या शिशिरऋतुमें लाल, वसंतमें पीत, ग्रीष्ममें श्वेत, वर्षामें चित्र विचित्र, शरदमें पीत और हेमंतमें रुधिरके वर्णकी हो तो शुभ किन्तु ऋतुके तथा प्रकृतिके लक्षणोंसे विपरीत हो तो अशुभ जाने ॥ ३३ ॥

पूर्वेण यदि संध्यायां मेघैः संछादितं नभः ॥
केचिदुष्ट्रदृशा मेघाः केचित्कुंजरसन्निभाः ॥ ३४ ॥
केचिद्वै शूकरमुखाः केचिद्वृषभसन्निभाः ॥
केचिद्वै पर्वताकाराः केचिन्महिषसन्निभाः ॥ ३५ ॥
ईदृग्वर्णाश्च ये मेघा वर्षन्ते नात्र संशयः ॥
पंचरात्रं भवेद्वृष्टिः सप्तरात्रं तथैव च ॥ ३६ ॥

संध्याके समय पूर्वदिशामें यदि आकाश मेघोंसे आच्छादित हो, उस समय कोई ऊँटके सदृश, कोई हाथीके समान ॥ ३४ ॥ कोई शूकरके सरीखे, कोई बैलके समान, कोई पर्वतके आकारके, कोई महिष (भैंसा) के समान ॥ ३५ ॥ ऐसे वर्ण अर्थात् ऐसे आकारके हों तो पांच वा सात रात्रितक अवश्य वर्षा करें इसमें सन्देह नहीं ॥ ३६ ॥

संध्याकाले स्निग्धा दण्डतडिन्मत्स्यपरिघिपरिवेषाः ॥
सुरपतिचापैरावतरविकिरणाश्च सुवृष्टिकराः ॥ ३७ ॥
अनावृष्टिर्भयं रोगं दुर्भिक्षं राजविग्रहम् ॥
रूक्षायां विकृतायां च संध्यायामपि निर्दिशेत् ॥ ३८ ॥

सन्ध्याके समय इंद्रधनुष (बडा इंद्रधनुष), ऐरावत, दंड, मत्स्य, परिधि, सूर्य वा चन्द्रमाके कुंडल, बिजली वा सूर्यकी किरणें यदि स्निग्ध हों तो तत्काल वर्षा होवे ॥ ३७ ॥ और उसी संध्याके समय विपरीत अथवा रूक्ष हों तो अनावृष्टि, भय, रोग, दुर्भिक्ष, राजविग्रह आदि होवें ॥ ३८ ॥

दिग्दाहलक्षणम्।

नभः प्रसन्नं विमलानि भानि प्रदक्षिणं वाति सदागतिश्च ॥

दिशां च दाहः कनकावदातो हिताय लोकस्य सपार्थिवस्य३९.

दिग्दाहके समय यदि आकाश निर्मल, तारा स्निग्ध (चिक्कण), वायुकी गति सदा प्रदक्षिण और दिग्दाहका वर्ण सुवर्ण जैसा तेजस्वी होवे तो राजा तथा प्रजाओंका कल्याण हो ॥ ३९ ॥

परिवेषफलम् ।

चापशिखिरजततैलक्षीरजलाभः स्वकालसम्भूतः ॥
अविकलवृतः स्निग्धपरिवेषशिवसुभिक्षकरः ॥४० ॥

सूर्य वा चंद्रमाका कुण्डल शिशिर ऋतुमें नीलकंठ पक्षीके समान, वसन्तमें मयूरके, ग्रीष्ममें चांदीके, वर्षा ऋतुमें तैलके, शरदमें दूधके और हेमन्त ऋतुमें जलके सदृश वर्णवाला हो तथा अखण्डित हो किन्तु पूर्ण और स्निग्ध हो तो कल्याण तथा सुभिक्ष करे ॥ ४० ॥

वर्णैनैकेन यदा बहुलः स्निग्धः क्षुराभ्रकाकीर्णाः ॥
स्वर्तौ सद्यो वर्षं करोति पीतश्च दीप्तार्कः ॥ ४१ ॥

एकही वर्णका वडा, स्निग्ध और छुरीकी धारके सदृश तीक्ष्ण वादलोंसे युक्त वा तेजयुक्त सूर्यके पीले रंगका कुण्डल हो तो तत्काल वर्षा करे ॥४१॥

यदा तु सोमसुदितं परिवेषो रुणद्धि हि ॥
जीमूतवर्णःस्निग्धश्च महामेघस्तदा भवेत् ॥ ४२ ॥

यदि नवीन उदय हुए चंद्रके वादल जैसा रंगका स्निग्ध कुण्डल हो तो बहुत वर्षा होवे ॥ ४२ ॥

सूर्येन्दुपरिवेषाणां फलं वक्ष्याम्यशेषतः ॥
श्वेतवर्णे भवेद्रम्यं पीतवर्णे रुजाकरः ॥ ४३ ॥
रक्तवर्णे भवेद्युद्धं कृष्णवर्णे नृपक्षयः ॥
नीलवर्णे महावृष्टिर्धूमवर्णे च धूमरी ॥ ४४ ॥
स्वल्पे स्वल्पफलं सर्वं बहूनां तु फलं महत् ॥
जलद्रावे महावृष्टिर्बिंबनाशे नृपक्षयम् ॥ ४५ ॥

अब सूर्य चंद्रमाके मण्डलका फल कहता हूं–श्वेतवर्णका मण्डल द्रव्यके निमित्त है, पीतवर्णका रोगकारी ॥ ४३ ॥ रक्तवर्णका युद्धकारक और कृष्णवर्णका हो तो राजाका नाशकारक है, नीलवर्णका हो तो महावर्षा, धूम्रवर्णसे धूम्रता ॥ ४४ ॥ थोडे होनेसे थोडा फल, अधिकहोने से अधिक फल कहना और उसमेंसे जलके कणका स्राव हों तो अत्यन्त वृष्टि हो तथा बिम्बके नाशमें राजाकी मृत्यु होवे ॥ ४५ ॥

(गंधर्वनगर)

यदा शुभ्रैर्घनैर्मिश्रं सविद्युत्सबलाहकम् ॥
गंधर्वनगरं स्निग्धं विद्यादुदकसंप्लवम् ॥ ४६ ॥

बिजलीसहित श्वेत बादलोंसे बना हुआ यदि स्निग्ध वर्णका गंधर्व नगर दीखे तो बहुत वर्षा होवे ॥ ४६ ॥

कपिलं शस्यघाताय मंजिष्ठाहरणं गवाम् ॥
अव्यक्तवर्णं कुरुते बलक्षोभं न संशयः ॥ ४७ ॥

गंधर्वनगरका वर्ण यदि कपिल हो तो तृणसंज्ञक धान्यका नाश, लाल हो तो गवादिपशुवोंका नाश और मिश्र हो तो राजाओंकी सेनाओंका नाश हो ॥ ४७ ॥

इंद्रधनुषफलम् ।

वृष्टिं करोत्यवृष्ट्यां वृष्टिं वृष्ट्यां निवारयत्यैन्द्र्याम् ॥
पश्चात्सदैव वृष्टिं कुलिसंभृतचापमाचष्टे ॥ ४८ ॥

इंद्रधनुष यदि वर्षा होनेपर हो तो वर्षाको बंद कर देवे तथा पहले हो तो वर्षा करे ऐसा फल है ॥ ४८ ॥

प्रभाते पश्चिमेंद्रस्य धनुश्च यदि दृश्यते ॥
वारुणे चैव नक्षत्रे शीघ्रं वर्षति माधवः ॥ ४९ ॥

शतभिषा नक्षत्रके दिन प्रभातके समय यदि पश्चिममें धनुष होवे तब तत्काल वर्षा आवे ॥ ४९ ॥

मेघगर्जनाफलम् ।

आदित्योदयवेलायां गर्जते च दिने यदि ॥
प्रहरद्वयेन वर्षन्ति अथवा वातमेव च ॥ ५० ॥

सूर्योदयके समय मेघ गर्जना करें तो दो प्रहरमें अवश्य वर्षा होवे कदाचित् वर्षा नहीं होवे तो वायु चले ॥ ५० ॥

वर्षाजललक्षणम् ।

क्षारं वा कटुकं वाथ दुर्गंधं शस्यनाशनम् ॥
यस्मिन्देशेऽभिवर्षति स वै देशो विनश्यति ॥ ५१ ॥

यदि जिस देशमें क्षारयुक्त वा कडुवा वा दुर्गंधवाला पानी वर्षे तो तृणसंज्ञक धान्यनाश होवे और वह देशभी भंग होवे ॥ ५१ ॥

अमोघफलम् ।

यद्यमोघकिरणाः सहस्रगोरस्तभूधरकरा इवोच्छ्रिताः ॥ भूसमं च रसते यदाम्बुदस्तन्महद्भवति वृष्टिलक्षणम् ॥ ५२ ॥

सूर्यकी अमोघ संज्ञक किरणें जो मोघोंके नामसे प्रसिद्ध हैं वह सायं संध्याके समय बहुतही लम्बी हों और बादल भी बहुत नीचे २ चलते हों तो बहुत वर्षा होवे ॥ ५२ ॥

ताराप्रकरणम् ।

तारका यत्र दृश्यन्ते निर्मलस्फटिकोपमाः ॥
तन्मासे वर्षते मेघस्ततः सौभिक्षमादिशेत् ॥ ५३ ॥

तारे यदि निर्मल स्फटिक मणिके सदृश चमकें, तो उस मासमें सुभिक्ष करने योग्य वर्षा होवे ॥ ५३ ॥

तारकानां यथा वर्णो दृश्यते जलसन्निभः ॥
सप्तरात्रं यदा कुर्यात्तदा वृष्टिं समादिशेत् ॥ ५४ ॥

तारे सातदिन तक यदि जलके सदृश चमकते रहें, तो अवश्य वर्षा होवे ॥ ५४ ॥

तारका यत्र दृश्यन्ते सूक्ष्मावलिसमप्रभाः ॥
सुभिक्षं तत्र दृश्यंते ह्यर्थस्तत्रैव वर्द्धते ॥ ५५ ॥

तारे यदि बहुत छोटे २ तथा तेजयुक्त दीखें तो सुभिक्ष होवे जिससे धान्य आदिका भाव मन्द होजावे ॥ ५५ ॥

स्थूलाकारास्तु दृश्यन्ते तारका अंजनप्रभाः ॥
अर्घास्तत्रैव नश्यन्ति दुर्भिक्षं तत्र दृश्यते ॥ ५६ ॥

तारे यदि बहुत बडे २ तथा तेज रहित सुर्मा जैसे काले रंगके दीखें तो दुर्भिक्ष पडे जिससे धान्यादिके भाव तेज होजावें ॥ ५६ ॥

अथ तिथिवारफलम्।

अथातः संप्रवक्ष्यामि तिथिवारे च ये गुणाः ॥
मासेमासेऽथयैर्योगैर्नित्यं च दीयते फलम् ॥ १ ॥

इसके अनंतर अच्छीतरह तिथिवारोंके गुणोंको कहताहूं, मासमासके विषे जिन जिन योगोंकरिके नित्य फलको देते हैं ॥ १ ॥

चैत्राद्यप्रतिपन्मेघगर्जितं वर्षणं तथा ॥
श्रावणे भाद्रमासे च तदा वृष्टिर्न जायते ॥ २ ॥

चैत्रकृष्ण प्रतिपदाको मेघ गर्जे अथवा वर्षे तो श्रावण और भाद्रपदमें वर्षा नहीं होवे ॥ २ ॥

चैत्रासितद्वितीयायां सर्वदिग्भ्रामकोऽनिलः ॥
विना मेघं तदा भाद्रपदे वृष्टिस्तु भूयसी ॥ ३ ॥

चैत्रवदि द्वितीयाको यदि सब ओरका पवन चले और मेघ न हो तो भाद्रपदमें बहुत वर्षा होवे ॥ ३ ॥

पूर्वस्य चोत्तरायाश्च वायुश्चैत्रे सितेतरे ॥
तृतीयायां तदा लोके सुभिक्षं प्रचुरं जलम् ॥ ४ ॥

चैत्रवदि तृतीयाको पूर्वका अथवा उत्तरका पवन चले तो जलकी वर्षा अधिक हो और सुभिक्ष होवे ॥ ४ ॥

चतुर्थ्यां वृष्टियुग्वातस्तदा दुर्भिक्षमादिशेत् ॥
चैत्रेऽसितादिपंचम्यां तादृगेव फलं भवेत् ॥ ५ ॥

चैत्रवदि चतुर्थीको वर्षायुक्त पवन चले तो दुर्भिक्ष पडे । तैसेही पचमीको भी वर्षायुक्त पवन चले तो दुर्भिक्ष हो ऐसा जाने ॥ ५ ॥

चैत्रद्वितीयादिचतुर्दिनेषु कृष्णेऽथ पक्षे यदि पूर्ववातः ॥ वर्षायुतो नैव शुभः सिते तु पूर्वोत्तरो वायुरतीव शस्तः ॥ ६ ॥

चैत्रवदि द्वितीयासे पंचमी पर्यंत चार दिनतक कृष्णपक्षमें यादि पूर्वका पवन चले और वर्षा नहीं होवे तो शुभ है । परंतु शुक्लपक्षमें पूर्व और उत्तरका पवन चले तो अधिक श्रेष्ठ है ॥ ६ ॥

चैत्रस्य कृष्णपंचम्यां हस्तनक्षत्रसंगमे ॥
न विद्युद्गर्जिताभ्राणि तदा स्याद्वत्सरः शुभः ॥ ७ ॥

चैत्रवदि पंचमीको हस्तनक्षत्र हो और उसी दिन विजली, बादल गर्जना हो तो वर्ष शुभ है ॥ ७ ॥

चैत्रस्य प्रथमे पक्षे बुधवारोस्ति पंचमी ॥
भौमो वा कुरुते स्वर्घं गोधूमस्य घृतस्य च ॥ ८ ॥

चैत्रवदि पंचमीके दिन बुधवार होवे अथवा मंगलवार होवे तो गेहूं, घृत महंगे होवें ॥ ८ ॥

चैत्रस्य कृष्णपक्षे वा पंचम्यां बुधवासरे ।
भौमो वक्रगतिं याति घृततैलमहर्घता ॥
शाल्यन्नं चैव गोधूमास्तदा यान्ति महर्घताम् ॥९॥

चैत्रवदि पंचमी बुधवारको जो मंगल वक्री होवे तो घृत और तेल महंगे होजावें तैसेही चावल तथा गेहूं भी महंगे होवें ॥ ९ ॥

गुरुशुक्रौ यदैकत्र चैत्रमासे व्यवस्थितौ ।
तैलाज्यतिलसूत्राणां संग्रहे च कृते सति ॥
मासद्वये व्यतीते तु विक्रये लाभमादिशेत् ॥ १० ॥

चैत्रमासमें गुरुशुक्र जो एक राशिपर होवें तव तैल,-घृत, तिल, सूत्र इनका संग्रह करना चाहिये, दो मासके उपरांत वेचनेसे लाभ होवे ॥ १० ॥

मधुमासे कृष्णपक्षे तिथिवृद्धिर्यदा भवेत् ॥
शुक्लपक्षस्य हानिः स्यादन्नहीना तदा मही ॥ ११ ॥

चैत्रमासके कृष्णपक्षमें जो तिथिवृद्धि होय और शुक्लपक्षमें तिथिहानि होय तो पृथ्वी अन्नसे हीन होजावे ॥ ११ ॥

चैत्रस्य कृष्णसप्तम्यामभ्राच्छन्नं यदा नभः ॥
रक्तवस्तुसमर्घत्वं भवत्येव न संशयः ॥ १२ ॥

चैत्रवदि सप्तमीके दिन आकाश मेघोंसे आच्छादित होवे तो लालवस्तु निःसंदेह सस्ती होवें ॥ १२ ॥

चैत्रमासे कृष्णपक्षे चतुर्दश्यष्टमीतिथौ ॥
तत्राभ्रमुत्तरो वायुः शुभाय वत्सरे भवेत् ॥ १३ ॥

चैत्रवदि अष्टमी वा चतुर्दशीके दिन बादल होवें और उत्तरका पवन चले तो वर्ष शुभ है ॥ १३ ॥

चैत्रमासेऽर्कसंक्रांतौ यदि वर्षति वासवः ॥
वैशाखे मासि वा ज्येष्ठे तदा सस्यमहर्घता ॥ १४ ॥

चैत्रमासमें संक्रांतिके दिन जो मेघ वर्षे तो वैशाख वा ज्येष्ठमें तृण, धान्य महंगे होवें ॥ १४ ॥

चैत्रे शनौ त्रयोदश्यां यदि मीनार्कसंक्रमः ।
वत्सरः स्यात्तदा निन्द्यः सद्यो धान्यार्घनाशनः॥ १५॥

चैत्रवदि त्रयोदशी शनिवारके दिन मीनसंक्रांति लगे तो संवत् अच्छा नहीं होवे और धान्य भी तत्काल महँगा हो जावे ॥ १५ ॥

चैत्रोऽयं बहुरूपस्तु दक्षिणानिलसंयुतः ॥
सर्वो विद्युत्समायुक्तो वृष्टेर्गर्भहितावहः ॥ १६ ॥
मूलमारभ्य याम्यान्तं क्रमाच्चैत्रं विलोकयेत् ॥
यावद्दक्षिणतो वायुस्तावद्वृष्टिप्रदायकः ॥ १७ ॥

चैत्रमासमें अनेकविध दक्षिणका पवन चले और बिजली चमके तो वर्ष उत्तम होवे ॥ १६ ॥ मूलसे लेकर भरणी नक्षत्रपर्यंत ग्यारहदिन तक चैत्रमें दक्षिणका पवन चले तो वर्षा उत्तम हो ॥ १७ ॥

चैत्रशुक्के प्रतिपदि रवौ वायुर्विशेषतः ॥
अल्पवर्षा फलं तुच्छमल्पं धान्यं प्रजायते ॥ १८ ॥
चंद्रे बहुजलं धान्यं तृणानां च बहूदयः ॥
ईतयो सप्तधा भौमे तीडोदरपराभवः ॥ १९ ॥
बुधे च मध्यमं वर्षं सुभिक्षं तु गुरौ भृगौ ॥
शनौ धान्यतृणजलरसशोषः प्रजायते ॥ २० ॥

चैत्रसुदि प्रतिपदाको रविवार हो तो वायुका जोर विशेष रहे, वर्षा तथा फल, फूल, धान्य आदि अल्प होवें ॥ १८ ॥ चंद्रवार होवे तो वर्षा, धान्य, और तृण अधिक होवें । मंगलवार हो तो 'अतिवृष्टि, अनावृष्टि, चूहे, टीडी आदिका उपद्रव होवे ॥ १९ ॥ बुधवार होवे तो संवत् मध्यम होवे, गुरुवार होवे और शुक्रवार हो तो सुभिक्ष हो और शनिवार हो तो वर्षा, धान्य, रस, तृण आदिका नाश होवे ॥ २० ॥

प्रतिपच्चैत्रशुक्ला या द्वितीया वा तृतीयिका ॥
चतुर्थी वृष्टियुक्ता चेच्चातुर्मास्यं तदा घनः ॥ २१ ॥

चैत्रसुदि प्रतिपदा द्वितीया, तृतीया और चतुर्थीको वर्षा हो तो चातुर्मासमें उत्तम वर्षा होवे ॥ २१ ॥

चैत्रस्य शुक्लपंचम्यामभ्राच्छन्नं यदा नभः ॥
उदयास्तमनं यावज्ज्ञात्वा चैव प्रयत्नतः ॥ २२ ॥
गोधूमान्संग्रहेत्प्राज्ञो प्रवरांश्च न संशयः ॥
श्रावणे तु महर्घाणि मूलेन द्विगुणेन च ॥ २३ ॥

चैत्रसुदि पंचमीको सूर्योदयसे सूर्यास्तपर्यंत यदि आकाश बादलोंसे ढकारहे ऐसा अच्छीतरह जान करके ॥ २२ ॥ गेहूंका संग्रह करना चाहिये, श्रावणमें तेज होनेसे दुगुण लाभ देंगे ॥ २३ ॥

चैत्रस्य शुक्लपंचम्यां वायुर्दक्षिणपूर्वयोः ॥
वृष्ट्या सह तदा वर्षे धान्ये त्रिगुणमूल्यता ॥ २४ ॥

चैत्रसुदि पंचमीके दिन पवन दक्षिणपूर्वका चाले और वर्षाभी होवे तब भाद्रपदमें धान्य त्रिगुणमूलसे विके ॥ २४ ॥

चैत्रस्य शुक्लपंचम्यां रोहिणी यदि संयुता ॥
साभ्रं नभस्तदा वाच्या गर्भस्य परिपूर्णता ॥ २५ ॥
चैत्रस्य शुक्लपंचम्यामार्द्रायोगे यथोचितः ॥
त्रिमास्यां धान्यसंक्षेपश्श्रावणे जलदोदयः ॥ २६ ॥

चैत्रसुदि पंचमीके दिन रोहिणी हो और वादल भी हों तो मेघोंका गर्भ परिपूर्ण हो ऐसा कहना ॥ २५ ॥ इसी दिन यदि आर्द्रा नक्षत्र होवे तो तीनमासतक धान्यका नाश किन्तु श्रावणमें वर्षा होवे ॥ २६ ॥

मधुमासस्य सप्तम्यां शुक्लायां यदि वर्षति ॥
वर्षाकाले तदा मेघा न वर्षंति जलं बहु ॥ २७ ॥

चैत्रसुदि सप्तमीकें दिन यदि मेघ वर्षा करे तो वर्षाकालमें फिर मेघ वर्षा नहीं करें ॥ २७ ॥

चैत्रे दशम्यां शनिना युक्ता वारेण चेन्मघा ॥
तदा धान्यं समर्घं स्याज्जाते मेघमहोदये ॥ २८ ॥

चैत्रसुदि दशमी शनिवार हो और मघानक्षत्र होवे तब वर्षा अधिक हो और सब धान्य मंदे होवें ॥ २८ ॥

चैत्रस्य शुक्लपक्षे तु त्रयोदश्यां रजोनिलः ॥
अथवा धूमरीपातो मेघस्तत्र न वर्षति ॥ २९ ॥

चैत्रसुदि त्रयोदशीके दिन धूलिकी वर्षा अर्थात् पवनसे धूल उडे अथवा धूमरी पात हो तो मेघ वर्षा नहीं करें ॥ २९ ॥

चैत्रकृष्णे द्वितीयादिपंचके जलवर्षणम् ॥
अग्रे जलदरोधाय कथितं पूर्वसूरिभिः ॥ ३० ॥

चैत्रमासके कृष्णपक्षमें द्वितीयासे षष्ठी तक यदि जल वर्षे तो आगे चातुर्मासमें वर्षा नहीं होय ऐसा पूर्वविद्वान् कहगये हैं ॥ ३० ॥

चैत्रस्य कृष्णपंचम्या ह्यारभ्य दिवसा नव ॥
खनैर्मल्यं तदाऽद्रादिनवके विपुलं जलम् ॥ ३१ ॥

चैत्रवदि पंचमीसे त्रयोदशीतक नवदिनोंमें आकाश निर्मल हो तो सूर्यके आर्द्रादि नव नक्षत्रोंमें बहुत वर्षा होवे ॥ ३१ ॥

चैत्रस्यादौ दिवसदशकं कल्पयित्वा क्रमेण
स्वात्यन्त्यार्द्राप्रभृतिमुनिभिर्वृष्टिहेतोर्विचिंत्यम् ॥
यावत्संख्ये भवतिहिदिने दुर्दिनं वाथ वृष्टि-
स्तावत्संख्यं भवति नियतं वार्षिकं दग्धमृक्षम्॥३२॥

चैत्रसुदि प्रतिपदासे दशमीतक दशदिनमे सूर्यके आर्द्रानक्षत्रसे स्वाती नक्षत्रतक वर्षाके हेतु कल्पना करे । इन दशदिनोंमें जिसदिन वर्षा वा वादल, तथा धुन्धआदिसे दुर्दिन हो उसदिनके नक्षत्रमे (प्रतिपदासे आर्द्रा, द्विती यासे पुनर्वसु) इस क्रमसे वर्षा नहीं होवे ॥ ३२ ॥

तृतीयायां च पंचम्यां वायुः पूर्वोत्तरो यदि ॥
सर्वसस्यानि जायंते प्रजाः कृतयुगोपमाः ॥ ३३ ॥

चैत्रसुदि तृतीया वा पंचमीको पूर्व उत्तरका पवन चले तो सब धान्य उत्पन्न होंय और प्रजा सतयुगके समान प्रसन्न हों ॥ ३३ ॥

दिनद्वयं यदा वाति वायुर्दक्षिणपश्चिमे ॥
तदा न दृश्यते धान्यं दुर्भिक्षं चात्र जायते ॥ ३४ ॥

यदि उन दोदिनोंमें नैर्ऋतकोणका पवन चले तो धान्य दुर्लभ होजावे और दुर्भिक्ष पडे ॥ ३४ ॥

चैत्रस्य शुक्लपक्षे च तिथिवृद्धिर्भवेद्यदि ॥
कृष्णे तु जायते हानिर्धान्येन पूरिता मही ॥ ३५ ॥

चैत्रसुदिमें यदि तिथिवृद्धि होवे और वदिमें हानि होवे तो पृथ्वीपर धान्य बहुत होवे ॥ ३५ ॥

चत्वारो दिवसाश्चैत्रे शुक्ले पक्षे सुराधिपः ॥
द्वितीयायां तृतीयायां चतुर्थ्यां पंचमीषु च ॥ ३६ ॥

चैत्रसुदिमें चारदिन द्वितीयासे पंचमीतक वायु धारणाके हैं इस लिये इनको भली प्रकार देखे ॥ ३६ ॥

प्रथमे दिवसे प्राप्ते मेघो भवति वासवः ॥
यदि स्याच्छ्रावणे मासे तदा वर्षति माधवः ॥ ३७ ॥
द्वितीये दिवसे प्राप्ते यदा वातश्च पूर्वतः ॥
न च मेघाश्च दृश्यन्ते वृष्टिर्भाद्रपदे भवेत् ॥ ३८ ॥
तृतीयदिवसे प्राप्ते वातश्चेद्दक्षिणो भवेत् ॥
अभ्राणि पूर्वतो यांति वृष्टिश्चाश्वयुजे भवेत् ॥ ३९ ॥
चतुर्थदिवसे यत्र चोत्तरो वाति मारुतः ॥
मेघो न दृश्यते तत्र कार्तिके वृष्टिमादिशेत् ॥ ४० ॥
चतुर्थे दिवसे प्राप्ते मेघो जालं करोति चेत् ॥
दुर्भिक्षं जायते घोरमनावृष्ट्या न संशयः ॥ ४१ ॥

चैत्रसुदि द्वितीयाको बादल होवें तो श्रावणमासमें मेघ वर्षा करें ॥ ३७॥ चैत्रसुदि तृतीयाको यदि पूर्वका पवन चले और बादल न हों तो भाद्रपदमें मेघ वर्षा करें ॥ ३८ ॥ सुदिचतुर्थीको दक्षिणका पवन चले और बादल पूर्वसे आवें तो आश्विनमें वर्षा होवे ॥ ३९ ॥ सुदिपंचमीको उत्तरका पवन चले और बादल न होवें तो कार्तिकमें वर्षा होवे ॥ ४० ॥ किन्तु पंचमीके दिन बादल होवें तो अनावृष्टिसे घोर दुर्भिक्ष पडे ॥ ४१ ॥

चैत्रमासस्य शुक्लायां सप्तम्यां दृश्यते घनः ॥
उद्धता वान्ति वाता वै अथवा निर्मला दिशः ॥४२॥
तदा संग्रहणं कार्यं गोधूमस्य विपश्चिता ॥
विक्रीते श्रावणे मासे लाभश्च त्रिगुणो भवेत् ॥ ४३ ॥

चैत्रसुदि सप्तमीके दिन मेघ दीखें तो वर्षाकालमें प्रचण्ड पवन चले अथवा आकाश निर्मल होय ॥ ४२॥ ऐसा होवे तब गेहूं संग्रह करनेसे श्रावणमासमें त्रिगुण लाभ होय ॥ ४३॥

पंचम्यामपि योगोऽयं चिंतनीयो विचक्षणैः ॥
वर्षणं च त्रयोदश्यां तदा दुर्भिक्षतो भयम् ॥ ४४ ॥

जैसे सप्तमीका योग कहा वैसेही पंचमीका योग जानना। और जो त्रयोदशीके दिन वर्षा हो तो दुर्भिक्षसे भय होय ॥ ४४ ॥

चैत्रस्य पंचमी शुक्ला तत्र मेघो जलं त्यजेत् ॥
श्रावणे न च वर्षा स्यादेवं जानीयतां ध्रुवम् ॥ ४५ ॥

चैत्रसुदि पंचमीको यदि मेघ वर्षे तो श्रावणमें वर्षा नही होय ऐसा निश्चय ही जानो ॥ ४५ ॥

पंचमी रोहिणीयुक्ता सप्तमी रौद्रसंयुता ॥
नवमी पुष्यसंयुक्ता स्वातियुक्ता च पूर्णिमा ॥ ४६ ॥
भवत्यत्र महावृष्टिः सदा प्रावृष्यवर्षणम् ॥
एभिश्च गलितैर्ऋक्षैर्गर्भस्रावं समादिशेत् ॥ ४७ ॥

चैत्रसुदि पंचमीको रोहिणी हो, सप्तमीको आर्द्रा हो, नवमीको पुष्य हो और पूर्णमासीको स्वाति हो तो ॥ ४६ ॥ आगे वर्षा कालमें अच्छी वर्षा होवे यदि इन दिनोंमें वर्षा हो जावे तो चातुर्मासमें नहीं वर्षे, गर्भस्राव हो-जानेसे अनावृष्टि होवे ॥ ४७ ॥

पंचमी सप्तमी चैव नवम्येकादशी सिता ॥
त्रयोदशी पूर्णिमा च दिनेष्वेतेषु वर्षणात् ॥ ४८ ॥
करकापतनाद्विद्युद्दर्शनाद्गर्जनादपि ॥
वर्षाकाले जलधरश्छिद्रादेव प्रवर्षति ॥ ४९ ॥

चैत्रसुदि पंचमी, सप्तमी, नवमी, एकादशी, त्रयोदशी, पूर्णिमा इन दिनोंमें यदि वर्षा होवे ॥ ४८ ॥ और ओला पडें, विजली चमके वा मेघ गर्जे तो वर्षाकालमें मेघ जलकी वर्षा नहीं करें ॥ ४९ ॥

चैत्रे वा श्रावणे मासि यदा पंचारवासराः ॥
राजानश्च क्षयं यान्ति मंदा दुर्भिक्षकारकाः ॥ ५० ॥

नाशयंति प्रजाः शुक्रा रविसौम्या विनाशकाः ॥
चंद्राः कल्याणजनका गुरवो जलघातकाः ॥ ५१ ॥

चैत्र वा श्रावणमें पांच मंगलवार हों तो राजाओंका क्षय होवे, पांच शनिवार हों तो अकाल पडे ॥ ५० ॥ और पांच शुक्रवार हों तो प्रजाका नाश करें, पांच रविवार, बुधवार भी प्रजानाशकारक ही हैं, चंद्रवार हों तो कल्याणकर्त्ता हैं, गुरुवार हों तो वर्षानाशक हैं ॥ ५१ ॥

तुरगर्क्षे गते भानौ यदि मेघः प्रवर्षति ॥
मूलोद्भवं तदा गर्भं नादेश्यं दैवचिंतकैः ॥ ५२ ॥
भरण्यादिस्थिते भानौ यस्मिन्मेघः प्रवर्षति ॥
तस्मिंस्तस्मिन् गर्भऋक्षे गर्भनाशं वदेद्बुधः ॥ ५३ ॥

अश्विनीनक्षत्रके सूर्यमें वर्षा हो तो पौषमासके मूलनक्षत्रमें कहेहुए गर्भफल नहीं होवें ऐसे दैवज्ञोंने कहा है ॥ ५२ ॥ ऐसे ही भरणीके सूर्यमें वर्षा होजावे तो पूर्वाषाढाका गर्भफल नष्ट हुआ जानो । जिस नक्षत्रके सूर्यमें वर्षा होवे उस नक्षत्रानुसार गर्भफलनाश होवे ऐसा पण्डितजन कहते हैं ॥ ५३ ॥

अश्विनी त्वन्ननाशाय तृणनाशाय रेवती ॥
भरणी सर्वनाशाय कृत्तिका चेन्न वर्षति ॥ ५४ ॥

सूर्य जब अश्विनी नक्षत्रपर आवे तब वर्षा हो तो अन्न नाश होवे, भरणीके सूर्यमें वर्षे तो सर्वनाश होवे तथा रेवती वर्षे तो तृणनाश होवे किन्तु कृत्तिका नक्षत्रपर जब सूर्य आवे तब वर्षा होजावे तो सब दुर्गुण नाश होकर सुभिक्ष होजावे ॥ ५४ ॥

चैत्रस्य मासे यदि चैकराशौ गुरौ भृगौ चैव गते तदा स्यात् ॥ ग्राह्यं घृतं वै तिलतैलसूत्रं द्विमासमध्ये तु भवेच्च लाभः ॥ ५५ ॥

चैत्रमासमें यदि एकराशिपर गुरु, शुक्र हों तो उस वक्त घृत, तिल, तैल, सूत्र इनका संग्रह करनेसे दो मासमें लाभ होगा ॥ ५५ ॥

पवनघनवृष्टियुक्ताश्चैत्रे गर्भाः शुभाः सपरिवेषाः ॥
घनपवनसलिलविद्युत्स्वनितैश्च हिताय वैशाखे॥५६॥

भरण्यां व्याधितो लोकः कृत्तिकायां जलेऽल्पता ॥
चौरा लुठन्ति मार्गेषु राज्ञां युद्धं परस्परम् ॥ १२ ॥

वैशाख वदि अमावास्याके दिन यदि रेवती नक्षत्र होवे तब सुभिक्ष होवे। रोहिणी हो तो लोकमें दुःख, अश्विनी हो तो मध्यम ॥ ११ ॥ भरणी हो तो लोकमें रोग होवे, कृत्तिका हो तो जल कम वर्षे और चोर मार्गमें मनुष्योंको लूटें तथा राजाओंमें परस्पर युद्ध होवे ॥ १२ ॥

वैशाखशुक्लप्रतिपद्द्वितीयादिनद्वये बादलकं शुभाय ॥
तदा तृतीयादिवसेऽपि चाभ्रं वृष्टिर्विशिष्टा परमंगरोगः १३

वैशाख सुदि प्रतिपदा, द्वितीया दोनों दिनोंमें बादल होना श्रेष्ठ है तथा तृतीयाके दिन भी बादल हों तो वर्षा होय परंतु फिर रोग होवे ॥ १३ ॥

अक्षयाख्यतृतीयायां सुभिक्षायैव रोहिणी ॥
कृत्तिकामध्यमं वर्षं दुर्भिक्षं मृगशीर्षतः ॥ १४ ॥

वैशाख सुदि तृतीयाको रोहिणी हो तो सुभिक्ष कृत्तिका हो तो मध्यम वर्ष और मृगशीर्ष हो तो दुर्भिक्ष होवे ॥ १४ ॥

अक्षयाख्यतृतीयायां रोहिणी गुरुणा सह ॥
सर्वधान्यस्य निष्पत्तिर्भुवि मंगलकर्मकृत् ॥ १५ ॥

अक्षयतृतीयाको रोहिणी नक्षत्र और गुरुवार हो तो सम्पूर्ण धान्य उत्पन्न होवें, पृथ्वीपर मंगलकार्य्य होवें ॥ १५ ॥

राधे शुक्लतृतीयायां चिह्नैर्निश्चीयतेऽनिलः ॥
पूर्वस्यां यदिवोदीच्यां घननादस्तदा घनः ॥ १६ ॥
दक्षिणो नैर्ऋतो वायुर्वृष्टेः स्यात्प्रतिघातकः ॥
वारुणा वृष्टिरधिका परधान्यस्य रोधनम् ॥ १७ ॥

वैशाख सुदि तृतीयाको चिह्नोंसे वायुको जाने, यदि पूर्वका या उत्तरका पवन चले तो मेघ बहुत वर्षा करें ॥ १६ ॥ और जो दक्षिण या नैर्ऋतका पवन चले तो वृष्टि न हो, पश्चिमका पवन चले तो वर्षा अधिक हो परंतु परधान्यका निरोध हो ॥ १७ ॥

अक्षयाख्यतृतीयायां पूरयेद्भाण्डमम्बुना ॥
रविं विलोक्य तन्मध्ये तत्स्वरूपं विलोकयेत् ॥१८॥
रक्ते सूर्ये विग्रहः स्यान्नीले पीते महारुजः ॥
श्वेते सुभिक्षं जानीयाद्धूसरे दुःखमूषकाः ॥ १९ ॥

अक्षयतृतीयाको गङ्गाजल जलसे पूर्ण भरेहुए पात्रमें सूर्यको देखे और उनके स्वरूपको अच्छीतरहसे देखे ॥ १८ ॥ यदि सूर्य लालरंगका दीखे तो विग्रह होवे, नीलरंग वा पीतरंगका दीखे तो रोगभय होय, श्वेतरंगका दीखे तो सुभिक्ष होवे और धुंधुला देखे तो मूषे, टिड्डी आदिका उपद्रव रहे ॥ १९ ॥

अक्षयायां तृतीयायां संध्यायां सप्तधान्यकम् ॥
पुञ्जीकृत्य स्थापनीयं पृथक् पृथक् तरोरधः ॥ २० ॥
यद्विस्तृतं स्यात्तद्धान्यं तद्वर्षे बहु जायते ॥
यत्पुञ्जरूपं वा तिष्ठेन्नैव निष्पद्यते पुनः ॥ २१ ॥

वैशाख सुदि तृतीयाको सायंकालके समय एकांतमें किसी वृक्षके नीचें सात तरहके धान्योंकी सात ढेरियें जुदी २ रखदेवे ॥ २० ॥ फिर दूसरे दिन देखे प्रभातमें जो ढेरी जिस धान्यकी फैल जावे वह धान्य उस वर्षमें बहुत होवे और जैसा रखा हो वैसाही रहे वह धान्य उत्पन्न नहीं होवे ॥ २१ ॥

पूर्णे कुंभेऽथ संस्थाप्य मृत्पिण्डानि चतुष्टये ॥
आषाढादिचतुर्मासे पृथङ्नाम्ना प्रतिष्ठिते ॥ २२ ॥
कुम्भाद्भजजलेनार्द्रा यावंतः पिण्डका मृदः ॥
वृष्टिस्तावत्सु मासेषु शुष्के पिण्डे न वर्षणम् ॥ २३ ॥

अथवा उसी तृतीयाको सायंकालमें कच्ची मट्टीके चारढेले पूर्वआदि चारों दिशाओंमें आषाढआदि चारों महीनोंके नामसे रखदेवे फिर उनपर जलका भराहुवा घट रक्खे फिर चतुर्थीके दिन प्रातःकाल जाके देखे । जो घडेमेंसे जल झरके जिस २ मासके ढेले भीग जावें उस २ मासमें वर्षा होवे किन्तु जिस महीनाके नामका ढेला नहीं भीगे उस मासमें वर्षा नहीं होवे॥२२॥२३॥

वैशाखशुक्लतुर्येह्नि सन्ध्यायामुत्तरोऽनिलः ॥
सुभिक्षायाथ पंचम्यामैंद्रो धान्यमहर्घ्यकृत ॥ २४ ॥
उदयास्तंगतो यावत्पूर्वो वायुर्यदा भवेत् ॥
संगृह्णीयाच्च धान्यानि प्रचुराण्यसुलभान्यथ ॥२५॥

वैशाखशुक्ल चतुर्थीके दिन सायंकालमें उत्तरका पवन चले तो सुभिक्ष होवे। और पंचमीके दिन पूर्वका पवनचले तो धान्य तेज होवे ॥ २४ ॥ पंचमीके दिन सूर्योदयसे सूर्यास्तपर्यंत पूर्वका पवन चले तो धान्यको अवश्य संग्रह करना चाहिये फिर मिलना दुर्लभ होगा ॥ २५ ॥

वैशाखमासे सितपंचमी स्यात् सूर्यादिवारे चिनुते फलानि ॥ मन्दा च वृष्टिस्त्वतिवृष्टियुद्धं वातं सुभिक्षं कलहं च तापः ॥ २६ ॥

वैशाख सुदि पंचमीके दिन रविवार हो तो मन्दवर्षा होवे, चंद्रवार हो तो अतिवर्षा, मंगल हो तो युद्ध, बुधवार हो तो वायुका जोर, गुरु हो तो सुभिक्ष होवे, शुक्रवार हो तो कलह और शनिवार हो तो रोगआदि संताप होवें॥२६॥

वैशाखशुक्लसप्तम्यां पूर्ववातो यदा भवेत् ॥
अभ्रच्छन्नं यदाकाशं पतंति जलबिंदवः ॥ २७ ॥
तदा व्रीहयो संग्राह्या लाभो भवति पुष्कलः ॥
तत्सर्वं विक्रयेच्छीघ्रं मासि भाद्रपदे प्रिये ॥ २८ ॥

वैशाख सुदि सप्तमीके दिन जो पूर्वको वायु चले तो आकाश मेघसे आच्छादित होवे यद्वा जलकी बूँदें भी गिरें ॥ २७ ॥ तो संपूर्ण धान्योंका संग्रह करे इससे अधिक लाभ होगा। भाद्रपदमासमें तिस सब धान्यको शीघ्र बेंच देवे ॥ २८ ॥

वैशाखधवलाऽष्टम्यां शनिवारो भवेद्यदि ॥
जलशोषं प्रजानाशं छत्रभङ्गं तदाऽदिशेत् ॥ २९ ॥

वैशाख सुदि अष्टमीको शनिवार होवे तो अनावृष्टिसे प्रजाको कष्ट हो और छत्रभंग भी होव ॥ २९ ॥

वैशाखशुक्लपक्षे तु दशमी चाभ्रसंयुता ॥
भवत्यत्र न सन्देहः प्रावृट्काले ह्यवर्षणम् ॥ ३० ॥

वैशाखसुदि दशमीके दिन जो बादल होवें तो वर्षाकालमें निःसंदेह वर्षा नहीं होवे ॥ ३० ॥

एकादशीत्रये शुक्ले दुर्भिक्षं वृष्टिवादलात् ॥
राधे च पूर्णिमावृष्टिर्भाद्रे धान्यमहर्घकृत् ॥ ३१ ॥

वैशाख सुदि एकादशी, द्वादशी,त्रयोदशीआदि तिथियोंमें वर्षा,बादल होवें तो दुर्भिक्ष हो और पूर्णिमाके दिन वर्षा हो तो भाद्रपदमें धान्य तेज होवे ३१

पंचार्कयोगे वैशाखे वृष्टिर्गर्भविनाशिनी ॥
पंचभौमे भयं वह्नेर्वृष्टिरोधाय कुत्रचित् ॥ ३२ ॥

वैशाखमासमें पांच रविवार होवें तो वर्षाका अवरोध हो और पांच मंगलवार हों तो अल्पवृष्टि तथा अग्निभय हो ॥ ३२ ॥

वैशाखे गर्जते भूरि सलिलः पवनो घनः ॥
उष्णो ज्येष्ठे विशिष्टः स्यात्किमन्यैर्गर्भचेष्टितैः॥३३॥

वैशाखमें वायु, बादल, बिजली, गाज और वर्षा होवें तथा ज्येष्ठमें धूप अधिक तपे तो वर्षाकालमें बहुत वर्षा हो ॥ ३३ ॥

वैशाखे यदि वा ज्येष्ठे उत्तरस्यां विधूदये ॥
बहुधा धान्यनिष्पत्तिर्भवेन्मेघमहोदयः ॥ ३४ ॥

वैशाखसुदि वा ज्येष्ठ सुदि द्वितीयाको चंद्रोदय हो, उसका शृंग उत्तरकी ओर ऊंचा हो तो वर्षा तथा धान्य बहुत हो ॥ ३४ ॥

तथा वैशाखपूर्णायां वायुं सम्यग्विचारयेत् ॥
प्रातश्चतुर्घटीमध्ये पूर्ववायुर्यदा भवेत् ॥ ३५ ॥
सूर्यार्द्रासंगमे वाऽऽथ दिने मेघमहोदयः ॥
वृष्टिर्द्वितीये वायुर्घटिके पूर्वया युतः ॥ ३६ ॥
ज्ञेया द्वितीये दिवसे आर्द्रातपनसङ्गमे ॥

आर्द्रायां वासरा एवं चातुर्घटिकसंख्यया ॥ ३७ ॥
ज्ञेया सर्वेपि सजला निर्जलास्तु विपर्यये ॥
पूर्णिमातः समारभ्य यावज्ज्येष्ठेऽसिताष्टमी ॥
एवमार्द्रादिसूर्यर्क्षनवके वृष्टिरुच्यते ॥ ३८ ॥

वैशाख सुदि पूर्णिमासे ज्येष्ठ वदि अष्टमीतक नव दिनोंमें पूर्वका वायु हो तो वर्षा, पश्चिमका हो तो अनावृष्टि, सूर्यके आर्द्रासे चित्रातक नव नक्षत्रोंमें क्रमसे वै० सु० पूर्णिमासे आर्द्रा, ज्ये० व० प्रतिपदासे पुनर्वसु, द्वितीयासे पुष्य तृतीयासे अश्लेषा, चतुर्थीसे मघा, पंचमीसे पूर्वाफाल्गुनी, षष्ठीसे उत्तराफाल्गुनी, सप्तमीसे हस्त, अष्टमीसे चित्रामे वर्षा होवे। यदि इन नव दिनोंमें वायु उत्तम हो तो वर्षा भी उत्तम हो अन्यथा विपरीत हो ॥ ३५–३८ ॥

काकनीडफलम् ।

वैशाखमासे निरुपद्रवेषु द्रुमेषु काकस्य शुभाय नीडम्॥
निन्द्येषु शुष्केषु सकंटकेषु वृक्षेषु दुर्भिक्षभयाय हेतुः॥३९

वैशाखमासमें कागला अपना घौंसला उत्तमवृक्षपर बनावे तो शुभ होवे और जो किसी निंदित वा सूखे वा कांटोंवाले वृक्ष पर बनावे तो दुर्भिक्षका भय होवे ॥ ३९ ॥

काकालयः प्राग्दिशि भूरुहस्य सुभिक्षकृत्स्वल्पघनस्तथाग्नौ ॥ मासद्वयं वृष्टिकरस्तु पूर्वं ततो न वृष्टिर्हिमपात एव ॥ ४० ॥ पूर्वं न वृष्टिर्निर्ऋतं पयोदाः पश्चाद्घनो लोकसरोगता च ॥ मासद्वयेऽतीव घनः प्रतीच्यां निष्पत्तिरन्नस्य तदोच्चभूम्याम् ॥ ४१ ॥ ततोल्पवृष्टिर्यदि वाल्पवर्षा सवातवृष्टिः पवनस्य कोणे ॥ स्यादुत्तरस्यां भवने सुभिक्षमीशानभागेऽपि सुखं सुभिक्षम् ॥ ४२ ॥

कागला वृक्षपर घौंसला पूर्वकी तर्फ बनावे तो सुभिक्ष हो, अग्निकोणमें बनावे तो स्वल्प वर्षा, दक्षिणमे बनावे तो आरंभमें दो मासतक वर्षा होवे फिर बर्फ पडे ॥ ४० ॥ नैर्ऋत कोणमें बनावे तो भाद्रपद, आश्विनमें वर्षा

होवे किन्तु लोकमें रोग होवे । पश्चिममें बनावे तो दो मासतक ज्यादा वर्षा होवे जिससे अन्न ऊंची जमीनपर ही उत्पन्न होवे ॥ ४१ ॥ वायव्यकोणमें बनावे तो वायुसहित अल्प वर्षा होवे तथा उत्तर वा ईशानमें बनावे तो सुख, सुभिक्ष हो ॥ ४२ ॥

काक्यां भवेद्वारुणमण्डकं चेत्पृथ्वी तदा नन्दति सर्वशस्यैः॥द्विकेऽल्पवर्षेऽनलसंज्ञकाण्डे नोप्तस्य बीजस्य भवेत्प्ररोहः ॥ ४३ ॥ जातानि शस्यानि समीरजेऽण्डे खादन्ति कीटाः शलभाः शुकाद्याः ॥ क्षेमं सुभिक्षं सुखिनी धरित्री स्यादिन्द्रजेऽण्डेभिमितार्थवृष्टिः ॥ ४४ ॥

कागलीके यदि एक अण्डा हो तो सम्पूर्ण प्रकारकी खेतियां उत्पन्न होवें । दो अण्डे हों तो वर्षा बहुत थोडी होवे जिससे बोयाहुआ अन्न उत्पन्न न होवे ॥ ४३ ॥ तीन अण्डे हों तो अन्न पैदा होय परंतु टीडी, कीडा, सूवा आदिकोंसे हानि होवे और चार अण्डे हों तो क्षेम, कल्याण, सुभिक्ष आदि सुखोंको करनेवाली बहुत वर्षा होवे ॥ ४४ ॥

ज्येष्ठमास ।

ज्येष्ठप्रतिपदि कृष्णे भौमार्कबुधवासराः ॥
एवंभवेद्यदा योगो लोकानां व्याधिपीडनम् ॥ १ ॥

ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदाके दिन मंगलवार, रविवार या बुधवार होवे तब मनुष्योंको अनेक प्रकारकी व्याधिपीडा उत्पन्न होवे ॥ १ ॥

सैषा प्रतिपदा शुक्ला गुर्विन्दुशुक्रवासरैः ॥
जलमध्ये भवेत्पृथ्वी पारावारसमाकुला ॥ २ ॥

ज्येष्ठ वदि प्रतिपदाको यदि गुरुवार, चंद्रवार, शुक्रवार हो तो पृथ्वीपर बहुतही ज्यादा वर्षा होवें ॥ २ ॥

अथवा सौरिवारेण संयुक्ता प्रतिपद्भवेत् ॥
दुर्भिक्षं रोगपीडा स्याच्छत्रभंगश्च नान्यथा ॥ ३ ॥

अथवा इसी प्रतिपदाको शनिवार होवे तो दुर्भिक्ष होवे और रोग पीडा तथा छत्रभंग आदि उपद्रव होवें ॥ ३ ॥

ज्येष्ठस्य यदि पंचम्यां दक्षिणः पवनश्चरेत् ॥
तदा तिलस्तथा तैलं घृतं क्रेयं तदाश्विने ॥ ४ ॥

ज्येष्ठ वदि पंचमीके दिन यदि दक्षिणका पवन चले तो तिल, तेल, घृत इनको आश्विनमासमें संग्रह करना चाहिये ॥ ४ ॥

ज्येष्ठमासेऽष्टमी कृष्णा तथा कृष्णचतुर्दशी ॥
दक्षिणानिलसंयुक्ता परतो वृष्टिहेतवे ॥ ५ ॥

ज्येष्ठ वदि अष्टमी तथा चतुर्दशीको दक्षिणका पवन चले तो आगे जाकर वर्षा हो ॥ ५ ॥

ज्येष्ठकृष्णदशम्यां च रेवती सुखकारिणी ॥
एकादश्यां खण्डवृष्टिर्द्वादश्यां सा तु कष्टदा ॥ ६ ॥

ज्येष्ठ वदि दशमीके दिन रेवती नक्षत्र होय तो सुख होवे और एकादशीको हो तो खण्डवृष्टि, द्वादशीको हो तो कष्ट होवे ॥ ६ ॥

ज्येष्ठस्य कृष्णैकादश्यां द्वादश्यां वाऽब्दगर्जितम् ॥
विद्युत्पयोदवृष्टिश्चेद्वत्सरः स्यात्तदा शुभः ॥ ७ ॥

ज्येष्ठ वदि एकादशीको वा द्वादशीको बादल, विजली, गाज तथा वर्षा हो तो संवत् श्रेष्ठ होय ॥ ७ ॥

श्रवणर्क्षे धनिष्ठायां यदि मेघः प्रतिष्ठितः ॥
प्रावृट्काले तदा वृष्टिर्मेघो वृष्टिनिरोधकः ॥ ८ ॥

ज्येष्ठ वदिमें श्रवणनक्षत्र तथा धनिष्ठा नक्षत्रमें जो मेघ रहे तो वर्षाकालमें वर्षा होवे और जो पूर्वोक्तनक्षत्रोंमें वर्षा होवे तो वर्षाकालमें वर्षा नहीं होवे ॥ ८ ॥

यदुक्तं मेघमालायां गर्जितं श्रूयते यदि ॥
दक्षिणस्यां भवेद्वायोरभ्रच्छन्नं यदा ततः ॥ ९ ॥

धान्यानां तिलतैलानां संग्रहः क्रियते तदा ॥
द्विगुणस्त्रिगुणो लाभः क्रयान्मासचतुष्टये ॥ १० ॥

ज्येष्ठमासमें जो मेघमालाका दक्षिणकी ओर गर्जना सुनाजाय और उधरहीको पवन हो चले, मेघोंसे आकाशच्छन्न रहे ॥ ९ ॥ तब उस समयमें धान्य, तिल, तैल आदिका संग्रह करना, फिर चार मासके बाद बेचनेसे दुगुणा त्रिगुणा लाभ हो ॥ १० ॥

ज्येष्ठे मासे त्वमायां हि दिवा वा यदि वा निशम् ॥
आकाशे दृश्यते मेघो ह्यनावृष्टिर्भयावहा ॥ ११ ॥

ज्येष्ठ वदि अमावास्याको दिनको वा रात्रीको आकाशमें मेघ दीखें तब आगे अनावृष्टि (जल नहीं वर्षाना) होवे ॥ ११ ॥

ज्येष्ठकृष्णदर्शतिथौ भानोरस्तं विलोकयेत् ॥
द्वितीयां वीक्षयेच्चंद्रं तद्वद्वामे च दक्षिणे ॥ १२ ॥
उत्तरे तु सुभिक्षं स्याद्विपरीतं च दक्षिणे ॥
तत्समं च समे स्थाने ज्येष्ठे वारं तु लक्षयेत् ॥ १३ ॥

ज्येष्ठ वदि अमावास्याको सूर्य अस्त हो सो देखे फिर सुदि प्रतिपदाको और द्वितीयाको नवीन चंद्रमा दक्षिण उत्तरको होवै सो देखे ॥ १२ ॥ यदि उत्तरको अस्त हो तो सुभिक्ष हो किन्तु दक्षिणमें हो तो दुर्भिक्ष अथवा उसी स्थानमें हो तो मध्यम संवत् होय ॥ १३ ॥

ज्येष्ठशुक्लप्रतिपदि यदि स्यान्मंदवासरः ॥
छत्रभंगं प्रजापीडां दुर्भिक्षं च तदा दिशेत् ॥ १४ ॥

ज्येष्ठसुदि प्रतिपदाको शनिवार हो तो छत्रभंग और प्रजाको पीडा हो तथा दुर्भिक्ष भी होवे ॥ १४ ॥

ज्येष्ठे शुक्ले द्वितीयायां भानोर्वामोदयः शशी ॥
तस्मिन्वर्षे शुभं ज्ञेयं न शुभं दक्षिणोदये ॥ १५ ॥

ज्येष्ठसुदि द्वितीयाको सूर्य अस्त हो उस स्थानसें नवीन चंद्रमा उत्तरमें दीखे तो शुभ किन्तु दक्षिणमें दीखे तो अशुभ फल हो ॥ १५ ॥

ज्येष्ठे शुक्लद्वितीयेन्दौ ब्राह्मीयोगे महर्घकम् ॥
श्रावणे तु शुभा वृष्टिः रोहिणीसङ्गमे भवेत् ॥ १६ ॥

ज्येष्ठसुदि द्वितीयाको चंद्ररोहिणीके योगसे धान्य तेज हो परंतु श्रावणमें रोहिणीके दिन वर्षा उत्तम होवे ॥ १६ ॥

ज्येष्ठशुक्लद्वितीयायां तृतीयायां प्रजायते ॥
नक्षत्रार्द्रा तदा वृष्टिर्महादुर्भिक्षकारिणी ॥ १७ ॥

ज्येष्ठ सुदि द्वितीयाको वा तृतीयाको आर्द्रा नक्षत्र हो और उस दिन वर्षा हो तो महादुर्भिक्ष पडे ॥ १७ ॥

ज्येष्ठस्य शुक्लपंचम्यां गर्जितं श्रूयते यदि ॥
दक्षिणश्च भवेद्वायुरभ्रच्छन्नं तथाऽम्बरम् ॥ १८ ॥
धान्यानां संग्रहः कार्यस्तत्क्षणाद्विक्रयो भवेत् ॥
मासेचाश्वयुजे तत्र लाभो भवति पुष्कलः ॥ १९ ॥

ज्येष्ठ सुदि पंचमीके दिन दक्षिणका पवन होवे और आकाश मेघोंसे आच्छादित रहे, यदि मेघ गर्जना हो तो ॥ १८ ॥ धान्योंका संग्रह करना चाहिये आगे आश्विनमें वेचनेसे बहुत लाभ होगा ॥ १९ ॥

ज्येष्ठस्य शुक्लसप्तम्यां श्रूयते घनगर्जितम् ।
मेघाच्छन्नं नभो वाऽपि वायुर्वहति दक्षिणः ॥
तिलस्य संग्रहः कार्य्यो विक्रीते कार्तिके धनम् ॥ २० ॥

ज्येष्ठसुदि सप्तमीके दिन यदि मेघगर्जना सुननेमें आवे और आकाश मेघाच्छादित हो दक्षिणका पवन चले तो उसवक्त तिलसंग्रह करना चाहिये कार्तिकमें वेचनेसे लाभ होवे ॥ २० ॥

ज्येष्ठे मासे सिताष्टम्यां चतस्रो वायुधारणाः ॥
मृदुर्वायुः शुभो वातः स्निग्धाभ्रः स्थगिताभ्रकः ॥ २१ ॥
यदि ता एकरूपाः स्युः सुभिक्षसुखकारिकाः ॥
सान्तराला अशिवाय तस्कराग्निभयप्रदाः ॥ २२ ॥

ज्येष्ठसुदि अष्टमी, नवमी, दशमी और एकादशी इन चार दिनोंमें वायुकी परीक्षा करे। पूर्व, उत्तर वा ईशानका वायु चले, आकाश स्निग्ध बादलोंसे ढका रहे ॥ २१ ॥ तो सुभिक्ष हो और यदि चारों दिनोंमें एकसा वायु न हो तो चौर, अग्नि आदिका उपद्रव होवे ॥ २२ ॥

आर्द्रा ज्येष्ठे नष्टचंद्रे प्रथमायां पुनर्वसुः ॥
द्वितीया पुष्यसंयुक्ता जलं धान्यं तृणं न च ॥ २३ ॥

ज्येष्ठवदि अमावस्याके दिन आर्द्रा हो, शुक्लप्रतिपदाको पुनर्वसु हो, द्वितीयाको पुष्य हो तो क्रमसे जल, धान्य, तृण आदिका नाश होवे ॥ २३ ॥

ज्येष्ठशुक्लद्वितीयायां गर्भपाताय गर्जितम् ॥
शुक्ले तृतीयार्द्रायोगे वृष्टिर्दुर्भिक्षदर्शिनी ॥ २४ ॥

ज्येष्ठ सुदि तृतीयाको गर्जना हो तो वर्षाके निमित्त है किन्तु तृतीयाके दिन आर्द्रा नक्षत्र हो तब वर्षा हो तो दुर्भिक्ष होवे ॥ २४ ॥

यदि ज्येष्ठस्य पंचम्यां वृषार्के वृष्टिरुद्भवेत् ॥
पूर्वाषाढादिना वा स्यान्मूलदृष्टं न दोषकृत् ॥२५ ॥

ज्येष्ठ सुदि पंचमीके दिन वृषभके सूर्यमें वर्षा हो वा पूर्वाषाढाके दिन वा मूलके दिन वर्षा हो तो दोष नहीं करती ॥ २५ ॥

ज्येष्ठे शुक्ले दशम्यां च शनिवारः प्रजायते ॥
वृष्टिरोधो गवां नाशो महाशोकाकुलाः प्रजाः ॥२६॥

ज्येष्ठ सुदि दशमीके दिन शनिवार हो तो वर्षाका अवरोध, गायोंका नाश और प्रजा महाशोकाकुल होवें ॥ २६ ॥

ज्येष्ठस्य शुक्लैकादश्यां पूजां कृत्वा सुशोभनाम् ॥
शुभमंगलकं कृत्वा पुष्पधूपैरलंकृतम् ॥ २७ ॥
उच्चस्थाने प्रतिष्ठाप्य दीर्घदण्डे महाध्वजम् ॥
एवं कृत्वा प्रयत्नेन शोधयेत्कालनिर्णयम् ॥ २८ ॥
एको वातो यदा वाति यानि चिह्नानि वा पुनः ॥
तदा त्रिचतुरो मासान्ध्रुवं वर्षति वारिदः ॥ २९ ॥

प्रथमं पश्चिमो वातश्चतुर्दिनानि वाति चेत् ॥
अनावृष्टिं विजानीयाद्दुर्भिक्षं रौरवं तदा ॥ ३० ॥
उत्तरो ह्यमार्गेण चतस्रो हंति वा दिशः ॥
चत्वारो वार्षिका मासा मेघा वर्षंति भूतले ॥ ३१ ॥
विपरीतो यदा वातश्चतस्रो हंति वा दिशः ॥
रविमार्गे परिभ्रष्टो जानीयात्तस्य लक्षणम् ॥ ३२ ॥
शीतकाले तदा वृष्टिर्वर्षाकाले न विद्यते ॥
अनयोर्वैपरीत्ये च वृष्टिं वर्षासु निर्दिशेत् ॥ ३३ ॥
वायव्यां पश्चिमायां च नैर्ऋत्यां वाति च क्रमात् ॥
आषाढे श्रावणे क्षिप्रं द्विमासे वृष्टिरुत्तमा ॥ ३४ ॥
पूर्वस्यां च तथैशान्यामाग्नेय्यां वाति च क्रमात् ॥
भाद्रपदाश्विनयोश्च तदन्ते वृष्टिरुत्तमा ॥ ३५ ॥

ज्येष्ठ सुदि एकादशीको अच्छीप्रकार शुभपूजा करके धूप, दीप, पुष्प सहित मंगल करे ॥२७॥ फिर दीर्घ (लंबे) दंडेको ऊंचे स्थानमें स्थापनकरके ध्वजा लगावे, यह यत्नपूर्वक करके कालका निर्णय करे ॥ २८ ॥ जो चार दिन तक एकसा उत्तरका पवन चले तो तीन चार महीनोंतक अवश्य वर्षे ॥२९॥ और जो पहले चार दिन पश्चिमका पवन चले तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष और दुःख हो ॥ ३० ॥ और जो उत्तरका पवन चार दिन चले तो चातुर्मासमें बहुतही वर्षा होवे ॥ ३१ ॥ और जो इससे विपरीत सब ओर का पवन चले तो कुलक्षय जानो ॥ ३२ ॥ तब शीतकालमें वर्षा होगी और चातुर्मासमें नहीं होगी अथवा इससे विपरीत चाले तो चातुर्मासमें होगी, शीत कालमें नहीं ॥ ३३ ॥ वायव्य, पश्चिमके कोणका और नैर्ऋतकोणका पवन चले तो आषाढ और श्रावणमें अच्छी वर्षा होवे ॥ ३४ ॥ पूर्व, ईशान और अग्निकोणका क्रमसे पवन चले तो भाद्रपद और आश्विनके अन्तमें वर्षा हो ॥ ३५ ॥

ज्येष्ठस्य पूर्णिमायां तु मूले प्रस्रवते यदा ॥
दिनषष्टिं व्यतिक्रम्य ज्ञेयो मेघमहोदयः ॥ ३६ ॥

ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमाको मूल नक्षत्र हो और वर्षा हो तो साठि दिन अर्थात् दो मास पीछे भाद्रपद आश्विनमें वर्षा होवे ॥ ३६ ॥

अमावास्यां च पूर्णायां ज्येष्ठे मासे दिवानिशम् ॥
मेघैराच्छादिते व्योम्नि वातो वहति वारुणः ॥ ३७ ॥
अनावृष्टिस्तदाऽऽदेश्या क्वचिद्वृष्टिस्तु भाग्यतः ॥
दर्शे द्वौ श्रावणाषाढौ पूर्णे भाद्रपदाश्विने ॥ ३८ ॥

ज्येष्ठ वदि अमावास्या और शुदि पूर्णिमाको दिन रात बादल छाये रहें तथा पश्चिमका पवन चले ॥ ३७ ॥ तो वर्षाकालके चारों महीनोंमें अर्थात् अमावास्याको दिनमें बादल हों, आषाढमें रात्रिमें हों, श्रावणमें तथा सुदि पूर्णमासीको दिनमें बादल हों भाद्रपदमें और आश्विनमें रात्रिमें बादल हों तो अनावृष्टि होवे ॥ ३८ ॥

ज्येष्ठशुक्ले च पूर्णायां अमावास्यां तथैव च ॥
आकाशे यदि दृश्येत मेघो वातो भयावहः ॥ ३९ ॥

ज्येष्ठ सुदि पूर्णमासीको तथा अमावास्याको आकाशमें बादल दीखें तो जोरका वायु चले ॥ ३९ ॥

ज्येष्ठे मासे रवियुता ग्रहाः यत्रैकराशिगाः ॥
श्रावणे मेघरोधाय छत्रभङ्गाय कुत्रचित् ॥ ४० ॥

ज्येष्ठमासमें सूर्यके साथ पांच ग्रह कोईभी एक राशिपर हों तो श्रावणमें वर्षा अवरोध हो और कहीं छत्रभंगभी हो ॥ ४० ॥

आषाढज्येष्ठमासे च वृष्टिश्च प्रथमा भवेत् ॥
रविवारेण दुर्भिक्षं सोमे च सर्वशोभनम् ॥ ४१ ॥
भौमवारे महावायुर्बुधे रोगो गुरौ शुभः ॥
शुक्रवारे महामेघाः शनौ च जलनाशनम् ॥ ४२ ॥

ज्येष्ठ वा आषाढमासमें प्रथम वार वर्षा हो, उस दिन रविवार हो तो दुर्भिक्ष, चंद्रवार हो तो सुभिक्ष होवे ॥ ४१ ॥ और जो मंगलवार हो तो वायु चले, बुधवार हो तो रोग होवे, गुरुवार हो तो सुभिक्ष, शुक्रवार हो तो बहुत वर्षा और शनिवार हो तो अनावृष्टिसे दुर्भिक्ष होवे ॥ ४२ ॥

ज्येष्ठमासे तथाऽऽषाढे यत्रयत्राभ्रवर्षणम् ॥
श्रावणे भाद्रमासे च तद्दिने वृष्टिनिर्णयः ॥ ४३ ॥

ज्येष्ठ, आषाढमें जिस २ दिन वर्षा हो प्रायः उसी २ दिन क्रमसे श्रावण तथा भाद्रपदमें वर्षा होवे ॥ ४३ ॥

ज्येष्ठामूलदिने वृष्टिर्ज्येष्ठांते दिवसद्वये ॥
दुर्भिक्षं कुरुते श्रेष्ठे विद्युत्पांशुयुतोऽनिलः ॥ ४४ ॥

ज्येष्ठ सुदि पूर्णिमाके दिन ज्येष्ठा वा मूलमें वर्षा हो तो दुर्भिक्ष होवे किन्तु केवल आंधी सहित वायु वा विजली हो तो शुभ है ॥ ४४ ॥

ज्येष्ठे मूले पूर्णिमायां शुभं वर्षहिताय तत् ॥
मध्यमं प्रतिपद्योगे द्वितीयायां तु दुःखकृत् ॥ ४५ ॥

ज्येष्ठ सुदि पूर्णिमाको मूलनक्षत्र हो तो सुभिक्ष, आषाढ वदि प्रतिपदाको हो तो मध्यम, द्वितीयाको हो तो दुर्भिक्ष हो ॥ ४५ ॥

ज्येष्ठमासे रविकरास्तपन्ति प्रचुरोऽनिलः ॥
लूकासमन्वितो वाति घनगर्भस्तदा शुभः ॥ ४६ ॥

ज्येष्ठमें वहुत धूपपडना और लूसहित वहुत वायु चलना गर्भोंके लिये श्रेष्ठ है ॥ ४६ ॥

ज्येष्ठे च मासे बहुले च पक्षे नक्षत्रयुग्मं श्रवणं धनिष्ठा ॥
यावद्घटी गर्जति विद्युदभ्रं तावच्छुभं वर्षति गर्गभाष्यः॥४७॥

ज्येष्ठवदिमें श्रवण और धनिष्ठाके दिन वादल, विजली वा गाज हो तो वर्षाकालमें अच्छी वर्षा होवे ॥ ४७ ॥

आर्द्रादिदशऋक्षाणि ज्येष्ठे शुक्ले निरीक्षयेत् ॥
साभ्रैश्च हन्यते वृष्टिर्निरभ्रैर्वृष्टिरुत्तमा ॥ ४८ ॥

ज्येष्ठशुक्लमें आर्द्रासे स्वातितक दश नक्षत्रोंमें यदि वादल हों तो अनावृष्टि और न हों तो सुवृष्टि होवे ॥ ४८ ॥

चित्रास्वातिविशाखासु ज्येष्ठे मासि निरभ्रता ॥
आषाढे जलहीनत्वं श्रावणे वर्षति ध्रुवम् ॥ ४९ ॥

चित्रास्वातिविशाखासु ज्येष्ठे मासे च वर्षति ॥
न भवेच्छ्रावणे वृष्टिर्धान्यमहर्घता भवेत् ॥ ५० ॥

ज्येष्ठमासमें चित्रा, स्वाति, विशाखा नक्षत्रोंमें बादल न हों तो आषाढमें वर्षा नहीं होवे किन्तु श्रावणमें होवे ॥ ४९ ॥ उन्हीं नक्षत्रोंमें यदि वर्षा हो तो श्रावणमें वर्षा नहीं होवे और धान्य महंगा होजावे ॥ ५० ॥

ज्येष्ठाषाढद्वयोर्मध्ये वायुपुत्रोदयो भवेत् ॥
उच्चा मेघाः प्रदृश्यन्ते वायुना सह प्रेरिताः ॥ ५१ ॥
तरुप्रासादशिखराः पतन्ति पवनाहताः ॥
विरोधिनो महीपाला भवन्ति च समंततः ॥ ५२ ॥

ज्येष्ठ, आषाढमें वायुके पुत्र उदय होवें तब वायुके जोरसे बादल ऊंचे दीखें ॥ ५१ ॥ तथा वृक्ष, प्रासादके शिखर पवनसे टूट पडें और राजाओंमें विरोध होवे ॥ ५२ ॥

करोति नीडं भुवि चेद्वराही समान्यपत्यानि विजा-
यते वा ॥ समुद्भवो भानुमयूखवह्निर्जाज्वल्यते तद्विज-
गत्समस्तम् ॥ ५३ ॥

वर्षाकालके पहले यदि रूपारेल (शकुनचिडी) अपने अण्डे भूमिपर रक्खे और वे समसंख्य हों तो उस देशमें वर्षा नहीं होवे किन्तु समस्त जगत्को जलानेवाली धूप पडे ॥ ५३ ॥

गर्ते सरिद्वाऽम्भसि वा वराही शावानयुग्मानपि चेत्प्र-
सूते ॥ नाम्भोधरो मुंचति तावदम्भो यावत्समुज्झी-
य न ते व्रजन्ति ॥ ५४ ॥

यदि अण्डे खड्डम वा नदी, तालाव आदिमें रक्खे और वे अण्डे सम-संख्याके हों तो जब तक वे बच्चे वहांसे उडकर नहीं जावें तब तक वर्षा नहीं होवे॥ ५४ ॥

द्वारादिदेशेषु गृहस्य यस्य प्रत्यक्षरूपा कुरुते कुला-

यम् ॥ अम्भोधरो वर्षति चेत्तथापि तच्छून्यतां याति च भज्यते वा ॥ ५५ ॥

यदि रूपारेल किसी घरके द्वार आदिपर घोंसला वनावे तो वर्षा तो होवे परन्तु वह स्थान शून्य हो जावे अथवा गिरजावे ॥ ५५ ॥

प्रासादशैलद्रुमकोटरेषु तुङ्गेषु चान्येषु विधाय नीडम् ॥ प्रसूयते यद्यसमैरपत्यैः श्यामातदम्भो भवति प्रभूतम्॥५६॥

वडे सुन्दर स्थानमें वा पर्वतमें वा वृक्षकी खोखलामें यदि रूपारेल घोंसला करे वा और किसी ऊंचे स्थानपर वनाके विषम संख्याके एक तीन वा पांच अण्डे रक्खे तो वहुत वर्षा होवे ॥ ५६ ॥

आषाढविचारः ।

आषाढे प्रथमे पक्षे प्रथमादितिथित्रये ॥
श्रवणं वा धनिष्ठा स्यात्तदान्नसंग्रहः शुभः ॥ १ ॥

आषाढ वदि प्रतिपदामे आदि ले तृतीयातक श्रवण वा धनिष्ठा नक्षत्र हो तो धान्य संग्रह करना शुभ है ॥ १ ॥

ज्येष्ठे व्यतीते प्रथमप्रतिपद्घनगर्जितैः ॥
विद्युतावर्षणेनापि द्विमासा मेघवाधिकाः ॥ २ ॥

आषाढ वदि प्रतिपदाको विजली चमके और मेघ गर्जना करे वा वर्षे तव दो मासतक अनावृष्टि होवे ॥ २ ॥

कृष्णाऽषाढचतुर्थ्यां च मेघैराच्छादितो रविः ॥
मासत्रये व्यतीते च तदा मेघमहोदयः ॥ ३ ॥

आषाढवदि चतुर्थीको दिन भर सूर्य मेघोंसे ढका रहे तो तीनमासके उप- रांत मेघ अधिक वर्षा करे ॥ ३ ॥

आषाढकृष्णतुर्यायामास्ते भास्करमण्डले ॥
न वर्षति यदा मेघस्तदा कष्टतरं जलम् ॥ ४ ॥

आषाढ वदि चतुर्थीके दिन सूर्य अस्त होनेतक कुछभी वर्षा न हो तो वर्षा कम होवे ॥ ४ ॥

शुचौ कृष्णे चतुर्थ्यां चेत्तुषारानपि पातयेत् ॥
जलपक्षैस्तदा सर्वं स्वस्थं भवति भूतले ॥ ५ ॥

आषाढ वदि चतुर्थीके दिन तुषार (धूहर) पडे तो वर्षाके लिये बहुतही श्रेष्ठ होवे अर्थात् पृथ्वीपर सब सुख होवे ॥ ५ ॥

आषाढषष्ठिदिवसे कृष्णे पक्षे शनिर्यदा ॥
तदा गोधूमका ग्राह्या द्विगुणायस्तुकार्तिके ॥ ६ ॥

आषाढ वदि षष्ठीके दिन यदि शनिवार होवे तव गेहूंका संग्रह करना चाहिये आगे कार्तिकमें दुगुणा मूल्य होगा ॥ ६ ॥

आषाढशनिरेवत्यामष्टम्यां सङ्गतो यदा ॥
तदा वृष्टिनिरोधेन कष्टमुत्कष्टमादिशेत् ॥ ७ ॥

आषाढ वदि अष्टमीके दिन शनिवार और रेवती नक्षत्र होवे तव वर्षाका अवरोध हो जिससे अत्यन्त कष्ट होवे ॥ ७ ॥

आषाढे कृष्णपक्षे चेदष्टम्यां रजनीपतिः ॥
मेघमध्ये च संयाति तदा पृथ्वी जलाकुला ॥ ८ ॥
तस्यामेव यदा रात्रौ निर्मलः शशलांछनः ॥
दृश्यते छिद्रसंयुक्तस्तदा वाच्यमवर्षणम् ॥ ९ ॥

आषाढमासकी कृष्णपक्षकी अष्टमीको जो चन्द्रमा वादलोंके बीच आच्छादित रहे तो पृथ्वीपर वर्षा वहुत होय ॥ ८ ॥ उसी अष्टमीको यदि रात्रिमें चन्द्रमा निर्मल रहे और चन्द्रमामें छिद्र दीख पडे तो वर्षा नहीं होगी ऐसा कहै ॥ ९ ॥

आषाढे कृष्णपक्षे तु निरभ्रै रविमण्डलैः ॥
न च वारि प्रवर्षंति प्रावृट्काले तदा घनाः ॥ १० ॥

आषाढमासके कृष्णपक्षमें जो सूर्यमण्डल निर्मल रहे और वादल नहीं होवे तो वर्षा ऋतुमें मेघ जल नहीं वर्षावें ॥ १० ॥

आषाढे स्वातिनक्षत्रे सविद्युदुपवर्षणम् ॥
तदा स्यादन्ननिष्पत्तिस्तोयपूर्णा वसुंधरा ॥ ११ ॥

आषाढमासमें स्वाति नक्षत्रके दिन विजली चमके और वर्षा होवे तो अन्न बहुत उत्पन्न होवे तथा वर्षासे पृथ्वी पूर्ण होजावे ॥ ११ ॥

आषाढे कृष्णपक्षे च धनिष्ठा श्रवणं तथा ॥
गर्जविद्युद्विहीनं स्याद्देशभंगं तदादिशेत् ॥ १२ ॥

आषाढ वदिमें श्रवण धनिष्ठाके दिन विजली वा मेघगर्जना हो तो सुभिक्ष किन्तु नहीं हो तो दुर्भिक्ष जानना ॥ १२ ॥

बुधशुक्रौ समीपस्थौ करोत्येकार्णवां महीम् ॥
तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत् ॥ १३ ॥

आषाढमासमें बुध व शुक्र दोनों एकराशिपर होवें तब बहुत वर्षा करें परन्तु इनके वीचमें सूर्य आजानेसे अनावृष्टि होवे ॥ १३ ॥

रोहिणीविचारः।

आषाढमासे खलु कृष्णपक्षे प्रजेशनक्षत्रमुपागतेंदुः ॥
शुभाऽशुभं सर्वफलं विचिन्त्यं मुनिप्रणीतं ग्रहचिन्तकेन १४

आषाढमासके कृष्णपक्षमें रोहिणी नक्षत्रपर जब चंद्रमा आवे तब शुभाशुभ फलका विचार ज्योतिषी मुनियोंके कथनानुसार करना ॥ १४ ॥

संध्यायां पुरतो विशेच्चनगरे कृष्णः पशुर्वा वृषः
पूर्णं वृष्टिकरोऽसिता च सुरभिः सौख्यप्रदा प्राणिनाम्॥
श्वेता वृष्टिविघातिनी च कपिला वातप्रदा पाटला
सस्यध्वंसकरी तथैव शबली मध्येफले कीर्तिता १५

आषाढमें रोहिणीके दिन संध्या समय वनमेंसे आवे जो पशु उनमें प्रथम काले रंगका पशु अथवा वृषभ नगरमें प्रवेश करे तो पूर्णवर्षा हो, और काली गौ प्रवेश करे तो प्राणियोंको सुख हो, श्वेत गौ प्रवेश करे तो वर्षाका नाश होवे, कपिला गौ प्रवेश करे तो पवन बहुत चले, रक्त, श्वेत वर्णकी गौ प्रवेश करे तो सस्य, चातुर्मासकी खेतीका नाश करे, चितकवरी गौ प्रवेश करे तो मध्यम फल जानना ॥ १५ ॥

प्रजेशनक्षत्रगते सुधानिधौ शुभास्तु वाता गगनं च निर्मलम्॥

मृगाः खगाः शान्तदिगानना यदा नन्दंति लोकाः सुखिनस्तदा भृशम् ॥ १६ ॥

रोहिणी नक्षत्रके दिन चंद्रवार होवे और शुभ पवन चले आकाश निर्मल रहे तथा पशु, पक्षी, शांत दिशाको मुख करें तो लोकमें आनंद और सुखकी वृद्धि हो ॥ १६ ॥

तत्रार्द्धमासाः प्रहरैर्विकल्पा वर्षानिमित्तं दिवसास्तदंशैः ॥ सव्येन गच्छञ्छुभदः सदैव यस्मिन्प्रतिष्ठा बलवान्स वायुः ॥ १७ ॥

रोहिणीमें वायु सव्य (उत्तरसे ईशान, ईशानसे पूर्व इस क्रमसे) हो तो शुभ है किन्तु अपसव्य (उत्तरसे वायव्य, वायव्यसे पश्चिम इस क्रमसे) हो तो अशुभ होवे । दिनरात्रिके आठ प्रहरसे वर्षाकालका निर्णय श्रावण आदि चारमहीनोंके आठ पक्षकी अर्थात् एकएक प्रहरसे एकएक पक्षकी (उसमें भी आधी २ घडीसे एक २ दिनकी) क्रमसे वर्षा जाने । जिस प्रहर वा घडीमें वायु शुभ हो उस पक्ष वा दिनमें वृष्टि और जिसमें अशुभ हो उसमें अनावृष्टि होवे । जो अधिक बलवान् वायु होवे उसीके अनुसार फल जाने ॥ १७ ॥

रोहिणीनक्षत्रयोगः ।

पुरादुदक्प्रत्पुरतोऽपि वा स्थलं अहोषितस्तत्र हुताशतत्परः ॥ ग्रहान् स नक्षत्रगणान्समालिखेत्सधूपपुष्पैर्बलिभिश्च पूजयेत् ॥ १८ ॥ सरत्नतोयौषधिभिश्चतुर्दिशं तरुप्रवालैःपिहितैः सुपूजितैः ॥ अकालमूलैः कलशैरलंकृतं कुशास्तृतं स्थण्डिलमावसेद्द्विजः ॥ १९ ॥

आषाढमासमें रोहिणी होवे उसके पहले दिनसे ही राज्य ज्योतिषी नगरके बाहर उत्तर वा पूर्वमें एकान्तस्थानमें तीन दिनतक उपवासित रहके हवन करके नक्षत्रों सहित ग्रहोंको लिखके धूप, दीप, पुष्प, नैवेद्य आदिसे पूजा करके ॥ १८ ॥ उस स्थानको रत्न, जल, औषधि तथा वृक्षोंके कोमलपत्तोंसे सुशोभित करके मृत्तिकाके घट (जिसका नीचेका भाग काला न हो) के पास रखकर निकटही कुशासनपर बैठे ॥ १९ ॥

आलभ्य मंत्रेण महाव्रतेन बीजानि सर्वाणि निधाय कुंभे ॥ प्लावानि चामीकरदर्भतोयैर्होमो मरुद्वारुणसोममंत्रैः ॥ २० ॥ वृत्ते तु योगेऽङ्कुरितानि यानि सन्तीह बीजानि धृतानि कुंभे ॥ येषां तु योंशोऽङ्कुरितस्तदंशस्तेषां विवृद्धिं समुपैति नान्यः ॥ २१ ॥

जब रोहिणी नक्षत्र लगे उस समय 'महाव्रत' नामक मंत्रसे सब धान्यके बीजोंको मंत्रित करके घडेमें भर देवे तथा सुवर्ण, कुशा और जलभी उसमें डालके वायु, वरुण तथा चंद्रमाके मंत्रोंसे हवन करे ॥ २० ॥ रोहिणीनक्षत्र समाप्त होनेपर घडेमेंके जिन धान्योंके अंकुर निकले हों वह धान्य तो उस वर्षमें उत्पन्न होंगे किन्तु जिनके अंकुर न निकले होवें वह उत्पन्न नहीं होंगे ॥ २१ ॥

नामाङ्कितैस्तैरुदगादिकुंभैः प्रदक्षिणं श्रावणमासपूर्वैः ॥ पूर्णैः स मासः सलिलस्य दाता स्रुतरवृष्टिः परिकल्प्यमूनैः ॥ २२ ॥

रोहिणी नक्षत्रमें जलके पूर्ण भरे हुए मृत्तिकाके चार घट उत्तर आदि चारों दिशाओंमें क्रमसे श्रावण आदि चार महीनोंके नामोंसे रखे। फिर मृगशीर्ष लगतेही देखे जिस दिशाका घट पूर्ण भरा रहे उस मासमें वर्षा किन्तु खाली हो जावे उस मासमें अनावृष्टि और जिसमें थोडा जल रहजाय उसमें मध्यम वर्षा होवे ऐसा जानो ॥ २२ ॥

अन्यैश्च कुम्भैर्नृपनामचिह्नैर्देशाङ्कितैश्चाप्यपरैस्तथैव ॥ भग्नैः स्रुतैर्न्यूनजलैः सुपूर्णैर्भाग्यानि वाच्यानि यथानुरूपम् ॥ २३ ॥

औरभी वैसेही जलके घडे रखकर राजा, मंत्री आदि तथा देश, मण्डल, नगर आदिके लियेभी परीक्षा करे। उनमें जिसके नामका घडा फूटे उसका नाश, खाली हो जाय उसकी हानि, थोडा खाली होवे उसको कष्ट और पूर्ण भरा रहे उसको सुख हो ॥ २३ ॥

अथ मेघलक्षणम् ।

ओतुप्रेतश्वादिकाकानुरूपाच्छिन्नाभिन्ना वाग्निहीनातिरूक्षाः ॥ उष्ट्राकारा वानराकारदेहा मेघाः प्रोक्ताः दुःखदा वै प्रजानाम् ॥ २४ ॥ मंजिष्ठाशुक्लकौशेयस्वर्णक्रौंचसमप्रभाः। अच्छिन्नमूलाः सुस्निग्धाः शुभदाः सजला घनाः ॥ २५ ॥

आषाढ मासमें जो बादल बिलाव, प्रेत, कुत्ता और कागला इनके आकार च्छिन्न भिन्न, बिजलीके रूखे आवें अथवा ऊंट तथा वानरकी देहका आकार होवे तो ऐसे लक्षणवाले मेघ प्रजाको दुःख देनेवाले हैं ॥२४॥ तथा मंजीठ, सफेदरेशम,सुवर्ण, क्रौंचपक्षी, इनके समान कान्तिवाले हों और नहीं कटा है मूल (जड) जिनका ऐसे विचित्र रंगके सुन्दर चिकने जल भरे हुए बादल हों तो शुभ देनेवाले होते हैं ॥ २५ ॥

शाक्रोद्भूतैर्मारुतैर्वारिवृष्टिः पृथ्वी सस्यव्यावृतानन्दयुक्ता ॥ वह्न्युद्भूतैर्वह्निकोपोऽन्ननाशो याम्यैरन्नं क्षीयते राक्षसोत्थैः ॥ २६ ॥ पश्चाज्जातैर्वारिवृष्टिः समग्रा वातोद्भूतैर्वातयुक्ता हि वृष्टिः ॥ वृष्टिः सस्या सौम्यकाष्ठासमुत्थैरीशोद्भूतैर्वा विशोका जनाः स्युः ॥ २७॥

आषाढमें जो पूर्वका पवन चाले और वर्षा होवे तो पृथ्वीपर धान्य बहुत होवे तथा प्रजा आनंद युक्त रहें । अग्नि कोणका पवन चाले तो अग्निकोप हो, दक्षिण तथा नैर्ऋतका पवन चाले तो अन्नका नाश होवे॥ २६ ॥पश्चिमका पवन चाले तो वर्षा अच्छी होवे, वायव्यका पवन चाले तो वायु सहित वर्षा होवे, उत्तरका पवन चाले तो वृष्टि बहुत हो, धान्य अच्छा होवे, ईशानका पवन चाले तो मनुष्योंका शोक दूर होवे ॥ २७ ॥

उल्कानिर्घातभूकम्पदिग्दाहाशनिविद्युतः ॥
नादा मृगाणां संग्राह्यास्तथैवाम्बुधरास्तदा ॥ २८

रोहिणीमें उल्कापात, वज्रका शब्द, भूकम्प, दिग्दाह, गर्जना, बिजली, मृगांके शब्दका शुभाशुभ फलभी मेघोंकी दिशाओंके अनुसार जाने ॥ २८ ॥

दक्षिणेन यदा याति रोहिण्यां रोहिणीपतिः ॥
दूरस्थो निकटस्थो वा जगत्कष्टप्रदायकः ॥ २९ ॥
उत्तरस्यां यदा याति रोहिण्यां रोहिणीपतिः ॥
सोपसर्गात्तदा वृष्टिरस्पृशन्सुखिनो जनाः ॥ ३० ॥

रोहिणीनक्षत्रके दिन जो चंद्रमा रोहिणीके दहिने और दूर वा निकट स्थित हो तो संसारको कष्टदायक है ॥ २९ ॥ और जो उत्तरकी ओर समीप विचरे और रोहिणीको स्पर्श नहीं करे तो लोकमें मनुष्य सुखी रहैं ॥ ३० ॥

रोहिणीशकटमध्यगः शशी शोकरोगभयदुःखदःस्मृतः ॥
शीतरश्मिमनुयाति रोहिणी कामिनो हि वशगास्तदंगनाः ॥ ३१ ॥

रोहिणी जो शकट (गाडी) के आकार तिसके मध्य जो चंद्रमा गमन करे तो शोक, रोग, भय, दुःख देनेवाला कहिये और जो चंद्रमाके पीछे रोहिणी होवे तो स्त्रियां कामी जनोंके वशमें होवें ॥ ३१ ॥

रोहिण्याः पृष्ठतो याति यदा कुमुदिनीपतिः ॥
कामिनीनां वशं यांति नराः कामप्रपीडिताः ॥३२॥

रोहिणी नक्षत्रके पीछे जो चंद्रमा हो तो कामसे पीडित मनुष्य स्त्रियोंके वशमें होजावें ॥ ३२ ॥

वह्नेर्दिशि भयमतुलं नैर्ऋत्यां दुःखसंयुता लोकाः ॥
ईशानस्थे चंद्रे सुखबाहुल्यं च मध्यमं वाते ॥ ३३ ॥

रोहिणीसे जो चंद्रमा अग्निकोणमें हो तो भय बहुत होवे, नैर्ऋतमें हो तो लोकमें दुःख बहुत होवे, ईशानमें हो तो सुख बहुत होवे और जो वायव्य दिशामें हो तो मध्यम फल जानना ॥ ३३ ॥

दृश्यते न यदि रोहिणीयुतश्चंद्रमा नभसि तोयदावृते ॥
रुग्भयं महदुपस्थितं तदा भूश्च भूरिजलशस्यसंयुता॥३४॥

रोहिणीके दिन यदि चंद्रमा रोहिणीसहित बादलोंसे ढका रहे तो वर्षा तथा धान्य बहुत होवे किंतु रोगोंका बहुत भय होवे ॥ ३४ ॥

आषाढे नवमी कृष्णा विद्युदम्भोदशेखरे ॥
विक्रयः सर्वधान्यानां कर्षणे वै हिताय च ॥ ३५ ॥

आषाढ वदि नवमीके दिन बादल, बिजली होवे तो सुवृष्टि होवे । अतः सब धान्य बेचकर खेतियोंके लिये यत्न करे ॥ ३५ ॥

अथ आर्द्राप्रवेशफलम् ।

वह्निवेदाष्टनन्देन्द्रा एतत्संख्यासु भास्करः ॥
तिथिष्वार्द्रां यदा याति कष्टदः शेषके शुभः ॥३६॥

आर्द्रा नक्षत्रपर सूर्य प्रवेश करे तब तृतीया, चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी इन तिथियोंमें कष्टदायी है, शेषतिथियोंमें शुभ जानना ॥ ३६ ॥

रवौ भौमे तथा मन्दे रौद्रभं याति भास्करः ॥
तदा न शुभदः प्रोक्तः शुभदः शेषवासरे ॥ ३७ ॥

रविवार, मंगलवार, शनिवार इनमें जो सूर्य आर्द्रापर आवे तो शुभ नहीं है, शेष चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र इनमें शुभ जानना ॥ ३७ ॥

यमाग्नीशाऽहिमूलेन्द्रापितृवारिभके रविः ॥
यात्यार्द्रामशुभः प्रोक्तः शेषर्क्षे शुभदः स्मृतः॥३८॥

भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, मघा, पूर्वाषाढा इन नक्षत्रोंमें जो आर्द्रानक्षत्रपर सूर्य आवे तो अशुभ है, शेष नक्षत्रोंमें प्रवेश हो तो शुभ है ॥ ३८ ॥

शूले गण्डे व्यतीपाते व्याघाते परिघे शिवे ॥
वैधृतौ चातिगण्डे च आर्द्रां यात्यशुभो रविः॥ ३९॥

शूल, गंड, व्यतीपात, व्याघात, परिघ, शिव, वैधृति, अतिगंड, इन योगोंमें आर्द्रापर सूर्य प्रवेश करे तो अशुभ है, शेष योगोंमें शुभ जानना ॥ ३९ ॥

आर्द्राप्रवेशे वृष्टिश्चेत्सार्धमासमवर्षणम् ॥
निर्मला भूरिवृष्टिः स्यात्सस्यपूर्णा वसुंधरा ॥ ४० ॥

आर्द्रा नक्षत्रपर प्रवेश करते ही जो वर्षा हो तो डेढ मास तक वर्षा नहीं होवे और जो उस दिन आकाश निर्मल रहे तो वर्षा बहुत हो तथा धान्यकी उत्पत्ति पृथ्वीपर बहुत हो ॥ ४० ॥

दिवार्द्रां याति चेद्भानुर्जलभक्षणकारकः ॥
जगत्क्षेमकरो रात्रौ बहुसस्यजलप्रदः ॥ ४१ ॥

आर्द्रा नक्षत्रपर सूर्य दिनको प्रवेश करे तो जलका शोषण करे, यदि रात्रिमें प्रवेश हो तो जगत्में क्षेम और धान्यकी उत्पत्ति तथा वर्षा बहुत करे ॥ ४१ ॥

आषाढस्याप्यमावास्या यदि सोमवती भवेत् ॥
सुभिक्षं कुरुतेऽवश्यं नक्षत्रमृगसप्तके ॥ ४२ ॥

आषाढ वदि अमावास्याको सोमवार और मृगशीर्ष नक्षत्रसे लेकर पूर्वा फाल्गुनीतकके सातमेंसे कोई नक्षत्र हो तो अवश्य सुभिक्ष होवे ॥ ४२ ॥

यावती भुक्तिराषाढे शुक्ले प्रतिपदादिने ॥
पुनर्वसुचतुर्मास्यवृष्टिः स्यात्तावती स्फुटम् ॥ ४३ ॥

आषाढ सुदि प्रतिपदाको पुनर्वसु नक्षत्र जितनी घडी हो उतनी ही, वर्षा चार महीनोंमें (साठि घडी हो तो ४ मास, पैंतालिस घडी हो तो तीन मास, तीस घडी हो तो दो मास और पंदरह घडी हो तो एकमास) इस अनुमानसे होवे ॥ ४३ ॥

आषाढे सितपक्षस्य द्वितीया पुष्यसंयुता ॥
यावन्मात्रं भवेत्पुष्यं तावन्मात्रा विशोपकाः ॥ ४४ ॥

आषाढ सुदि द्वितीयाके दिन जितनी घटी पुष्य नक्षत्र होवे उसके अनुमानसे (यथा ६० घडी हो तो २० विश्वे) सम्वत् जाने ॥ ४४ ॥

आषाढशुक्लपक्षे च द्वितीया नवमीदिने ॥
चंद्रेज्यभृगुवाराः स्युः सुवृष्टिश्च समर्घता ॥ ४५ ॥

बुधे साम्यं रवौ तापः कुजे वृष्टिर्न जायते ॥
शनिवारे प्रजापीडा दुर्भिक्षं रौरवं तदा ॥ ४६ ॥

आषाढ शुक्ल पक्षकी द्वितीया और नवमीके दिन चंद्रवार, गुरुवार, भृगुवार होय तो सुन्दर वर्षा और अन्न सस्ता होवे ॥ ४५ ॥ तथा बुधवार हो तो साम्य, रविवार हो तो ज्वर रोग हो, मंगलवार हो तो अनावृष्टि और शनिवार हो तो प्रजाको पीडा, दुर्भिक्ष भारी होवे ॥ ४६ ॥

आषाढमासि शुक्लायां द्वितीयायां प्रवर्षणे ॥
तृतीयायां पुरो वायुर्मेघो वा पूर्वदिग्गतः ॥ ४७ ॥
चतुर्थ्यां जलदः प्राच्यां दक्षिणो यदि मारुतः ॥
पंचम्यां पूर्वदिङ्मेघस्तदा श्रावणमासतः ॥ ४८ ॥
ध्रुवं वृष्टिः शुभा ज्ञेया क्रमान्मासचतुष्टये ॥
चतुर्ष्वेषु दिनेष्वेव यदि वृष्टिर्निरंतरम् ॥ ४९ ॥
तदा स्यादतिवृष्टिश्च धान्यनाशः प्रजायते ॥
याम्यप्रत्यग्भवे वायौ द्व्यहं दुर्भिक्षमीरितम् ॥ ५० ॥
तृतीयापंचमीघस्रे यद्युदक्पूर्वजो मरुत् ॥
तदा स्याद्धान्यनिष्पत्तिर्बहुला वृष्टिरुत्तमा ॥ ५१ ॥

आषाढ सुदि द्वितीयाके दिन वर्षा होय और तृतीयाके दिन पूर्वकी पवन चाले तथा पूर्वदिशामें मेघ दीखे और ॥ ४७ ॥ चतुर्थीको पूर्वमें मेघ दीखे, दक्षिणकी पवन चाले तथा पंचमीके दिन पूर्व दिशामें मेघ दीखे तब क्रमसे श्रावण आदि चार मासमें ॥ ४८ ॥ निश्चयही वर्षा होय । यदि इन चारों तिथियोंमें रोज वर्षा होय तो ॥ ४९ ॥ अतिवृष्टि होवे तथा धान्यका नाश होवे । तथा दो दिन पर्यंत दक्षिण पश्चिमका पवन चाले तो दुर्भिक्ष होवे ५० तृतीया और पंचमीके दिन यदि उत्तर पूर्वका पवन चाले तो धान्यकी उत्पत्ति बहुत होवे तथा बहुतही वर्षा होवे ॥ ५१ ॥

चतुर्थ्यान्तु सिताषाढे विद्युद्वर्षोश्च गर्जितम् ॥
तदा वर्षति पर्जन्यो वर्षाकाले न संशयः ॥ ५२ ॥

अथवा दैवयोगेन मेघभावो न विद्यते ॥
तदा जलं समुद्रे स्यात्पुस्तके वा प्रदृश्यते ॥ ५३ ॥

आषाढ सुदि चतुर्थीको बादल, बिजली,गाज वा वर्षा हो तो सुभिक्ष करने योग्य उत्तम वर्षा होवे ॥ ५२ ॥ किन्तु बादल, बिजली आदि कुछ भी न होवे तो जल केवल समुद्रमें वा पुस्तक पत्रोंमें ही लिखा दीखे ॥ ५३ ॥

आषाढशुक्लनियतं विद्युल्लक्षणमद्भुतम् ॥
चतुर्थीं पंचमीं चैव परीक्षेत प्रयत्नतः ॥ ५४ ॥
सर्वसस्येषु निष्पत्तिर्विद्युतो दर्शयन्ति हि ॥
ऐन्द्र्यां चेत्स्फुरते विद्युदैन्द्रश्चापीह मारुतः ॥ ५५ ॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं निवृत्तिं च विनिर्दिशेत् ॥
आग्नेय्यां चेदुभौ स्यातां भयं तत्र महद्भवेत् ॥ ५६ ॥
अनावृष्टिश्च लोकस्य शस्त्राग्निभयमेव च ॥
याम्यायां स्फुरते विद्युद्याम्यश्चापीह मारुतः ॥ ५७ ॥
विषमा तु समा विद्याद्व्याधिर्मृत्युभयाकुलम् ॥
कनीयसी तु नैर्ऋत्यां तथा वह्नीतिका समा ॥ ५८ ॥
मध्यमा शस्यसम्पत्स्याद्वारुण्यां व्याधिसङ्कुला ॥
पतङ्गदंशमशका वायव्यां मध्यशस्यदाः ॥ ५९ ॥
अतिचारभयं विद्यात्सौम्यायां भूरिसम्पदम् ॥
निवृत्तिसस्यसम्पत्तिः प्रधानैशानगोचरे ॥ ६० ॥
यदा च सर्वाः स्पन्दन्ते विषमां वृष्टिमादिशेत् ॥
प्रतिलोमेषु वातेषु ईतिबाहुल्यमादिशेत् ॥ ६१ ॥
शुभायां स्पन्दमानायामनिष्टा स्पन्दते यदि ॥
सम्पद्यते महाशस्यं महांश्च स्याद्गुपद्रवः ॥ ६२ ॥

अशुभा स्पन्दते पूर्वा यदा पश्चाच्च शोभना ॥
सुवृष्टिमेव तत्राहुर्न च शस्यं समृद्धयति ॥ ६३ ॥

आषाढ सुदि चतुर्थी, पंचमीके दिन बिजलीके अद्भुत लक्षणोंकी परीक्षा यत्नसे करे ॥ ५४ ॥ यदि बिजली दीखे तो सम्पूर्ण धान्य उत्पन्न होवें । इन दोनों दिनोंमें बिजली तथा वायु पूर्वके हों तो ॥ ५५ ॥ सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्यता आदि शुभ है । और अग्निकोणकी दोनों हों तो बहुत भय ॥५६॥ अनावृष्टि और लोकमें शस्त्र तथा अग्निभय होवे । दक्षिणकी वायु बिजली हों तो ॥ ५७ ॥ विषम वर्षा होवे अर्थात् व्याधि, मृत्यु,भयसे दुःखी होवें । नैर्ऋत कोणकी वायु बिजली हों तो संवत् नेष्ट होय, टिड्डीका भय होवे ॥ ५८ ॥ पश्चिमकी वायु बिजली हों तो प्रजामें अनेक रोग तथा पतंग, मक्खी, मच्छरोंका दुःख होवे । वायव्यकी वायु बिजली हों तो मध्यम अन्न हो ॥ ५९ ॥ उत्तरकी वायु बिजली हों तो बहुत सम्पत्ति हो । ईशानकी वायु बिजली हों तो सुभिक्ष होवे ॥ ६० ॥ और सब ओरकी वायु बिजली हों तो विषम वर्ष तथा जिस दिशामें बिजली चमके उससे सामनेका वायु हो तो बहुत प्रकारकी टिड्डी आदि होवें ॥ ६१ ॥ पहले बिजली शुभ दिशामें और पीछे अशुभ दिशामें चमके तो धान्य बहुत उत्पन्न होवे परन्तु साथ ही उपद्रवभी होवे ॥ ६२ ॥ और जो पहले अशुभ दिशामें, पीछे शुभ दिशामें चमके तो वर्षा तो उत्तम ही होवे किन्तु धान्य उत्पन्न नहीं होवे ६३

आषाढमासे सितपंचमीतिथौ रव्यादिवारेषु यथाक्रमेण ॥ स्यादल्पवृष्टिर्विपुला च वृष्टिर्युद्धं शुभं क्षेमसुखं च नाशम् ॥ ६४ ॥

आषाढ सुदि पंचमीके दिन रविवार हो तो अल्प वर्षा, चंद्रवार हो तो अतिवर्षा, मंगल हो तो युद्ध, बुध हो तो शुभ, गुरु हो तो क्षेम (कल्याण), शुक्र हो तो सुख और शनिवार हो तो विनाश होवे ॥ ६४ ॥

आषाढे शुक्लपंचम्यां शुभे वारे शुभेक्षिते ॥
सम्पूर्णा निखिला धात्री धनधान्याकुला धरा॥६५॥

ब्रह्मणो दुहिताऽसि त्वमादित्येति प्रकीर्तिता ॥
काश्यपीगोत्रतश्चैव नामतो विश्रुता तुला ॥ ७८ ॥
याम्ये शिक्यं कांचनं संनिवेश्यं शेषद्रव्याण्युत्तरेऽम्बूनि चैव ॥ एतत्तुलाकोशरहस्यमुक्तं प्राजेशयोगेऽपि नरो विदध्यात् ॥ ७९ ॥

उपरिलिखित चारमंत्रोंसे तुलाकी प्रार्थना करके फिर संध्या समयमें पूर्वाभिमुख बैठकर तराजूके दक्षिणकी तर्फके पलडेमें सुवर्ण मुद्रा (मोहर) रखें और उत्तरके पलडेमें दूसरी वस्तुओंको तौल २ के अलग २ रखे। यह तुला वस्तु तोलनेकी विधि परम गुप्त थी सो यहां कही है, इसको रोहिणीयोगमें भी ऐसेही करे ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥

दन्तैर्नागा गोहयाद्याश्च लोम्ना हेम्ना भूपाः शिक्थकेन द्विजाद्याः ॥ तद्वद्देशा वर्षमासा दिशाश्च शेषद्रव्याण्यात्मरूपस्थितानि ॥ ८० ॥

हाथियोंके लिये हाथीदांत, गाय, घोडा, बकरी आदिके लिये उनके केश और राजाओंके लिये सुवर्ण तथा ब्राह्मण आदि वर्णोंके लिये और देश, दिशा, वर्ष, मास आदिकोंके लिये मोमकी अलग २ मूर्तियें कल्पना करके तौले और दूसरे जितने द्रव्य हैं उनके यथारूप रखके तोले ॥ ८० ॥

हीनस्य नाशोऽभ्यधिकस्य वृद्धिस्तुल्येन तुल्यं तुलितं तुलायाः ॥ तोयैः कौप्यैः सैन्धवैः सारसैश्च वृष्टिर्हीना मध्यमा चोत्तमा च ॥ ८१ ॥

प्रातःकालही दूसरे दिन फिर तोलनेसे जो वस्तु घटे उसका नाश, बढे उसकी वृद्धि और जो न घटे और न बढे वह समान रहे। उसी प्रकार जल बढे तो वर्षा, कूपका पानी बढे तो अल्प वर्षा, झरनेका बढे तो मध्यम, और तालावका बढे तो अधिक वर्षा होवे। और जो चारोंकाही जल घटे तो अनावृष्टि होवे ॥ ८१ ॥

स्वातावषाढास्वथ रोहिणीषु पापग्रहा योगगता न

शस्ता ॥ ग्राह्यं तु योगद्वयमप्युपोष्य यदाधिमासो द्विगुणी करोति ॥ ८२ ॥

रोहिणी, स्वाती और पूर्वाषाढाके योगके दिन उन नक्षत्रोंपर क्रूर ग्रह हों तो अशुभ, किन्तु सौम्य हों तो शुभ होवें। और जिस वर्षमें आषाढ अधिकमास हो तो दोनोंही महीनोंमें रोहिणी तथा पूर्वाषाढाके योग देखे ८२

त्रयोऽपि योगाः सदृशाः फलेन यदा तदा वाच्यमसंशयेन ॥ विपर्ययेच त्विह रोहिणीजं फलं तदेवाभ्यधिकं निगद्यम् ॥ ८३ ॥

रोहिणी, स्वाती, पूर्वाषाढा यह तीनों योग एकसरीखे निकलें तो उनका फल निःसंशय कहदेवे किन्तु इनमें एक दूसरेसे विपरीत (कोई शुभ, कोई अशुभ) हो तो फिर रोहिणी योगका जो फल हो वही कहना ॥ ८३ ॥

आषाढे शुक्लनवमी सानुराधा शनौ यदा ॥
क्वचिद्धान्यार्द्धनिष्पत्तिः क्वचिद्दुर्भिक्षकारिका ॥८४॥

आषाढसुदि नवमीको शनिवार, अनुराधा नक्षत्र हो तो धान्यकी उत्पत्ति कहीं तो आधी होवे और कहीं बिल्कुलही नहीं होवे, दुर्भिक्ष हो ॥ ८४ ॥

आषाढस्य तु मासस्य नवम्यां शुक्लपक्षके ॥
उदयन्वै सहस्रांशुर्निर्मलो यदि दृश्यते ॥ ८५ ॥

आषाढसुदि नवमीको सूर्य उदय होते समय यदि निर्मल दीखे ॥ ८५ ॥

मध्याह्ने छादितो मेघैरस्तंगच्छेन्न दृश्यते ॥
चत्वारो वार्षिका मासा ध्रुवं वर्षति माधवः ॥ ८६॥
अथोदये घनाच्छन्नो मध्याह्ने निर्मलो रविः ॥
तत्र तोयं न पश्यामि वर्जयित्वा महानदीम् ॥ ८७ ॥

और मध्याह्नमें मेघोंसे सूर्य आच्छादित रहे और अस्त होतेभी मेघाच्छादित रहे तो चातुर्मासमें निश्चय ही वर्षा होवे, सूर्य उदय होते बादलोंसे ढका रहे और मध्याह्नमें तथा अस्तसमयमें निर्मल दीखे तो गंगायमुनाके विना और कहीं जल नहीं दीखे ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

महर्घं च तदावश्यं तत्तद्योगविशेषतः ॥ १०१ ॥
ऋक्षवृद्धौ रसाधिक्यं कणाधिक्यं च निश्चितम् ॥
योगाधिक्येरसच्छेदो दिनार्धप्रत्यहं स्फुटः ॥ १०२ ॥

आषाढी पूर्णिमाका नक्षत्र पूर्णिमाके दिन क्षय होजाय तो अन्न भाव अवश्य तेज हो, यदि नक्षत्र बढे तो मंदा हो ॥ १०० ॥ और जो महीनेका नक्षत्र पूर्णिमाको न हो तो उन योगोंसे और भी अन्नभाव तेज हो ॥१०१॥ नक्षत्र वृद्धिमें रस और कणकी अधिकता हो, योग बढे तो रसकी हानि हो यह प्रगट जानना ॥ १०२ ॥

आषाढ्यां पूर्णिमायां च यदा वृद्धिर्भविष्यति ॥
मासत्रयं सुभिक्षं च पश्चाद्याति महर्घता ॥ १०३ ॥

आषाढकी पूर्णिमा बढे तो तीन मासतक तो सुभिक्ष रहे, फिर पीछे दुर्भिक्ष पडे ॥ १०३ ॥

आषाढ्यां तु विनष्टायां नूनं भवति निष्कणम् ॥
तदेव ऋक्षपाताद्यैः सत्यं भवति निश्चितम् ॥ १०४ ॥

आषाढकी पूर्णिमा यदि क्षय होजाय तो धान्यकी उत्पत्ति नहीं होय, वैसाही फल नक्षत्र (तारा) टूटनेका भी है ॥ १०४ ॥

आषाढ्यां पूर्वकाषाढा वर्षं यावच्छुभंकरा ॥
आवर्षं धान्यनिष्पत्तिः प्रजासौख्यमविग्रहात्॥१०५
मूलोत्तरे च द्वे धिष्ण्ये मध्यफलविधायिके ॥
आवर्षं मध्यमं धान्यं देशे सर्वत्र कथ्यते ॥ १०६ ॥

आषाढकी पूर्णिमाको पूर्वाषाढा हो तो सर्वत्र धान्यकी उत्पत्ति अच्छी हो और प्रजामें सुख, शांति बहुत रहे ॥ १०५ ॥ और मूल वा उत्तराषाढा हो तो मध्यम संवत् होय ऐसा जाने ॥ १०६ ॥

एकमेव दिनं वक्ष्ये कालनिष्पत्तिहेतवे ॥
अष्टयामेऽभ्रवातौ च वर्षं यावत्तदा शुभम् ॥ १०७॥

नचेत्पूर्वोत्तरो वातो नचाभ्रं नापि वर्षणम् ॥
आषाढ्यां तर्हि विज्ञेयं दुर्भिक्षं लोकदुःखदम् १०८॥

आषाढी पूर्णिमाही संवत्का शुभाशुभफल जाननेके लिये मुख्य है अतः इस दिन आठौं प्रहर तक बादल और वायु पूर्व, उत्तरका हो तो सुभिक्ष होवे किन्तु उपरोक्त दिशाका वायु तथा बादल, वर्षा कुछ भी न हो तो दुर्भिक्ष होवे ऐसा योग आषाढकी पूर्णिमाके दिन अवश्य देखे ॥ १०७ ॥ १०८ ॥

आषाढ्यां घटिकाषष्ट्यां मासद्वादशनिर्णये ॥
द्वादशपंचका षष्टिरित्येवं क्रममादिशेत् ॥ १०९ ॥
यत्र घट्यां शुभो वातो विद्युदभ्राणि गर्जनम् ॥
तत्र मासे भवेद्वृष्टिरिति कालस्य निर्णयः ॥ ११० ॥

आषाढी पूर्णिमाकी साठघडियोंसे द्वादशमासों (श्रावण आदि महीनोंको) को पांच पांच घडीसे एक एक मासका क्रमसे विभाग करे॥१०९॥ फिर जिस महीनेकी पांच घडीमें बादल, बिजली, मेघोंका गर्जना तथा पूर्व वा उत्तरका पवन हो उस मासमें वर्षा होवे ॥ ११० ॥

सर्वरात्रौ यदाभ्राणि वातः पूर्वोत्तरो यदि ॥
तस्मिन्वर्षकणाः पुष्टा जायन्ते जगतीप्सितम्॥१११॥
यदि नाभ्रस्य लेशोऽपि वातो पूर्वोत्तरो नहि ॥
न वर्षते तदा मेघा दुष्टकालो भवेदिह ॥ ११२ ॥

उसी पूर्णिमाको सम्पूर्ण रात्रिमें वायु पूर्व वा उत्तरकी हो और बादल बहुतसे हों तो उस वर्षमें जगत्के मनोरथ सिद्धि करनेवाले सब धान्य पुष्ट उत्पन्न हों ॥ १११ ॥ यदि उपरोक्त दिशाका वायु तथा बादल कुछभी, न हो तो उस वर्षमें मेघ वर्षा नहीं करें जिससे दुर्भिक्ष पडे । और बादल वा पवन कम हो तो वर्षा कम होवे ॥ ११२ ॥

आषाढीपूर्णिमारात्रौ यदि चंद्रो न दृश्यते ॥
चतुर्ष्वपि तदा मासु जलं मुंचति वासवः ॥ ११३॥

यदि तत्रामलश्चंद्रः परिवेषयुतोऽपि वा ॥
तदा जगत्समुद्धर्तुं शक्रेणापि न शक्यते ॥ ११४ ॥

आषाढी पूर्णिमाको सम्पूर्ण रात्रिमें चन्द्रमा बादलोंसे आच्छादित रहे तो श्रावण आदि चारों महीनोंमें वर्षा होवे ॥ ११३ ॥ यदि उसी पूर्णिमाको चंद्रमा निर्मल हो वा उसके कुण्डल होवे तब जगत्की रक्षा करनेको इन्द्रभी समर्थ नहीं हो अर्थात् बहुत भयंकर दुर्भिक्ष होवे ॥ ११४ ॥

अभ्रं विना यदा रम्यो वातो पूर्वोत्तरो यदि ॥
यत्र यामार्द्धके तत्र मासे वृष्टिर्हठाद्भवेत् ॥ ११५ ॥

आषाढी पूर्णिमाको रात्रिमें बादल कुछभी न हों और पूर्व वा उत्तरका आनंददायक वायु चले तो रात्रिके चार प्रहरसे श्रावण आदि आठ महीनोंमें क्रमसे अवश्य वर्षा होवे ॥ ११५ ॥

पूर्णिमायां पवनपरिक्षा ।

आषाढमासस्य च पूर्णिमायां सूर्यास्तकाले यदि वाति वातः ॥ पूर्वस्तदा सस्ययुता धरित्री नन्दन्ति लोकाः सजला घनाः स्युः ॥११६॥ कृशानुवाते मरणं प्रजानामन्नस्य नाशः खलु वृष्टिनाशः ॥ याम्ये मही सस्यविवर्जिता स्यात्परस्परं यांति नृपा विनाशम् ॥ ११७ ॥ नैर्ऋत्वरो वाति यदात्रवातो न वारिदो वर्षति भूरिवारि ॥ प्रत्यक्समीरे सुखिनो मनुष्या जलान्नपूर्णा च वसुन्धरा स्यात् ॥ ११८ ॥ वायव्यवाते जलदागमे स्यादभ्रस्य नाशः पवनैः प्रचण्डैः ॥ सौम्येऽनिले धान्यजलाकुला धरा नन्दन्ति लोका भयदुःखवर्जिताः ॥ ११९ ॥ ऐशेऽन्नवृद्धिर्बहुवारिपूरिता धरा च गावो बहुदुग्धसंयुताः ॥ भवंति वृक्षाः फलपुष्पदायिनो नन्दन्ति भूपाश्च परस्परं तदा ॥ १२० ॥

आषाढी पूर्णिमाके दिन सूर्यास्त समयमें जो पूर्वका पवन चाले तो पृथ्वीपर तृण बहुत उपजे, लोकमें आनंद होवे, वर्षा अच्छी हो ॥ ११६ ॥ अग्नि दिशाका पवन चले तो प्रजाका मरण, अन्नका नाश व वर्षाका विनाश होवे । दक्षिणका पवन चाले तो पृथिवीपर सस्य (तृण, धान्य) नहीं होवे और परस्पर राजा लोग युद्ध करके नाशको प्राप्त होवें ॥ ११७ ॥ नैर्ऋतका पवन चाले तो बहुत जल नहीं वर्षे । पश्चिमका पवन चाले तो मनुष्य सुखी होवें और पृथिवी जल, अन्नसे पूर्ण होवे ॥ ११८ ॥ वायव्यका पवन चाले तो मेघोंके आनेसे प्रबल वायु चले जिससे बादल उडजावें । उत्तरका पवन चाले तो पृथ्वीपर अन्न, जल बहुत होवे और लोकमें प्रजागण आनंद युक्त हों, भय और दुःखरहित हों ॥११९॥ ईशानका वायु चाले तो अन्नकी वृद्धि हो, जल बहुत वर्षे, गायें बहुत दुग्धसे युक्त हों और वृक्षोंमें फल, फूल अच्छे आवें तथा राजालोग परस्पर आनंदसे रहैं ॥ १२० ॥

आषाढीपौर्णमास्यां तु चतुर्दिक्षु च मारुतः ॥
धान्यानि च महर्घाणि वह्निदाहः प्रकीर्तितः॥१२१॥
यदा तु वाताश्चत्वारो भृशं वान्त्यपसव्यतः ॥
अल्पोदकं शस्यघातं भयं व्याधिं च कुर्वतः ॥१२२॥
प्रदक्षिणं यदा वान्ति त एवं सुखशीतलाः ॥
क्षेमं सुभिक्षमारोग्यं राजवृद्धिं जयं तथा ॥ १२३ ॥
समन्ततो यदा वांति परस्परविघातिनः ॥
शस्त्रं जनक्षयं रोगं शस्यघातञ्च कुर्वतः ॥ १२४ ॥
पूर्ववातं यदा हन्यादुदीर्णो दक्षिणोऽनिलः ॥
न तत्र वापयेद्धान्यं कुर्यात्सञ्चयमेव च ॥ १२५ ॥
दुर्भिक्षं चाप्यवृष्टिं च शास्त्रं रोगं जनक्षयम् ॥
कुरुते सोऽनिलो घोरमाढकाभ्यन्तरे ध्रुवम् ॥ १२६ ॥
पापावाते तु वातानां श्रेष्ठः सर्वत्र वाऽऽदिशेत् ॥
श्रेष्ठान्यपि यदा हन्युः पापो पापं तदाऽऽदिशेत् ॥ १२७ ॥

आषाढीपूर्णिमाको एकही समयमें चारोंही ओरका वायु हो तो वर्षा कहीं तो होवे और कहीं नहीं होवे, जिससे धान्य महंगा हो जावे तथा अग्नि-भय हो ॥ १२१ ॥ यदि वायु अपसव्य (पूर्वसे दक्षिण, दक्षिणसे पश्चिम इस क्रमसे) हो तो अल्प वर्षा, धान्यका नाश, भय तथा रोग हो ॥ १२२॥ यदि सव्य प्रदक्षिण (पूर्वसे उत्तर, उत्तरसे पश्चिम इस क्रमसे) शीतल तथा सुखदायक वायु हो तो सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य और राज्यकी वृद्धि तथा जयकारक हो ॥ १२३ ॥ और यदि वायु आपने सामनेकी कोई भी दोनों ओर (पूर्व पश्चिम वा उत्तर दक्षिण) का हो तो शस्त्रद्वारा मनुष्योंका नाश और रोग तथा धान्यका नाश होवे ॥ १२४ ॥ पहले वायु पूर्वका हो फिर दक्षिणका हो जावे तब धान्य बोना नहीं बल्कि संग्रह करना चाहिये ॥१२५॥ क्योंकि आगे अवर्षणसे दुर्भिक्ष होवे तथा शस्त्ररोग-(युद्धद्वारा)से मनुष्योंकी मृत्यु होवे और धान्यका दर्शन नहीं होवे ॥ १२६ ॥ पहले अशुभ वायु होवे किन्तु पीछेसे शुभ हो जावे तो श्रेष्ठ है। पहिले शुभ वायु होवे फिर पीछेसे अशुभ हो जावे तो सर्वत्र नष्ट फल होवे ॥ १२७ ॥

आषाढ्यां धान्यादितोलनम्।

आषाढ्यां सर्वधान्यानि संध्यायां च पृथक्पृथक् ॥
तोलयेद्वर्णमानेन जलादीनपि सर्वशः ॥ १२८ ॥
मंत्रैस्ततोऽभिमंत्र्याथ निशि तानधिवासयेत् ॥
तोलयेच्च पुनः प्रातस्तेन मानेन दैववित् ॥ १२९ ॥
वृद्धौ वृद्धिः समे साम्यं ह्रासे हानिस्तु तस्य च ॥
अतः परतरं कश्चिदन्योपायो न विद्यते ॥ १३० ॥

आषाढकी पूर्णिमाके दिन सायंकालको सब तरहके धान्योंको अलग २ तोले और जल आदिको भी तोले ॥ १२८ ॥ फिर मंत्रसे उन धान्य आदिकोंको अभिमंत्रित करके रात्रिभर रख देवे। जब प्रातःकाल हो जावे तब दैवज्ञ धान्यादिकोंको उसीही तोलसे तोले ॥ १२९ ॥ जो धान्य आदि तोलमें बढ जाय उसकी वृद्धि जाने और जो घट जाय उसकी हानि जाने और जो सम रहै उसकी समता जाने। इसके सिवाय संवत्का शुभाशुभ देखनेका योग दूसरा नहीं है ॥ १३० ॥

आषाढस्यासिते पक्षे दशम्यादिदिनत्रये ॥
रोहिणीकालमाख्याति सुखदुर्भिक्षलक्षणम् ॥ १३१ ॥
रात्रावेव निरभ्रं स्यात्प्रभाते मेघडंबरम् ॥
मध्याह्ने जलबिंदुः स्यात्तदा दुर्भिक्षकारणम् ॥ १३२ ॥

आषाढवदिमें दशमी, एकादशी, द्वादशी, इन तिथियोंमें जो रोहिणी नक्षत्र आवे तो सुभिक्ष, मध्यम, दुर्भिक्ष, यह फल तिथिक्रमसे जानना ॥ १३१ ॥ उसी महीनेमें रात्रि मेघरहित हो, प्रातःकाल मेघगर्जना करे, मध्याह्न समय बूंदें पडें तो दुर्भिक्षका कारण कहिये अर्थात्‌ धान्य महंगा होवे ऐसा जानना ॥ १३२ ॥

अथ श्रावणमासफलम्।

श्रावणे कृष्णपक्षे च प्रतिपद्गुरुवासरे ॥
तदा माषस्तिलस्तैलं महर्घं च प्रजायते ॥ १ ॥

श्रावण वदि प्रतिपदाके दिन गुरुवार होवे तब उडद, तिल और तेल यह महंगे होवें ॥ १ ॥

श्रावणे प्रथमे पक्षे यद्यश्विन्यां जलं पतेत् ॥
तदाऽतीव सुभिक्षं स्यादपयोगेषु सत्स्वपि ॥ २ ॥

श्रावणवदिमें यदि अश्विनी नक्षत्रके दिन वर्षा होवे तो सुभिक्ष होवे किन्तु कोई अपयोग भी हो तो दोष नहीं करता है ॥ २ ॥

श्रावणे विपुला विद्युद्गर्जितं च पुनर्घने ॥
वृष्टिस्तदा मनोऽभीष्टा कुरुते वत्सरं शुभम् ॥ ३ ॥
शुक्रस्यास्तंगतिः सौम्यः प्रोदेति श्रावणे यदा ॥
तदा भाद्रपदे वाऽपि मेघो नैव प्रवर्षति ॥ ४ ॥

श्रावणमासमें बिजली तथा मेघोंका गर्जना बहुत होवे तब उत्तम वर्षा और सुभिक्ष होवे ॥ ३ ॥ श्रावणमें शुक्र तो अस्त होवे और बुध उदय होवे तब भाद्रपदमासमें अनावृष्टि होवे ॥ ४ ॥

श्रावणे कृत्तिका यत्र तत्र तोयं यदा भवेत् ॥
चत्वारो मासा वर्षंति सर्वसस्यविवर्द्धनम् ॥ ५ ॥

श्रावणमें कृत्तिका नक्षत्रके दिन यदि वर्षा हो तो चातुर्मासके चारोंही मास वर्षा होवे और खेतिया उत्तम होवें ॥ ५ ॥

श्रावणे मासि रोहिण्यां यदा वर्षति वासवः ॥
तदा वृष्टिर्भवेत्तावद्यावन्नोत्तिष्ठते हरिः ॥ ६ ॥
श्रावणे रोहिणीऋक्षे यदि वृष्टिर्न जायते ॥
तदा पराशरः प्राह हाहा लोकस्य का गतिः ॥ ७ ॥

श्रावणमें रोहिणी नक्षत्रके दिन यदि वर्षा हो तो कार्तिक सुदि एकादशी तक उत्तम वर्षा होवे ॥ ६ ॥ श्रावणमें रोहिणीके दिन यदि वर्षा न हो तो बडा दुर्भिक्ष होवे ऐसा पराशर ऋषि कहते हैं ॥ ७ ॥

चित्रास्वातिविशाखासु यदि मेघः प्रवर्षति ॥
निष्पत्तिः सर्वसस्यानां भवन्ति सुखिनो जनाः॥८॥
अथ तस्मिन्न वर्षते विद्युद्भावं न दृश्यते ॥
तदा वृष्टिं न पश्यन्ति अनावृष्टिं विनिर्दिशेत् ॥ ९ ॥
चित्रास्वातिविशाखासु श्रावणे नो जलं यदि ॥
तदा ग्रामादिकं त्यक्त्वा नदीतीरे गृहं कुरु ॥ १० ॥

श्रावणमासमे चित्रा, स्वाति, विशाखा, इन तीन क्षत्रोंमें यदि मेघ वर्षा करे तो सब अन्न उत्पन्न होयँ और मनुष्य सुखी होवें ॥ ८ ॥ अथवा उन तीनों नक्षत्रोंमें वर्षा न होवे और विजली भी न चमके तो अनावृष्टिसे दुर्भिक्ष होवे ॥ ९ ॥ श्रावणमें चित्रा, स्वाति, विशाखाके दिन वर्षा न हो तब गावोंको छोडकर नदीके तटपर ही घर करें ॥ १० ॥

श्रावणे प्रथमे पक्षे पूर्वाभाद्रपदे तथा ॥
चतुर्थ्यां यदि वर्षंति वर्षाकालस्तदा भवेत् ॥ ११ ॥

श्रावण वदि चतुर्थीको पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र हो और उसी दिन वर्षा हो तो चातुर्मासमें उत्तम वर्षा होवे ॥ ११ ॥

श्रावणे कृष्णपंचम्यां निर्मलं गगनं शुभम् ॥
तदाऽष्टादशयामान्ते घनस्तोयं व्यपोहति ॥ १२ ॥
श्रावणे कृष्णपक्षे च पंचम्यां वृष्टियोगतः ॥
तदा भूश्चतुरो मासान्भवेद्वारिसमाकुला ॥ १३ ॥

श्रावण वदि पंचमीके दिन आकाश निर्मल रहे तो शुभ है, फिर अठारह प्रहरके पश्चात् वर्षा होवे ॥ १२ ॥ श्रावण वदि पंचमीके दिन यदि वर्षा हो जावे तो चारोही महीनोंमें वहुत वर्षा होवे ॥ १३ ॥

श्रावणे नवमीयुक्तः शनिः संतापकारकः ॥
छत्रभंगं विजानीयादाश्विनान्ते न संशयः ॥ १४ ॥

श्रावण वदि नवमीके दिन शनिवार हो तो संतापकारक है इस योगसे कार्तिकमें छत्रभंग होवे ॥ १४ ॥

कृत्तिका श्रावणे कृष्णैकादश्यां मध्यमा भवेत् ॥
सुभिक्षं रोहिणी कुर्याद्दुर्भिक्षं मृगशीर्षतः ॥ १५ ॥

श्रावण वदि एकादशीको कृत्तिका हो तो सम्वत् मध्यम होय, रोहिणी हो तो सुभिक्ष होय और मृगशीर्ष हो तो दुर्भिक्ष होय ॥ १५ ॥

कृष्णपक्षे श्रावणस्यैकादश्यां रोहिणी च भम् ॥
यावद्धटीप्रमाणं स्यात्तावद्धान्यस्य विक्रयः ॥ १६ ॥

श्रावण वदि एकादशीके दिन रोहिणी नक्षत्र जितनी घडी हो उतनाही सेर धान्य विक्रय होवे ॥ १६ ॥

एकादश्यां नभःकृष्णे यदि वर्षति माधवः ॥
तदा वर्षं शुभं भावि जायते नात्र संशयः ॥ १७ ॥

श्रावण वदि एकादशीको यदि वर्षा हो तो आगेका संवत् अच्छा होय इसमें संदेह नहीं ॥ १७ ॥

द्वादश्यां श्रावणे कृष्णे मघा रात्रौ यदा भवेत् ॥
तदाभ्रे जलवृष्टौ वा जलयोगस्तदा महान् ॥ १८ ॥

श्रावणेऽप्यथ राकायां रक्षःपर्वणि वीक्ष्यते ॥
आगच्छेद् गोधनं सायं तस्या या गौः पुरस्सरा ३१
तस्याश्चिह्नैर्वर्षबोधशुभाशुभविनिश्चयात् ॥
सा गौः सुरूपा सुशृङ्गा श्रेष्ठा द्रोणदुघा मता ॥३२॥
तस्याः पुच्छे च चमरे पट्टसूत्रस्य लाभकृत् ॥
वाणिज्यो व्यवसायः स्यान्न पुच्छं कर्तितं शुभम् ॥३३॥
गोदम्भे च प्रजादुःखं तद्युद्धे राज्यविग्रहः ॥
गोपेन ताड्यमानायां तस्यां रोगाद्भयम्भुवि ॥ ३४॥
निःशृङ्गायां गविच्छत्रभङ्गाय सा च वक्रिता ॥
वक्रं वर्षं समादेश्यं खण्डवृष्टिः पयोमुचः ॥ ३५ ॥

श्रावण सुदि पूर्णिमाको संध्या समय देखे, जब गाये जंगलसे पीछी आवें तब उन सबसे आगे जो गाय हो ॥ ३१ ॥ उसके चिह्नको वर्षके शुभाशुभ निश्चयार्थ परीक्षा करे। जो आगे गाय हो उसका स्वरूप तथा सींग सुन्दर हों तथा बहुत दूध देती हो तो श्रेष्ठ है ॥ ३२ ॥ और पूँछका छणगा सुन्दर हो तो रेशम, वस्त्र तथा सूत्रसे व्यापारियोको लाभ हो किन्तु कटा हुआ हो तो हानि होवे ॥ ३३ ॥ तथा गाय दम्भ करे तो प्रजाको दुःख और युद्ध करे तो राज्यविग्रह हो और ग्वाल लकडी आदिसे ताडन करे तो रोगोंका उपद्रव हो ॥ ३४ ॥ और उस गायके सींग नहीं हों तो छत्रभंग हो तथा टेढी चालसे प्रवेश करे तो खण्ड वर्षा तथा संवत् वक्री हो ॥ ३५ ॥

श्रावणीपूर्णिमायां तु यदींदुग्रहणं भवेत् ॥
घृते तैले तथा धान्ये संग्रहे लाभमादिशेत् ॥ ३६ ॥

श्रावणकी पूर्णिमाको चंद्रग्रहण हो तब घृत, तैल तथा धान्य इनका संग्रह करनेसे लाभ होवे ॥ ३६ ॥

श्रावणे कृष्णपक्षे वै शनिर्वक्री यदा भवेत् ॥
दुर्भिक्षं जायते तत्र क्षुधाभिः पीडिता जनाः ॥ ३७ ॥

श्रावण वदिमें शनि वक्री होवे तो घोर दुर्भिक्ष पडे जिससे भूखके मारे मनुष्य दुःखी होवें ॥ ३७ ॥

श्रावणे चैव संक्रांतौ यदि वर्षति वासवः ॥
व्याधिः प्रजायते घोरा बहुधान्या वसुन्धरा ॥ ३८ ॥

श्रावण मासमें संक्रांतिके दिन यदि वर्षा हो तो पृथ्वीपर धान्य तो बहुत होवे परंतु रोग ज्यादा होवे ॥ ३८ ॥

आषाढे श्रावणे पौषे रविभौमशनैश्चराः ॥
वासरा यत्र जायंते तत्फलं यच्छृणुष्व तत् ॥ ३९ ॥
पंचार्कवारे दुर्भिक्षं पंचभौमे महद्भयम् ॥
पंचमन्दे च रोगः स्याच्छेषा वाराः शुभावहाः॥४०॥

आषाढ, श्रावण और पौष इन महीनोंमें जो रवि, मंगल, शनि यह बार होवें तिनका फल श्रवण करो ॥ ३९ ॥ पांच रविवार हों तो दुर्भिक्ष हो, पांच मंगलवार हों तो महाभय होवे तथा पांच शनिवार हों तो रोग हो, शेष बार हों तो शुभ है ॥ ४० ॥

श्रावणे भाद्रपदे च वरुणस्य सुतोदयः ॥
आवाहयेन्महामेघाँस्तोयपूर्णा वसुन्धरा ॥ ४१ ॥
उन्मार्गसरितो यान्ति जलवेगसमाहताः ॥
समर्घाण्यपि धान्यानि वरुणस्य सुतोदये ॥ ४२ ॥

श्रावण वा भादवमें वरुणके पुत्र उदय होवे हैं तब जलसे पूर्ण महामेघ अत्यंत वर्षा करते हैं जिससे पृथिवी पूर्ण होवे ॥ ४१ ॥ जलके वेगसे मार्ग छोडकर नदियां बहैं, सम्पूर्ण धान्य सस्ते हो जावें ॥ ४२ ॥

भाद्रपदमासफलम् ।

प्रथमायां तिथौ भाद्रे गुरौ श्रवणसंयुते ॥
अभङ्गं जायते वर्षं धनधान्यादिसम्पदः ॥ १ ॥

भादवं वदि प्रतिपदाको गुरुवार, श्रवणनक्षत्र होवे तब सुभिक्ष तथा धन, धान्यकी वृद्धि होवे ॥ १ ॥

भाद्रकृष्णद्वितीयायां द्वितीयवारयोगतः ॥
धान्यनिष्पत्तिरतुला सम्पदः स्युश्चतुष्पदे ॥ २ ॥

भादव वदि द्वितीयाको चंद्रवार हो तो जगत्में धन, धान्यकी वृद्धि तथा पशुओंकी सम्पदा होवे ॥ २ ॥

भाद्रे मासे द्वितीयायां यदि चन्द्रो न दृश्यते ॥
तदा सम्पूर्णवर्षा स्यादन्ननिष्पत्तिरुत्तमा ॥ ३ ॥

भादव वदि द्वितीयाको रात्रिमें यदि चंद्रमा न दीखे तो तब वर्षा तथा धान्यकी उत्पत्ति अधिक होवे ॥ ३ ॥

नभसश्च तृतीयायां प्रहरे च तृतीयके ॥
उत्तरस्यां घना दृष्टास्तदा स्युः सुखिनो जनाः ॥४॥

भादव वदि तृतीयाको तीसरे प्रहरमें उत्तरकी तर्फ बादल हों तो जगत्में मनुष्य सुखी रहें ॥ ४॥

शनौ भाद्रपदे कृष्णे चतुर्थी यदि जायते ॥
देशभङ्गश्च दुर्भिक्षं लोके भिक्षापि दुर्लभा ॥ ५ ॥

भादव वदि चतुर्थीके दिन शनिवार होवे तब देशका नाश, दुर्भिक्ष होवे, लोकमें भिक्षा मिलनीभी दुर्लभ होजावे ॥ ५ ॥

भाद्रपदाऽष्टमी कृष्णा रोहिणी मन्दसंयुता ॥
शुक्रार्कवारौ स्यातां वा गोधूमानां महर्घता ॥ ६ ॥
तथैव पूर्वयोगेन द्रव्यमेतच्च रक्षयेत् ॥
हरिद्राजीरकं चैव पारदं शीशकं तथा ॥ ७ ॥
कस्तूरीतिलतैलं च गुडहिङ्गुमहर्घता ॥
रक्षयेदात्रिमासांश्च पश्चाद्विक्रियतां ध्रुवम् ॥ ८ ॥

भादवं वदि अष्टमीको रोहिणी नक्षत्र और शनिवार तथा शुक्रवार, सूर्यवार हो तब गेहूं महंगे होवें ॥ ६ ॥ इसी पहले योगसे ही हल्दी, जीरा, पारा, शीशा इन सब वस्तुवोंको ग्रहण करे ॥ ७ ॥ और कस्तूरी, तिल, तैल, गुड, हींग यह सब महंगे होवें, तीन महीने रखकर फिर बेचना ॥ ८ ॥

अमावास्या भाद्रपदे युक्ता स्याद्भानुना यदि ॥
तदा महर्घता ज्ञेया सस्यानां दैवचिंतकैः ॥ ९ ॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं वर्षाया: प्रबलोदय: ॥
सस्योत्पत्तिः प्रजासौख्यं सोमवारे प्रजायते ॥ १० ॥

भादव वदि अमावस्याके दिन सूर्यवार हो तो तृण, धान्य महंगा होवे ऐसा देवज्ञों करिके जानना ॥ ९ ॥ यदि उस दिन सोमवार हो तो सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्यता और भारी वर्षा तथा धान्यकी उत्पत्ति, प्रजाको सुख होवे १०

भाद्रे शुक्लतृतीयायां भौमे चोत्तरफाल्गुनी ॥
तदा वृष्टिकरो नैव प्रोन्नतोऽपि घनाघनः ॥ ११ ॥

भादव शुदि तृतीयाके दिन मंगलवार और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र हो तो बडे २ बादलोंसे भी वर्षा नहीं होवे अर्थात् अनावृष्टि हो ॥ ११ ॥

भाद्रे शुक्ले चतुर्थ्यां चेद्वारा जीवेन्दुभार्गवाः ॥
उत्तराहस्तचित्राभिः सुभिक्षं निश्चयात्तदा ॥ १२ ॥

भादव शुदि चतुर्थीके दिन गुरुवार, चंद्रवार और शुक्रवार हो तथा उत्तरा, हस्त, चित्रा नक्षत्र हों तो निश्चयही सुभिक्ष होवे ॥ १२ ॥

भाद्रे च शुक्लपंचम्यां जलं दत्ते न चेद्घनः ॥
दैवकोपात्तदा ज्ञेयो सज्जनोऽपि च दुर्जनः ॥ १३ ॥

भादव शुदि पंचमीके दिन जो बादल न वर्षे तो दैवकोपसे जानिये कि सज्जनभी दुर्जन होजायंगे ॥ १३ ॥

भाद्रे मासे शुक्लपक्षे यदि षष्ठ्यां च मित्रभम् ॥
तदाभ्रं विद्युदम्भो वा धान्यनिष्पत्तिहेतवे ॥ १४ ॥

भादव शुदि षष्ठीको अनुराधा नक्षत्र हो तब बादल, बिजली वा वर्षा हो तो धान्यकी उत्पत्ति अवश्य होवे ॥ १४ ॥

भाद्रपदे शुक्लपक्षे सप्तमी मैत्रसंयुता ॥
न वृष्टौ नभपर्जन्यो जलाशां मुंच सर्वथा ॥ १५ ॥

भादव शुदि सप्तमीको अनुराधा नक्षत्र हो तब वर्षा न हो तो वर्षा होनेकी आशाको सर्वथा छोडदेनी ॥ १५ ॥

भाद्रे मास्यष्टमी शुक्ला मूलचंद्रार्कसंयुता ॥
तदा च पंचमे मासि शणसूत्रमहर्घता ॥ १६ ॥
भाद्रपदेऽष्टमी शुक्ला चंद्रार्कौ तत्र निर्मलौ ॥
अन्नादिसैंधवं सूत्रं पंचमासे महर्घता ॥ १७ ॥

भादव शुदि अष्टमीके दिन मूलनक्षत्र और सूर्य, चंद्रवार हों तब पांचवें महीनेमें शण सूत्र मँगे होवें ॥ १६॥ उसी अष्टमीको यदि सूर्य, चंद्र निर्मल रहें अर्थात् बादल न हो तो अन्न, सैंधानमक, सूत यह महंगे होवें ॥ १७ ॥

यदा भाद्रपदे मासि संक्रांतौ जलवर्षणम् ॥
तदा भवन्ति रोगाश्च प्राणिनां चाश्विने भयम्॥१८॥

भाद्रपदमासमें संक्रांतिके दिन जल वर्षे तो प्राणियोंको अनेक रोग होवें और आसोजमें भय होवे ॥ १८ ॥

नवम्यां स्वातिसंयोगे भाद्रमासे सिते तदा ॥
तदा सुखमयी भूमिर्घृतधान्यसमन्विता ॥ १९ ॥

भादव शुदि नवमी स्वाती नक्षत्र युक्त हो तो पृथ्वी सुखपूर्ण और घृत, धान्यसे पूर्ण हो ॥ १९ ॥

नवम्यां भाद्रमासस्य वृष्टौ दुष्कालमादिशेत् ॥
एकादश्यां तु तस्यैव धनधान्यसमर्घता ॥ २० ॥

भादव शुदि नवमीके दिन वर्षा हो तो अकाल पडे और एकादशीके दिन हो तो धान्य सस्ता होवे ॥ २० ॥

पूर्णा भाद्रपदे साभ्रा शुभा धान्यस्य विक्रयात् ॥
निर्मलाद्धान्यसंग्राह्यो लाभो भवति नान्यथा॥ २१॥

भादव शुदि पूर्णिमाके दिन बादल, बिजली, गाज आदि हों तो धान्य शीघ्र बेचदे किन्तु निर्मल हो तो संग्रह करनेसे निश्चय लाभ हो ॥ २१ ॥

यदि भाद्रपदे मासि चित्रास्वातिविशाखके ॥
नातिवर्षति पर्जन्यो शान्तमेवान्विनिर्दिशेत् ॥ २२॥

भाद्रपदमासमें चित्रा, स्वाति और विशाखामें वर्षा न हो तो वर्षाकाल समाप्त हुआ जाने ॥ २२ ॥

आश्विनमासफलम् ।

यदा चाश्वयुजे मासि दशम्यां प्रतिपत्तिथौ ॥
अष्टम्यामंबरे मेघाः सत्वरं वृष्टिदायकाः ॥ १ ॥

आसोज वदिमें प्रतिपदा, अष्टमी और दशमीके दिन यदि आकाशमें बादल हो तो शीघ्रही वर्षा होवे ॥ १ ॥

आश्विने हि तृतीयायां यदि भौमशनैश्चरौ ॥
तदा त्वग्निभयं विद्यादथवान्नमहर्घता ॥ २ ॥

आसोज वदि तृतीयाको यदि मंगलवार वा शनिवार होवे तब अग्निका भय होवे अथवा धान्य महंगा होवे ॥ २ ॥

तृतीया रोहिणीयुक्ता शनिभौमसमन्विता ॥
तदा कार्पासकं ग्राह्यं फाल्गुने लाभमादिशेत् ॥ ३ ॥

आसोज बदि तृतीयाके दिन रोहिणी नक्षत्र, शनि, भौमवार होवे तब कपास संग्रह करना फागणमें लाभ होवे ॥ ३ ॥

आश्विनस्य चतुर्थ्यां चेद्बादलान्यरुणोदये ॥
तदा क्षेमाय लोकानां वृष्टिः संजायते शुभा ॥ ४ ॥

आसोज वदि चतुर्थीके दिन सूर्योदयके समय बादल हों तो मनुष्योंका कल्याण हो और वर्षा होवे ॥ ४ ॥

चतुर्थ्यामाश्विने सूर्ये विक्रेतव्यं घृतं जनैः ॥
संगृह्यंते च धान्यानि पुरो लाभाय तान्यपि ॥ ५ ॥

आसोज वदि चतुर्थीके दिन रविवार हो तो मनुष्योंको घृत बेच देना चाहिये, धान्य खरीदनेसे आगे लाभ होगा ॥ ५ ॥

आश्विने कृष्णपंचम्यां रविवारः प्रवर्तते ॥
माघमासे ह्यमावास्यां महर्घं निश्चयाद्घृतम् ॥ ६ ॥

आसोज वदि पंचमी रविवारकी हो तो माघमासको अमावस्याको निश्चय करके घृत तेज हो ॥ ६ ॥

आश्विने मासि कृष्णे च पक्षे चैवाष्टमीतिथौ ॥
महर्घं सूत्रमंजिष्ठौ शनौ वक्रे गुरौ गते ॥ ७ ॥

आसोज वदि अष्टमीके दिन शनि और गुरु यह वक्री होवें तो सूत्र और मंजीठ महंगे होवें ॥ ७ ॥

आश्विनस्यासिते पक्षे दशम्यादि दिनत्रयम् ॥
गर्जितं विद्युदा यत्र गोधूमश्च विनश्यति ॥ ८ ॥

आसोज वदिमें दशमी एकादशी, द्वादशी, इन तीन दिनोंमें यदि बिजली चमके तथा मेघ गर्जे तो गेहूंका नाश होवे ॥ ८ ॥

आश्विनैकादशी कृष्णा वारयोर्बुधसोमयोः ॥
महिषीणां गवां मूल्यं महत्संजायते जने ॥ ९ ॥

आसोज वदि एकादशीके दिन बुधवार वा सोमवार हो तो गाय, भैंस आदि पशुवोंकी महंगी होवे ॥ ९ ॥

द्वादशी शनिना युक्ता हस्तचित्रासमन्विता ॥
तदा युगंधरी ग्राह्या चैत्रे वै त्रिगुणं फलम् ॥ १० ॥

आसोज वदि द्वादशीके दिन शनिवार और हस्त, चित्रा नक्षत्र हो तो ज्वारका संग्रह करे चैत्रमें त्रिगुणा लाभ होवे ॥ १० ॥

आश्विनस्याप्यमावास्यां शनिवारो यदा भवेत् ॥
मध्यमं वर्षमथवा दुष्कालः खण्डमण्डले ॥ ११ ॥

आसोजकी अमावसके दिन शनिवार हो तो मध्यम वर्ष हो अथवा खण्ड-मण्डलमें दुष्काल हो ॥ ११ ॥

आश्विने प्रथमायां चेच्छुक्रायां च गते शनौ ॥
तदा धान्यं च विक्रेयं पुरस्तस्य समर्घता ॥ १२ ॥

आसोज शुदि प्रतिपदाको शनिवार होवे तब संचित धान्य वेच देना, कारण, आगे सस्ता होगा ॥ १२ ॥

आश्विने शुक्लसप्तम्यां सोमे हस्तसमागमे ॥
गंतव्यं मालवस्थाने निर्जला जलदायिनी ॥ १३ ॥

आसोज सुदी सप्तमीके दिन सोमवार और हस्तनक्षत्र होवे तब मालवदेशमें जावे, यह निर्जलस्थानमें भी जल देनेवाली है ॥ १३ ॥

सप्तम्यां शनियुक्तायां सिते पक्षे यदाश्विने ॥
श्रवणं वा धनिष्ठा चेज्जगतो नाशकारणम् ॥ १४ ॥

आसोज सुदि सप्तमीके दिन शनिवार होवे और श्रवण वा धनिष्ठा नक्षत्र होवे तो जगत्के नाशकाही कारण है ॥ १४ ॥

सप्तम्यां शनिभौमौ च यदा वक्रौ च तावुभौ ॥
तदा हाहाकरं लोके विशेषाद्दाक्षिणापथम् ॥ १५ ॥

आसोज सुदि सप्तमीके दिन शनि, मंगल वक्री हों तो जगत्में हाहाकार मच जाय विशेषकरके दक्षिणदेश में ॥ १५ ॥

आश्विने शुक्लसप्तम्यामष्टम्यां वारिवर्षणम् ॥
तदा सुभिक्षमादेश्यं राजानः शांतविग्रहाः ॥ १६ ॥

आसोज सुदि सप्तमी वा अष्टमीके दिन वर्षा हो तो सुभिक्ष होवे और राजाओंका विग्रह शांत होवे ॥ १६ ॥

आश्विने च बुधेऽष्टम्यां विधेयो घृतसंग्रहः ॥
कार्तिके विक्रयस्तस्य संपदः स्युः पदेपदे ॥ १७ ॥

आसोज सुदि अष्टमीको बुधवार हो तो घृतका संग्रह करना चाहिये, कार्तिकमें बेचनेसे महान् लाभ होवे ॥ १७ ॥

नवमी चाश्विने शुक्ले कुजवारेण संगता ॥
गुडः कर्पासचपला माषादेः संग्रहो मतः ॥ १८ ॥
द्विगुणस्तु भवेल्लाभो चैत्रमासेऽथ विक्रये ॥
आश्विने दशमी भौमे भूम्यां व्याधिरबाधितः ॥ १९ ॥

आसोज सुदि नवमी मंगलवार हो तो कपास व उडद आदिका संग्रह करना चाहिये ॥ १८ ॥ चैत्रमें वेचनेसे दूना लाभ हो। और आसोजकी दशमी मंगलको हो तो पृथिवीपर अनेक रोग हों ॥ १९ ॥

एकादश्यां शनौ तस्मिञ्छत्रभंगोऽथवा भुवि ॥
नगरग्रामभंगः स्याद्वैरिचौराद्युपद्रवाः ॥ २० ॥

आसोज सुदि एकादशी शनिवारको हो तो छत्रभंग हो अथवा नगर, ग्राम इनका नाश हो, वैरी तथा चोरोंका उपद्रव हो ॥ २० ॥

शनि शुक्रत्रयोदश्यां यदा चाश्वयुजे भवेत् ॥
तदा संक्रमणं तत्र रवेः सस्याकुला मही ॥ २१ ॥

आसोज सुदि त्रयोदशीके दिन शनिवार हो, उसी दिन संक्रांति लागे तब पृथिवीपर शस्य (तृणधान्य) बहुत होवे ॥ २१ ॥

आश्विनी निर्मला पूर्णा शुभाय जलदोदये ॥
धान्यस्य संग्रहं कुर्याच्चैत्रे वै लाभदो महान् ॥ २२ ॥

आसोजकी पूर्णिमा निर्मल हो तो शुभ है और बादल हों तो धान्यसंग्रह करना चैत्रमें वेचनेसे लाभ होगा ॥ २२ ॥

भान्वस्तसमये मेघाः पर्वताकारसन्निभाः ॥
दृश्यन्ते जलपातः स्यात्तस्मिन्नेव दिने तदा ॥ २३ ॥

आसोजमासमें संध्यासमय पर्वतके आकार बादल होवें तो उसी दिन वर्षा होवे ॥ २३ ॥

आश्विने शनिवक्रे स्याद्बुधो राश्यंतरे व्रजेत ॥
शुक्रश्चास्तमयं याति तदान्नप्लाविता धरा ॥ २४ ॥
शनिराहोश्च तत्रैव संचारो जायते यदि ॥
तैलसूत्रशणादीनां तदा वाच्या महर्घता ॥ २५ ॥

आसोज मासमें शनि वक्री होवे और बुध दूसरी राशिपर जावे तथा शुक्रका अस्त होवे तो अन्नादिक बहुत होवें ॥ २४ ॥ और जो आसोजमें शनि और राहुभी राशिसे दूसरी राशिपर चलें तो सूत्र, शण यह वस्तु महंगी होवें ॥ २५ ॥

आश्विने कार्तिके चैव सूर्यपुत्रं विनिर्दिशेत् ॥
नदीकूपतडागानि सर्वाणि परिशोषयेत् ॥ २६ ॥
म्रियन्ते च तदा गावस्तथान्ये च चतुष्पदाः ॥
देवो न वर्षते तत्र दुर्भिक्षं च महाभयम् ॥ २७ ॥

आश्विन, कार्तिकमें सूर्यके पुत्र उदय होते हैं तब वर्षा नहीं होवे जिससे नदी, कूप, तालाव आदि सूख जावें ॥ २६ ॥ तथा गायें आदि सब पशुओंका नाश होवे और महादुर्भिक्ष पडे ॥ २७ ॥

अथ कार्तिकमासफलम् ।

कार्तिके प्रथमे पक्षे प्रथमा बुधसंयुता ॥
जायते मध्यमा वृष्टिरनावृष्टिः क्वचिद्भवेत् ॥ १ ॥

कार्तिक वदि प्रतिपदाके दिन बुधवार होवे तब मध्यम वर्षा होवे, कहीं अनावृष्टिभी होवे ॥ १ ॥

द्वितीयायां तृतीयायां कार्तिके वृष्टिलक्षणम् ॥
भाविवर्षे बहुजलं न चेत्तस्मिन्नवर्षणम् ॥ २ ॥

कार्तिक वदि द्वितीया, तृतीयाके दिन वर्षा हो तो आगेके वर्षमें बहुत वर्षा होवे, यदि वर्षा न हो तो अनावृष्टि होवे ॥ २ ॥

यदा कार्तिकमासे तु वारिदस्य च गर्जनम् ॥
भवत्यन्नमहर्घत्वं सस्यसम्पत्तिरुत्तमा ॥ ३ ॥

कार्तिकमासमें मेघ गर्जना करें तो धान्यकी उत्पत्ति उत्तम होवे किन्तु धान्य महँगा होजावे ॥ ३ ॥

कार्तिके पंचमी रौद्रयोगे स्यात्तृणसंग्रहः ॥
चतुष्पदेऽन्यथा दुःखं जायतेऽग्रेऽल्पवृष्टिजम् ॥ ४ ॥

कार्तिक वदि पंचमीको आर्द्रा नक्षत्र हो तो आगे वर्षा कम होवे अतः तृणसंग्रह करना चाहिये नहीं तो पशुओंको दुःख होगा ॥ ४ ॥

कार्तिके यदि संक्रान्तेः पर्यन्ते दिवसद्वये ॥
महावृष्टिस्तदा वर्षे शुभा भाविनि वत्सरे ॥ ५ ॥

कार्तिकमें संक्रांतिके दिनसे दो दिन तक महावृष्टि हो तो अगला वर्ष शुभ होवे ॥ ५ ॥

कार्तिके दशमी कृष्णा शनौ रोगकरी जने ॥
रविः कृष्णत्रयोदश्यां यवगोधूममूल्यकृत् ॥ ६ ॥

कार्तिक वदि दशमीको शनिवार हो तो मनुष्योंमें रोग होवे। और कृष्ण त्रयोदशी रविवार हो तो यव, गोधूम तेज हों ॥ ६ ॥

कार्तिके कृष्णदशमी शनौ मेघसमन्विता ॥
महर्घं घृतपूगादेश्चतुर्मासात्तु विक्रयः ॥ ७ ॥

कार्तिक वदि दशमी शनिवारके दिन मेघ हों तो घृत, सुपारी यह महंगे होवें अतः चौथे महीनेमें बेचे ॥ ७ ॥

एकादश्यां कार्तिकस्य यदि मेघः समीक्ष्यते ॥
आषाढे च तदा वृष्टिर्जायते नात्र संशयः ॥ ८ ॥

कार्तिक वदि एकादशीके दिन यदि मेघ दीखें तो आषाढमें उत्तम वर्षा होवे इसमें संदेह नहीं ॥ ८ ॥

कार्तिकस्य त्वमावास्या रविवारेण संयुता ॥
शनिभौमयुता वाऽपि सर्वलोकभयावहा ॥ ९ ॥
पंचाशद्दिवसं वृष्टिर्वर्षे दीपोत्सवे रवौ ॥
सोमे दिनशतं वृष्टिश्चत्वारिंशच्च मङ्गले ॥ १० ॥
बुधे षष्टिदिनैर्वृष्टिरशीतिदिवसैर्गुरौ ॥
शुक्रे दिनानां नवतिः शनौ विंशतिरेव च ॥ ११ ॥

कार्तिककी अमावस्याके दिन रविवार, मंगलवार वा शनिवार हो तो सब लोकोंमें भय होवे ॥ ९ ॥ दिवालीको रविवार हो तो वर्षाकालमें पचास दिन वर्षा हो, सोमवार हो तो शत (सौ)- दिन। मंगलवार हो तो चालीस दिन वर्षा होवे ॥ १० ॥ बुधवार हो तो दो मासतक। गुरुवार हो तो असी दिनतक। शुक्रवार हो तो नव्वे दिनतक और जो शनिवार हो तो वीस दिनतक वर्षा होवे ॥ ११ ॥

तत्र चेद्रविसंक्रातिस्तत्समीपेऽथवा भवेत् ॥
तदा सुखयुता लोकाः सर्वसस्यमहर्घता ॥ १२ ॥

और उसी अमावास्याको अथवा उसके समीप सूर्यकी संक्रांति होवे तो लोग सुखी रहैं परन्तु धान्य महंगा होवे ॥ १२ ॥

कार्तिके चेदमावास्यां शनिश्चान्नविनाशनम् ॥
भौमे भूमौ महावह्नी रविर्युद्धाय भूभृताम् ॥ १३ ॥

कार्तिक वदि अमावास्याको शनिवार हो तो अन्ननाश हो । रविवार हो तो राजाओंमें युद्ध होवे । मंगलवार हो तो अग्निभय होवे ॥ १३ ॥

शनिभौमार्कवारेषु दर्श आयुष्मत्संयुतः ॥
स्वातियुक्तस्तदा चैव दुर्भिक्षं रौरवं भवेत् ॥ १४ ॥

कार्तिककी अमावास्याको शनि, मंगल, रविवार, होवे, आयुष्मान् योग, स्वाति नक्षत्र युक्त होवे तब घोर दुर्भिक्ष पडे ॥ १४ ॥

प्रतिपद्द्वितीया यत्र क्रीडते सुरभी यदि ॥
त्रीणि तत्र प्रवर्द्धंते प्रजा गावो महीपतिः ॥ १५ ॥

कार्तिक सुदि प्रतिपदा, द्वितीया शामिल हो जायँ, उस दिन गौवें क्रीडा करें तो प्रजा, गायें और राजा इन तीनोंकी वृद्धि होवे ॥ १५ ॥

कार्तिकस्य द्वितीयायामुत्तरे चोन्नतो विधुः ॥
संध्यारागो भवेत्तत्र मेघस्य ऋतुमादिशेत् ॥ १६ ॥

कार्तिक सुदि द्वितीयाको चन्द्रमा उत्तरको ऊँचा हो और संध्या फूले तो वर्षाकालमें आगे मेघ वर्षा करें ॥ १६ ॥

कार्तिकस्य सिते पक्षे पंचम्यां सोमवासरः ॥
नरनारीनृपाणां च सर्वत्र सुखदो भवेत् ॥ १७ ॥

कार्तिक सुदि पंचमीको सोमवार हो तो जगत्में नर नारी और राजा लोग सब सुखी होवें ॥ १७ ॥

कार्तिके सप्तमी शुक्ला शनौ धान्यार्थनाशिनी ॥
श्वेतवस्तु महर्घं स्यात् त्रिमासि द्विगुणं फलम् ॥१८॥

कार्तिक सुदि सप्तमीके दिन शनिवार हो तो धान्यका नाश करे और श्वेत वस्तु तेज हो, तीन मासमें दुगुणा लाभ दे ॥ १८ ॥

एकादश्यां कार्तिकस्य यदि वृष्टिर्घनागमः ॥
तदापि चतुरो मासान्वर्षाकाले घनः पतेत् ॥ १९ ॥

कार्तिक शुदि एकादशीके दिन यदि वर्षा वा बादल हों तो आगे वर्षाकालमें चारों ही महीनोंमें वर्षा होवे ॥ १९ ॥

द्वादश्यां कार्तिके मासे शुक्लायां रजनी यदा ॥
सर्वा या निर्मला चैव पुष्पबंधस्तदा भवेत् ॥ २० ॥
पञ्चवर्णास्तथा मेघा विद्युद्वृष्टिः सगर्जिते ॥
द्वादश्यां कार्तिके मासे पुष्पहानिस्तथोच्यते ॥२१॥

कार्तिक सुदि द्वादशीकी रात्रि सब निर्मल हो तो पुष्पबंध होवे ॥ २० ॥ यदि उस दिन पांच वर्णके मेघ, बिजली और वर्षा हों तो पुष्प खुला जाने अर्थात् बादल, बिजली, वर्षा न हों तो श्रेष्ठ है ॥ २१ ॥

ऊर्ज्जस्य शुक्लद्वादश्यां रजनी निर्मला यदि ॥
पूर्णिमा कृत्तिकायुक्ता तदा लोकाः सुखान्विताः२२॥
अथवा भरणी सर्वा कार्तिक्यां भवति ध्रुवम् ॥
दुर्भिक्षं जायते घोरं तथा रोगा भवन्ति हि ॥ २३ ॥
तस्यामेवाश्विनीयोगे सस्यसंपच्च मध्यमा ॥
यदि चेद्रोहिणीयोगो जंतवः क्लेशभागिनः ॥ २४ ॥

कार्तिक शुदि द्वादशीकी रात्रि निर्मल रहे तो उत्तम। और पूर्णिमाके दिन कृत्तिका नक्षत्र हो तो लोकमें सुख होवे ॥ २२ ॥ अथवा भरणी नक्षत्र उस दिन हो तो निश्चय, दुर्भिक्ष हो और रोगभी हो ॥ २३ ॥ तथा जो पूर्णिमाको अश्विनी नक्षत्र हो तो तृण संज्ञक धान्य मध्यम होवे। और जो रोहिणी नक्षत्र हो तो प्राणियोंको क्लेश होवे ॥ २४ ॥

यदा कार्तिकमासे तु ग्रहणं चंद्रसूर्ययोः ॥
निर्घातो भूमिकंपश्च तारकापतनं तथा ॥ २५ ॥

उल्कापातो रजःपातो ह्यनभ्रे जलवर्षणम् ॥
एते चान्ये तथोत्पाताः प्रभवंति पुरोदिताः ॥ २६ ॥
संग्रहः सर्वधान्यानां कर्तव्यो धनकांक्षिभिः ॥
विक्रीते पंचमे मासि लाभश्च द्विगुणो भवेत् ॥ २७ ॥

कार्तिक मासमें सूर्य चंद्रमाका ग्रहण होवे, बिजली गिरे, भूकंप हो तथा तारे टूटें ॥२५ ॥ उल्कापात हो, धूलकी वर्षा हो, विना बादलके वर्षा हो यह उत्पात हों,इनसे अन्यभी उत्पात हों तो॥२६॥धनलाभकी इच्छावाला मनुष्य सब धान्योंका संग्रह करे पांचवें मासमें बेचनेसे दूना लाभ होवे ॥ २७ ॥

चत्वारो ऋक्षमादेश्याश्चत्वारः पादसंख्यया ॥
अर्द्धं ह्यर्द्धदिने देवि पादवेधं च दृश्यते ॥ २८ ॥
षष्टि घटिकास्तथा भुक्तिर्ऋक्षैकं च तिथिस्तदा ॥
तेन मानेन देवेशि पुष्पसंज्ञा प्रकीर्तिता ॥ २९ ॥

पूर्णिमा और नक्षत्र दोनोंकी साठि साठि घडी हों तो पूर्ण तथा तीस तीस घडि हों तो आधा और पंद्रह पंद्रह घडी हों तो चौथाई फल होवे हे देवि इसप्रकार पादवेध देखना ॥ २८ ॥ इसी प्रकार क्रमसे तिथि और नक्षत्रकी जितनी घडियां होवें उन्हीके अनुसार न्यूनाधिक फल जाने ॥२९॥

मार्गशीर्षमासफलम् ।

मार्गशीर्षप्रतिपदि न विद्युन्नैव गर्जितम् ॥
न वृष्टिश्चेत्तदा गर्भे कुशलं कुशलोदितम् ॥ १ ॥

मार्गशीर्ष वदि प्रतिपदाके दिन न तो बिजली चमके, न गर्जना हो और न वर्षा हो तो गर्भोंका कुशल रहे ॥ १ ॥

चतुर्थ्यामथ पञ्चम्यां मार्गशीर्षस्य वारिदः ॥
तदा भाविनि वर्षे स्याद्वर्षा पूर्णा महीतले ॥ २ ॥

मार्गशीर्ष वदि चतुर्थी और पंचमीके दिन बादल हों तो अगले वर्षमें पूर्ण वर्षा होवे ॥ २ ॥

मार्गकृष्णचतुर्थ्यां च पित्रर्क्षे मेघदर्शनम् ॥
अथवा जलपातः स्यात्तदाषाढे च वर्षणम् ॥ ३ ॥

मार्गशीर्ष वदि चतुर्थीको मघा नक्षत्र हो और उस दिन मेघ दीखे अथवा वर्षा हो तो आषाढमें वर्षा होवे ॥ ३ ॥

चतुर्थी सार्पसंयुक्ता पंचमी पितृसंयुता ॥
षष्ठी च भगसंयुक्ता मार्गे मासि यदा भवेत् ॥ ४ ॥
त्रिरात्रं महती वृष्टिराषाढे शुक्लपक्षके ॥
समर्घता च सस्यानामादेश्या गणकोत्तमैः ॥ ५ ॥

मार्गशीर्ष वदि चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, इन तीन तिथियोंमें क्रमसे आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र हो तो ॥ ४ ॥ आषाढ सुदिमें तीन रात्रि बहुत वर्षा होवे जिससे तृण, धान्य सस्ते होवें ऐसा दैवज्ञोंने कहा है ॥ ५ ॥

मार्गशीर्षस्य सप्तम्यां निर्मलं चेद्दिवानिशम् ॥
धान्यं समर्घं वैशाखे साभ्रतायां महर्घता ॥ ६ ॥

मार्गशीर्ष वदि सप्तमीके दिन दिनरात बादल न हो तो वैशाखमें धान्य सस्ता हो तो महंगा होवे ॥ ६ ॥

मार्गकृष्णाष्टमी स्वातिचित्रायुक्ता भवेद्यदि ॥
मेघाक्रांतं नभस्तस्यां दृश्यते सर्वदा यदि ॥ ७ ॥
तस्मिन्नृक्षे तदाषाढे जायते वृष्टिरुत्तमा ॥
सर्वसस्ययुता पृथ्वी प्रजा नन्दंति नित्यशः ॥ ८ ॥

मार्गशीर्ष वदि अष्टमीके दिन स्वाति वा चित्रा होवे और दिनभर बादल रहें तो आषाढमें वही स्वाती और चित्रामें वर्षा होवे जिससे तृण, धान्य बहुत होवें, प्रजा आनंदमें रहें ॥ ७ ॥ ८ ॥

नवम्यां मार्गचित्रायां धान्यं महर्घमादिशेत् ॥
कृष्णा चतुर्दशी स्वाती श्रावणे जलशोधिनी ॥ ९ ॥

मार्गशीर्ष वदि नवमीको चित्रा हो तो धान्य तेज हो और चतुर्दशीको स्वाति नक्षत्र हो तो श्रावणमें जल नहीं वर्षे ॥ ९ ॥

मार्गशीर्षस्य दशमी मूले वा रविणा युता ॥
संग्राह्याश्च तिलास्तैलं ज्येष्ठांते लाभदायकाः ॥ १० ॥

मार्गशीर्ष वदि दशमी मूलयुक्त हो वा रविवारी हो तो तिल, तैल संग्रह करना चाहिये, आगे ज्येष्ठमें लाभ होगा ॥ १० ॥

मार्गे यदि स्यादादित्य एकादश्यां तिथौ तदा ॥
कार्पासादिकसूत्राणि ग्राह्यं वैशाखलाभकृत् ॥ ११ ॥
अथवा दैवयोगेन शनिवारस्य संगमः ॥
जलशोषः प्रजानाशश्छत्रभंगस्तदा भवेत् ॥ १२ ॥

मार्गशीर्ष वदि एकादशी यदि रविवारको हो तो कपास, सूत्र इनका संग्रह करना वैशाखमें लाभदायक है ॥ ११ ॥ अथवा दैवयोगसे शनिवार हो तो जलका नाश, प्रजाका विनाश और छत्रभंग हो ॥ १२ ॥

मार्गशीर्षे कृष्णपक्षे तिथिवृद्धिश्च जायते ॥
तदा युद्धाकुला पृथ्वी प्रजाः क्रंदंति नित्यशः ॥ १३ ॥

मार्गशीर्ष वदिमें तिथि बढे तो पृथिवीपर युद्ध होवें और प्रजा रोवें॥१३॥

मार्गस्य कृष्णैकादश्यामस्तं याति बुधो यदि ॥
धान्यस्य संग्रहं कुर्याल्लाभो भवति निश्चयः ॥ १४ ॥

मार्गशीर्ष वदि एकादशीको यदि बुधका अस्त हो तो धान्यका संग्रह करना चाहिये, निश्चय लाभ होगा ॥ १४ ॥

द्वादश्यां मार्गशीर्षस्य भौमवारेऽर्कसंक्रमे ॥
भाविवर्षविनाशाय ग्रहणं शीतगोस्तथा ॥ १५ ॥

मार्गशीर्ष वदि द्वादशी मंगलके दिन सूर्यसंक्रांति लगे तो आगेको वर्ष विनाश करे, यदि उस मासमें चंद्रग्रहण हो तो ॥ १५ ॥

मार्गे कृष्णत्रयोदश्यां हिमं पतति भूतले ॥
तदा वसुंधरा पूर्णा धनधान्यैरलंकृता ॥ १६ ॥

मार्गशीर्ष वदि त्रयोदशीके दिन यदि वर्फ गिरे तो पृथिवी धन, धान्यसे पूर्ण होजावे ॥ १६ ॥

मार्गे कृष्णचतुर्दश्यां स्वातीऋक्षं प्रजायते ॥
तदा वै श्रावणे मासे वृष्टिर्नैव भविष्यति ॥ १७ ॥

मार्गशीर्ष वदि चतुर्दशीके दिन स्वाती नक्षत्र हो तो श्रावणमासमें वर्षा नहीं होवे ॥ १७ ॥

मार्गशीर्षे चतुर्दश्यां दर्शे वा दृश्यते यदा ॥
घनैराच्छादितो भानुस्तदा सस्यमहर्घता ॥ १८ ॥

मार्गशीर्ष वदि चतुर्दशीको और अमावास्याके दिन सूर्य बादलोंसे आच्छादित रहे तो तृण, धान्य महंगा होवे ॥ १८ ॥

मार्गशिरःसितपक्षे प्रतिपत्प्रभृति क्षपाकरेषाढ्याम् ॥
पूर्वं वा समुपगते गर्भाणां लक्षणं ज्ञेयम् ॥ १९ ॥
यन्नक्षत्रमुपगते गर्भश्चंद्रे भवेत्स चंद्रवशात् ॥
पंचनवतिदिनशते तत्रैव प्रसवमायाति ॥ २० ॥

मार्गशीर्ष शुदि प्रतिपदाके उपरांत जब चंद्रमा पूर्वाषाढापर स्थित हो उसी समयसे गर्भका लक्षण जानना चाहिये ॥ १९ ॥ चंद्रमाके जिस नक्षत्रपर स्थित होनेसे गर्भ हो, फिर एकसौ पंचानवे दिन अर्थात् साढे छे मास बीतनेपर जब उसी नक्षत्रपर चंद्र आवे तो प्रसव होता है ॥ २० ॥

मार्गशुक्लद्वितीयायां शनिवारोऽथ दक्षिणः ॥
वातो वहति लोकानां तदा कष्टप्रदायकः ॥ २१ ॥

मार्गशीर्ष शुदि द्वितीयाको शनिवार होवे और दक्षिणका पवन चाले तो लोकमें कष्टको देनेवाला है ॥ २१ ॥

मार्गशीर्षादिमासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षयः ॥
छत्रभंगं प्रजापीडां दुर्भिक्षं च समादिशेत् ॥ २२ ॥

मार्गशीर्ष और पौष आदि महिनोंके शुक्ल पक्षमें तिथि घटे तो छत्रभंग, प्रजापीडा और दुर्भिक्ष होवे ॥ २२ ॥

मार्गशीर्षे धनुषि हि यदाऽऽयाति दिवाकरः ॥
तदा दुर्भिक्षकं ज्ञेयं विपरीतात्सुखं भवेत् ॥ २३ ॥

मार्गशीर्षमासमें धनकी संक्रांति लागे तो दुर्भिक्ष होवे किन्तु न हो तो सुभिक्ष होवे ॥ २३ ॥

गुरुशुक्रोदयश्चास्तो यदा वै मार्गमासके ॥
देशांतरं च गच्छंति तदा क्षुत्पीडिता जनाः ॥२४॥

मार्गशीर्षमासमें गुरु,शुक्रका उदय वा अस्त हो तो मनुष्य भूखे मरते पर-देशोंमें चले जावें ॥ २४ ॥

मार्गशीर्षस्य सप्तम्यां नवम्यामीशदिग्यदि ॥
दृश्यते मेघसंछन्ना स्तोकं वर्षति वारिदः ॥ २५ ॥

मार्गशीर्ष शुदि सप्तमी वा नवमीको ईशान दिशामें बादल होंय तथा बादल दीखें तो आगे वर्षा कम होवे ॥ २५ ॥

मार्गशीर्षस्य चाष्टम्यां दृश्यन्ते विद्युतो यदा ॥
तदा वृष्टिः श्रावणे च मासि संजायते ध्रुवम् ॥ २६ ॥

मार्गशीर्ष शुदि अष्टमीके दिन बिजली चमके तो आगे श्रावण मासमें वर्षा निश्चयही होवे ॥ ॥ २६ ॥

दशम्यामुत्तरो वातः सितायां यदि जायते ॥
मार्गशीर्षे ह्यहोरात्रं तदा शस्तमुदीरितम् ॥ २७ ॥

मार्गशीर्ष शुदि दशमीको दिनरात उत्तरका वायु चाले तो वर्षाके लिये उत्तम है ॥ २७ ॥

मार्गशुक्ल एकादश्यां शनिवारो यदा भवेत् ॥
जलशोषं प्रजानाशं छत्रभङ्गं विनिर्दिशेत् ॥ २८ ॥

मार्गशीर्षशुदि एकादशीके दिन शनिवार हो तो अनावृष्टि, प्रजाका नाश, छत्रभंग और हो ॥ २८ ॥

पौषे समार्गशीर्षे संध्यारागोऽम्बुदाः परिवेषाः ॥
नात्यर्थं मृगशीर्षे शीतं पौषेऽतिहिमपातः ॥ २९ ॥

मार्गशीर्ष तथा पौषमें संध्या फूलना, कुण्डलसे युक्त बादल होना तथा मार्गशीर्षमें शीत और पौषमें अत्यंत हिमका नहीं पडना श्रेष्ठ है ॥ २९ ॥

मार्गशीर्षे च पौषे च अग्निपुत्रान्विनिर्दिशेत् ॥
अग्निदग्धानि राष्ट्राणि हारितानि धनानिच ॥३०॥
विद्रवन्ति तथा देशाः समस्ता भयपीडिताः ॥
अग्निचौरभयं तत्र प्रजानां व्याधयस्तथा ॥ ३१ ॥

मार्गशीर्ष तथा पौषमें अग्निके पुत्र उदय होते है तब अग्नि करके देशोंका नाश होवे तथा चोरोंका भय होवे ॥ ३० ॥ देशभयसे पीडित होकर भ्रमते फिरे और प्रजामें अनेक रोग होवे ॥ ३१ ॥

पौषमासफलम् ।

पौषकृष्णप्रतिपदि रोहिण्यां भोगसंभवे ॥
सप्तमासाद्धान्यलाभश्छत्रभंगोऽथवा भवेत् ॥ १ ॥

पौष वदि प्रतिपदाके दिन रोहिणी नक्षत्र हो तो सात महीने धान्यसे लाभ हो अथवा छत्रभंग हो ॥ १ ॥

पौषस्य पंचमी कृष्णा भौमवारेण संयुता ॥
तस्यां मेघाः प्रवर्षंति तदा धान्याकुला मही ॥ २ ॥

पौषवदि पंचमी मंगलवारको होवे इसी दिन मेघ वर्षा करे तो पृथ्वीपर धान्य बहुत होवे ॥ २ ॥

सप्तमी सोमवारेण पौषमासे यदा भवेत् ॥
तदा च महिषीवृंदं म्रियते रोगपीडितम् ॥ ३ ॥

पौषवदि सप्तमीके दिन सोमवार होवे तब भैंस रोगसे पीडित होकर मरें ॥ ३ ॥

पौषकृष्णस्य सप्तम्यां वारिवाहा महानिशि ॥
यदा वर्षंति गर्जंति तदा प्रावृषि तोयदाः ॥ ४ ॥

पौषवदि सप्तमीके दिन आधी रातके समय जो वर्षा होवे और मेघ गर्जना कर तथा वर्षे तो वर्षाकालमें वर्षा होवे ॥ ४ ॥

कृष्णाऽष्टम्यां पौषमासे यदा वृष्टिर्न जायते ॥
तदाऽऽर्द्राऽर्कसमायोग एकीकुर्याज्जलैः स्थलम्॥५॥
पौषस्य कृष्ण अष्टम्यां निशीथे गर्जिते घने ॥
वर्षाकाले चतुर्मासे सुजलं वर्षते घनः ॥ ६ ॥

पौषवदि अष्टमीके दिन वर्षा नहीं होवे तो आगे सूर्यके आर्द्रा नक्षत्रमें वर्षा अधिक होवे ॥ ५ ॥ उसी अष्टमीके दिन रात्रिमें मेघ गर्जना करें तो वर्षाकालके चारोंही मासमें वर्षा उत्तम होवे ॥ ६ ॥

पौषमासे कृष्णपक्षे नवम्यां च घना यदि ॥
पूर्वस्यां दिशि गर्जंति तदा सस्यविनाशकाः ॥ ७ ॥

पौषवदि नवमीके दिन जो पूर्व दिशामें वादल होवें और गर्जना करें तो तृण, धान्यका नाश होवे ॥ ७ ॥

पौषे कृष्णे दशम्यां स्याद्विशाखा निशि वा दिवा ॥
भाविवर्षेऽम्बुदः प्रौढया सत्यं सत्यं नचान्यथा ॥ ८ ॥
पौषे कृष्णदशम्यां चेद्रात्रौ वर्षति वारिदः ॥
तदा भाद्रपदे मासि वृष्टिर्भवति भूयसी ॥ ९ ॥

पौष वदि दशमीके दिन विशाखा नक्षत्र दिन वा रात्रिमें हो तो आगेके वर्षमें अधिक वर्षा होवे ॥ ८ ॥ यदि दशमीको रात्रिमें वर्षा हो तो आगे भादवमें बहुत वर्षा होवे ॥ ९ ॥

एकादश्यां पौषकृष्णे दक्षिणः पवनो यदा ॥
विद्युज्जलदसंयुक्तस्तदा दुर्भिक्षकारकः ॥ १० ॥

पौषवदि एकादशीके दिन यदि दक्षिणका पवन चले और बिजली, बादल भी हों तो दुर्भिक्ष होवे ॥ १० ॥

कुहून्तासु त्रितिथिषु पौषे गर्भः प्रजायते ॥
तदा सुभिक्षमारोग्यं श्रावणे वारिवर्षणम् ॥ ११ ॥

पौषवदि त्रयोदशी, चतुर्दशी और अमावास्या इन तीनों दिनोंमें जो गर्भ होवे तो सुभिक्ष, आरोग्य हो और श्रावणमें वर्षा हो ॥ ११ ॥

अमावास्या सहस्यस्य शनिसूर्यारवासरे ॥
यदि स्याद्भयमादेश्यं तदा सस्यमहर्घता ॥ १२ ॥

पौषवदि अमावास्याके दिन यदि शनि, सूर्य, मंगलवार होवे तो भय उपजे और तृणसंज्ञक धान्य तेज होवे ॥ १२ ॥

पौषस्य यद्यमावास्या ज्येष्ठानक्षत्रसंयुता ॥
तदा सस्यमहर्घत्वं मूलयुक्ताऽल्पमूल्यदा ॥ १३ ॥
अथास्मिन्नेव योगे तु विद्युदभ्राणि गर्जितम् ॥
वर्षायां चतुरो मासान् दत्ते मेघमहोदयः ॥ १४ ॥

पौषवदि अमावास्याके दिन यदि ज्येष्ठा नक्षत्र होवे तो अन्न महंगा होवे और मूल हो तो सस्ता होवे ॥ १३ ॥ अमावास्याके दिन मूल नक्षत्र हो, उस दिन विजली और मेघोंकी गर्जना हो तो वर्षाकालमें चारोंही महीनोंमें उत्तम वर्षा होवे ॥ १४ ॥

प्रतिपदि द्वितीयायां पौषे विद्युत्प्रदर्शनम् ॥
तदा स्यादन्नसम्पत्तिर्भवेच्छन्ने तथांवरे ॥ १५ ॥

पौष शुदि प्रतिपदा वा द्वितीयाको वादल व विजली दीखे तो आगे अन्न बहुत होवे और वर्षा भी अच्छी होवे ॥ १५ ॥

पौषशुक्लचतुर्थ्यां तु विद्युद्दर्शनमुत्तमम् ॥
तदा विद्युद्घनच्छन्नं दृष्टमिंद्रधनुस्तथा ॥ १६ ॥
धनुर्विद्युद्घनो वापि यद्येकमपि नो भवेत् ॥
पौषमासे तथा वाच्यं वर्षाकाले ह्यवर्षणम् ॥ १७ ॥

पौषशुदि चतुर्थीके दिन विजली दीखे तो उत्तम है तथा विजली चमके, वादल होवे, धनुष दीखे तो बहुतही उत्तम है ॥ १६ ॥ यदि उस दिन विजली, बादल वा धनुष एकभी न हो तो वर्षाकालमें आगे अनावृष्टि कहना ॥ १७ ॥

पौषमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां हिमवर्षणम् ॥
तदा स्यान्महती वृष्टिः प्रावृट्काले न संशयः ॥ १८ ॥

पौषसुदि पंचमीके दिन यदि बर्फ पडे तो निःसंदेह वर्षाकालमें बहुत वर्षा होवे ॥ १८ ॥

सप्तम्यादित्रये पौषे शुक्ले विद्युच्च गर्जितम् ॥
तदा मेघस्य गर्भः स्यादचलाः सुखसम्पदः ॥ १९॥

पौषसुदि सप्तमी, अष्टमी और नवमीको बिजली चमके वा गाजे तो आगे मेघगर्भ वर्षे और सुख, सम्पत्ति होवे ॥ १९ ॥

पौषस्य सप्तमी शुक्ला रेवतीसंयुता यदा ॥
अष्टम्यामश्विनीयोगो नवम्यां भरणी यदा ॥ २० ॥
एवंविधेषु योगेषु सविद्युद्घनदर्शनम् ॥
तदा स्यान्महती वृष्टिर्वर्षाकाले न संशयः ॥ २१ ॥

पौषसुदि सप्तमीको रेवती नक्षत्र होवे, अष्टमीके दिन अश्विनी होवे और नवमीके दिन भरणी होवे ॥ २० ॥ ऐसे इन तीनों दिनोंमें जो एक कोई भी दिन बिजली तथा बादल हों तो चातुर्मासमें बहुत वर्षा होवे इसमें संदेह नहीं ॥ २१ ॥

एकादश्यां पौषशुक्ले कृत्तिकाभोगतः स्मृतः ॥
रक्तवस्तुमहाँल्लाभः सुधान्यात्प्रथमाम्बुदे ॥ २२ ॥

पौषसुदि एकादशीके दिन कृत्तिका हो तो लालवस्तुसे लाभ हो । और पहले मेघतक धान्यसे लाभ हो ॥ २२ ॥

एकादश्यां यदा विद्युद्रोहिण्यां जलदर्शनम् ॥
पौषे यदा तदा वृष्टिः प्रावृषि स्यात्समर्थिता ॥२३॥

पौषसुदि एकादशीको रोहिणी होवे तब बिजली चमके अथवा वर्षा होवे तो चातुर्मासमें अच्छी वर्षा होवे ॥ २३ ॥

शुक्लत्रयोदशी पौषे मंदशुक्रकुजैर्युता ॥
यदि वर्षति जीमूतः कार्यो गोधूमसंग्रहः ॥ २४ ॥

पौषसुदि त्रयोदशीके दिन मंगल, शुक्र वा शनिवार होवे और मेघ वर्षे तो गेहूं संग्रह करनेसे लाभ होवे ॥ २४ ॥

पौषे शुक्लचतुर्दश्यां विद्युद्दर्शनमुत्तमम् ॥
कृष्णे पक्षे तथाषाढे भवेन्मेघमहोदयः ॥ २५ ॥

पौषसुदि चतुर्दशीको बिजली चमके तो आगे आषाढवदिमें बहुत अच्छी वर्षा होवे ॥ २५ ॥

पौर्णमास्यां यदा पौषे चंद्रमा नैव दृश्यते ॥
उत्तरस्यां दक्षिणस्यां यदा विद्युत्प्रदर्शनम् ॥ २६ ॥
अभ्राच्छन्नं नभो वापि महावृष्टिस्तदा भवेत् ॥
अमायां स्याच्छ्रावणस्य नूनं भाविनि वत्सरे ॥२७॥

पौषकी पूर्णिमाको रात्रिमें यदि चन्द्रमा बादलोंसे ढका हुआ रहे और उत्तर वा दक्षिणकी तर्फ बिजली चमके ॥ २६ ॥ तथा आकाश मेघोंसे आच्छादित हो तो श्रावण वदि अमावस्याको बहुत वर्षा होवे ॥ २७ ॥

पौषमासेऽर्कसंक्रांतौ रविवारो यदा भवेत् ॥
धान्यमूल्यं द्विगुणितं तदा भवति नान्यथा ॥ २८॥
शनिवारे त्रिगुणितं भूमिपुत्रे चतुर्गुणम् ॥
बुधभृग्वोः समत्वं च तुल्यार्द्धं शशिजीवयोः ॥ २९ ॥

पौषमासमें संक्रांतिके दिन जो रविवार हो तो धान्यका मूल्य द्विगुणा होवे इसमें विपरीत नहीं होवे ॥ २८ ॥ शनिवार हो तो तिगुणा तथा मंगलवार हो तो चौगुणा और बुध, शुक्रवार हो तो समानभाव रहे तथा चन्द्रवार, गुरुवार हो तो वर्तमानसे आधा मूल्य रहे, सस्ता हो जावे ॥ २९ ॥

पौषमासे पूर्वभाद्रं विशेषेण निरीक्षयेत् ॥
परिवेषो गर्जनं वा विद्युद्वारिप्रदर्शनम् ॥ ३० ॥
यदि तत्र प्रजायंते तदा च वृष्टिरुत्तमा ॥
दुर्भिक्षं स्यान्न संदेहस्तद्दिने व्यत्ययो भवेत् ॥ ३१ ॥

पौषमासमें पूर्वाभाद्रपदाके दिन सावधान होकर देखे जो सूर्यके मण्डल होवे वा मेघ गर्जे वा बिजली चमके तो ॥ ३० ॥ आगे चातुर्मासमें उत्तम वर्षा हो यदि ऐसा न हो तो दुर्भिक्ष होवे इसमें सदेह न करे ॥ ३१ ॥

धनराशिगते भानौ मूलमारभ्य चिंतयेत् ॥
गर्भाधानं ततो वृष्टिः षष्ठे मासे हि सार्धके ॥ ३२ ॥

पौषमें धनराशिके सूर्यमें मूलनक्षत्रको आदि लेके गर्भाधान अर्थात् सजलमेघोंका विचार करे जिससे साढे छै मासमें वृष्टिको विचारे ॥ ३२ ॥

मूलर्क्षे हि यदा गर्भो भवत्यार्द्रा च वर्षति ॥
पूर्वाषाढे तथादित्यमुत्तरायां तथा गुरुः ॥ ३३ ॥
श्रावणे सार्पभं चैव वासवे पितृभं तथा ॥
वारुणे भाग्यभं चैव पूर्वाभाद्रार्यमाधिपे ॥ ३४ ॥
हस्तो वर्षत्युत्तरायां रेवत्यां वार्धिकस्तथा ॥
एतद्गर्भं समासेन मयोक्तं चिन्तयेत्सुधीः ॥ ३५ ॥

मूलनक्षत्रमें मेघ हों तो आगे वर्षाकालमें आर्द्रानक्षत्रमें वर्षा हो । तथा पूर्वाषाढामें मेघ हो तो पुनर्वसुके सूर्यमें वर्षा होवे, उत्तराषाढामें मेघ हों तो पुष्यमें वर्षा होवे ॥ ३३ ॥ श्रवणमें जो मेघ हों तो आश्लेषामें वर्षा होवे । धनिष्ठामें मेघ हों तो मघामें वर्षा होवे । शतभिषामें मेघ हों तो पूर्वामें वर्षा होवे, पूर्वाभाद्रपदामें गर्भ हों तो उत्तराफाल्गुनी वर्षे ॥ ३४ ॥ उत्तराभाद्रपदमें मेघ हों तो हस्तके सूर्यमें वर्षा होवे । रेवतीमें मेघ हों तो चित्रा, स्वातिमें वर्षा होवे । यह मेरा संक्षेपसे कहा जो गर्भविचार तिसको बुद्धिमान् पण्डित विचारें ॥ ३५ ॥

केतूदये पौषमासे वह्निपुत्रोदयः स्मृतः ॥
देशदाहश्चौरभयं प्रजापीडातिदारुणा ॥ ३६ ॥
शुक्लपक्षे यदा शुक्रोप्यस्तमेति उदेति वा ॥
राजपुत्रसहस्राणां मही पिबति शोणितम् ॥ ३७ ॥

पौषमासमें अग्निके पुत्र केतु उदय हों तो देशदाह, चौरोंका भय, प्रजाको बहुत पीडा हो ॥ ३६ ॥ पौष सुदिमें यदि शुक्रका उदय वा अस्त हो तो हजारहां राजपुत्रोंका पृथ्वी रुधिर पीवे ॥ ३७ ॥

यदि भवति शशांके मण्डले चण्डरश्मौ रविशनिकुज-
वारे पौषमासे त्वमायाम् ॥ द्विगुणदहनवेदैस्तुल्यते रत्न-
मौल्यं बुधगुरुभृगुसोमे स्वल्पमौल्यं हि धान्यम् ॥३८॥
रविशशिपरिवेषे पूर्वयामे च पीडा रविशशिपरिवेषे
मध्यमे चाल्पवृष्टिः ॥ रविशशिपरिवेषे धान्यनाशस्तृतीये
रविशशिपरिवेषे राज्यभंगश्चतुर्थे ॥ ३९ ॥

पौषवदि अमावास्याको जो रवि, शनि, मंगलवारमें सूर्य, चन्द्रमाके मण्डल होवे तो अन्नका मौल्य दूणा, तिगुणा, चौगुणा हो जावे किन्तु रत्नोंके समान मूल्यकी तुलना करना । और जो बुध, गुरु, भृगुवार होवें तो धान्य सस्ता हो जावे ॥ ३८ ॥ जो सूर्य, चन्द्रमाके मण्डल पहले प्रहरमें होवे तो मनुष्यादिकोंको पीडा होवे । और दूसरे प्रहरमें मण्डल होवे तो कमवर्षा होवे । तथा तीसरे प्रहरमें मण्डल होवे तो धान्यका- नाश होवे, चौथे प्रहरमें मण्डल हो तो राज्यभंग होवे ॥ ३९ ॥

दर्शो वै पौषमासे भवति यदि बलारातिनक्षत्रयुक्तो
देशे सस्यं महर्घं भवति किल तदा मूलयुक्तोऽर्धमौल्यम् ॥
पूर्वाषाढायुतश्चेद्द्विगुणमपयुतो वैश्वदेवेन कुर्यात् दुर्भिक्षं
राष्ट्रभंगो जनपदमरणं नर्तयेत्कौ पिशाचान् ॥ ४० ॥

पौषवदि अमावस्याको ज्येष्ठानक्षत्र हो तो देशोंमें तृण महंगा होवे, मूल नक्षत्र हो तो आधे मौलमें विके और पूर्वाषाढा नक्षत्र हो तो दुगुणा मूल्य होवे, यदि उत्तराषाढा नक्षत्र हो तो दुर्भिक्ष होवे जिससे मनुष्य आदि प्राणी बहुत मरें एवं भूत, पिशाच नाचें ॥ ४० ॥

माघमासफलम् ।

माघादिदिवसे वारो बुधो भवति चेत्तदा ॥
मासत्रयं महर्घं स्याद्द्राविवर्षं विनश्यति ॥ १ ॥
माघस्य प्रतिपत्कृष्णा शनिवारेण संयुता ॥
नीरुजा निर्भया लोका धनधान्यसमाकुलाः ॥ २ ॥

माघमासस्य प्रतिपत्सवाता मेघवर्जिता ॥
यदा याति महर्घत्वं तैलद्रव्यं सुगंधकम् ॥ ३ ॥

माघवदि प्रतिपदा बुधवारकी हो तो तीन मासतक अन्न तेज रहे और आगेका वर्षभी अशुभ होवे । यदि शनिवार हो तो मनुष्य निरोग तथा निर्भय, धनधान्यसे युक्त होवें । यदि प्रतिपदाको पवन चले तथा मेघ न हों तो तैल और सुगंध वस्तु यह महंगी होवें ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

माघासितस्य प्रतिपद्द्वितीया वा तृतीयका ॥
त्रुटिता धान्यसंग्राहे लाभाय वणिजां मता ॥ ४ ॥

माघवदि प्रतिपदा वा द्वितीया वा तृतीया यदि टूटे तो धान्यका संग्रह करना आगे लाभ होगा ॥ ४ ॥

द्वितीया मेघसंयुक्ता धनधान्यविवृद्धिदा ॥
माघमासि तृतीयायां गर्जनं च जलं विना ॥ ५ ॥
संग्रहस्तत्र कर्तव्यो गोधूमस्य यवस्य च ॥
चतुर्थी जलसंयुक्ता नालिकेरोऽर्थदो मतः ॥ ६ ॥

माघवदि द्वितीयाको बादल हों तो धन, धान्यकी वृद्धि हो और तृतीयाको जो विना वर्षा होनेके गर्जै ॥ ५ ॥ तो गेहूं और यवका संग्रह करनेसे लाभ होवे । तथा चतुर्थीको जो मेघ वर्षे तो नारियलसे द्रव्यका लाभ होवे ॥ ६ ॥

चतुर्थी माघमासस्य शनिवारेण संयुता ॥
दुर्भिक्षं मृत्युचौराग्निभयं धान्यविनाशनम् ॥ ७ ॥

माघवदि चतुर्थीको जो शनिवार हो तो दुर्भिक्ष, मृत्यु, चौरभय और धान्यका नाश होय ॥ ७ ॥

पंचमी मेघसंयुक्ता यदा जलविवर्जिता ॥
तदा भाद्रपदे मासि स्वल्पवृष्टिश्च जायते ॥ ८ ॥
षष्ठ्यां निरभ्रं गगनं दिशश्च विमला यदा ॥
संग्रहस्तत्र कर्तव्यः कार्पासस्य हितैषिणः ॥ ९ ॥

माघवदि पंचमीको जो बादल हों और जल न वर्षे तो भाद्रपदमासमें वर्षा कम होवे ॥ ८ ॥ माघवदि षष्ठीको जो बादल न हो और आकाश तथा दिशा निर्मल रहे तो अपने लाभकी इच्छा करनेवाला कपासका संग्रह करे ॥ ९ ॥

षष्ठी च पंचमी चैव कृष्णा माघस्य सप्तमी ॥
शुक्रार्किरविसंयुक्ता तदा युद्धाकुला धरा ॥ १० ॥
एते योगा यदा माघे न भवन्ति कदाचन ॥
भाद्रमासे च गोधूममुद्गधान्यमहर्घता ॥ ११ ॥

माघवदि पंचमी, षष्ठी और सप्तमीको शुक्र, शनि, रविवार हों तो पृथिवीपर युद्ध बहुत होवे ॥ १० ॥ जो माघमासमें यह योग होवे नहीं तो भाद्रपदमें गेहूं, मूंग, धान्य यह महंगे होवें ॥ ११ ॥

सप्तम्यां स्वातियोगे यदि पतति हिमं माघमासान्धकारे
वायुर्वा चण्डवेगः सजलजलधरो वाऽपि गर्जत्यजस्रम् ॥
विद्युन्मालाकुलं वा यदि भवति नभो नष्टचंद्रार्कतारं
विज्ञेया प्रावृडेषा मुदितजनपदा सर्वसस्यैरुपेता ॥ १२ ॥

माघवदि सप्तमीको स्वाति नक्षत्र हो और हिम गिरे तथा जोरका पवन चाले, वर्षते हुए बादल गाजे, बिजली बहुत चमके वा दिनरात्रि आकाश बादलोंसे ढकारहे जिससे सूर्य, चंद्रमा तथा तारे नहीं दीखें तो वर्षाकालमें सम्पूर्ण खेतियें उत्पन्न होने योग्य वर्षा होवे और लोक सुखी रहें ॥ १२ ॥

माघमासे तपस्ये वा चैत्राषाढे च माधवे ॥
सप्तम्यां स्वातियुक्तायां लक्षणं च शुभप्रदम् ॥ १३ ॥

माघ, फाल्गुन, चैत्र, आषाढ, वैशाख इन महीनोंमें सप्तमीको स्वाति नक्षत्र होवे तो शुभलक्षणोंका देनेवाला है ॥ १३ ॥

माघमासस्य नवमी दशम्येकादशी तथा ॥
विद्युद्वातसमायुक्ता तदा बहुजलप्रदा ॥ १४ ॥

माघवदि नवमी, दशमी तथा एकादशीको जो बिजली चमके और पवन चले तो बहुत वर्षा होवे ॥ १४ ॥

माघमासे त्रयोदश्यां हिमैराच्छादितं नभः ॥
यदा तदा समर्घंति व्रीह्यो नात्र संशयः ॥ १५ ॥

माघवदि त्रयोदशीके दिन जो हिम (धूमर) पडे और आकाश ढक जावे तो अन्न सस्ता होवे इसमें संदेह नहीं ॥ १५ ॥

ऐंद्री विद्युदमावास्यां दर्शनं वा हिमस्य चेत् ॥
अभ्रच्छन्नं नभो वापि सुभिक्षं जायते तदा ॥ १६ ॥

माघकी अमावास्याको सूर्यमें बिजली चमके और बर्फ पडे, आकाशमें बादल हों तो सुभिक्ष होवे ॥ १६ ॥

माघे शुक्लप्रतिपदि वारा जीवेन्दुभार्गवाः ॥
सुभिक्षाय रणायार्कः कुजे बह्व्यश्चईतयः ॥ १७ ॥
अथवा दैवयोगेन बुधवारो यदा भवेत् ॥
अन्नं महर्घतां याति वर्षे त्वागामिके भयम् ॥ १८ ॥
सूर्यपुत्रो यदा याति कदाचिद्दैवयोगतः ॥
दुर्भिक्षं जायते घोरं न मेघा जलदाः खलु ॥ १९ ॥

माघसुदि प्रतिपदाको गुरुवार, चंद्रवार, शुक्रवार हो तो सुभिक्ष हो, रविवार हो तो युद्ध हो । मंगलवार हो तो ईति भय हो ॥ १७ ॥ अथवा दैवयोगसे बुधवार हो तो अन्न महंगा होवे और आगेके वर्षमें भय होवे॥१८॥ कदाचित् दैवयोगसे शनिवार हो तो घोर दुर्भिक्ष होवे, मेघ वर्षा नहीं करें ॥ १९ ॥

माघशुक्लद्वितीया च तृतीया शुक्रसंयुता ॥
यदा स्यान्मंदसंयुक्ता तदा युद्धाकुला धरा ॥ २० ॥
यदि स्याद्गुरुसंयुक्ता तदा सस्याकुला धरा ॥
राजानस्तत्र सुखिनः प्रजा नन्दन्ति नित्यशः ॥ २१ ॥

माघसुदि द्वितीया, तृतीयाको शुक्रवार, शनिवार हो तो पृथिवीपर युद्ध होवे ॥ २० ॥ यदि गुरुवार हो तो तृण बहुत उपजे और राजा लोग सुखी होवें प्रजा आनंद युक्त रहें ॥ २१ ॥

माघस्य शुक्लपंचम्यां वृष्टियुक्तोत्तरानिलः ॥
अनावृष्टिं भाद्रपदे कुर्याद्धान्यमहर्घताम् ॥ २२ ॥
माघस्य शुक्लपंचम्यां यद्यभ्रं जायते नभः ॥
तदा वृष्टिर्भवत्येव भाद्रे वै कृष्णपक्षके ॥ २३ ॥

माघशुदि पंचमीके दिन वर्षाके साथ उत्तरका पवन चाले तो भाद्रपदमें अनावृष्टि और धान्य महंगा होवे ॥ २३ ॥ माघसुदि पंचमीके दिन यदि आकाशमें बादल हों तो भादववदिमें वर्षा होवे ॥ २३ ॥

सप्तम्यां सोमवारः स्यान्माघे पक्षे सिते यदि ॥
दुर्भिक्षं जायते रौद्रं विग्रहोपि च भूभुजाम् ॥ २४ ॥
माघस्य शुक्लसप्तम्यां रविवारो भवेद्यदि ॥
दुर्भिक्षं हि महाघोरं विग्रहं च महाभयम् ॥ २५ ॥
माघे शुक्लेऽथ सप्तम्यां सोमवारे च रोहिणी ॥
राज्ञां युद्धं प्रजारोगो ह्यथवा वर्षमुत्तमम् ॥ २६ ॥
माघमासस्य सप्तम्यां भरणी यदि जायते ॥
रोगनाशस्तदा लोके वसुधा बहुधान्यभृत् ॥ २७ ॥

माघसुदि सप्तमीको सोमवार हो तो घोर दुर्भिक्ष हो और राजाओंमें विग्रह होवे ॥ २४ ॥ उस दिन रविवार हो तो भी दुर्भिक्ष,विग्रह और भय हो॥२५॥ उसी सप्तमीको सोमवार व रोहिणी नक्षत्र हो तो राजाओंमें युद्ध होवे और प्रजाओंको रोग हो। अथवा वर्ष उत्तम हो ॥ २६ ॥ उसी दिन सप्तमीको भरणी हो तो रोगनाश होवे और पृथिवीपर बहुत धान्य होवे ॥ २७ ॥

शुक्लपक्षस्य सप्तम्यां माघे व्योमान्वितं घनैः ॥
पुरो वातोथ कौबेरो वारुण्यां चंचला यदि ॥ २८ ॥
हिमं पतति वा तत्र वांति वातास्तदोद्धताः ॥
तदा सुभिक्षमादेश्यं तस्मिन्देशे विचक्षणैः ॥ २९ ॥

माघसुदि सप्तमीके दिन जो बादल होवें और पूर्वका वा उत्तरका पवन चाले तथा जो पश्चिममें बिजली चमके ॥ २८ ॥ अथवा हिम (पाला) पडे वा जोरका पवन चाले तो उस देशमें सुभिक्ष हो, ऐसा पण्डितों करके कहना ॥ २९ ॥

सप्तम्यादित्रये माघे शुक्ले जलदयोगतः ॥
धनधान्यसमृद्धिः स्याद्विवाहाद्युत्सवो जने ॥ ३० ॥

माघसुदि सप्तमी, अष्टमी, नवमीको बादल हों तो धन, धान्यकी समृद्धि हो और मनुष्योंमें विवाहादि उत्सव होवें ॥ ३० ॥

शुक्लपक्षस्य सप्तम्यां माघे मासे तु वर्षति ॥
दुर्दिनं वा यदा पश्येद्वर्षाकाले तु नो भवेत् ॥ ३१ ॥

माघसुदि सप्तमीके दिन वर्षा हो वा दुर्दिन हो वा निर्मलता हो तो आगे अनावृष्टि होवे ॥ ३१ ॥

माघमासे सिते पक्षे सप्तम्यादिदिनाष्टके ॥
साभ्रेण चातिवृष्टिः स्यादनावृष्टिर्निरभ्रके ॥ ३२ ॥

माघसुदि सप्तमीसे चतुर्दशीतकके आठ दिनोंमें बादल हो तो बहुत वर्षा किन्तु नहीं हो तो अनावृष्टि होवे ॥ ३२ ॥

माघमासे च सप्तम्यामत्यभ्रं चेद्भवेत्तदा ॥
आषाढादौ प्रतिप्रोक्तं वृष्टिबाहुल्यमुत्तमम् ॥ ३३ ॥
सप्तमी निर्मला चेद्वा चाष्टमी साभ्रका यदि ॥
तदाषाढमतिक्रम्य श्रावणे वृष्टिमादिशेत् ॥ ३४ ॥
नवमी निर्मला वै स्यात्पूर्वे यामे च साभ्रकम् ॥
तदा भाद्रपदे वृष्टिर्भवन्तेऽपि सरांसि च ॥ ३५ ॥
नवमी निर्मला वै स्यात्साभ्रा किंचिन्न विद्यते ॥
तदा जलं न कुत्रापि प्राप्यते सागरं विना ॥ ३६ ॥

माघसुदि सप्तमीके दिन सूर्य बादलोंसे ढका रहे तो आषाढमासमें बहुत वर्षा होवे ॥ ३३ ॥ यदि सप्तमीके दिन बादल नहीं होवे किन्तु अष्टमीके दिन बादल हो तो आगे वर्षा श्रावणमें होवे ॥ ३४ ॥ यदि नवमीके दिन चौथे प्रहरमें बादल हो तो भाद्रपदमें इतनी वर्षा होवे कि तालाव फूटजावें ॥३५॥ यदि नवमीके दिन बादल कुछ भी न हो तो फिर जल समुद्रके विना कहीं भी नहीं मिले अर्थात् वर्षा नहीं होवे ॥ ३६ ॥

माघे शुक्ले यदाऽष्टम्यां कृत्तिका यदि नो भवेत् ॥
फाल्गुने रोलिकापातः श्रावणे वा न वर्षणम् ॥ ३७ ॥

माघसुदि अष्टमीके दिन यदि कृत्तिका न हो तो श्रावणमें अनावृष्टि होवे और फाल्गुनमें यव, गेहूंमें रोलीसे हानि होवे ॥ ३७ ॥

नवमी शशाङ्कयोगेन मण्डलं कुरुते यदि ॥
आषाढे सकले वृष्टिर्लोके धान्यमहर्घता ॥ ३८ ॥

माघसुदि नवमीको रात्रिमें चद्रमाके कुण्डल हो तो आषाढमें वर्षा होवे किन्तु धान्य महंगा होवे ॥ ३८ ॥

माघनवम्यां शुक्ले परिवेषः शशिनि दृश्यतेऽवश्यम् ॥
आषाढे वर्षति तदा मेघमहोदयो भवति ॥ ३९ ॥

माघसुदि नवमीके दिन जो चंद्रमाके मण्डल हो तो आगे आषाढमें बहुत वर्षा होवे ॥ ३९ ॥

माघे दशम्यां हि शुभाय वर्षा तद्वन्नवम्यां यदि चेन्न वर्षा ॥
हर्षाय तर्षातिशयो न कश्चिद्वर्षागमे मेघमहोदयेन ॥ ४० ॥

माघसुदि दशमीके दिन वर्षा हो तो शुभ है । तैसेही नवमीको वर्षा नहीं हो तो शुभ है, आगे प्रसन्नता और मेघकी महाप्राप्ति हो ॥ ४० ॥

माघमासे चतुर्दश्यां प्रहरे यत्र वारिदम् ॥
वर्षाकाले तत्र मासे न वर्षति पयोधरः ॥ ४१ ॥

माघसुदि चतुर्दशीको बादल दिनके पहले प्रहरमें हो, आषाढमें दूसरे प्रहरमें हो, श्रावणमें तीसरे प्रहरमें हो, भादवमें चौथे प्रहरमें हो तो आसोजमें वर्षा नहीं होवे किन्तु निर्मल हो तो चारोंही महीनोंमें वर्षा होवे ॥ ४१ ॥

साभ्रायां माघपूर्णायां धान्यसंग्रह इष्यते ॥
विक्रयः सप्तमे मासे तस्य लाभाय संभवेत् ॥ ४२ ॥

माघकी पूर्णिमाके दिन बादल हो तो धान्यका संग्रह करना, सातवें महीनेमें बेचनेसे लाभ होगा ॥ ४२ ॥

हिमं न पतितं माघे ज्येष्ठे मूलं च वर्षति ॥
नार्द्रायां पतितं वारि कालो दुष्टस्तदा मतः ॥ ४३ ॥
माघमासे च संक्रांतौ यदि वर्षति वारिदः ॥
तदा पृथ्वी तु शस्याढ्या धेनवो बहुदुग्धदाः ॥४४॥

माघमासमें हिम (धूमर) न पडे और ज्येष्ठा और मूल नक्षत्रमें वर्षा होवे तथा आर्द्रामें वर्षा न होवे तो समय दुष्ट जानना ॥ ४३ ॥ माघमें संक्रांतिके दिन यदि वर्षा हो तो अन्न बहुत होवे और गायें बहुत दूध देनेवाली होवें ॥ ४४ ॥

माघसिते यमशिखिभे मेघयुते सर्वशस्यनिष्पत्तिः ॥
अथवा मेघविहीने धान्यानां संग्रहः कार्यः ॥ ४५ ॥

माघसुदिमें भरणी और कृत्तिकाके दिन बादल हो तो सम्पूर्ण खेतियें उत्पन्न होवें; यदि उन दोनोंमें बादल नहीं हों तो धान्यका संग्रह करना चाहिये ॥ ४५ ॥

पंचार्काः पंच वा भौमाः पंच वा मंदवासराः ॥
दुर्भिक्षं भयमादेश्यं तदा शेषाः शुभावहाः ॥ ४६ ॥
येषु येषु च मासेषु तेषां वृद्धिः प्रजायते ॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं तेषु ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ४७ ॥

माघमासमें पांच रविवार वा पांच भौमवार वा पांच शनिवार हों तो दुर्भिक्ष और भय होवे, शेषवार हों तो शुभ जानना ॥ ४६ ॥ जिस महीनेमें पांच शुभवार हों तो सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्यता होवे ऐसा पण्डितों करके जानना ॥ ४७ ॥

माघे प्रबलो वायुस्तुपारकलुषद्युती रविशशाङ्को ॥
अतिशीतं सघनस्य च भानोरस्तोदयौ धन्यौ॥४८॥

माघमें प्रचण्ड वायु, सूर्यकी कान्ति शीतल व चंद्रमाकी कान्ति मलीन, शीत अधिक और सूर्यका उदय, अस्त बादलोंमें होना श्रेष्ठ है ॥ ४८ ॥

माघस्य मासे रविजे कुजे वा गवेदमा शीतकरश्रिया वा ॥ लोकः सशोकः क्षितिपाललोकः परस्परं युद्धयति शस्त्रसंघैः ॥ ४९ ॥

माघकी पूर्णमासी और अमावास्याको शनि, मंगल हो तो सब लोकमें शोक व राजाओंमें परस्पर शस्त्रोंसे युद्ध होवे ॥ ४९ ॥

माघफाल्गुनयोर्मध्ये यमपुत्रं विनिर्दिशेत् ॥
दुर्भिक्षं जायते घोरं सर्वधान्यानि संक्षयेत् ॥ ५०

माघ, फागुनमें यमके पुत्र उदय होते हैं तब घोर दुर्भिक्ष पडे जिससे सब धान्योंका नाश होवे ॥ ५० ॥

फाल्गुनमासफलम् ।

फाल्गुने प्रथमे पक्षे पूर्वाफाल्गुनियोगतः ॥
सर्वान्दोषान्निहंत्येव सुभिक्षं भुवि जायते ॥ १ ॥

फागुनवदि प्रतिपदाको पूर्वाफाल्गुनी हो तो सब दोष दूर होवें और पृथिवी पर सुभिक्ष होवे ॥ १ ॥

यद्यभ्रं फाल्गुने नित्यं न तु पातयते जलम् ॥
वृष्टिगर्भे भवत्येव प्रावृट्कालस्य दोहकः ॥ २ ॥
फाल्गुनेऽतिखरो वायुर्वाति पत्राणि पातयन् ॥
दक्षिणोऽतिमृदुश्चैत्रे मेघगर्भहिताय सः ॥ ३ ॥

सम्पूर्ण फागुनमासमें बादल हो किन्तु वर्षा न हो तो वर्षा कालमें वर्षा करनेवाले गर्भोंकी पुष्टि होती है ॥ २ ॥ फागुनमें तीक्ष्ण वायु वृक्षोंके पत्ते गिरानेवाला चले और चैत्रमें दक्षिणका मृदु पवन चले तो मेघोंके गर्भको हितकरनेवाला है ॥ ३ ॥

कुम्भमीनान्तरेऽष्टम्यां नवम्यां दशमीदिने ॥
रोहिणी चेत्तदा वृष्टिरल्पा मध्याऽधिका क्रमात् ॥४॥

कुंभ और मीनकी संक्रांतिके बीच फागुनमें रोहिणी अष्टमीको हो तो अल्प वर्षा, नवमीको हो तो मध्यम वर्षा और दशमीको हो तो अधिक वर्षा होवे ॥ ४ ॥

फाल्गुने कृष्णषष्ठी चेच्चित्रानक्षत्रसंयुता ॥
त्रिभिर्मासैः सुभिक्षाय स्वात्यां दुर्भिक्षसाधनम् ॥५॥

फाल्गुनबदि षष्ठीके दिन चित्रा नक्षत्र हो तो तीन महीने तक सुभिक्ष हो और स्वाति हो तो दुर्भिक्ष करे ॥ ५ ॥

कृष्णफाल्गुनतृतीयायां सवातो दृश्यते घनः ॥
आश्विने शुक्लतृतीयायां दिवा रात्रौ च वर्षति ॥ ६ ॥

फाल्गुन बदि तृतीयाको पवन सहित मेघ दीखें तो आसोजसुदि तीजको दिन रात वर्षा होवे ॥ ६ ॥

नवमीफाल्गुने कृष्णे मूलऋक्षेण संयुता ॥
अभ्रच्छन्नं तथाकाशमष्टमारुतसंभवम् ॥ ७ ॥
आश्विने कृष्णसप्तम्यां वर्षते नात्र संशयः ॥
रात्रिवृष्टिर्दिवा वर्षं दिनवृष्टिर्भवेन्निशि ॥ ८ ॥

फाल्गुनबदि नवमीके दिन मूल नक्षत्र हो तब आकाशमें बादल हो तो आठ प्रकारके पवनोंकी उत्पत्ति होती है ॥ ७ ॥ इससे आसोज बदि सप्तमीको वर्षा होवे इसमें संदेह नहीं, रात्रिकी वर्षा दिनमें हो और दिनकी वर्षा रात्रिमें हो ॥ ८ ॥

फाल्गुनस्यासिते पक्षे वारुणं प्रतिपद्दिने ॥
भोगानुसारं वर्षस्य स्वरूपं च निगद्यते ॥ ९ ॥

फाल्गुनसुदि प्रतिपदाके दिन शतभिषा नक्षत्र हो तो सुभिक्ष होवे परन्तु इसकी जितनी घडी ज्यादा होवें उतना श्रेष्ठ जाने, जैसे साठि घडी हों तो पूर्ण, तीस हों तो मध्यम और पंदरह हों तो कनिष्ठ जाने ॥ ९ ॥

सप्तमी कृत्तिकायुक्ता फाल्गुनस्य सिता यदा ॥
तदा भाद्रपदे मासि कुह्वां मेघः प्रवर्षति ॥ १० ॥
विना वातं घनच्छन्नं विपत्तस्यां तिथौ यदा ॥
विद्युद्वा जायते तत्र तदा सस्याकुला मही ॥ ११ ॥

फाल्गुनसुदि सप्तमीके दिन कृत्तिका हो तो भादोंकी अमावसके दिन वर्षा होवे ॥ १० ॥ और जो उस तिथिमें वादल, विजली तथा पवन नहीं हो तो पृथिवीपर तृणसंज्ञक धान्य बहुत होवे ॥ ११ ॥

फाल्गुने कृत्तिकायुक्तं सप्तम्यादिकपंचकम् ॥
श्वेतपक्षे सुभिक्षाय नार्द्राजलदवृष्टये ॥ १२ ॥

फाल्गुनसुदि सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी और एकादशी इन पांच तिथियोंमें कृत्तिका हो तो सुभिक्ष हो, आगे आर्द्रामें वर्षा होवे ॥ १२ ॥

दशम्येकादशी शुक्ले फाल्गुनेऽभ्रादिगभेयुक् ॥
तदा चतुर्थ्यां पंचम्यामाश्विने वृष्टिदायिनी ॥ १३ ॥

फाल्गुनसुदि दशमी, एकादशीको वादल हों तो आश्विनमें चतुर्थी, पंचमीको वर्षा होवे ॥ १३ ॥

फाल्गुने च त्रयोदश्यां शुक्लायां यदि भार्गवः ॥
ज्येष्ठे रोगाय नूनं स्याद्रोगो मासत्रयेऽथवा ॥ १४ ॥

फाल्गुनसुदि त्रयोदशीके शुक्रवार हो नो ज्येष्ठमें निश्चयही रोग होय अथवा फिर तीन महीने भोग हो ॥ १४ ॥

फाल्गुनी पूर्णिमा साभ्रा सवृष्टिर्वा सगर्जिता ॥
धान्यसंग्रहणान्मासे सप्तमे लाभदायिनी ॥ १५ ॥

फाल्गुनकी पूर्णिमाके दिन वादल हों वर्षा हो वा गर्जे तो धान्य संग्रह करना, सातवें महीनेमें लाभ होगा ॥ १५ ॥

समये चेद्धुताशन्या ज्वलनस्यास्ति वारिदः ॥
गोधूमे कुंकुमापातान्महर्घं प्रोच्यते तदा ॥ १६ ॥

होली जलने के समय बादल हों तो रोलीसे फसल नष्ट होनेसे गेहूं महंगे होजावें ॥ १६ ॥

होलिकासमये वायुः पूर्वे भूपनृणां सुखम् ॥
याम्यनैर्ऋतदिग्भागे दुर्भिक्षं च पलायनम् ॥ १७ ॥
प्रतीच्यामुत्तरे शैवे सुभिक्षं स्यात्प्रजासुखम् ॥
अग्नेर्भीतिरथाग्नेय्यां वायव्यां बहवोऽनिलाः ॥ १८ ॥

होली जलनेके समय वायु पूर्वका हो तो राजा प्रजामें सुख, अग्निकोणका हो तो अग्निका भय, दक्षिणका हो तो दुर्भिक्ष, नैर्ऋतका हो तो टिड्डी आदिका उपद्रव, पश्चिमका हो तो मध्यम सुभिक्ष, वायव्यका हो तो वायुका जोर, उत्तर तथा ईशानका हो तो सुभिक्ष और प्रजाको सुख हो ॥ १७ ॥ १८ ॥

यदा वक्रगती स्यातां शनिभौमौ तपस्यके ॥
माघे चाद्यासु तिथिषु त्रिषु सस्यस्य संग्रहः ॥ १९ ॥
कार्यो विपश्चिता तत्र पक्षांते स्याच्चतुर्गुणम् ॥
फाल्गुने च गुरोरस्तं वक्रं वा यदि जायते ॥ २० ॥
तदा सस्यमहर्घत्वं शनिर्वा वक्रतां व्रजेत् ॥
यदा फाल्गुनके मासे प्रयात्यस्तं भृगोः सुतः ॥ २१ ॥
धान्यादिसर्वसस्यानां तदा वाच्या महर्घता ॥
तदा दुर्भिक्षमादेश्यं षण्मासं दैवचिंतकैः ॥ २२ ॥

फाल्गुनमें जो शनि, मंगल, वक्री होवें अथवा माघमें प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया इन तिथियोंमें वक्री होवें तो तृण, धान्यका संग्रह करै ॥ १९ ॥ फिर पंदरह दिनके उपरांत बेचनेसे चौगुना लाभ होवे । तथा फाल्गुनमासमें गुरु अस्तहो वा वक्री होवे ॥ २० ॥ या शनि वक्री होवे तो तृण धान्य महंगा होवे । जो फाल्गुनमें शुक्र अस्त होवे तो ॥ २१ ॥ अन्न और तृण यह सब महंगा होवें फिर छ मास तक दुर्भिक्ष हो ऐसा दैवज्ञजनोंको कहना चाहिये ॥ २२ ॥

फाल्गुने मीनसंक्रान्तौ भानुवारे तिथिक्षयः ॥
भौमशन्योश्च दुर्भिक्षं सितेज्येंदौ सुभिक्षकम् ॥ २३ ॥

फाल्गुनमें मीनकी संक्रांति रवि, भौम, शनि इन वारोंमें तिथिका क्षय होवे तो दुर्भिक्ष होवे । और शुक्र, गुरु, चंद्र इन वारोंमें होवे तो सुभिक्ष हो ॥ २३ ॥

फाल्गुनमासे रूक्षश्चण्डः पवनोऽभ्रसंप्लवाः स्निग्धाः ॥
परिवेषाश्चासकलाः कपिलस्ताम्रो रविश्च शुभः॥२४॥

फाल्गुनमें रूक्ष तथा प्रचण्ड वायु, सजल बादल, स्निग्ध तथा टूटे हुए कुण्डल और सूर्यका कपिल वा ताम्र वर्ण होना श्रेष्ठ है ॥ २४ ॥

माघे हिमं न पतितं वातो वाति न फाल्गुने ॥
न च व्योमान्वितं चैत्रे घनेन पतितं यदि ॥ २५ ॥
करकाणां च वैशाखे शुक्रे चण्डातपो भवेत् ॥
तदातितुच्छवृष्टिः स्यात्प्रावृट्काले न संशयः ॥ २६ ॥

माघमें शीत न पडे, फाल्गुनमें पवन नहीं चले, चैत्रमें बादल न होय और वैशाखमें ओले न पडें और ज्येष्ठमें गर्मी नहीं होय तो वर्षाकालमें वर्षा नहीं होवे ॥ २५ ॥ २६ ॥

सर्वमासे पूर्णिमायां भूमिकंपो यदा भवेत् ॥
उल्कापातो वज्रपातः परिधिः शशिसूर्ययोः ॥ २७ ॥
धूम्रकेतुः शक्रचापो ग्रहणं बहुधा यदा ॥
तदा सकलवस्तूनां महर्घं जायते तदा ॥ २८ ॥

सब महीनोंमें पूर्णिमाके दिन भूकंप होवे, तारे टूटें, विजली पडे तथा सूर्य, चन्द्रमाके मण्डल होवे, धूम्रकेतुका उदय हो, इंद्रधनुष होय, बहुत ग्रहण होय तो सब वस्तुओंकी तेजी होवे ॥ २७ ॥ २८ ॥

अधिकमासफलम् ।

गोपीडा द्विमधुद्विमाधवगते दुर्भिक्षकं जायते
द्विज्येष्ठे नृपविग्रहः कृषिभयं त्वाषाढयुग्मे तथा ॥

दुर्भिक्षं तु नभोद्भवे पशुमृतिस्तद्वन्नमस्यद्भवे
प्रोक्तं कुंजरवाजिनां विनशनं शुग्माश्विने सर्वदा ॥ २९ ॥

चैत्रमास अधिक हो तो गौवोंको पीडा होवे, वैशाख अधिक हो तो दुर्भिक्ष हो, ज्येष्ठ अधिक हो तो राज्यविग्रह हो, आषाढ अधिक हो तो खेतीको भय होवे, श्रावण अधिक हो तो दुर्भिक्ष हो, भाद्रपद अधिक हो तो पशुओंका नाश और आसोज अधिक हो तो घोडा हाथियोंका नाश ॥ २९ ॥

माघमासस्य सप्तम्यां पंचम्यां फाल्गुनस्य च ॥
चैत्रस्यापि तृतीयायां वैशाखे प्रथमेऽहनि ॥ ३० ॥
मेघस्य गर्जनं श्रुत्वा जलदस्य तु दर्शने ॥
चतुरो वार्षिकान्मासान् जलवृष्टिं तदा वदेत् ॥
वान्ति वाताश्च शुभदास्तथा प्रावृषि वर्षणम् ॥ ३१ ॥

माघसुदि सप्तमी, फाल्गुनसुदि पंचमी, चैत्रसुदि तृतीया और वैशाखसुदि प्रतिपदा ॥ ३० ॥ इन चार तिथियोंमें मेघोंका गर्जना, बादलोंका दीखना हो तो वर्षा कालके चारोंही महीनोंमें जल वर्षा होवे तथा शुभ वायु हो तो भी अच्छी वर्षा होवे ॥ ३१ ॥

फाल्गुने चैत्रवैशाखे शुक्लपक्षे त्रयोदशी ॥
धूमिका जायते तेषां देवस्तत्र न वर्षति ॥ ३२ ॥

फाल्गुन, चैत्र, वैशाख सुदि त्रयोदशीके दिन धूमर पडे तो आगे चातुर्मासमें वर्षा नहीं होवे ॥ ३२ ॥

यदा याति वृद्धिं सिताख्यश्च पक्षस्तदा याति वृद्धिं
नृपा लोकसंघाः ॥ समा सौख्यदा हानिकारी तु हीना
तथा कृष्णपक्षे फलं व्यत्यये न ॥ ३३ ॥

शुक्लपक्षमें कोईभी तिथि वढे तो राजा और प्रजा गण वृद्धिको प्राप्त होवें और समा अर्थात् न घटे, न वढे तब सुख होवे तथा कोई तिथि घटे तो हानि होय किन्तु कृष्णपक्षमें विपरीत फल समझना ॥ ३३ ॥

त्रयोदशादिनपक्षफलम् ।

यदा च जायते पक्षस्त्रयोदशदिनात्मकः ॥
भवेल्लोकक्षयो घोरो मुण्डमालायुता मही ॥ ३४ ॥

जो तेरह दिनका पक्ष होवे तो लोगोंका नाश होवे और पृथिवीपर युद्ध होनेसे रुंडमुंडोंसे युक्त पृथिवी होवे ॥ ३४ ॥

प्रश्नप्रकरणम् ।

आर्द्रं द्रव्यं स्पृशति यदि वा वारि तत्संज्ञकं वा
तोयासन्नो भवति यदि वा तोयकार्योन्मुखो वा ॥
प्रष्टा वाच्यः सलिलमचिरादस्ति निःसंशयेन
पृच्छाकाले सलिलमिति वा श्रूयते यत्र शब्दः ॥ १ ॥

वर्षाके लिये प्रश्न करनेवाला प्रश्न करते समय यदि आर्द्र द्रव्य (भींजी हुई वस्तु) वा जलसंज्ञक वस्तु (दूध, मोती, नागरमोथा) आदि पदार्थका स्पर्श करे जलके पास हो वा जलसे कोई कार्य करता हो वा करना चाहे अथवा उस समय कहींसे भी जलवाचक शब्द सुननेमें आवे तो अवश्य वर्षा होवे ॥ १ ॥

वृष्टिप्रश्नार्थसमये श्यामगोघटदर्शनम् ॥
स्त्रियां वा श्यामवस्त्रायां दृष्टायां वृष्टिमादिशेत् ॥ २ ॥

वर्षाके लिये प्रश्न करते समय काली गाय वा जलका घडा वा काले वस्त्रवाली स्त्री दीखे तो शीघ्र अवश्य वर्षा होवे ॥ २ ॥

तत्कालघटिका द्विघ्ना त्रिहृत्यैकेन सत्वरा ॥
द्वाभ्यां किंचिद्विलंबः स्यादभ्रशेषे न वर्षणम् ॥ ३ ॥

सूर्योदयसे प्रश्नसमयतक गतघटिकाओंको दुगुणी करके तीनका भाग देवे । जो एक शेष बचे तो शीघ्र वर्षा होवे, दो बचे तो विलंबसे और शून्य बचे तो नहीं होवे ॥ ३ ॥

वर्षाप्रश्ने सलिलनिलयं राशिमाश्रित्य चंद्रो
लग्नं यातो भवति यदि वा केन्द्रगः शुक्लपक्षे ॥
सौम्यैर्दृष्टः प्रचुरमुदकं पापदृष्टोल्पमम्भः
प्रावृट्काले सृजति न चिराच्चन्द्रवद्भार्गवोऽपि ॥ ४ ॥

वर्षाके लिये प्रश्न करते समय जल राशिका चंद्र वा शुक्र कृष्णपक्षमें लग्नमें हो तथा शुक्लपक्षमें केन्द्रमें हो और सौम्य ग्रह देखते हों तो बहुत वर्षा हो तथा क्रूरग्रह देखते हों तो अल्प हो, यदि क्रूर, सौम्य दोनों देखते हों तो मध्यम वर्षा हो ॥ ४ ॥

प्रश्नलग्नात्तोयराशिर्यदि वित्ते तृतीयके ॥
तोयसंज्ञो ग्रहस्तत्र भवत्यभ्रं जलप्रदम् ॥ ५ ॥
संयोगे सितबुधयोस्तथा च गुरुशुक्रयोः ॥
तथैव जीवबुधयोर्वृष्टिः स्यान्नात्र संशयः ॥ ६ ॥

प्रश्न लग्नसे द्वितीय वा तृतीय जलराशि हो और वहां जलग्रह स्थित हों तो शीघ्र वर्षा होवे ॥ ५ ॥ तथा जो बुध, शुक्र एक राशिमें हों, गुरु, शुक्र एक राशिमें हों अथवा बुध, गुरु एक राशिमें हों तो निःसंदेह शीघ्र वर्षा होवे॥ ६॥

लग्ने चंद्रः कुजः शुक्रः शनिश्च मिलिता यदि ॥
अतिवृष्टिस्तदादेश्या नाना चित्रकरी जने ॥ ७ ॥

लग्नमें चन्द्रमा, मंगल, शुक्र और शनि हों तो आश्चर्यको करनेवाली अत्यन्त वर्षा होवे ॥ ७ ॥

लग्ने खेटाश्चराः सर्वे द्वादशैः प्रहरैर्जलम् ॥
जललग्ने शुभैर्युक्ते सद्यो वृष्टिर्जलग्रहे ॥ ८ ॥

लग्नमें सब ग्रह चरराशिके हों तो बारह प्रहरमें जल वर्षे । तथा शुभग्रह जलराशिके हों तो तत्काल वर्षा होवे ॥ ८ ॥

चरे लग्ने धने सौम्ये मासाल्लग्ने स्थिरे जलम् ॥
द्विर्द्वादशदिनैर्द्विस्वभावे षट्त्रिंशता दिनैः ॥ ९ ॥

चरराशिका लग्न हो तब द्वितीय स्थानमें सौम्य ग्रह हो तब एक मासमें वर्षा होवे, स्थिर राशि हो तो चौवीस दिनमें और द्विस्वभाव राशि हो तो छत्तीसदिनमें वर्षा होवे ॥ ९ ॥

लग्नाद्विके त्रिके वाऽपि जलराशिर्यदा भवेत् ॥
जलखेटस्तु तत्रैव जलपातस्तदा ध्रुवम् ॥ १० ॥

लग्नसे द्वितीय वा तृतीय स्थानमें जल राशिपर शुभग्रह होवें तब निश्चय वर्षा होवे ॥ १० ॥

द्वितीये वा तृतीये वा लग्ननाथः शुभान्वितः ॥
सप्तविंशदिने लग्नान्नदीपूरं प्रवर्षणम् ॥ ११ ॥

लग्नका स्वामी द्वितीय वा तृतीय स्थानमें शुभग्रहोंसे युक्त हो तो सत्ताईसवें दिन नदीपूर बहने योग्य वर्षा होवे ॥ ११ ॥

लग्नात्तुर्ये यदि स्थाने शुक्रेन्दुगुरुचंद्रजाः ॥
एवं योगे महावृष्ट्या शुभकालः सतां मतः ॥ १२ ॥

लग्नसे चतुर्थस्थानमें शुक्र, चन्द्र, गुरु, बुध हों तो बहुत वर्षा होवे ॥१२॥

चतुर्णामपि केन्द्राणां मध्ये यत्र शुभा ग्रहाः ॥
तस्यां दिशि च निष्पत्तिः सुभिक्षं च प्रजायते ॥ १३ ॥
तस्यां दिशि शनिर्दृष्टः क्रूरश्चात्र गृहे स्थितः ॥
दिशि तस्यां बुधैर्वाच्यं दुर्भिक्षं नात्र संशयः ॥ १४ ॥

चारोंही केंद्र (प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, दशम) इनमें शुभ ग्रह जिसमें हों उसी दिशामें वर्षा होवे । लग्न पूर्व, चतुर्थ स्थान उत्तर, सप्तम स्थान पश्चिम और दशम स्थान दक्षिण समझना ॥ १३ ॥ जिस स्थानमें शुभ ग्रह हों उस दिशामें वर्षा तथा सुभिक्ष होवे । किन्तु जिसमें शनिकी दृष्टि हो अथवा क्रूर ग्रह हों तो उसी दिशामें दुर्भिक्ष हो ऐसा पंडित कहैं । तथा चारोंही

स्थानोंमें शुभ हों तो चारोंही दिशाओंमें शुभ हो, क्रूर हों तो अशुभ हो और मिश्र हों तो मिश्रफल होवे ॥ १४ ॥

चतुर्थे चंद्रशुक्राद्यैर्महावृष्टिः प्रकीर्तिता ॥
क्रूरैस्तथाप्यनावृष्टिर्वक्तव्या हितमिच्छता ॥ १५ ॥

प्रश्न लग्नसे चतुर्थस्थानमें चन्द्र, शुक्र हों तो महावर्षा होवे । और क्रूरग्रह हों तो अनावृष्टि होवे ॥ १५ ॥

पृच्छालग्ने चतुर्थस्थौ शनिराहुयुतौ पुनः ॥
दुर्भिक्षं च महाघोरं तत्र वर्षे ध्रुवं भवेत् ॥ १६ ॥

प्रश्नलग्नसे चौथे घरमें शनि, राहु होवें तब महाघोर दुर्भिक्ष उस वर्षमें होवे ॥ १६ ॥

सजला राशयो लग्ने शुभाशुभग्रहैर्युताः ॥
त्रिभागवृष्टिरादेश्या वृष्टिज्ञानविचक्षणैः ॥ १७ ॥

लग्नमें जलराशियें हों और उनपर शुभ और क्रूर दोनोंही प्रकारके ग्रह स्थित हों तो तृतीयांश वर्षा होवे ॥ १७ ॥

अन्ये च राशयः केन्द्रे शुष्कसास्त्वशुभग्रहैर्युताः ॥
तदार्द्धवृष्टिरादेश्या सौम्यासौम्यप्रमाणतः ॥ १८ ॥

केंद्रमें सजल तथा निर्जल राशि हो और उनमें शुभ तथा क्रूर ग्रह बैठे हों तो आधी वर्षा होवे । किन्तु सौम्य ग्रह अधिक हों तो आधीसे ज्यादा हो और क्रूर अधिक हों तो कम होवे ॥ १८ ॥

केंद्रकेष्वथ लग्नेषु शुभयुक्तेषु सर्वतः ॥
पादोना वृष्टिरादेश्या क्रूरयुक्तेष्ववर्षणम् ॥ १९ ॥

केंद्र वा लग्नमें शुभग्रह हों तो सर्वत्र पौन वृष्टि होवे और क्रूरग्रह हों तो अनावृष्टि होवे ॥ १९ ॥

शुष्कलग्नगतैः क्रूरैर्वृष्टिरोधः प्रकीर्तितः ॥
सूतौ च जलराशिस्थे चंद्रे वा स्याद्बहूदकम् ॥ २० ॥

जो लग्नमें निर्जल राशि हो, उसपर क्रूरग्रह हों तो अनावृष्टि होवे। तथा लग्नमें जलराशिका चन्द्रमा हो तो बहुत वर्षा होवे ॥ २० ॥

वृष्टिप्रश्ने कुजे मूर्तौ विद्युत्पतिचंचला ॥
घनगर्जनसंयुक्ता भवेद्वृष्टिर्गरीयसी ॥ २१ ॥

लग्नमें मंगल होवे तब बिजली चमके और गर्जना करता हुआ मेघ बहुत वर्षा करे ॥ २१ ॥

सद्योवृष्टिलक्षणम्।

अतिवातं च निर्वातमत्युष्णं चातिशीतलम् ॥
अत्यभ्रं च निरभ्रं च षड्विधं मेघलक्षणम् ॥ २२ ॥

अत्यंत वायु चले वा नहीं चले, गर्मी अधिक होवे वा न होवे, जिससे शीतलता होजावे, बादल अधिक हो वा नहीं होवें यह छः प्रकारके मेघोंके लक्षण हैं ॥ २२ ॥

प्रातः काले पीतरश्मिर्दुर्निरीक्ष्यो भवेद्रविः ॥
स्निग्धवैडूर्यकांतिश्चेन्मेघो वृष्टिप्रदः स्मृतः ॥ २३ ॥
प्रातःकाले यदा सूर्यो मध्याह्ने दुःसहो भवेत् ॥
तद्दिने वृष्टिदः प्रोक्तो घृतस्वर्णसमप्रभः ॥ २४ ॥

प्रातःकाल सूर्यमें अधिक तेज हो, घाम पीला हो, मेघ चिकने, श्यामवर्ण होंय तो वे मेघवर्षा करनेवाले कहे हैं ॥ २३ ॥ तथा प्रातः समयमें वा मध्याह्नसमयमें सूर्यका तेज अधिक हो और मेघ गलाये हुए स्वर्णके समान हों तो उसी दिन वर्षा होवे ॥ २४ ॥

वल्लीनां गगनतलोन्मुखाः प्रवालाः
स्नायन्ते यदि जलपांशुभिर्विहंगाः ॥
सेवन्ते यदि च सरीसृपास्तृणाग्रा-
ण्यासन्नो भवति तदा जलस्य पातः ॥ २५ ॥

बेलोंके महीन पत्ते आकाशकी ओर ऊंचे हो जावें तथा पक्षी जल या रेतीमें स्नान करें और कीडे आदि जीव घासके अग्रभाग पर जा बैठें तो वर्षा होवे ॥ २५ ॥

यदा जलं वै विरसं जलदा गोत्रसन्निभाः ॥
दिशश्च विमलाः सर्वाः काकांडाभं नभस्तलम् ॥२६॥
न यदा वाति पवनश्छन्नं यान्ति झषादयः ॥
शब्दं कुर्वन्ति मंडूकास्तदा वृष्टिर्बहूत्तमा ॥ २७ ॥

जल विरस हो जाय, बादल पर्वत सदृश हों, दिशायें निर्मल हों, कौआके अंडासमान आकाश होय ॥ २६ ॥ तथा पवन चले, मछली आदि जल-जीव पृथ्वीमें जालगें, मेंडक शब्द करने लगें तो उत्तम वर्षा होवे ॥ २७ ॥

नखैर्लिखन्ति मार्जाराः पृथिवीं च यदा भृशम् ॥
लोहानां मलनिचयो विस्रं गंधो यदा भवेत् ॥ २८ ॥
सेतुं कुर्वन्ति रथ्यायां शिशवो मिलिता यदा ॥
शुद्धांजनाभा गिरयो बाष्पमुद्रितकन्दरा ॥ २९ ॥

मार्जार (बिलाव) आदि अपने पंजोंसे पृथिवीको खोदें, लोहाके मैलमें दुर्गंध आवे ॥ २८ ॥ मार्गमें, बालक सब मिलकर सेतु (बन्ध) बांधें और अंजन (सुर्मा) के समान पर्वत हो जांय तथा पर्वतोंकी गुफा पसी-जने लगें ॥ २९ ॥

पिपीलिका यदांडानि गृहीत्वोच्चं प्रयांति च ॥
सर्पा वृक्षं समायान्ति तदा वृष्टिर्भवेत्किल ॥ ३० ॥
गावः सूर्यं निरीक्षन्ते कृकला सगणास्तथा ॥
गृहान्नेच्छंति पशवो निर्गमं कुक्कुरास्तथा ॥ ३१ ॥
वियत्तित्तिरपक्षाभमलिपक्षनिभं तथा ॥
तदावृष्टिः समादेश्या निश्चितं दैवचिन्तकैः ॥ ३२ ॥

कीडियां अपने अंडोंको लेकर ऊपरको चढें, सर्प वृक्षपर चढें तो निश्चय वर्षा होवे ॥ ३० ॥ गायें सूर्यकी ओर देखें, गिरगिटभी सूर्यको देखें, पशु तथा कुत्ता घरसे वाहर जानेकी इच्छा नहीं करें ॥ ३१ ॥ और तीतरके पंख समान वादल होय तो दैवज्ञों करिके निश्चयही वर्षा कहनी चाहिये ॥ ३२ ॥

प्रविशति यदि खद्योतो जलदसमीपेषु रजनीषु ॥
केदारपूरमधिकं वर्षति देवस्तदा न चिरात् ॥ ३३ ॥

यदि रात्रिके समय खद्योत मेघोंके निकट जायँ तो खेतोंको भरनेवाली वर्षा होवे ॥ ३३ ॥

दक्षिणे प्रबलो वातः सकृदेव प्रजायते ॥
वारुणे चैव नक्षत्रे शीघ्रं वर्षति माधवः ॥ ३४ ॥

यदि शतभिषा नक्षत्रके दिन वायु दक्षिणकी तर्फका बहुत जोरसे चले तो शीघ्र वर्षा होवे ॥ ३४ ॥

धूमिताः स्युर्दिशाः सर्वाः पूर्ववाते वहत्यपि ॥
चतुर्यामांतरे मेघः सरांसि परिपूरयेत् ॥ ३५ ॥

यदि चारो दिशाओंमें धुंव दीखै और उस समय पूर्वका वायु चले तो चार प्रहरमे तलाव भरने लायक वर्षा होवे ॥ ३५ ॥

रात्रौ मेघनिवासश्चेत्खद्योतेषु निशि द्युतिः ॥
जलेषु चोष्णता सद्यो मेघवर्षाऽभिलक्षणम् ॥ ३६ ॥

रात्रिभर वादल रहें तथा खद्योत रात्रिमें चमकते दीखें और जलमें उष्णता होवे तव वर्षा होवे ॥ ३६ ॥

पूर्वस्यां वारिदो धूमः सूर्यास्ते याति कृष्णताम् ॥
उत्तरस्यां मेघमाला प्रभाते विमला दिशः ॥ ३७ ॥
मध्याह्नेतु जनस्ताप ईदृशं मेघलक्षणम् ॥
तदा रात्रीमध्ये वृष्टिःप्रजातोषाय जायते ॥ ३८ ॥

यदि पूर्वदिशामें धूम्रवर्णके बादल हों तथा सूर्यास्तसमय कृष्णवर्णके हो जावें और उत्तरकी तर्फ मेघमाला होय, प्रातः काल दिशा निर्मल हो॥ ३७॥ दो प्रहरको सूर्य बहुत तपे ऐसे मेघोंके लक्षण हों तब रात्रिको बहुत वर्षा होवे ॥ ३८ ॥

रात्रौ तारा झलत्कारःप्रातश्चात्यरुणो रविः ॥
अवृष्टौ शक्रचापश्च सद्यो वृष्टिस्तदा भवेत् ॥ ३९ ॥

रात्रिमें तारा जगमगाहट करें, प्रातः काल सूर्य लाल हो और विना वर्षाके इंद्रधनुष होवे तब तत्काल वर्षा होवे ॥ ३९ ॥

आरोहन्ति द्रुमौ भुजंगा सूर्येन्द्वौ परिधिस्तथा ॥
ऊर्ध्वेचेत्कुक्कुरःशेते लोहे कीटः पुनःपुनः ॥ ४० ॥
अम्लं च तक्रं तत्कालं मत्स्यैंद्रधनुरुद्गतः ॥
धूमिता निबिडाः शैलाः चर्मादिषु तथार्द्रता ॥ ४१॥
गोमये उत्कराः कीटा परितापोऽतिदारुणः ॥
चातकानां स्वर्वृष्टिः सद्यः संसूचयेज्जलम् ॥ ४२ ॥

सर्प वृक्षपर चढें, सूर्य चन्द्रमाके कुण्डल हो, श्वान मकानकी छतपर सोवे, लोहाके बार २ कीट आवे ॥ ४० ॥ तथा छाछ खट्टी हो जावे, मत्स्य वा इंद्र धनुष दीखे, पर्वतोंसे धूवां निकले, चमडा गीला होवे ॥ ४१ ॥ गोबरमें कीडे पडजावें, धूप तेज हो, पपीहा शब्द करें तब वर्षा होवे ॥ ४२ ॥

सद्योऽनावृष्टिलक्षणम् ।

उल्कापातश्च दिग्दाहो निर्घातः पांशुवृष्टयः ॥
इंद्रायुधं च युद्धं च षडेते वृष्टिघातकाः ॥ ४३ ॥

जब अनेक तारे टूटें, दिग्दाह (चारों दिशा लाल दीखें), धूलिकी वर्षा, निर्घात, इंद्र धनुष, ग्रह युद्ध हो तब अनावृष्टि होवे ॥ ४३ ॥

यावत्काकोदरा मेघाः यावत्सूर्यः शशिप्रभः ॥
यावन्नैर्ऋतिको वायुस्तावद्देवो न वर्षति ॥ ४४ ॥

जब तक कौवेके पेट जैसे रंगके रूखे बादलहों, जबतक सूर्यका तेज शीतल हो, जबतक नैर्ऋतका वायु हो तबतक वर्षा नहीं होवे ॥ ४४ ॥

(विद्युत्प्रकरणम्)

यत्र देशे सुभिक्षं स्याद्विद्युत्तत्रैव गच्छति ॥
दिक्षु भूता स्थिता गुप्ता मेघानां मार्गदर्शिनी ॥ १ ॥

जिस देशमें सुभिक्ष होनेवाला हो उसी देशकी तर्फ बिजली जाती है तथा सम्पूर्ण दिशाओंमें गुप्तरूपसे स्थित होके भी मेघोंका मार्ग दिखाती है ॥ १ ॥

ऐंद्री तु जलदा विद्युदाग्नेय्या जलनाशिनी ॥
याम्या स्वल्पजला प्रोक्ता नैर्ऋत्याऽवृष्टिदा मता॥२॥
प्रभूतजलदा ज्ञेया वारुणी सर्वशस्यदा ॥
वातं करोति वायव्या कौबेरी जलदा स्मृता ॥
ईशानी शीघ्रवृष्टिः स्याद्विद्युल्लक्षणमीरितम् ॥ ३ ॥

पूर्व दिशाकी बिजली हो तो श्रेष्ठ वर्षा, अग्निकोणकी हो तो वर्षाका नाश दक्षिणकी हो तो स्वल्प वर्षा, नैर्ऋतकी हो तो अनावृष्टि ॥ २ ॥ पश्चिमकी हो तो खेतियोंकी वृद्धि हो, वायव्यकी हो तो वायुकी वर्षा, उत्तरकी हो तो उत्तम वर्षा और ईशानकोणकी हो तो तत्काल वर्षा होवे ॥ ३ ॥

उत्तरस्यां यदा विद्युत्स्वर्णवर्णा प्रदीप्यते ॥
सा विद्युज्जलदा ज्ञेया शीघ्रं मेघमहोदयः ॥ ४ ॥

उत्तर दिशाकी बिजली यदि स्वर्णके समान वर्णवाली और दीप्तिमान् हो तो शीघ्र वर्षा होवे ॥ ४ ॥

स्निग्धा स्निग्धेषु चाभ्रेषु विद्युत्प्राच्या जलावहा ॥
कृष्णा तु कृष्णमार्गस्था वातवर्षावहा भवेत् ॥ ५ ॥

यदि स्निग्ध वर्णके बादलोंमें स्निग्ध वर्णकी बिजली हो तो वर्षा होवे और जो कृष्णवर्णकी तथा कृष्णमार्ग (दक्षिण) की हो तो वायुका भय होवे ॥ ५ ॥

अथ रश्मिमती स्निग्धा हरिता हरितप्रभा ॥
दक्षिणा दक्षिणावर्त्या कुर्यादुदकसंप्लवम् ॥ ६ ॥

अतिप्रकाशवाली, स्निग्धवर्णकी तथा हरे प्रकाशवाली, हरे रंगकी वा प्रदक्षिण फिरनेवाली बिजली हो तो अवश्य वर्षा होवे ॥ ६ ॥

रश्मीति मेदिनी भाति विद्युदपरदक्षिणा ॥
हरितालातिरोमा च सोदकं पाययेद्बहु ॥ ७ ॥

पृथ्वीपरभी प्रकाश करनेवाली हरतालके सदृश पीले वर्णकी बहुत किरणोंवाली बिजली यदि दक्षिणके विना किसी दिशाकी हो तो बहुत वर्षा होवे ॥ ७ ॥

अपारेण तु या विद्युच्चरते चोत्तरामुखी ॥
कृष्णाभ्रसंश्रिता स्निग्धा सापि कुर्याज्जलागमम् ॥८॥

काले बादलोंमें चिक्कणवर्णकी बहुत बडी बिजली यदि उत्तरकी ओर चमके तो अवश्य वर्षा होवे ॥ ८ ॥

या तु पूर्वोत्तरा विद्युद्दक्षिणा चपलायते ॥
चरेदूर्द्ध्वं च या तिर्यक्सापि श्वेता जलावहा ॥ ९ ॥

ईशानकोणकी श्वेत बिजली यदि शीघ्र गतिसे दक्षिणकी ओर ऊपर वा नीचे वा तिरछी जावे तो वर्षा होवे ॥ ९ ॥

तथैवोर्द्ध्वमधो वापि स्निग्धा रश्मिमती भृशम् ॥
सद्घोषा वाप्यघोषा वा विद्युत्सर्वेषु वर्षति ॥ १० ॥

ऐसेही ऊंचे वा नीचे जानेवाली, श्रेष्ठ गाजनेवाली वा नहीं गाजनेवाली स्निग्ध बिजली हो तो सर्वत्र वर्षा करे ॥ १० ॥

नीला ताम्रा च गौरा च श्वेता वाभ्रान्तरं चरेत् ॥
संघोषा मन्दघोषा वा विद्यादुदकसंप्लवम् ॥ ११ ॥

नीली, ताम्र (लाल), गौर और श्वेत वर्णकी तथा एक बादलसे दूसरे बादलमें जानेवाली, मन्द शब्द वा ज्यादा शब्द करती हुई बिजली हो तो बहुत वर्षा करे ॥ ११ ॥

वाताय कपिला विद्युदातपायातिलोहिनी ॥
कृष्णा सर्वविनाशाय दुर्भिक्षाय सिता भवेत् ॥ १२ ॥

यदि बिजलीका रंग कपिल हो तो वायु चले, लालहोतो धूप अधिकपडे, काला रंग हो तो सर्व नाश करे और श्वेत हो तो दुर्भिक्ष करे ॥ १२ ॥

शिशिरे नैव वर्षन्ति रक्ताः पीताश्च विद्युतः ॥
नीलाः श्वेता वसन्ते च न वर्षंति कदाचन ॥ १३ ॥
हरिता मधुवर्णाश्च ग्रीष्मे रूक्षाश्च निश्चलाः ॥
भवन्ति ताम्रगौराश्च वर्षास्वपि निरोधकाः ॥ १४ ॥
शारदा नाभिवर्षन्ति नीलवर्णाश्च विद्युतः ॥
हेमन्ते श्यामताम्रास्तु ता विद्युन्निर्जलाः स्मृताः॥१५॥

शिशिरऋतुमें लाल वा पीली, वसन्तमें नीली वा श्वेत वर्णकी हो तो कभीभी वर्षा नहीं करे ॥ १३ ॥ ग्रीष्म ऋतुमें हरी वा शहदके रंगकी, रूखी तथा निश्चल हो और वर्षाऋतुमें ताम्र वा गौरवर्णकी हो तो वर्षाको बंद कारक है ॥ १४ ॥ शरदऋतुमें नीलेरंगकी बिजली हो तो वर्षा नहीं करे और हेमन्तऋतुमें श्यामा वा ताम्ररंगकी हो तो वह बिजली निर्जला है, वर्षा नहीं करे ॥ १५ ॥

रक्ता रक्तेषु चाभ्रेषु हरिता हरितेषु च ॥
नीला नीलेषु चाभ्रेषु वर्षन्ति एकयोनिषु ॥ १६ ॥

किन्तु उक्त ऋतुओंमें भी जो लाल बादलमें लाल, हरे बादलमें हरी, नीले

बादलमें नीली बिजली हो तो वर्षा होवे क्योंकि बादल और बिजलीका एक रंग होनेसे वह निर्जल नहीं होती ॥ १६ ॥

(अनावृष्टि आदि उपद्रवोंका कारण)

अतिलोभादसत्याद्वा नास्तिक्याद्वाप्यधर्मतः ॥
नरापचारान्नियतमुपसर्गः प्रवर्तते ॥ १ ॥
ततोऽपचारो मर्त्यानामपरज्यन्ति देवताः ॥
ते सृजन्त्यद्भुतान्भावान्दिव्यभूम्यन्तरिक्षजान् ॥ २ ॥

गर्गादि महर्षियोंने लिखा है कि जब मनुष्योंकी प्रवृत्ति अतिलोभ, असत्य वा नास्तिकतामें हो जाती है तब धर्मको त्यागकर अधर्म करने लग जाते हैं इसलिये देवता गण उनकी रक्षा नहीं करते तब जगत्का नाश होता है । वह नाश किस प्रकार होगा; उसकी सूचना देवगण पहिलेसेही भौम, अन्तरिक्ष और दिव्य निमित्तोंके उत्पातद्वारा कर देते हैं ॥ १ ॥ २ ॥

ताञ्छास्त्रनिर्गमाद्विप्राः पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषा ॥
प्रवदन्ति तु मर्त्येषु हितार्थं श्रद्धयान्विताः ॥ ३ ॥

परन्तु किस उत्पातसे कौनसा उपद्रव होगा वह परोपकारी विद्वान् लोग ज्योतिष शास्त्ररूपी ज्ञान नेत्रोंसे देखके, श्रद्धावाले मनुष्योंके हितके लिये पहलेसे कहदेते हैं ॥ ३ ॥

ते तु सम्बोधिता विप्रैः शान्तये मङ्गलानि च ॥
श्रद्दधानाः प्रकुर्वन्ति न ते यांति पराभवम् ॥ ४ ॥
येतु न प्रतिकुर्वन्ति क्रियां संश्रद्धयान्विताः ॥
नास्तिक्यादथवा कोपाद्विनश्यन्ति च तेऽचिरात् ॥५॥

उन परोपकारी विद्वानोंके वचनोंपर विश्वास करके जो लोग उत्पातोंकी शान्ति कर देते हैं वे लोग दुःखसे बच जाते हैं ॥ ४ ॥ किन्तु जो लोग नास्तिकतासे क्रोध, अभिमान, लोभ आदिके कारण उनके वचनोंपर

श्रद्धा न करके शान्ति नहीं करते वह लोग उन उपद्रवोंसे तत्काल नाशको प्राप्त होजाते हैं ॥ ५ ॥

शान्तिका फल ।

भौमं शान्तिहतं नाशमुपगच्छति मार्दवम् ॥
नाभसं न समं याति दिव्यमुत्पातदर्शनम् ॥ ६ ॥

विधिपूर्वक शान्ति करनेसे भौम निमित्तके उत्पात तो शान्तहो जाते हैं। और आन्तरिक्ष उत्पात कम हो जाते हैं किन्तु दिव्य निमित्तमेंका उत्पात शान्ति करनेसेभी शान्त नहीं होता क्यों कि भौमकी अपेक्षा आन्तरिक्ष और आन्तरिक्षकी अपेक्षा दिव्य उत्पात प्रबल होताहै इसलिये अल्प शान्ति करनेसे बृहत् उत्पात शान्त नहीं होते ॥ ६ ॥

दिव्यमप्युपैतिशान्तिं प्रभूतकनकान्नगोमहीदानैः ॥
रुद्रायतने भूमौ गोदोहात्कोटिहोमाच्च ॥ ७ ॥

परन्तु बहुतसा सुवर्ण, बहुतसा अन्न, बहुतसी गायें वा बहुत. भूमि दान करनेसे अथवा महारुद्रकी प्रसन्नताके लिये गौवोंको दोहनेसे अथवा एक करोड आहुति अग्निमें हवन करनेसें दिव्यनिमित्तमेंकाभी उत्पात शान्त हो जाता है ॥ ७ ॥

यावद्विप्रा न संतुष्टास्तावत्तुष्टा न चामराः ॥
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन ब्राह्मणांस्तोषयेत्सदा ॥ ८ ॥
ब्राह्मणान्वेदविदुषः सर्वशास्त्रविशारदान् ॥
तत्र वर्षति पर्जन्यो यत्रैतान्पूजयेन्नृपः ॥ ९ ॥

जहांतक ब्राह्मण संतुष्ट नहीं होते वहांतक देवताभी पूजा आदिको स्वीकार नहीं करते इस लिये सर्व प्रयत्नसे जहातक हो सके ब्राह्मणोंको प्रसन्न रखना ॥ ८ ॥ जिस राजाके राज्यमें सदैव ही वेदादि सर्वशास्त्रोंके ज्ञाता ब्राह्मणोंका सत्कार किया जाता है उस राजाके राज्यमें मेघ वर्षा करते हैं ॥ ९ ॥

विद्यातपःसमृद्धेषु हुतं विप्रमुखाग्निषु ॥
निस्तारयति दुर्गाच्च महतश्चैव किल्विषात् ॥ १० ॥

विद्या और तपसे समृद्धिमान् ब्राह्मणोंकी मुखरूपी अग्निमें आहुति देने (भोजनकराने) से मनुष्य सम्पूर्ण प्रकारके महान् दुःखोंसे बच जाते ऐसा भगवान् मनुजीने कहा है ॥ १० ॥

यस्य राज्ञस्तु विषये श्रोत्रियः सीदति क्षुधा ॥
तस्यापि तत्क्षुधा राष्ट्रमचिरेणैव सीदति ॥ ११ ॥

किन्तु जिस राजाके राज्यमें वैदिक ब्राह्मण भूखे मरें तो उस राजाके राज्यमें सभी मनुष्य भूखे मरने लग जावें ॥ ११ ॥

विद्वद्भोज्यमविद्वांसो येषु राष्ट्रेषु भुंज्यते ॥
तेष्वनावृष्टिमिच्छंति महद्वा जायते भयम् ॥ १२ ॥

क्यों कि राजाकी असावधानीसे विद्वानोंका भोजन मूर्खोंको मिलने लग जावे तो ब्राह्मणोंकी क्षुधासे उस राजाके देशमें अनावृष्टि तथा महाभयकी प्राप्ति होवे ॥ १२ ॥

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी ॥
देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः ॥ १३ ॥
सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ॥
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ॥ १४ ॥

हे विश्वनाथ ! समय २ पर उत्तम वर्षा होवे, पृथ्वी अन्नसे युक्त हो, देशमें किसी प्रकारका उपद्रव न हो और ब्राह्मण निर्भय हों ॥ १३ ॥ सम्पूर्ण प्राणी सुखी हों और सम्पूर्ण जीव सदैव नीरोग रहें तथा सबही जीवोंका कल्याण हो, कोईभी प्राणी किसीप्रकारसे कभी दुःखी न हों ॥ १४ ॥

ग्रंथकर्तुः प्रशस्तिः ।

वंशे यस्य न कोविदत्वरहितो नानाढ्य आतों न

हि निःसत्त्वो न च निर्गुणो न च दयाहीनो न वा निस्तपाः ॥ नामान्योऽवनिपैर्न चासुतसुखो नाबुद्धिसाम्रामसन्मौलिद्योतिपदो वसिष्ठमुनिराट् वर्वर्ति सर्वोपरि ॥ १ ॥

जिन महर्षिके वंशमें विद्याहीन नही, निर्धन नहीं, दुःखी नहीं, बलहीन नहीं, निर्गुण नहीं, दयाहीन नहीं, तपहीन नहीं तथा राजाओंमें मान्य और श्रीरामचंद्रजीके मुकुट करके प्रकाशित हैं चरणकमल जिनके ऐसे श्रीवसिष्ठजी मुनिराज सर्वोपरि विराजमान हैं ॥ १ ॥

एतस्य वंशे प्रथितो भवानीप्रसादगौडद्विजवर्य आसीत्॥
ग्रामे तु धौलाख्य उरुप्रसिद्धः श्रीबाणगंगातटमत्स्यदेशे॥२

तिन वसिष्ठजी महाराजके वंशमें भवानीप्रसाद नामक ऐसे विख्यात आदिगौड ब्राह्मणोंके विषे मुख्य विद्वान् होते भये, वह विद्वान् मत्स्यदेशमें बाणगंगाके पूर्व तटपर अति प्रसिद्ध धौलानामक ग्राममें प्रकट भये ॥ २ ॥

तस्यात्मजः प्रथम आस स रामचंद्र-
श्चान्यो बभूव ननु रामकुमारनामा ॥
विद्वान्गणेश इति तस्य तृतीयपुत्रो
व्यापारवान्गणपतिश्च चतुर्थ आसीत् ॥ ३ ॥

फिर उन भवानीप्रसादजीके प्रथम रामचंद्रनामक पुत्र होते भये; द्वितीय पुत्र रामकुमार नामक हुए, तृतीय पुत्र गणेश इस नामके विद्वान् हुए और चतुर्थ पुत्र व्यापार विद्यामें कुशल ऐसे गणपतिनामक होते भये ॥ ३ ॥

विद्यासुशीलनिधिरामकुमारनाम्नः
पुत्रः सदा पशुपतेः पदपद्मभक्तः ॥

---

१ राजपूतानाप्रदेशमें जयपुरराज्यके अन्तर्गत उत्तरदिशामें चौदह कोश पर बाणगंगाके तटपर यह सुन्दर ग्राम है ॥

आचारपावितकुलद्वय आस लक्ष्मी-
नारायणाभिध उदारगुणो विनीतः ॥ ४ ॥

विद्या सुशीलता आदिके समुद्र श्रीरामकुमारनामक विद्वान्के पुत्र सदा भगवान् पार्वती परमेश्वरके चरणकमलके भक्त तथा आचारद्वारा पवित्र किये हैं दोनों कुल जिन्होंने ऐसे विद्या, विनय आदि गुणसम्पन्न उदारचित्त लक्ष्मीनारायणनामक हुए ॥ ४ ॥

तेनेदं रचितं सतामतिमुदे भाव्यर्थसद्भास्करं
मात्सर्य्यं परिहाय पश्यतु जनो निर्दोषमेतं मुहुः ॥
ये निन्दन्ति खला विदंति न गुणं ते वै यथा सैरिभा
गंधं तामरसस्य नैव हि विदुस्तेनालिनां का क्षतिः ५

सो वह लक्ष्मीनारायण विद्वानोंके प्रसन्नार्थ यह "भविष्यफलभास्कर" नामक ग्रंथको रचते भये; मात्सर्यको त्यागकर इस निर्दोषग्रंथको मनुष्य देखें; यदि जो दुष्टजन हैं वह इसकी निन्दा करेंगे, वह गुणोंको क्या जानें जैसे भैंसा कमल पुष्पकी गंधको नहीं जाने तो उससे भ्रमरोंकी क्या हानि है ॥ ५ ॥

धरणी धार्यते यावदहिनाथेन भोगिना ॥
तावद्विपुलतां यातु ग्रन्थोऽयं सर्वसम्मतः ॥ ६ ॥
ज्योतिःशास्त्रानुसारेण ग्रंथोऽयं रचितो मया ॥
अनेन प्रीयतां देवो गिरिजापतिरव्ययः ॥ ७ ॥

जबतक शेषजी पृथ्वीको धारण करें तबतक यह सर्वसम्मत ग्रंथ प्रकाशित रहे ॥ ६ ॥ ज्योतिषके अनेकानेक ग्रंथोंके आधारसे मैंने यह ग्रंथ रचा है, इससे अविनाशी भगवान् सदाशिवजी प्रसन्न हों ॥ ७ ॥

अब्दे व्यद्रिषडङ्कभूपरिमिते मेषार्कमासे शुभे
चाष्टम्यां रविवासरे सितदले श्रीजालनाख्ये पुरे ॥

विज्ञव्रातकृतादरो गणितविज्ज्योतिर्विदां प्रीतये
चक्रे शास्त्रिसदाशिवस्य कृपया लक्ष्म्यादिनारायणः॥८॥

इति श्रीमद्भवानीशंकरोपासकलक्ष्मीनारायणपण्डितकृतभविष्यफलभास्करग्रंथः समाप्तः ॥ तेन श्री साम्बसदाशिवः प्रीयताम् ॥ वैक्रमीय संवत् १९६७ चैत्र शुक्ल अष्टमी रविवारके दिन, निजामहैदराबादान्तर्गत जालना नगरमें पण्डित समूहमें आदरणीय गणितज्ञ ज्योतिषियोंके प्रसन्नार्थ, श्रीमहामहोपाध्यायकेरलीय सदाशिवशास्त्रीजीकी कृपासे लक्ष्मीनारायणपण्डितने इस भविष्यफलभास्करनामक ग्रंथको रचा ॥ ८ ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस-बंबई.